خیرکم من تعلم القرآن وعلمہ

तुम में से सबसे अच्छे वह लोग हैं,
जो क़ुरआन सीखते हैं और सिखाते हैं |

प्रत्येक पारा का संक्षिप्त परिचय ।
Har Juz ka Mukhtasar Ta'ruf

भाग १
पारा १ - १५

Part 2
Paara 16-30

कुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

Author/ लेखक

فضیلۃ الشیخ دکتور ارشد بشیر عمری مدنی سلمہ اللہ

Shaikh Dr. Arshad Basheer Umari Madani
Hafiz, Aalim, Faazil (Madina University, KSA),
MBA, PhD from Switzerland.
Founder & Director of AskIslamPedia.com
Chairman: Ocean The ABM School, Hyd.
www.askislampedia.com | www.abmqurannotes.com | www.askmadani.com
+91 92906 21633 (whatsapp only)

Translator/ हिंदी अनुवादक
Ajmal Ansari Umari &
Nasiba Shabnam (BA English)

خيركم من تعلم القرآن وعلمه

तुममें से सबसे अच्छे वह लोग हैं,

जो क़ुरआन सीखते हैं, और सिखाते हैं|

हर पारा का संक्षिप्त परिचय ।

पारा संख्या: १६-३०

भाग २

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

AskIslamPedia
GATEWAY FOR ISLAMIC INFORMATION
Free Online Islamic Encyclopedia

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय |

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयात नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़त को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

جزاكم الله خيرا

قَالَ أَلَمْ

16

सोलहवां पारा का संक्षिप्त परिचय |

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

सोलहवां पारा / जुज़ का संक्षिप्त परिचय			
पारा 16 - क़ाल अलम			
सोलहवें पारा को ओलमा ने 23 इकाइयों में विभाजित किया है।			
इकाइयों के अनुसार पारा नंबर 16 " क़ाल अलम " के छंद और लेखों का वितरण			
इकाइयां	**आयत**		**विषयों**
	सूरह् अल- कहफ़		
यूनिट संख्या: 1	74	82	मूसा (अलैहिस्सलाम) और खिद्र (अलैहिस्सलाम) की कहानी का विस्तार *क़ुरआन* की **सूरह अल-कहफ** में मिलता है
यूनिट नंबर: 2	83	98	ज़ुल- क़रनैन की कहानी का वर्णन।
यूनिट नंबर: 3	99	110	याजूज और माजूज के फितनेह का खुलासा , सूरह् फुके जाने का उल्लेख, स्वर्ग का वर्णन, अल्लाह के पैगंबर का उल्लेख,
सूरह मरयम			

यूनिट नंबर: 4	1	5	ज़कारिया अलैहिस्सलाम की प्रार्थना का वर्णन।
यूनिट नंबर: 5	6	15	ज़कारिया (अलैहिस्सलाम) ने दुआ की सम्मानजनक स्वीकृति, याह्या (अलैहिस्सलाम) के जन्म का उल्लेख किया है।)
यूनिट नंबर: 6	16	26	मरियम का (अलैहिस्सलाम) ज़िक्र और अल्लाह तआला के हुक्म से एक पाक लड़के के पैदा होने की ख़बर उन्हें दी गयी।

यूनिट नंबर: 7	27	40	यीशु (अलैहिस्सलाम) का जन्म और लोगों के साथ उनकी बातचीत।
यूनिट नंबर: 8	41	50	इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और इसहाक का जन्म का उल्लेख।
यूनिट नंबर: 9	51	53	मूसा(अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) का उल्लेख।
यूनिट नंबर:10	54	55	इस्माइल (अलैहिस्सलाम) का जिक्र
यूनिट नंबर:11	56	87	इद्रीस (अलैहिस्सलाम) ,नूह (अलैहिस्सलाम) का और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र और दूसरी चीज़ों का वर्णन।
यूनिट नंबर:12	88	98	ईसा के सेवक और पैगम्बर होने का वर्णन, ईसाइयों द्वारा उन्हें अल्लाह का पुत्र कहने की अस्वीकृति और एकेश्वरवाद के आह्वान का उल्लेख।
सूरह ताहा			

यूनिट नंबर: 13	1	8	पवित्र कुरान के रहस्योद्घाटन का उद्देश्य, सिंहासन पर अल्लाह की महिमा का बयान।
यूनिट नंबर: 14	9	44	मूसा (अलैहिस्सलाम) की घटना और अल्लाह से बात करने का सम्मान प्राप्त करने का उल्लेख।
यूनिट नंबर: 15	45	48	मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारुन (अलैहिस्सलाम) को सांत्वना और साहस का बयान और निमंत्रण के कर्तव्य का उल्लेख।

यूनिट नंबर: 16	49	59	फिरऔन को आमन्त्रित करने वाला मूसा (अलैहिस्सलाम)का बयान।
यूनिट नंबर: 17	60	76	फ़िरऔन के जादूगरों से मूसा (अलैहिस्सलाम) का जो कुछ हुआ उसका वर्णन।
यूनिट नंबर: 18	77	82	बनी इस्राईल के साथ मूसा(अलैहिस्सलाम) की हिजरत का वाक़िया और फिरऔन का नील नदी में डूबने का ज़िक्र और बनी इस्राईल के फिर ख़ुदा की नेमतों पर कुफ़्र का बयान।
यूनिट नंबर: 19	83	98	मूसा (अलैहिस्सलाम) का दोबारा तूर पर जाना और अल्लाह से बातचीत करने का सम्मान प्राप्त करने का बयान और बनी इस्राईल का शिर्क में मुब्तला होने का बयान
यूनिट नंबर: 20	99	104	कुरआन से रूगरदानी करने वालो का बयान

यूनिट नंबर: 21	105	112	पुनरुत्थान के दृश्यों का वर्णन, अल्लाह के पैगंबर का वर्णन और कुरान की महानता।
यूनिट नंबर: 22	113	114	कुरान को अरबी में नाज़िल किये जाने का बयान और कुरान को पढ़ने में जल्दी न करने का हुकम
यूनिट नंबर: 23	115	127	आदम अलैहिस्सलाम की कहानी, मूसा अलैहिस्सलाम की कहानी, और आदम की कहानी अल्लाह से तौबा करने के लिए इबलीस, आदम (अलैहिस्सलाम) और हवा (अलैहिस्सलाम) का जिक्र कथन

यूनिट नंबर 1 :

सोलहवें पारा, सूरह अल-काहफ की आयत 60 से आयत 82 तक, मूसा (अलैहिस्सलाम) और ख़िज्र (अलैहिस्सलाम) की बाकी कहानी।

"यूनिट नंबर 1: के कुछ विषय"

- मूसा (अलैहिस्सलाम) और खिद्र (अलैहिस्सलाम) की घटना (60-82).

यूनिट नंबर 2:

सोलहवें पारा सूरह अल-काहफ, सूरह नंबर 18 की आयत 83 से आयत 98 तक ज़ूल-क़रनैन की कहानी का वर्णन।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- ज़ूल-क़रनैन और याजूज माजूज की घटना। (99-83) •

यूनिट नंबर 3:

सोलहवां पारा, सूरह अल-कहफ, सूरह नंबर 18, आयत नंबर 99 से आयत नंबर 110, द्वारा याजूज माजूज प्रलोभन के फितना का उल्लेख और तुरही बजाने का वृत्तांत, स्वर्ग और उसके बगीचे और उसके महल और उसकी विलासिता और आराम का ज़िक्र करते हुए कहा गया कि अल्लाह तआला की नेमतों को कोई गिन नहीं सकता। पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) भी एक इंसान हैं और शिर्क से बचने का आग्रह किया गया है। ईमानदारी और आज्ञाकारिता सिखाई गई।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन अविश्वासियों का अंत (106-100)
- पुनरुत्थान के दिन विश्वासियों का प्रतिशोध (108-107)
- अल्लाह के संपूर्ण ज्ञान और एकता और पैगंबर की मानवता का बयान (109-110)

सूरह मरियम

मरयम अलैहस्सलाम	MARYAM ALAIHASSALAM	مریم علیہ السلام

"रहस्योद्घाटन का स्थान - मक्का"-

“PLACE OF REVALATION”MAKKA

"कुछ उद्देश्य"

- बच्चे अल्लाह की नेमत हैं, जैसे हर चीज़ को अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए, वैसे ही बच्चों को भी अल्लाह की आज्ञा का पालन करना चाहिए।
- जिस प्रकार बच्चे धन के उत्तराधिकारी होते हैं, उसी प्रकार उन्हें धर्म की सुरक्षा भी विरासत में मिलनी चाहिए
- ज़करिया (अलैहिस्सलाम) ने वंशजों (औलाद) के लिए दुआ की ताकि वंशज पैगंबर और किताब की विरासत को संभाल सकें।
- आल-इमरान का मामला ये है कि इमरान की पत्नी ने अपने बच्चों को धर्म के प्रति समर्पित कर दिया

अधिक जानकारी के लीये इस किताब को ज़रूर पढ़ें

الھدی النبوی فی تربیۃ الاولاد فی ضوء الکتاب والسنۃ

سعید بن علی بن وھف القحطانی

- सईद बिन अली बिन वाफ़ अल-क़हतानी)

- उन्होंने ऐसा करने की कसम खाई. उनके बाद मरियम और ईसा अलैहिस्सलाम का भी यही हाल हुआ। इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद इशाक, याक़ूब, इस्माइल और उनके वंशजों के साथ भी यही स्थिति थी।
- टिप्पणी: वे दोनों बच्चे जो इस विरासत को लेते हैं और जो नहीं लेते हैं, उनका उल्लेख इन छंदों में किया गया है: श्लोक:

1 قال الله تعالى: أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذَا تُتْلَى عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا [58]

2 قال الله تعالى: فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا [59]

1. (सर्वशक्तिमान) परमेश्वर ने कहा, ये वे लोग हैं जिन पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया है, पैगम्बरों में से, आदम की सन्तान में, और जो नूह के साय हमें ले आए, और इब्राहीम और इस्माइल की सन्तान में, और जो लोग हमने मार्गदर्शन किया और चुना। जब उन्हें परम दयालु की आयतें सुनाई जाती हैं, तो वे सजदे में गिर पड़ते हैं और रोते हैं (58)
2. (सर्वशक्तिमान) ईश्वर ने कहा: फिर उनके बाद उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने प्रार्थना की उपेक्षा की और इच्छाओं का पालन किया, वे निश्चित रूप से विनाश को प्राप्त होंगे (59)

- इस सूरह में इंसान के लिए औलाद की ज़रूरत बताई गई है और साथ ही यह भी बताया गया है कि अल्लाह की कोई औलाद नहीं है और जो कोई यह साबित कर दे कि वह अल्लाह की औलाद है तो यह बहुत बड़ा गुनाह है जिससे आसमान फट सकता है, धरती कंपकंपी से हिल जाए और पर्वत ढह जाएं।
- ईसाइयों की मूल मान्यताओं की धज्जियाँ उड़ा दी गईं। (ईश्वर का पुत्र)
- एक तरफ ईसाइयों को निमंत्रण, दूसरी तरफ यहूदियों को बदनामी से बरी करने का ऐलान,
- मरियम(अलैहिस्सलाम) के पक्ष में कुरान की गवाही

2 (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें (अल-जौब अल-साहिह लिमन बदल दीन अल-मसीह: अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)

الجواب الصحيح لمن بدل دين المسيح : احمد بن عبدالحليم بن تيميہ

- इस सूरह में बताया गया है कि कैसे अल्लाह की दया, सुरक्षा और मदद नेक लोगों को मिलती है।
- सेवक की पूजा(इबादत) की पूर्ति भगवान के प्रेम की पूर्ति है, और सेवक की पूजा की कमी से ईश्वरीय प्रेम की कमी भी होगी।

(मजमू उल फतावा - 1:213)

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सूरह कहफ में उल्लेख है कि विरोधियों ने हठ दिखाना जारी रखा और सुधारकों के खिलाफ शत्रुता की घोषणा की, फिर भी दावत और अज़ीमत के लोगों ने दृढ़ता दिखाई, जैसे सूरह मरियम में, पैगंबरों को विरोधियों से परीक्षणों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन फिर भी पैगंबर जारी रहे दृढ़ता दिखाने के लिए.

यूनिट नंबर 4

सोलहवें पारा सूरह मरयम सूरह नंबर 19 की आयत 1 से 5 तक जकारिया (अलैहिस्सलाम) की दुआ का जिक्र किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- हज़रत ज़करिया (अलैहिस्सलाम) की घटना और हज़रत याह्या (अलैहिस्सलाम) की खुशखबरी की कहानी। (1-15)

यूनिट नंबर 5:

सोलहवें पारा सूरह मरयम, सूरह नंबर 19, आयत 6 से 15 में कहा जा रहा है कि ज़कारिया (अलैहिस्सलाम) की दुआ कबूल हुई और याह्या (अलैहिस्सलाम) की खुशखबरी दी गई, और उसके बाद याहया (अलैहिस्सलाम) की जन्म का बयान है.

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- हज़रत ज़करिया (अलैहिस्सलाम) की घटना और हज़रत याह्या (अलैहिस्सलाम) की खुशखबरी की कहानी - (1-15)

यूनिट नंबर 6:

सोलहवें पारा, सूरह मरियम, सूरह नंबर 19 की आयत 16 से 26 में, मरियम(अलैहिस्सलाम) का उल्लेख किया गया है, कैसे मरियम (अलैहिस्सलाम) अपने परिवार से अलग हो गई और पूर्वी तरफ मिहराब में बस गई, और वहां अल्लाह (सर्वशक्तिमान) ने एक देवदूत भेजा और देवदूतों ने मरियम से बात की और कहा कि तुम्हारे यहां एक पवित्र लड़का पैदा होगा, मरियम ने कहा कि मैं अभी तक कुंवारी हूं, देवदूत ने कहा कि यह अल्लाह का आदेश है और मरियम गर्भवती हो गई ।

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- हज़रत मरयम (अलैहिस्सलाम), हज़रत इब्राहिम (अलैहिस्सलाम), हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) हज़रत इस्माइल (अलैहिस्सलाम) और हज़रत इदरीस की घटनाओं का उल्लेख (16-57)

यूनिट नंबर 7:

सोलहवें पारा सूरह मरियम सूरह नंबर 19 की आयत 27 से 40 तक ईशा के जन्म और लोगों से ईशा के बात करने का जिक्र और उनके पैगम्बर होने का बयान दिया गया है।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- हज़रत मरियम, हज़रत इब्राहिम, हज़रत मूसा, हज़रत इस्माइल, हज़रत इदरीस की घटनाओं का उल्लेख (16-57)

यूनिट नंबर 8:

सोलहवें पारा सूरह मरियम, सूरह नंबर 19 की आयत 41 से 50 में हज़रत इब्राहिम का जिक्र है लेकिन इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) के पिता ने उनकी बात नहीं मानी बल्कि इब्राहिम को धमकाया, इसके बाद अल्लाह ने उन्हें औलाद दी और इसहाक का हुआ जन्म।

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- हज़रत मरियम, (अलैहिस्सलाम), हज़रत इब्राहिम (अलैहिस्सलाम), हज़रत मूसा(अलैहिस्सलाम), हज़रत इस्माइल(अलैहिस्सलाम), हज़रत इदरीस(अलैहिस्सलाम) की घटनाओं का उल्लेख (16-57)

यूनिट नंबर 9:

सोलहवें पारा सूरह मरियम, सूरह नंबर 19 की आयत 51 से 53 में उल्लेख है कि मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून (अलैहिस्सलाम) को पैगम्बर बनाया गया था।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- हज़रत मरियम, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत इस्माइल, हज़रत और इद्रिस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की घटनाओं का ज़िक्र (57-16)।

यूनिट नंबर 10:

सोलहवें पारा, सूरह मरियम, सूरह नंबर 19 की आयत 54 से 55 में, हज़रत इस्माइल का उल्लेख किया गया।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- हज़रत मरयम(अलैहिस्सलाम), हज़रत इब्राहीम(अलैहिस्सलाम), हज़रत मूसा(अलैहिस्सलाम), हज़रत इस्माइल(अलैहिस्सलाम), हज़रत इद्रिस (अलैहिस्सलाम)की घटनाओं का उल्लेख (16-57)

यूनिट नंबर 11:

सोलहवें पारा, सूरह मरियम, सूरह नं.19 आयत नंबर 56 से ले कर 87 में हज़रत इद्रिस (अलैहिस्सलाम) का जिक्र क्या गया इसके के बाद हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) का जिक्र क्या गया फिर हज़रत इब्राहिम(अलैहिस्सलाम) का जिक्र क्या गया और उल्लेख किया गया है और तौहीद के अन्य मामलों का उल्लेख किया गया है, स्वर्ग और नरक, और आस्तिक और पाखंडी का।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- कुछ नबियों की घटनाएँ और अल्लाह् के नाम पर उनकी विनम्रता का बयान (58)
- अवज्ञाकारी राष्ट्रों का उल्लेख (59)
- ईमानवालों का ज़िक्र और उनका इनाम (63-60)
- सब कुछ उसी की शक्ति में है जो केवल पूजा का पात्र है। (65-64)
- आख़िरत में काफ़िरों का बदला और उनकी विशेषताएँ (75-66)
- मार्गदर्शित धर्मी लोगों का प्रतिफल (76)
- बहुदेववादियों के मिथ्या दोषारोपण और उनके अन्त का उल्लेख (95-77)

यूनिट नंबर 12:

सोलहवें पारा सूरह मरयम, सूरह नं. 19, आयत नं. 88 से 98 में बताया जा रहा है कि ईशा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बंदे और पैगम्बर हैं, जबकि ईसाइयों ने उन्हें (GOD) का पुत्र घोषित कर दिया। अल्लाह की ओर से इसका प्रमाण है, फिर जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) का ज़िक्र किया गया और कहा गया कि जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) बहुत भरोसेमंद फ़रिश्ते हैं। फिर इस सूरह के आखिर में दावते तौहीद पेश की गई है और इस दावते दीन पर अमल ना करने वालों को सज़ा देने का वादा किया गया।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों के मिथ्या दोषारोपण और उनके अन्त का उल्लेख (95-77)
- ईमानवालों का इनाम, क़ुरआन का महत्व और उसके द्वारा काफ़िरों के विनाश का वर्णन (98-(96)।

सूरह ताहा

SURAH TAHA

Taha	Taha	ताहा
"रहस्योद्घाटन का स्थान - मक्का"		

"कुछ उद्देश्य"

- इस सूरह का लक्ष्य शुरुआती आयत में ही बताया गया है कि इस्लाम का पालन करना आसान है:

(طه * ما أنزلنا عليك القرآن لتشقى)[1]:

- अल्लाह तआला अपने रसूल और उन की उम्मत से कह रहे हैं कि यह कोई ऐसा धर्म नहीं है जो कष्ट पहुंचाता हो, बल्कि जो कोई इस धर्म का पालन करेगा उसे खुशी और सफलता मिलेगी।
- इस्लाम दुख: देने के लिए नहीं बल्कि इंसान को रास्ता दिखाने और आसानी पैदा करने के लिए आया है।
- इस सूरह में दो कहानियों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है जिनमें ख़ुशी का उल्लेख है

अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें (من اسباب السعادة: अब्द अल-अज़ीज़ बिन मुहम्मद अल- सद हान 2 هل تبحث عن السعادة ? सालेह बिन अब्दुल अजीज बिन ओथमान सिंदी)

1. मूसा (अलैहिस्सलाम)की कहानी: जादूगरों को वैसे भी विश्वास का आशीर्वाद प्राप्त है। जिसके बाद वे फ़िरऔन की धमकियों से नहीं डरते।
2. आदम अलैहिस्सलाम की कहानी: अल्लाह द्वारा प्रकट मनहज को अपनाने से खुशी मिलती है:

﴿فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هَذَا عَدُوٌّ لَكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَى [117]﴾

- और इस मनहज को छोड़ने से विपत्तियों और कठिनाइयों में पड़ , जाओगे

﴿قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم
مِّنِّي هُدًى فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ[123] وَمَنْ
أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ[124] قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنتُ
بَصِيرًا[125] قَالَ كَذَٰلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا وَكَذَٰلِكَ
الْيَوْمَ تُنسَىٰ[126]﴾

- अल्लाह किस प्रकार पैगम्बरों की सहायता करता है और उन पर नजर रखता है तथा उनकी परवाह करता है, उसी प्रकार अल्लाह पैगम्बरों के मार्ग पर चलने वाले ईमानवालों की कितनी सहायता करता है तथा उनकी रक्षा करता है, उनके कष्ट के समय में अल्लाह किस प्रकार उनकी सहायता करता है। ये सारी बातें इस सूरह में बताई गई हैं.

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- पिछले सूरहों में पैगंबरों की दृढ़ता और विरोधियों की शत्रुता का उल्लेख करने के बाद, सूरह ताहा में, पैगंबर को सीधे संबोधित किया गया और सांत्वना और प्रोत्साहन दिया गया। विरोधी बड़ी संख्या में हैं, बड़ी-बड़ी साजिशें रच रहे हैं. अल्लाह काफी है.
- उदाहरण: मूसा (अलैहिस्सलाम) के जीवन में प्रवास, वापसी और विरोधियों के खात्मे का जिक्र है, ठीक वैसे ही जैसे अल्लाह के दूत (पैगम्बर. सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के जीवन में प्रवास, सरकार का जिक्र है। , विजय और सफलता और शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त होना है|
- अल्लाह अच्छे लोगों की मदद कैसे करता है? यह सूरह ताहा और सूरह मरयम का विषय है।
- सूरह मरियम में ईसाइयों को सलाह, जबकि सूरह ताहा में यहूदियों को सलाह, दोनों सूरह अविश्वासी कुरैश के लिए एक चेतावनी है।

यूनिट नं 13:

सोलहवें पारा सूरह ताहा, सूरह नं. 20 की आयत 1 से 8 में पवित्र क़ुरआन केअवतरण का उद्देश्य और उसके कारणों की व्याख्या की गई है और कहा गया है कि अल्लाह अत्यंत दयालु है। अल्लाह की ज़ात सिंहासन पर है, लेकिन अल्लाह ज्ञान हर जगह है.

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- पवित्र क़ुरआन, इसका महत्व और इसे प्रकट करने वाले के गुण (1-8)

यूनिट नंबर 14:

सोलहवें पारा सूरह ताहा, सूरह नंबर 20 की आयत 9 से 44 में, मूसा(अलैहिस्सलाम) का वाकया बयान क्या हुआ कि वे अपनी बीवी के साथ शफ़र में थे और रात का वक़्त था और आग की तलाश में जब वे निकले तो अल्ला से हम कलामी का शरफ़ हासिल होता है

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम)) पवित्र घाटी में अल्लाह से बात कर रहे थे। (16-9)
- हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का चमत्कार और फ़िरऔन के पास जाने का आदेश और मूसा (अलैहिस्सलाम) से प्रार्थना (36-17)
- पैगम्बरी से पहले मूसा पर किए गए उपकारों का उल्लेख (41-37)
- हरून (अलैहिस्सलाम) और मूसा (अलैहिस्सलाम) को फिरौन के पास जाने का आदेश दिया गया। (42-48)

यूनिट नं 15:

सोलहवें पारा सूरह ताहा, सूरह नंबर 20 की आयत 45 से 48 में, मूसा(अलैहिस्सलाम) और हारून(अलैहिस्सलाम) दोनों को सांत्वना दी गई और उन्हें धर्म के लिए आह्वान करने की जिम्मेदारी दी गई।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- हारून (अलैहिस्सलाम) और मूसा (अलैहिस्सलाम)को फिरौन के पास जाने का आदेश दिया गया। (48-42)

यूनिट नंबर 16:

सोलहवें पारा सूरह ताहा, सूरह नंबर 20 की आयत 49 से 59 में बताया जा रहा है कि मूसा (अलैहिस्सलाम) और फिरौन के बीच बातचीत और बहस हुई और मूसा(अलैहिस्सलाम) ने फिरौन को धर्म के लिए आमंत्रित किया, और फिरौन ने मूसा(अलैहिस्सलाम) के इनकार का बयान स्वीकार कर लिया निमंत्रण स्वीकार करने के लिए.

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- फिरौन और मूसा(अलैहिस्सलाम) के बीच बातचीत। (55-49)

यूनिट नंबर 17:

सोलहवें पारा, सूरह ताहा सूरह नं. 20 की आयत 60 से आयत 76 तक मूसा (अलैहिस्सलाम)का फिरऔन के जादूगरों से मुक़ाबला करने का ज़िक्र है जब जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी का चमत्कार देखा तो उन्होंने यही कहा यह कोई जादू नहीं है और जादूगर ने इस्लाम कबूल कर लिया।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय”

- मूसा (अलैहिस्सलाम) और फिरौन और जादूगरों के बीच लड़ाई का उल्लेख, जादू-टोना का उन्मूलन और जादूगरों का अल्लाह पर विश्वास (76-56)

यूनिट नंबर 18:

सोलहवें पारा सूरह ताहा, सूरह नंबर 20 की आयत 77 से 82 में, मूसा(अलैहिस्सलाम) बनी इसराइल को लेकर हिजरत करने का वाकया और हिजरत में फिर से गरकाबी का बयान; और जब बनी इसराइल सुरक्षित मुकाम पर पहुंच गाई तो फिर से इन्हो ने अल्लाह की नेमत से कुफ्र क्या और इन से वे सारी नेमतें छीन ली गईं.

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- फ़िरऔन और उसकी क़ौम के डूबने और इसराइल पर अल्लाह की नेमतों का ज़िक्र।(82-77)

यूनिट नंबर 19:

सोलहवें पारे, सूरह ताहा (सूरह नं. 20) की आयत 83 से 98 में यह बताया जा रहा है कि अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को फिर से तूर पहाड़ पर बुलाया और अपने कलाम से सरफ़राज़ी व बुलंदी अता फ़रमाई। जब मूसा (अलैहिस्सलाम) तूर पर तशरीफ़ ले गए, तो बनी इसराइल कुफ्र व शिर्क में मुब्तिला हो गई और शामिरी के कहने पर बछड़े की इबादत करने लगी। जब मूसा (अलैहिस्सलाम) वापस तशरीफ़ लाए, तो आपने बनी इसराइल को खूब सरज़निश फ़रमाई और हारून (अलैहिस्सलाम) को भी डाँटा।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- सामरी ने बानी इसराइल को बहकाया, और मूसा(अलैहस्सलाम) का क्रोध उसकी प्रजा और उसके भाई पर (83-99)।

यूनिट नंबर 20:

सोलहवें पारा सूरह नंबर 20, सूरह ताहा, आयत 99 से आयत 104 में कहा गया है कि जो कोई भी कुरान से विमुख होकर अपना मुंह मोड़ेगा, उसका भाग्य बहुत बुरा होगा और उसे दंडित किया जाएगा

"यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

- क़ुरान से मुंह मोड़ने वालों का भाग्य और क़यामत के दिन की कुछ झलकियाँ (100-114)

यूनिट नंबर 21:

सोलहवें पारा सूरह ताहा, सूरह नं.20 आयत नंबर 105 से लेकर 112 तक कुरान की महानता का उल्लेख किया गया।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

क़ुरान से मुंह मोड़ने वालों का भाग्य और क़यामत के दिन की कुछ झलकियाँ (100-114)

यूनिट नं 22:

सोलहवें पारा सूरह नंबर 20, सूरह ताहा, आयत 112 से आयत 113 तक कहा जा रहा है कि हमने कुरान को अरबी में उतारा और आदेश दिया कि कुरान पढ़ने में जल्दबाजी न करें, यानी कि ठहर ठहर कर पढ़ने की सलाह दी गयी है सलाह दी गई।.|

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय

- क़ुरान से मुंह मोड़ने वालों का भाग्य और क़यामत के दिन की कुछ झलकियाँ (100-114)

यूनिट नंबर 22-23:

सोलहवें पारे, सूरह ताहा (सूरह नंबर 20) की आयत 115 से 135 तक आदम (अलैहिस्सलाम) की कहानी बयान की गई है। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) की कहानी सुनाई गई है और इबलीस की दुश्मनी व शत्रुता का वर्णन किया गया है। इसमें यह बताया गया है कि कैसे इबलीस ने आदम और हव्वा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए उकसाया और उन्हें पाप करने पर मजबूर किया। इसके बाद आदम और हव्वा (अलैहिस्सलाम) ने अल्लाह तआला के सामने तौबा की, जिसे कबूल कर लिया गया।

"यूनिट नंबर 22-23: के कुछ विषय

- आदम (अलैहिस्सलाम) की कहानी और इबलीस से आदम (अलैहिस्सलाम) के बारे में अल्लाह की चेतावनी और उसके स्वर्ग छोड़ने की कहानी पृथ्वी पर आने का वृत्तान्त (115-127)
- विगत राष्ट्रों का वृत्तान्त और बहुदेववादियों को दण्ड की धमकी (129-128)
- पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि-व-सल्लम) को निर्देश (132-130)
- विगत राष्ट्रों का वृत्तान्त और बहुदेववादियों को दण्ड की धमकी (135-133)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

اقترب للناس

17

SATRAHAWAN PAARA (JUZ) “ اقترب للناس "
KA MUKHTASAR TAAARUF

सत्रहवां पारा (भाग) " اقترب للناس" का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय।

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ
وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

جزاكم الله خيرا

इकतरब" 17	सत्ररहवाँ पारा\ जुज़ का संक्षिप्त परिचय	सूरत अल-अंबिया

सत्ररहवाँ पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।

"पारा 17वाँ - इकतरब " दृष्टिकोण

विद्वानों ने सत्ररहवाँ पारा को 18 इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:		
यूनिट संख्या 17 " इकतरब" के छंदों एवं आलेखों का इकाइयों द्वारा वितरण		
यूनिट	आयात	इकाइयों
सूरत अल-अंबिया		

यूनिट संख्या: 1	1	6	पुनरुत्थान के दिन की निकटता का वर्णन, अविश्वासियों की अवज्ञा का उल्लेख।
यूनिट नंबर: 2	7	15	मक्का के बहुदेववादी इस बात से इनकार करते थे कि कोई भी इंसान रसूल हो सकता है। पूर्ववर्ती राष्ट्रों के भयानक अंत का उल्लेख, पवित्र क़ुरआन की उत्कृष्टता का वर्णन।
यूनिट नंबर: 3	16	33	ब्रह्माण्ड की रचना महज़ एक ख़ाली खेल नहीं है।
यूनिट नंबर: 4	34	47	मृत्यु का वर्णन, काफिरों और बहुदेववादियों के गुणों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 5	48	91	सभी नबियों की कहानियाँ सुनाई गईं और "पैगम्बरों मुहम्मद" (सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम) के रसूल का जिक्र करते हुए कहा कि वह सभी देशों केलिए भेजे गये हैं
यूनिट नंबर: 6	92	106	गाफिलों को जगाया गया, दावत तौहीद का जिक्र, पैगम्बरों की श्रेष्ठता का जिक्र।

यूनिट नंबर: 7	107	112	अल्लाह के पैगंबर का एक विशेष उल्लेख, अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो, कि उन्हें सभी दुनियाओं के लिए दया के रूप में भेजा गया था

सूरतह अल-हज

यूनिट नंबर: 8	1	2	पुनरुत्थान के महान भूकंप का विवरण|
यूनिट नंबर: 9	3	4	नज़र-बिन-हरीश की कहानी का वर्णन।
यूनिट नबर: 10	5	7	" मृत्यु के बाद पुनरुत्थान " का विस्तृत विवरण।
यूनिट नंबर: 11	8	23	एकेश्वरवाद, संदेशवाहक, अनुयायी और अनुयायियों के विरोधी: यहूदी और ईसाई, जादूगर, साबीऊन का कथन।
यूनिट नंबर: 12	24	37	अच्छे का भाग्य अच्छा होगा और बुरे का बुरा।
यूनिट नंबर: 13	38	41	इस्लाम के संस्कारों का वर्णन.
यूनिट नंबर: 14	42	48	विश्वासियों को सांत्वना दी गई, बहुदेववादियों को सजा से डरने के लिए कहा गया, नूह, नहूम, लूत आदि के लोगों, इब्राहिम के लोगों, मदीन और मूसा (PBHU) के लोगों की कहानियाँ सुनाया गया.
यूनिट नंबर: 15	49	60	पिछले राष्ट्रों की तरह, कुरैश के काफिर और मक्का के बहुदेववादी भी घाटे में चल रहे हैं, विश्वासियों और काफिरों का विवरण बराबर नहीं है।

यूनिट नंबर: 16	61	66	" मृत्यु के बाद पुनरुत्थान " की जीवन प्रेरणा का वर्णन।
यूनिट नंबर: 17	67	76	आस्तिक और नास्तिक (अविश्वासी) की प्रतिक्रिया के बीच अंतर का वर्णन.
यूनिट नंबर: 18	77	78	" मृत्यु के बाद पुनरुत्थान " से इनकार करने वालों और उनमें पाई जाने वाली खामियों का वर्णन, जो लोग अल्लाह के अलावा किसी और से मदद मांगते हैं वे भी कमज़ोर हैं और जिनसे मदद मांगी जाती है वे भी कमज़ोर हैं।

सूरह अल-अंबिया		
SURAH AL-ANABIYAA		
The prophets	Anabiyaa	पैगंबर अंबिया
"रहस्योद्घाटन का स्थान मक्का" “place of revelation “MAKKAH”		

"कुछ उद्देश्य" few objectives”

- पैगम्बरों की भूमिका को मानवता के लिए एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- इस सूरह में पैगंबरों की कहानियों का उल्लेख किया गया है, जैसा कि इस सूरह के नाम से संकेत मिलता है।
- इन कहानियों में बताया गया है कि किस तरह पैगम्बरों (अलैहिमस्सलाम) ने अपने लोगों को एकेश्वरवाद की ओर आमंत्रित किया|
- हर युग में तीन प्रकार के लोग रहे हैं, कोई चौथा प्रकार नहीं है: 2

1. आस्तिक
2. बहुदेववादी और काफ़िर।
3. बेख़बर

- यह गाफिल समूह ही वह है जिसे बार-बार याद दिलाना पड़ता है और इन्हीं को संबोधित करके यह सूरह शुरू की जा रही है:

﴿اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ﴾[1] (سورة الانبياء)

(सूरत अल-अंबिया)।

- और इस पूरी ला परवाही से बचने के लिए उन्होंने समझाया कि

﴿بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ﴾[18] (سورة الانبياء)

- और आखिरी पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि-व-सल्लम) की स्थिति स्पष्ट कर दी गई है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि-व-सल्लम)) से पहले के पैगंबर एक विशेष समय और राष्ट्र के पैगंबर थे, जबकि वह (सल्लल्लाहु अलैहि-व-सल्लम) आखिरी पैगंबर हैं और क़यामत के दिन तक सारी मानव जाति के लिए दूत।

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ﴾[107]

- प्रत्येक नबी का आह्वान, एकेश्वरवाद (21:25)

1 (अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अयबी बक्र (इब्न क़य्यिम अल-जौज़ियाह)
مدارج السالکین بین منازل ایاک نعبد وایاک نستعین : ابو عبداللہ محمد بن ابی بکر (ابن قیم الجوزیۃ)
2 (अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें –
الغفلۃ -- مفهومها، و خطرها ، و علاماتها ، و اسبابها ، و علاجها : سعید بن علی وهف القحطانی
सईद बिन अली बिन वाहफ अल-क़हतानी।

मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

- दोनों सूरह में तीन तथ्य हैं:
    (1) अविश्वासियों की व्यर्थ आपत्तियों का उत्तर।
    (2) पैग़म्बरों की दृढ़ता की घटनाएँ 3
    (3) (3)विरोधियों का अंत

यूनिट नं 1:

सत्ररहवाँ पारा में सूरह अल-अनबिया , सूरह नंबर 21, आयत 1 से आयत 6 में कहा गया है कि पुनरुत्थान का समय निकट है और लोग उपेक्षा में पड़े हुए हैं, उसके बाद अविश्वासियों की अवज्ञा का उल्लेख किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

हिसाब-किताब के दिन के ख़तरे और बहुदेववादियों द्वारा पैगम्बर और क़ुरआन के इन्कार और अविश्वासियों के अंत का उल्लेख (1-10)

3(अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें: अल-इस्तिकामा: अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)

यूनिट नंबर 2:

सत्ररहवाँ पारा में सूरह अल-अनबिया, सूरह नंबर 21 की, आयत 7 से आयत 15 में कहा जा रहा है कि मक्का के बहुदेववादी इस बात से इनकार करते थे कि एक इंसान एक दूत नहीं हो सकता, इसलिए उन्होंने दूत ईश्वर के पैगंबर, (सल्लल्लाहु अलैहि-व-सल्लम) से इनकार कर दिया। उसके बाद, पिछले राष्ट्रों के दुखद अंत का उल्लेख किया गया है, उसके बाद पवित्र कुरान की उत्कृष्टता को समझाया गया है।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- हिसाब-किताब के दिन और मुश्रिकों द्वारा पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि-वसल्लम) और क़ुरान को झुठलाने और काफ़िरों के अंत का उल्लेख (1-10)
- प्रथम लोगों की उनकी शक्ति के अनुसार मृत्यु और विनाश (11-15)

यूनिट नं: 3

सत्रहवाँ पारा में सूरह अल-अनबिया, सूरह नंबर 21 की आयत 16 से आयत 33 तक, यह बताया जा रहा है कि ब्रह्मांड की रचना सिर्फ एक नाटक नहीं है, बल्कि सभी रचनाएं अल्लाह की महिमा कर रही हैं, जो सभी दुनियाओं का एकमात्र पालनकर्ता है। केवल अल्लाह ही सर्वशक्तिमान है, इसके बाद काफ़िरों और बहुदेववादियों द्वारा की गई निन्दाओं का उल्लेख किया गया और कहा गया कि यदि तुम सच्चे हो तो सभी नबियों, तर्क क्यों नहीं प्रस्तुत करते। वे एक ही अल्लाह की इबादत करने की दावत देते थे।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- अल्लाह की हिकमत और शक्ति का उल्लेख पृथ्वी और आकाश की रचना में किया गया है (16-20)।
- धरती और आकाश की रचना में अल्लाह की शक्ति और उसकी एकता का प्रमाण वर्णित है (21-33)।

यूनिट नंबर 4:

सत्रहवाँ पारा में सूरह अल-अनबिया सूरह नंबर 21 की आयत 34 से आयत 47 तक बताया जा रहा है कि हर ज़ात की मौत होती है और ये सच है और इसमें पैगम्बर भी शामिल हैं यानी इस दुनिया में कोई भी नबी ज़िंदा नहीं है (ध्यान दें:ईशा “अलैहिस्सलाम” को जीवित स्वर्ग में ले जाया गया था, वह

फिर से आएंगे और वह भी मरने वाले हैं), उसके बाद अल्लाह् के पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम) का मजाक उड़ाने वालों के भाग्य का उल्लेख किया गया है, फिर अविश्वासियों, बहुदेववादियों और पाखंडियों के गुणों का वर्णन किया गया है और उनके खिलाफ चेतावनी दी गई है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

इसमें इस बात का संक्षिप्त उल्लेख है कि बहुदेववादियों ने पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ कैसा व्यवहार किया और उन्हें इस दुनिया और उसके बाद सजा की धमकी दी गई (34-47)।

यूनिट नंबर 5:

सत्ररहवाँ पारा सूरह अल-अनबिया, के सूरह नंबर 21 की आयत 48 से आयत 91 तोरैत का जिक्र बयां क्या गया और तोरैत को भी फरकान कहा गया और इस के बाद अम्बिया-इकराम की कहानी बयां की गई मूसा“अलैहिस्सलाम” ,और हारून“अलैहिस्सलाम”, की कहानी बयां क्या गया और इब्राहिम“अलैहिस्सलाम” की कहानी, कहानी लूत“अलैहिस्सलाम” ,कहानी नूह“अलैहिस्सलाम”, दाऊद“अलैहिस्सलाम” ,सुलेमान“अलैहिस्सलाम” ,अय्यूब“अलैहिस्सलाम” ,इस्माइल“अलैहिस्सलाम” , इदरीस“अलैहिस्सलाम”,ज़ुलकफल“अलैहिस्सलाम” ,यूनूस“अलैहिस्सलाम” ,ज़कर्या“अलैहिस्सलाम” , याह्या“अलैहिस्सलाम” ,ईशा“अलैहिस्सलाम” ,और मरियम “अलैहिस्सलाम” की कहानियाँ सुनाई जाती हैं, और फिर कहा जाता है कि प्रत्येक पैगंबर को उनके अपने लोगों के लिए भेजा गया था, लेकिन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि-व-सल्लम) को सभी देशों के लिए भेजा गया था।

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

मूसा, हारून, इब्राहीम, लूत, नूह, दाऊद और,सुलेमान, अय्यूब, इस्माइल , इदरीस, धूअल-किफ्ल, यूनुस, ज़कारिया, मरियम, “अलैहिमस्सलाम” की कहानियाँ सुनाई गईं (91-48)।

यूनिट नंबर 6:

सत्ररहवाँ पारा सूरत अल-अनबिया की आयत 92 से आयत 106 तक अज्ञान में पड़े लोगों को जागृत किया गया और एकेश्वरवाद का निमंत्रण प्रस्तुत किया गया तथा परलोक को आकर्षक बनाया गया तथा पैगम्बरों की स्थिति तथा उनके के गुण

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- सभी पैगंबरों ने एक ही धर्म का आह्वान किया और उनके प्रति राष्ट्र का रवयया क्या था और उनमें से प्रत्येक का अंत क्या था (92-95)।
- याजूज माजूज का पलायन न्याय के दिन और बहुदेववादियों की सजा के संकेतों में से एक है |(96-100)
- पुनरुत्थान के दिन की परेशानियों से विश्वासियों की मुक्ति, अपने सेवकों पर अल्लाह के पुरस्कार और ईश्वरीय शक्ति की अभिव्यक्ति का उल्लेख (101-106)।

यूनिट नंबर 7 :

सत्ररहवाँ पारा में सूरह अल-अनबिया की आयत 107 से सूरत 112 तक सभी पैगंबरों के बाद खातम-उल- नबीय्यीन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि-व-सल्लम) के गुणों का विशेष रूप से वर्णन किया गया है और कहा गया है कि वह सारी दुनिया के लिए एक दया है जिसे रहमत बना कर भेजा गया है।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि-व-सल्लम) के गुणों, उनके अभियान और उन पर आपत्ति जताने वालों को धमकाया गया। (107-112)

इकतराबा" 17	सत्ररहवाँ पारा\ जुज़. का संक्षिप्त परिचय	सूरत अल-हज

सूरत अल-ह.ज **SURAH AL-HAJJ**		
The Pilgrimage	Hajj	हज
“Place of Revelation” रहस्योद्घाटन का स्थान - मदीना		

- हज सूरह मक्की और मदनी मुश्तरकाह सूरत है :
    - इस सूरह में, ईमान, तौहीद, चेतावनी, भय, पुनरुत्थान और प्रकाशन में जजमेंट डे का दृश्य है, जो मक्का सूरह की शैली प्रस्तुत करता है।
    - फिर ज़रूरत क वक़्त, लड़ने की इजाज़त, हज के नियम और मार्गदर्शन, अल्लाह की राह में जिहाद का काम। जो मदनी होने का सबूत प्रमाण देता है ।

“few objective"कुछ उद्देश्य"

- राष्ट्र निर्माण में हज की क्या भूमिका है, यही इस सूरह का लक्ष्य है.
- इस सूरह में कई विषयों का उल्लेख किया गया है, उदाहरण के लिए: पुनरुत्थान, जिहाद और पूजा

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक (अब्द अल-अज़ीज़ अल-शेख द्वारा लिखित अराफा के व्यापक उपदेश) को पढ़ें। (جامع خطب عرفة لعبد العزيز آل الشيخ)

- इस सूरह की विशेषता यह है:

    (1) उनकी कुछ आयतें मदीना में और कुछ मक्का में नाज़िल हुईं।

    (2) उनकी कुछ आयतें सुबह और कुछ रात में नाज़िल हुईं।

    (3) उनकी कुछ आयतें यात्रा के दौरान और कुछ सभ्य क्षेत्र में नाज़िल हुईं 2

- इसमें बताया गया है कि जिस तरह इंसान सारे कपड़ों से अलग होकर एहराम पहनता है, उसी तरह उसे दुनिया से अलग होकर तकवा अपनाना चाहिए।

मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

.

- इसमें उस समय का उल्लेख है जब मुसलमान अविश्वासियों क़ुरैश के उत्पीड़न से बचने की कोशिश कर रहे थे। मक्का की जिंदगी से पलायन का जिक्र मिलता है. यहां तक कि मुसलमान भी मदीना में बचाव के तौर पर छूट दिए जाने के इन चरणों का जिक्र करते हैं।
- इस सूरह में मक्का के अंतिम अध्याय और मदीना के पहले अध्याय का उल्लेख किया गया है, जिसके कारण इस बात पर असहमत हैं कि यह सूरह मक्का है या मदनी।
- सूरह इब्राहिम से लेकर सूरह हज तक, अधिकांश सूरहों में इब्राहिम (PBHU) का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उल्लेख है।
- सूरह इब्राहिम में काबा की नींव बनाने की घटना का वर्णन किया गया है।

(अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर क़ुर्तुबी जिल्द १२ सफ़्हा ३ पढ़ें

- सूरह नहल में गंभीर परीक्षणों में इक़ामा तौहीद और उम्माह वहीदा का प्रमाण।
- सूरह नबी इसराइल। जो क़ौम बनी इसराइल है वह आपकी पीढ़ी से आई है।
- सूरए कहफ में बनी इसराइल की कई घटनाओं का जिक्र किया गया है।
- सूरह मरियम में बनी इसराइल की घटनाओं का जिक्र है।
- सूरह अंबिया - पैगम्बरों के संयुक्त मिशन का उल्लेख किया गया है।
- सूरह हज में हज का इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) से गहरा संबंध है। (واذن في الناس بالحج)

यूनिट नंबर 8:

सत्तरहवाँ पारा सूरह अल-हज्ज की आयत 1 से आयत 2 में महान भूकंप के बारे में बताया गया था और कहा गया था कि महान भूकंप पुनरुत्थान का भूकंप है और कहा गया था कि यह वह दिन है जब दूध पिलाने वाली मां बच्चे भूल जाएगी| उसके बाद अल्लाह का अज़ाब सुनाया गया.

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन की भयावहता की गंभीरता और अल्लाह के पुनरुत्थान के लिए तर्क (1-7)

यूनिट नंबर 9:

सत्तरहवाँ पारा सूरह नंबर 22 की सूरत अल- हज्ज, आयत 3 से आयत 4 में बताया जा रहा है कि कुछ लोग अल्लाह के बारे में बात करते हैं, जबकि उन्हें इसके बारे में पता नहीं है, विद्वानों ने कहा कि यह आयत नज़्र बिन हरिथ की तरफ इशारा करती है, यह व्यक्ति हमेशा संदिग्ध रहता था वह बहुत वाक्पटु था और कहा करता था कि जब लोग कब्र में सड़ जाते हैं और कब्र में दो-चार हड्डियाँ शेष रह जाती हैं तो वे कैसे पुनर्जीवित हो उठेंगे, इस प्रकार वह लोगों के मन में शंका उत्पन्न कर देता था।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन की भयावहता की गंभीरता और अल्लाह के पुनरुत्थान का प्रमाण (1-7)

यूनिट नंबर 10 :

सत्रहवाँ पारा सूरह अल-हज्ज, सूरह नंबर 22, आयत नंबर 5 से आयत नंबर 7 तक, " मृत्यु के बाद पुनरुत्थान ", का विवरण देता है और उदाहरणों के माध्यम से इसकी व्याख्या करता है।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- क़यामत की भयावहता की गंभीरता और अल्लाह के पुनरुत्थान के लिए तर्क (1-7)

यूनिट नंबर 11:

सत्रहवाँ पारा सूरह अल-हज्ज की आयत 8 से आयत 23 तक तौहीद, पैग़म्बरी और अनुयायियों तथा अनुयायियों के विरोधियों का उल्लेख किया गया है, इसमें अरबों के अलावा अन्य राष्ट्रों का भी उल्लेख किया गया है, उदाहरण के लिए: यहूदियों और ईसाइयों, जादूगरों, सबिय का भी उल्लेख किया गया है जो तारा उपासक थे।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय

- मुशरिकों का झगड़ा, मुनाफ़िकों की इबादत, बंदों और सबके बीच अल्लाह का हुक्म

  जीव अल्लाह को सज्दा करते हैं (8-18)।
- क़यामत के दिन की भयावहता की गंभीरता और मृत्यु के बाद पुनरुत्थान पर अल्लाह की शक्ति (17-19)
- काफ़िरों और उनकी सज़ा, ईमानवालों और उनके इनाम का वर्णन (24-19)

यूनिट नंबर 12 :

सत्ररहवाँ पारा,सूरह अल-हज्ज की आयत 24 से आयत 37 तक में कहा गया है कि हर किसी की नियति अलग-अलग होगी, जो लोग आज्ञा मानेंगे उन्हें सबसे अच्छा इनाम दिया जाएगा, और जो अवज्ञा करेंगे उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा उनकी अवज्ञा के लिए और किसी के साथ कोई अन्याय नहीं किया जाएगा।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- मस्जिदे हरम और मुश्रिकों को इससे रोकना, उन्हें अल्लाह की राह से रोकना और हज करना, (25-29)
- अल्लाह के संस्कारों और पवित्र चीजों का सम्मान करने, बहुदेववाद के नुकसान और वध के समय अल्लाह का नाम लेने का आदेश (30-37)।

यूनिट नंबर 13 :

सत्ररहवाँ पारा , सूरह अल-हज्ज, सूरह नंबर 22, आयत नंबर 38 से आयत नंबर 41 तक इस्लाम के संस्कारों की महानता का वर्णन किया गया है और इसमें अल्लाह के महत्वपूर्ण और विशेष संकेतों के बारे में बताया गया है।

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- ईमानवालों द्वारा अल्लाह की रक्षा, उनकी सहायता, उसकी विशेषताओं का उल्लेख और पहली बार लड़ने की अनुमति (38-41)

यूनिट नंबर 14 :

सत्ररहवाँ पारा सूरह अल-हज्ज,की आयत 42 से आयत 48 तक में ईमानवालों को सांत्वना दी गई है और अविश्वासियों और बहुदेववादियों से कहा गया है कि अल्लाह की सजा किसी भी रूप में आ सकती

है, नूह अलैहिस्सलाम के लोगों की कहानियां , समुद, लूत के लोग, आद के लोग, इब्राहीम के लोग, मदयन के लोग और मूसा (अलैहिमस्सलाम) की कहानियाँ बताई गईं।

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- पिछले राष्ट्रों के विनाश और उनके दूतों के इनकार, पैगंबर के मुहीम, मूमिनीन और काफ़िर का अंजामं (42-51)

यूनिट नंबर 15:

सत्तरहवाँ पारा,सूरह अल-हज्ज, सूरह नंबर 22 की आयत 49 से आयत 60 में कहा जा रहा है कि पिछली कौमों ने पैगम्बरों और अल्लाह की किताब को झुठलाया और घाटे में पड़ गईं, और अब बहुदेववादी मक्का और कुरैश के काफ़िर भी इसी राह पर चल कर नुकसान उठाने वाले हैं और कहा गया कि ईमान वाले और काफ़िर बराबर नहीं हो सकते।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- पैगम्बर का अभियान (49-50)
- विश्वासियों और अविश्वासियों का अनजाम (51-56)
- पैगंबरों के संबंध में शैतान की स्थिति और उसके कारण लोगों का विश्वासियों और अविश्वासियों में विभाजन और उनमें से प्रत्येक का अंत, अल्लाह के रास्ते में प्रवेश करने वालों का इनाम, दैवीय शक्ति की अभिव्यक्ति और उसकी श्रेष्ठता(52-68).

यूनिट नंबर 16 :

सत्रहवाँ पारा,सूरह अल-हज्ज, की आयत 61 से आयत 66 तक में कहा गया है कि वास्तविक जीवन " मृत्यु के बाद पुनरुत्थान" का महत्व और उसकी उपयोगिता बताई जा रही है और " मृत्यु के बाद पुनरुत्थान " के प्रति प्रोत्साहन दिया जा रहा है"।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

पैगंबरों के संबंध में शैतान की स्थिति और उसके कारण लोगों का विश्वासियों और अविश्वासियों में विभाजन और उनमें से प्रत्येक का अंत, अल्लाह के रास्ते में प्रवेश करने वालों का इनाम, दैवीय शक्ति की अभिव्यक्ति और उसकी श्रेष्ठता (57-68)

यूनिट नंबर 17 :

सत्रहवाँ पारा,सूरह अल-हज्ज, सूरह नंबर 22 की आयत 67 से आयत 76 तक विश्वास करने वाले

और काफ़िर और मुनाफ़िक की प्रतिक्रिया में जो अंतर पाया जाता है उसे बताया गया है और इस अंतर को स्पष्ट रूप से समझाया जा रहा है और एक उदाहरण देकर समझाया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों के विरुद्ध बहस में ईश्वरीय शिक्षाएँ, उन देवताओं के उदाहरण जिन्हें अल्लाह के अलावा ईश्वर के रूप में लिया गया, विश्वासियों के लिए ईश्वरीय शिक्षाएँ (67-78)।

यूनिट नंबर 18 :

सत्रहवाँ पारा,सूरह अल-हज्ज, की आयत 77 से आयत 78 तक में " मृत्यु के बाद पुनरुत्थान " से इनकार करने वालों का जिक्र किया जा रहा है और उनमें पाई जाने वाली खामियों का वर्णन किया जा

रहा है, वे उदाहरणों से सीख रहे हैं, न कि भयानक सजाओं से पिछले राष्ट्रों, और बहुदेववादियों के बारे में कहा गया था कि बहुदेववादी कमजोर और अज्ञानी हैं, और वे भी जिनसे वे पूछ रहे हैं वह भी कमजोर हैं.

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों के विरुद्ध बहस में ईश्वरीय शिक्षाएँ, उन देवताओं के उदाहरण जिन्हें अल्लाह के अलावा ईश्वर माना जाता था, विश्वासियों के लिए ईश्वरीय शिक्षाएँ (67-78)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

قد أفلح

18

ATHARWAN PAARA (JUZ) "قد أفلح "KA MUKHTASAR TAAARUF

अठारहवां पारा (भाग) " قد أفلح " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय |

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

क़द अफलाहा 18	अठारहवाँ पारा\ जुज़. का संक्षिप्त परिचय	सूरत अल-मुमिनुन

अठारहवाँ पारा\ जुज़. का संक्षिप्त परिचय
“parah 18th – qad”aflaha क़द अफलाहा"

अठारहवाँ पारा को विद्वानों ने 22 इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:

पारा संख्या 18 "क़द अफ़लाह" के छंदों और विषयों का इकाइयों के अनुसार वितरण।			
यूनिट	आयत		इकाइयों
सूरत अल-मुमिनुन			
यूनिट नंबर: 1	1	11	विश्वासियों के गुणों का वर्णन |
यूनिट नंबर: 2	12	22	एकेश्वरवाद के पक्ष में तर्कों की व्याख्या, मनुष्य के जन्म की अवस्थाओं का उल्लेख, आकाश की उत्पत्ति तथा आकाश से जल बरसने का वृत्तान्त।
यूनिट नंबर: 3	23	52	दूतों पर विश्वास करने की कहानी, नूह (अलैहिस्सलाम) की कहानी, नूह (अलैहिस्सलाम) के जहाज़ की कहानी, और तूफान की गति और थमने का उल्लेख किया गया है, मूसा (अलैहिस्सलाम), हारून (अलैहिस्सलाम) और ईशा (अलैहिस्सलाम) की कहानी, और आद और समूद की कहानियों का उल्लेख किया गया है।
यूनिट नंबर: 4	53	78	कलह के कारणों व कारणों का वर्णन तथा उनके विषय में चेतावनियों का उल्लेख |
यूनिट नंबर: 5	79	98	अल्लाह तआला की एकता और प्रभुता का बयान।

यूनिट नंबर: 6	99	118	पुनरुत्थान के दृश्यों का वर्णन.
			सूरह अल-नूर
यूनिट नंबर: 7	1	3	व्यभिचार के नियमों और समस्याओं के साथ-साथ दंड और सीमाओं की व्याख्या।
यूनिट नंबर: 8	4	5	हद अल-क़ज़फ़ और बदनामी के फैसलों और समस्याओं की व्याख्या।
यूनिट नंबर: 9	6	11	लहन के आदेशों और समस्याओं की व्याख्या।
यूनिट नंबर: 10	12	26	हदीसातुल इफ्क की घटना का वर्णन [उम्म अल-मुमिनीन आयशा को कैसे बदनाम किया गया इसका विवरण बताते हुए]।
यूनिट नंबर: 11	27	29	घरों में प्रवेश करने का शिष्टाचार.
यूनिट नंबर: 12	30	31	स्त्री-पुरुषों को आँखें झुकाकर तथा आँखें नीची करके चलने की आज्ञा का वर्णन |
यूनिट नंबर: 13	32	34	विवाह के लिए प्रेरणा का कथन.
यूनिट नंबर: 14	35	40	विश्वास को प्रकाश और अविश्वास को अंधकार बताया गया है।
यूनिट नंबर: 15	41	46	अल्लाह की महिमा और प्रभुत्व के लक्षणों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 16	47	54	पाखंडियों का विश्वास के प्रकाश से लाभ न होने का कथन |
यूनिट नंबर: 17	54	57	आज्ञापालन से धर्म और संसार के लाभ का वर्णन |
यूनिट नंबर: 18	58	60	गृह प्रवेश के नियम एवं समस्याओं का कथन |

यूनिट नंबर: 19	61	-	रिस्तेदारो का खाने पिने का
यूनिट नंबर:20	62	64	अल्लाह के पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि-व-सल्लम) के प्रति शिष्टाचार और सम्मान का कथन।
सूरह अल फुरकान			
यूनिट नंबर:21	1	3	अल्लाह तआला की विशेषताओं, यानी सच्चे देवताओं और झूठे देवताओं का वर्णन किया गया है।
यूनिट नंबर:22	4	20	काफिर कुरैश और मक्का के बहुदेववादियों के संदेह और आपत्तियों का उत्तर।

सूरत अल-मुमिनुन SURAH AL-MUMINOON		
The belivers	Mumineen	मुमिनीन
“palace of revelation MAKKAH” रहस्योद्घाटन का स्थान मक्का		

“Few objectives"कुछ उद्देश्य"

- विश्वासियों और अविश्वासियों के गुणों में तुलना।
- इस सूरह में पूरा प्रमाण और व्याख्या है। इस सूरह में विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच का अंतर स्पष्ट कर दिया गया।
- .जो लोग समृद्ध होते हैं और जो समृद्ध नहीं होते हैं उनका उल्लेख, शुरुआत "क़द अफलाह अल-मुमिनुन" है और अंत "अन्ह ला याफलाह अल काफ्रुन" है।

मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

पिछली सूरा में लोगों तक सत्य पहुंचाने के प्रयास के महत्व को सिखाया गया है, जो एक कर्तव्य है। यह सूरा उन लोगों की विशेषताओं का वर्णन करता है जो सत्य की गवाही देने का कर्तव्य निभाते हैं।

यूनिट नंबर 1 :

सूरह अल-मुमिनुन के अठारहवें अध्याय में, सूरह नंबर 23 की आयत 1 से आयत 11 में मोमीनूः के सिफ़त बताई गई है

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- विश्वासियों की विशेषताओं और उनके इनाम का विवरण(1-11)

यूनिट नंबर 2 :

अठारहवें पारा सूरह अल-मुमिनुन, सूरह नंबर 23 की आयत 12 से आयत 22 तक, एकेश्वरवाद के प्रमाणों को समझाया गया है, और मनुष्य के जन्म के चरणों को समझाया गया है, फिर आसमान के जन्म के बारे में और आसमान से बरस रहे पानी का विवरण दिया गया है.

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- ब्रह्मांड में दैवीय शक्ति की अभिव्यक्ति, मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की पुष्टि और अल्लाह का पुरस्कार (12-22)

यूनिट नंबर 3 :

अठारहवें पारे, सूरह अल-मुमिनुन, सूरह नंबर 23 की आयत 23 से आयत 52 तक, दूतों पर विश्वास करने के बारे में बताया गया है, इसके बाद नूह(अलैहिस्सलाम) की कहानी सुनाई गई है और उनकी मृत्यु का उल्लेख किया गया है और नूह (अलैहिस्सलाम) के तूफान का उल्लेख किया गया है उसके बाद, मूसा (अलैहिस्सलाम), हारून (अलैहिस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) की कहानी और आद और समूद की कहानियों की ओर इशारा किया गया है।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- नूह(**अलैहिस्सलाम**), हूद(अलैहिस्सलाम), मूसा(अलैहिस्सलाम), हारून(अलैहिस्सलाम) की बहन और ईसा (अलैहिस्सलाम) की कहानियाँ सुनाई जाती हैं (23-50)।
- प्रेरितों के लिए शिक्षाओं और उनके विश्वास और आह्वान की एकता और प्रेरितों के बाद लोगों के मतभेदों का उल्लेख (56-51)

यूनिट नंबर 4

अठारहवें पारा सूरह अल-मोमीनुन, सूरह नंबर 23 की आयत 53 से आयत 78 तक, कहा गया है कि पैगम्बरों के भेजने के बावजूद लोग विभाजन में क्यों शामिल होते हैं और इसके कारणों को समझाया गया है और इसके बाद जो लोग अल्लाह की आयतों को झुठलाते हैं, उन्हें सावधान कर दिया गया है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- पैगम्बरों के लिए शिक्षाओं और उनके विश्वास और आह्वान की एकता और पैगम्बरों के बाद लोगों के मतभेदों का उल्लेख (56-51)।

- ईमानवालों की विशेषताएँ और अविश्वासियों के लक्षण, अविश्वासियों के कार्य और वईद का उल्लेख (57-77)

यूनिट नंबर 5:

अठारहवें पारा सूरह अल-मोमोनुन, सूरह नंबर 23 की आयत 79 से आयत 98 तक, अल्लाह् ताला की एकता और प्रभुत्व को उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया है।

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- ईश्वरीय शक्ति की कुछ अभिव्यक्तियाँ, मृत्यु के बाद मृतकों के पुनरुत्थान को नकारने के लिए बहुदेववादियों की अस्वीकृति और अल्लाह् की एकता की पुष्टि (78-92)
- बहुदेववादियों के परलोक को नकारने का डनड और एकेश्वरवाद की पुष्टि (92-81)
- पैगंबर के लिए दिव्य शिक्षाएं, और मृत्यु और पुनरुत्थान के दिन मनुष्य के पश्चाताप के कुछ दृश्य (93-118)।

यूनिट नंबर 6 :

अठारहवें पारा सूरह अल-मुमोनुन, सूरह नंबर 23 की आयत 99 से आयत 118 तक, पुनरुत्थान के दिन के विभिन्न दृश्यों के बारे में बताया गया था और कुछ लोगों के भ्रम का उल्लेख किया गया कि वे विश्वास करते थे उनका मानना है कि पुनरुत्थान के दिन उन्हें दूसरा मौका दिया जाएगा।

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- पैगंबर के लिए दिव्य शिक्षाएं, और मृत्यु के समय मनुष्य का पछतावा क़यामत के दिन के कुछ दृश्य (93-118)

क़द अफलाहा 18	अठारहवाँ पारा\ जुज़. का संक्षिप्त परिचय	सूरत अल- नून

सूरह अल-नूर		
The Light	Roshni	रोशनी
Place of Revelation –MADINAH" "रहस्योद्घाटन का स्थान-मदीना"		

"few objective" "कुछ उद्देश्य"

- व्यक्ति एवं समाज के लिए नैतिक प्रशिक्षण एवं सामूहिक आचरण का वर्णन किया गया।
- ईश्वर का कानून समाज का प्रकाश है। इस सूरह में बताया गया है कि अल्लाह वह नूर है से जिस ब्रह्माण्ड प्रकाशित है।
- अल्लाह प्रकाश का निर्माता है (इब्न अब्बास)। नूर अल-मुनवर के अर्थ में, प्रकाश का निर्माता, अल्लाह प्रकाश का निर्माता है।
- यह एक मदनी सूरह है जिसमें सामान्य रूप से सामाजिक शिष्टाचार और विशेष रूप से घरेलू शिष्टाचार का उल्लेख किया गया है।

मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

- सूरह मोमिनुन में व्यक्तिगत आदेशों के कार्यान्वयन का उल्लेख है जबकि सूरह नूर में सामूहिक आदेशों के कार्यान्वयन का उल्लेख है।

- सूरह मोमिनुन में सिफ़ाते हमीदा की विशेषताओं को व्यक्तिगत अच्छाई के रूप में वर्णित किया गया है, सूरह नूर में इस अच्छाई को एक सामूहिक रूप, एक प्रणाली, एक सरकार, कानून और व्यवस्था, और व्यक्तिगत शक्ति के साथ प्रवर्तन, सभी धर्म अच्छे हैं, की बात की गई है। लेकिन इस्लाम अच्छाई के कार्यान्वयन के तरीके भी दिखाता है।
- वास्तव में, निफाज़ के माध्यम से शांति स्थापित की जा सकती है और खुम्सा आवश्यकताओं को भी प्राप्त किया जा सकता है: 1- संपत्ति का संरक्षण, 2- जीवन का संरक्षण, 3- सम्मान का संरक्षण, 4- बुद्धि और वंश का संरक्षण, 5- धर्म का संरक्षण।
- पुरुषों को सूरह माइदा सिखाएं और महिलाओं को सूरह नूर सिखाएं। (मुजाहिद, अल्लाह उस पर रहम करे) . . अपनी महिलाओं को सूरह निसा, सूरह अहज़ाब और सूरह नूर सिखाओ। (उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहो अन्हो

यूनिट नं 7:

अठारहवें पारा, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24 की आयत नंबर 1 से आयत नंबर 3 तक, व्यभिचार के संबंध में नियमों और समस्याओं का वर्णन किया गया है और व्यभिचार की सजा और सीमाओं से संबंधित समस्याओं का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

व्यभिचार, क़ज़्फ़ और श्राप की आज्ञाओं की व्याख्या की गई है (1-10)।

यूनिट नंबर 8:

अठारहवें पारा सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24 की आयत 4 से आयत 5 तक, "हद अल-क़ज़्फ़" की निंदा करने वालों की समस्याएं और उनकी सज़ा और हद के फैसलों और समस्याओं का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- व्यभिचार, क़ज़फ़ और शाप देने के आदेशों की व्याख्या की गई है (1-10)।

यूनिट नंबर 9 :

- अठारहवें पारा, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24, आयत नंबर 6 से आयत नंबर 11 में, लेआन से संबंधित नियमों और समस्याओं का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- व्यभिचार, क़ज़फ़ और श्राप की आज्ञाओं की व्याख्या की गई है (1-10)।

यूनिट नंबर 10:

अठारहवां पारा, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24, आयत नंबर 12 से आयत नंबर 26, " (हदीसैटुल इफ्क) अल- इफ्क की घटना" यानी, कि उम्म अल-मुमिनीन आयशा (रज़ियल्लाहो अन्हो)की बदनामी हुई थी , विस्तार से वर्णित है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उम्म अल-मोमिनीन आयशा (रज़ियल्लाहो अन्हो) को बदनामी से बरी कर दिया है।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- " (हदीसतु'l-इफ़्क) अल- इफ्क की घटना और आख़िरत में क़ज़्फ़ की सज़ा का ज़िक्र और घर में दाख़िल होने के तरीक़े (11-29)।

यूनिट नंबर 11:

अठारहवें पारे, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24, आयत नंबर 27 से आयत नंबर 29 तक, "अदाब अल-इस्तज़ान" घरों में प्रवेश करने के शिष्टाचार का वर्णन करता है।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- " (हदीसतु'l-इफ़्क) अल- इफ्क की घटना और आख़िरत में क़ज़्फ़ की सज़ा का ज़िक्र और घर में दाख़िल होने के तरीक़े (11-29)।

यूनिट नंबर 12:

अठारहवाँ पारा, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24, ग़ज़ बसर की आयत 30 से आयत 31 तक "अर्थात पुरुषों और महिलाओं के लिए आँखें झुकाकर और आँखें नीची करके चलने के आदेश का वर्णन है।"

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

पुरुषों और महिलाओं को अपनी दृष्टि की रक्षा करने और अपने श्रृंगार को छिपाने की आज्ञा देना (30-31)।

यूनिट नंबर 13:

अठारहवें पारे, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24 की आयत नंबर 32 से आयत नंबर 34 तक, खासकर उन लोगों को शादी करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है जिनकी शादी नहीं हुई है [निकाह के विषय पर मेरी किताब भी आचुकी है] .

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- पुरुषों और महिलाओं के लिए विवाह का क्रम और दासों के लिए स्कूली शिक्षा का क्रम और प्रकाश का उदाहरण समझाया गया है (32-35)।

यूनिट नंबर 14:

अठारहवें पारा सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24 की आयत 35 से आयत 40 तक, विश्वास को प्रकाश के रूप में परिभाषित किया गया है और अविश्वास को अंधेरे के रूप में परिभाषित किया गया है।

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- मस्जिदें बनाने वालों के गुणों और उनके इनाम का वर्णन, काफिरों के लिए उदाहरण और उनके दंड का वर्णन (40-36)।

यूनिट नंबर 15

अठारहवें पारे, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24, आयत नंबर 41 से आयत नंबर 46 तक, अल्लाह की महानता के प्रभुत्व के लक्षण वर्णित हैं।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- ब्रह्मांड में अल्लाह की शक्ति की अभिव्यक्ति और अल्लाह की आयतों के संबंध में पाखंडियों की स्थिति का उल्लेख (41-50)।

यूनिट नंबर 16:

अठारहवें पारा सूरह अल-नूर सूरह नंबर 24 की आयत 47 से आयत 54 तक बताया जा रहा है कि ईमान की रोशनी से मुनाफिक लोग ईमान की रोशनी से लाभ नहीं उठा पाएंगे।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- ब्रह्मांड में अल्लाह की शक्ति की अभिव्यक्ति और अल्लाह की आयतों के संबंध में पाखंडियों की स्थिति का उल्लेख (41-50)।
- विश्वासियों द्वारा अल्लाह के आदेश का पालन करने और पाखंडियों द्वारा अल्लाह के आदेश को अस्वीकार करने का बयान (51-53)।

यूनिट नंबर 17:

अठारहवाँ पारा, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24, आयत नंबर 55 से आयत नंबर 57 तक कि लोग अल्लाह और अल्लाह के पैगंबर का पालन करेंगे, उन्हें इस दुनिया और उसके बाद सबसे अच्छा इनाम दिया जाएगा।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

अल्लाह की सुन्नत उसके ईमान वाले और अविश्वासी बंदों में। (55-57)

यूनिट नंबर 18

अठारहवें पारा, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24, आयत नंबर 58 से आयत नंबर 60 तक, घरों में प्रवेश करने के नियमों और समस्याओं का वर्णन किया गया है।

"इकाई संख्या 18 के कुछ विषय"

- घर में प्रवेश करने और भोजन करने के शिष्टाचार का वर्णन (58-61)

यूनिट नंबर 19:

18वें पारे सूरह अल-नूर, आयत 24, आयत 61 में बताया गया है कि अपने करीबी रिश्तेदारों के पास जाना और उनके साथ खाना-पीना कोई गुनाह नहीं है।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

घर में प्रवेश करने और भोजन करने के शिष्टाचार का वर्णन (58-61)

यूनिट नंबर 20:

अठारहवाँ पारा, सूरह अल-नूर, सूरह नंबर 24, आयत नंबर 62 से आयत नंबर 64 तक, ईमानवालों को बताया जा रहा है कि उन्हें अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम के साथ कैसे और किस तरह का व्यवहार करना चाहिए.

"यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

पैगम्बर (सल्ल-लाहो-अलैहि-व-सल्लम.) के साथ ईमानवालों का व्यवहार, अल्लाह का स्वामित्व, उसका ज्ञान और उसकी शक्ति. (62-64)

क़द अफलाहा 18	अठारहवाँ पारा\जाज. का संक्षिप्त परिचय	सूरत अल-फुरकान

सूरह अल-फुरकान		
The Criterion	Haq o batil me farq karne wali	सही और गलत के बीच अंतर करना
Place of Revelation –MADINAH” "रहस्योद्घाटन का स्थान-मदीना”		

"कुछ उद्देश्य"

- सच्चाई को झुठलाने और आपत्तियों के साथ कुरान की सच्चाई की पुष्टि करने के बुरे परिणाम
- इस सूरह का नाम फुरकान इसलिए रखा गया है क्योंकि जो किताब अवतरित हुई है वह सत्य है झूठ औरअसत्य के बीच अंतर कर रहा है।
- इस सूरह का फोकस इस किताब की प्रामाणिकता को स्पष्ट करना और इस किताब को नकारने वालों के बुरे भाग्य को समझाना है।
- पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल-लाहो-अलैहि-व-सल्लम.) के अनुयायी इबाद अल-रहमान हैं। '
- इबादुर रहमान के गुण:

यह पुस्तक आवश्यक पढ़े. الفرقان بين أولياء الرحمن وأولياء الشيطان (अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)

1) जो धरती पर नम्रता से चलते हैं।
2) जब अज्ञानी लोग उनसे बात करने लगते हैं तो वे कहते हैं, " सलाम।"
3) जो लोग सजदे में और अपने रब के सामने खड़े होकर रात बिताते हैं।
4) नरक की सज़ा के डर से वे अपने रब से प्रार्थना करते हैं कि वह उसे उनसे दूर कर दे।
5) जो खर्च करते समय भी न तो फिजूलखर्ची करते हैं और न ही कंजूस, बल्कि दोनों के बीच संयमित होकर खर्च करते हैं।
6) वे अल्लाह की शुद्ध इबादत करते हैं, उसके साथ किसी और चीज़ को नहीं जोड़ते।
7) जिस व्यक्ति को अल्लाह ने क़त्ल करने से मना किया है वह बजुज़ हक़ के क़त्ल नहीं करते.
8) वे व्यभिचार के दोषी नहीं हैं. वे अपने गुप्तांगों को हराम से बचाते हैं।
9) वे झूठी गवाही नहीं देते.
10) जब उनका सामना किसी बेतुकी चीज़ से होता है, तो सराफत से गुज़र जाते हैं।
11) जब उन्हें उनके रब की आयतें सुनाई जाती हैं, तो वे उन पर अन्धे और बहरे नहीं पड़ते। बल्कि वे इन आयतों के सामने अपना सिर झुका देते हैं।
12) वे अपनी और अपने परिवार की चिन्ता करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हे हमारे पालनहार! हमें अपनी पत्नियों और बच्चों से आँखों की ठंडक दो और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना ।

मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

- इस और निम्नलिखित सूरह में, क़ुरैश के पैग़म्बरी और आख़िरत के बारे में जो संदेह थे, उनका उत्तर दिया गया है।

नोट 1:- सूरह अल-फुरकान, सूरह अल- शूरा, सूरह अल-नमल और सूरह अल-क़सस इन चार सूरहों में अल्लाह ने पैगंबर को सांत्वना दी है। मक्का में सत्य और असत्य अपने चरम पर थे, तथा असत्य के लोगों की ओर से हमले भयंकर रूप से जारी थे। इन कठिन परिस्थितियों में ये सूरहें सांत्वना के लिए उतारी गई थीं

नोट 2:- सूरह अल- शूरा, सूरह अल-नमल और सूरह अल- क़सस नुज़ूली क्रम में और मुसहफ क्रम में सहमत हैं।

- पैगंबर की हिफाजत के लिए सूरह फुरकान पढ़ना जरूरी है.
- इस सूरह में एकेश्वरवाद के निमंत्रण और चेतावनी और सज़ा की और व्याख्या है।
- इस सूरह में चमत्कारों के माध्यम से पैग़म्बरी का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। चमत्कारों का प्रकार:

    1) बयानी चमत्कार। (25:32)
    2) वैज्ञानिक ज्ञान (25:53)
    3) इजाज़ ग़ैबी (पैगम्बरों और राष्ट्रों का उल्लेख)
    4) इजाज़ तशरीई (25:63)

यूनिट नंबर 21 :

अठारहवें पारा, सूरह अल-फुरकान, सूरह नंबर 25 की आयत 1 से आयत 3 तक, अल्लाह के गुणों, यानी सच्चे देवताओं और झूठे देवताओं का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- क़ुरआन और उसका अभियान तथा बहुदेववादियों का ख़ारिज जो एकता, क़ुरआन और रसूल को कोसते हैं (1-10)

यूनिट नंबर 22:

अठारहवें पारे, सूरह् अल-फुरकान, सूरह् नंबर 25, आयत नंबर 4 से आयत नंबर 20 तक, कुरैश के अविश्वासियों और मक्का के बहुदेववादियों के संदेह् और आपत्तियों के जवाब दिए जा रहे हैं, जो उन्होंने पैगंबर (सल्ल-लाहो-अलैहि-व-सल्लम.), और उसके साथी के खिलाफ उठाए थे।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- कुरान और उसका अभियान और बहुदेववादियों की अस्वीकृति जो वहदानियत (एकता), कुरान और पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम) को शाप देते हैं (1-10)
- काफ़िरों का मृत्यु के बाद पुनरुत्थान से इनकार, क़यामत के दिन उनका इनाम और पवित्र लोगों का इनाम (11-16)
- पुनरुत्थान के दिन बहुदेववादियों और उनके अनुयायियों को सज़ा, पैग़म्बरों की सच्चाई (20-17)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

وقال الذين لا يرجون

19

UNNISWAN PAARA (JUZ) " وقال الذين لا يرجون "KA MUKHTASAR TAAARUF

उन्नीसवां पारा (भाग) " وقال الذين لا يرجون " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय।

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

	उन्नीसवें पारा/जांज़ का संक्षिप्त परिचय	सूरह अल-फुरकान
उन्नीसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय।		
“parah 19th –Wa Qalallazina"पारा 19वाँ - वा क़लल्लाज़ीना" जो आपकी रक्षा करते हैं		

उन्नीसवें **पारा** को विद्वानों ने 23 इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:

पारा संख्या 19 "وقال الذين " के छंदों और विषयों का इकाइयों के अनुसार वितरण।			
यूनिट	आयात		
सूरह अल-फुरकान			
यूनिट नंबर: 1	21	29	पैगम्बरों और सन्देशवाहकों के भेजने का वर्णन और उनके इन्कार करने पर दण्ड का उल्लेख।
यूनिट नंबर: 2	30	40	अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अल्लाह सर्वशक्तिमान से शिकायत कि मेरी उम्मत ने कुरान की उपेक्षा की है।
यूनिट नंबर: 3	41	44	काफिरों और बहुदेववादियों द्वारा पैगंबर का मज़ाकिया उल्लेख, जैसा कि पिछले राष्ट्र ने किया था, उन लोगों का वर्णन है जिन्होंने अपनी इच्छाओं को अपना भगवान बना लिया है।
यूनिट नंबर: 4	45	55	आप(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) शिक्षा की पैग़म्बरओं के प्रमाणों की व्याख्या।
यूनिट नंबर: 5	56	62	पैग़म्बरों को आमन्त्रण देने का तरीक़ा तथा काफ़िरों की बाधाओं का वर्णन।
यूनिट नंबर: 6	63	77	पैगम्बरों के मिशन के उद्देश्यों का एक विवरण।
सूरत अल-अशुअरा			

यूनिट नंबर: 7	1	9	पवित्र कुरान का परिचय, एकेश्वरवाद का परिचय और अल्लाह के गुणों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 8	10	68	मूसा (अलैहिस्सलाम) की कहानी का विस्तृत और संपूर्ण विवरण।
यूनिट नंबर: 9	69	104	इब्राहिम(अलैहिस्सलाम) की विस्तृत और संपूर्ण जीवनी।
यूनिट नंबर: 10	105	122	नूह (अलैहिस्सलाम) की कहानी का विस्तृत और संपूर्ण विवरण।
यूनिट नंबर: 11	123	140	हूद (अलैहिस्सलाम) की कहानी का विस्तृत और संपूर्ण विवरण।
यूनिट नंबर: 12	141	149	सालेह (अलैहिस्सलाम) नाम का विस्तृत और संपूर्ण विवरण।
यूनिट नंबर: 13	150	175	लुत (अलैहिस्सलाम) नाम का विस्तृत और संपूर्ण विवरण।
यूनिट नंबर: 14	176	191	शोएब (अलैहिस्सलाम) की कहानी का विस्तृत और संपूर्ण विवरण।
यूनिट नंबर: 15	192	227	मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की महानता, पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की उत्कृष्टताका वर्णन विस्तृत विवरण।
सूरह अन-नमल			
यूनिट नंबर: 16	1	6	सफल एवं असफल व्यक्तियों की विशेषताओं का वर्णन कीजिये।
यूनिट नंबर: 17	7	14	मूसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह की पुकार का वर्णन।
यूनिट नंबर: 18	15	19	अल्लाह तआला की रहमतों का बयान.
यूनिट नंबर: 19	20	28	सुलेमान (अलैहिस्सलाम) का रानी सबा को दावत तौहीद की प्रस्तुति का बयान।
यूनिट नंबर: 20	29	44	सुलैमान (अलैहिस्सलाम) और मालिकः सबा की रानी की घटना का अधिक विवरण।
यूनिट नंबर: 21	45	53	सालेह (अलैहिस्सलाम) की कहानी.
यूनिट नंबर: 22	54	58	लूत (अलैहिस्सलाम) की कहानी.
यूनिट नंबर: 23	59	-	एकेश्वरवाद का कथन, परलोक में पुनरुत्थान का उल्लेख, पुनरुत्थान के लक्षणों का कथन।

यूनिट नंबर 1 :

उन्नीसवें पारा सूरह अल-फुरकान, सूरह नंबर 25 की आयत 21 से आयत 29 तक, यह कहा गया है कि यह अल्लाह सर्वशक्तिमान की सुन्नत है कि वह हर युग में पैगंबर और दूत भेजता रहा है, जब पैगंबर और दूतों को इनकार कर दिया गया, उसके बाद सज़ा ज़ाहिर की गई।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- काफ़िरों और उनके धन की निंदा की गई और विश्वासियों के इनाम के बारे में बताया गया और पुनरुत्थान के कुछ दृश्यों का उल्लेख किया गया (21-29)

यूनिट नंबर 2:

उन्नीसवें पारे सूरह अल-फुरकान, सूरह नंबर 25 की आयत 30 से आयत 40 तक, यह बताया जा रहा है कि अल्लाह के पैगंबर अपने लोगों के बारे में कहेंगे: हे अल्लाह, इस लोगों ने पवित्र कुरान को त्याग दिया। जैसे कि यह अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की अल्लाह से शिकायत है, फिर पवित्र कुरान के रहस्योद्घाटन की विधि बताई गई, जिसके बाद मूसा (अलैहिस्सलाम) और हारून(अलैहिस्सलाम)। फिर नूह (अलैहिस्सलाम) और आद और समूद की कहानी और " अस हाब अल-रस" यानी कुएं के लोगों की कहानी सुनाई गई और इन राष्ट्रों को कैसे सज़ा दी गई इसका उल्लेख किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- अविश्वासियों द्वारा कुरान का परित्याग और उनकी शत्रुता, बहुदेववादियों की अस्वीकृति जिन्होंने कुरान के एक ही रहस्योद्घाटन की मांग की (30-34)।
- कुछ पैगम्बरों की उनके लोगों के साथ कहानी, मूर्तिपूजकों द्वारा पैगम्बर का उपहास, और जानवरों से तुलना (35-44)।

यूनिट नंबर 3:

उन्नीसवें पारा सूरह अल-फुरकान, सूरह नंबर 25 की आयत 41 से आयत 44 तक, यह वर्णन किया जा रहा है कि कुरैश के काफिर और मक्का के बहुदेववादी पैगंबर ((सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का मजाक उड़ाते थे। जैसा की पिछले राष्ट्रों ने अपने-अपने पैगम्बरों के साथ किया, फिर कहा गया कि कुछ लोगों ने अपनी इच्छाओं को अपना स्वामी बना लिया है। फिर कहा गया कि जो लोग अल्लाह पर विश्वास नहीं करते, उनकी हालत मवेशियों जैसी है।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- कुछ पैगंबरों की उनके लोगों के साथ कहानी, बहुदेववादियों द्वारा पैगंबर का मजाक उड़ाना और जानवरों से तुलना (35-44)।

यूनिट नंबर 4:

उन्नीसवां पारा, सूरह अल-फुरकान, सूरह नंबर 25, आयत नंबर 45 से आयत नंबर 55 तक नबुव्वत की दलीलें और पैग़म्बरी की निशानियों का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- ब्रह्मांड में अल्लाह की शक्ति और कुछ पुरस्कारों और बहुदेववादियों की स्थिति का उल्लेख

यूनिट नंबर 5:

उन्नीसवें पारे, सूरह अल-फुरकान, सूरह नं. 25, आयत नं. 56 से आयत नं. 62 में पैगंबरों के निमंत्रण की विधि का वर्णन किया जा रहा है कि वे किस प्रकार धर्म के लिए निमंत्रण का संदेश फैलाते थे। और निमंत्रण के काम में काफ़िरों द्वारा पैदा की गई रुकावटों और रुकावटों का ज़िक्र किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

ब्रह्मांड में अल्लाह की शक्ति और उसके कुछ पुरस्कारों का उल्लेख करना और बहुदेववादियों की स्थिति का उल्लेख करना (45-62)।

यूनिट नंबर 6:

उन्नीसवें पारा सूरह अल-फुरकान, सूरह नंबर 25 की आयत 63 से आयत 77 तक, पैगंबर के मिशन के उद्देश्यों का उल्लेख किया जा रहा है और इबाद अल-रहमान के अच्छे और नेक सेवकों के 2 गुणों का वर्णन किया गया है।

- इबाद अल-रहमान के गुणों का विवरण (77-63)

	उन्नीसवें पारा/ जुज़ का संक्षिप्त परिचय	सूरह अल-शुअरा

सूरह अल-शुअरा SHURAH ASH-SHU”ARAA		
The Poets	Shaer Ki jama	शेर की जमा
“place of Revelation MAKKAH” रहस्योद्घाटन का स्थान मक्का		

“Few Topics” "कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- आमंत्रण एवं उपदेश की विभिन्न शैलियों का वर्णन |
- यह सूरा दर्शाता है कि शैली समय और स्थान के अनुसार बदलती रहती है।
- अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज़माने में शायरी का तोता बोलता था, इसलिए इस्लाम   के शायरों ने बहुत अच्छा काम किया।
- इस सूरह को अल-शुअरा का नाम दिया क्योंकि इसका उल्लेख इस्लाम की कवि में है ये उन लोग के बारे में नहीं है जिन के बारे में कहा गया। وَ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ ما لا يَفْعَلُونَ बल्कि ये उन लोगों में से हैं

﴿ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ﴾

- इनकार करने वाले तर्क की मांग कर रहे हैं। उन्हें इतिहास पर विचार करना चाहिए और देखना चाहिए कि पिछले राष्ट्रों के साथ क्या हुआ था।

मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

- पिछले सूरह की तरह इस सूरह में में पैगम्बरों और कुरान की सच्चाई का विस्तार से उल्लेख किया गया है।

- सूरह फुरकान, शोअरा और नमल तीनों मक्की हैं और इन सभी का विषय कुरान की पुष्टि, रहस्योद्घाटन की पुष्टि, मैसेंजर और पैगंबर की पुष्टि है।

यूनिट नंबर 7:

उन्नीसवें पारा में सूरह अल-शुअरा के सूरह नंबर 26 की आयत 1 से आयत 9 तक, पवित्र कुरान का परिचय और एकेश्वरवाद का परिचय प्रस्तुत किया गया है और अल्लाह ताला के गुणों का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- कुरान के गुण, पैगंबर के प्रति बहुदेववादियों का रवैया, पैगंबर के चमत्कार और विश्वास न करने के लिए पैगंबर का अफसोस (1-9)

यूनिट नंबर 8:

उन्नीसवें पारा, सूरह अल-शुअरा, सूरह नंबर 26 की आयत 10 से आयत 68 तक, मूसा (अलैहिस्सलाम) की पूरी और विस्तृत कहानी का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- फिरौन, उसकी सेना और जादूगरों के साथ मूसा (अलैहिस्सलाम) का संघर्ष। (68-10)

यूनिट नंबर 9:

उन्नीसवें पैराग्राफ में सूरह अल-शुअरा के सूरह नंबर 26 की आयत 69 से आयत 104 तक इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) के नाम की पूरी विस्तृत कहानी वर्णित है।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- इब्राहिम(अलैहिस्सलाम) का अपने पिता और राष्ट्र के साथ संघर्ष (69-89)
- क़यामत के दिन के कुछ दृश्य और नर्क में मुशरिकीन पर दोषारोपण (90-104)

यूनिट नं10:

उन्नीसवें पारे, सूरह अल-शुअरा में सूरह नंबर 26 की आयत 105 से आयत 122, नूह (अलैहिस्सलाम) की पूरी और विस्तृत कहानी तक बताई गई है।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- नूह, हूद, सालेह, लूत, शुएब (अलैहिमस्सलाम) और उनके लोगों की कहानी (105-191)

यूनिट नंबर 11:

उन्नीसवां पारा, सूरह अल-शुअरा, सूरह नंबर 26 में, आयत नंबर 123 से आयत नंबर 140 तक हुद (अलैहिस्सलाम) की पूरी विस्तृत कहानी बताई गई है।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- नूह, हुद, सालेह, लूत, शुऐब(अलैहिस्सलाम) की कहानी उनके लोगों के साथ (105-191)

यूनिट नंबर 12:

उन्नीसवें पारा सूरह अल-शुअरा सूरह नंबर 26 की आयत 141 से आयत 149 तक सालेह (अलैहिस्सलाम) की पूरी विस्तृत कहानी विस्तार से वर्णित है।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- नूह, हुद, सालेह, लूत, शुऐब (अलैहिस्सलाम) की कहानी उनके लोगों के साथ (105-191)।

यूनिट नंबर 13:

उन्नीसवें पारा सूरह अल-शुअरा के सूरह नंबर 26 की आयत 150 से आयत 175 तक लूत(अलैहिस्सलाम) की पूरी विस्तृत कहानी वर्णित है।

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

नूह, हुद, सालेह, लूत, शुऐब (अलैहिमस्सलाम) की कहानी उनके लोगों के साथ (105-191)।

यूनिट नंबर 14:

शोएब (अलैहिमस्सलाम) की पूरी विस्तृत कहानी सूरह अल-शुअरा के उन्नीसवें पैराग्राफ में सूरह नंबर 26 की आयत 176 से आयत 191 तक वर्णित है।

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- नूह, हूद, सालेह, लूत, शोएब अलैहिमस्सलाम और उनके लोगों की कहानी (105-191)।

यूनिट नंबर 15:

उन्नीसवें पारा, सूरह अल-शुअरा में सूरह नंबर 26 की आयत 192 से आयत 227 तक ईश्वर के पैगंबर की महानता और उनकी उत्कृष्टता का उचित वर्णन किया गया है, इन अंतिम आयतों में उपदेश और सलाह दी गई है अनेकेश्वरवादियों को हटा दिया गया है।

“यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- पवित्र कुरान और उसके संबंध में बहुदेववादियों की स्थिति (192-212)
- पैगंबर को ईश्वरीय शिक्षा, और बहुदेववादियों को खंडन और चेतावनी (227-213)

	उन्नीसवें पारा/जांज़ का संक्षिप्त परिचय	सूरह अन-नमल

सूरह अन-नमल SHRAH AN-NAML		
The Ant	Chyonti	चींटी
“Place of Revelation MAKKAH” रहस्योद्घाटन का स्थान मक्का		

Few Topics"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- अल्लाह को याद करने से सांस्कृतिक श्रेष्ठता, अल्लाह के धर्म की उन्नति और आख़िरत की उन्नति होगी।
- सांस्कृतिक श्रेष्ठता को निम्नलिखित बिंदुओं में संक्षेपित किया गया है

1	ऊंची और ऊंची मंजिल	आयत 19
2	ज्ञान	आयत 16
3	तकनीकी	आयत 44
4	सामग्री एवं सैन्य बल	आयत 37
5	उम्माह के लोगों का उच्च विश्वास	

- सुरा सभ्यता के एक उच्च उदाहरण के साथ समाप्त होता है। यह चींटी अल्लाह की रचना है जिसमें उच्च तत्व जमा हैं जिन्हें हम गिन नहीं सकते। तो चींटियाँ अपने शरीर में गोदामों और एयर कंडीशनिंग और संकेतों को समझने के लिए संकेतों वाली एक सेना के साथ एक संगठित

राष्ट्र में रहती हैं। और उनके पास ऐसी तकनीक है जिसे हम समझ नहीं पाते हैं और वैज्ञानिक दिन-ब-दिन इस छोटे से जीव के बारे में ऐसी चीजें खोज रहे हैं जिनकी हमारा दिमाग कल्पना भी नहीं कर सकता है। इस कीट से हम सांस्कृतिक श्रेष्ठता सीख सकते हैं। जरा देखिए कि एक चींटी अपने साथियों को कैसे संबोधित करती है। उनके पास आसन्न खतरे से बचाने के लिए एक अलार्म सिस्टम है। और चींटी का यह कहना (व्हाम ला हेयरुन) इस बात का संकेत है कि चींटियाँ भी जानती हैं कि अल्लाह के अच्छे बंदे जानबूझ कर किसी पर ज़ुल्म नहीं करते। यह सुनकर सुलैमान(अलैहि व सल्लम) मुस्कुराया और चींटी की बात समझने के लिए प्रभु को धन्यवाद दिया।

- सूरह अन-नमल इस सूरह का नाम निमल रखने से संकेत मिलता है कि यह छोटा सा जीव

  सुंदरता को व्यवस्थित करने में सफल था, फिर उन इंसानों के बारे में क्या जिन्हें ज्ञान और समझ दी गई है। इसलिए मनुष्य सफल होने के अधिक हकदार हैं यदि वे सही अर्थों में मार्गदर्शन की पुस्तक से लाभ उठाते हैं
- एकेश्वरवाद के तर्कों को विभिन्न तरीकों से समझाया गया है:

1. قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ قُلِ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَٰمٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ ٱلَّذِينَ ٱصْطَفَىٰٓ ۗ ءَآللَّهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ ﴾ النمل
2. قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ أَمَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَأَنزَلَ لَكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ مَّا كَانَ لَكُمْ أَن تُنۢبِتُوا۟ شَجَرَهَآ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْدِلُونَ ﴿٦٠﴾ ﴾ النمل
3. قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ أَمَّن جَعَلَ ٱلْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَٰلَهَآ أَنْهَٰرًا وَجَعَلَ لَهَا رَوَٰسِىَ وَجَعَلَ بَيْنَ ٱلْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾ ﴾ النمل
4. قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ ٱلْأَرْضِ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾ ﴾ النمل
5. قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ أَمَّن يَهْدِيكُمْ فِى ظُلُمَٰتِ ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ وَمَن يُرْسِلُ ٱلرِّيَٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهِۦٓ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ تَعَٰلَى ٱللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٣﴾ ﴾ النمل

- قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ أَمَّن يَبْدَؤُا۟ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ وَمَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ ۗ أَءِلَٰهٌ مَّعَ ٱللَّهِ ۚ قُلْ هَاتُوا۟ بُرْهَٰنَكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿٦٤﴾ ﴾ النمل

ASKISLAMPEDIA GATEWAY FOR ISLAMIC INFORMATION

मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

1) हकीम वा अलीम का विशेष उल्लेख किया गया है, जिसका अर्थ है कि अल्लाह ज्ञान और बुद्धि से न्याय करता है।

यूनिट नंबर 16:

उन्नीसवें पारा, सूरह अल-नमल, सूरह नंबर 27 की आयत 1 से आयत 6 में सफल और असफल लोगों के गुण बताए गए हैं।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- कुरान अल्लाह द्वारा एक मार्गदर्शक, विश्वासियों के लिए एक अच्छी खबर और अविश्वासियों के लिए एक चेतावनी के रूप में अवतरित एक किताब है (1-6)।

यूनिट नंबर 17:

उन्नीसवें पारे, सूरह अल-नम्ल, सूरह नंबर 27, आयत नंबर 7 से आयत नंबर 14 तक, अल्लाह के पुकारना का वर्णन है जो अल्लाह सर्वशक्तिमान ने मूसा (अलैहिस्सलाम) पर लगाया था।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- मूसा (अलैहिस्सलाम) और उसके चमत्कारों की कहानी, सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की हुदहुद के साथ कहानी, सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की कहनी बालकिस के साथ उस के इमान लाने तक (7-44)

यूनिट नंबर 18:

उन्नीसवाँ पारा, सूरत अल-नमल, सूरह् नंबर 27 आयत नंबर 15 से आयत नंबर 19 तक दाऊद (अलैहिस्सलाम) और अल्लाह् ने सुलेमान अलैहिस्सलाम को जो नेमतें दीं उनका ज़िक्र किया गया है और उन लोगों का ज़िक्र किया जा रहा है जो अल्लाह् की नेमतों के शुक्रगुज़ार हैं।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- मूसा (अलैहिस्सलाम) और उसके चमत्कारों की कहानी, सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की कहानी हुदहुद के साथ, सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की कहनी बलकिस के साथ उस के इमान लाने तक (7-44)।

यूनिट नंबर 19:

उन्नीसवें पारा सूरह् अल-नमल, सूरह् नंबर 27 की आयत 20 से आयत 28 तक, यह बताया जा रहा है कि सुलैमान और शबा की रानी के बीच एक हजार किलोमीटर की दूरी के बावजूद, सुलेमान, (अलैहिस्सलाम) हो, ने पेशकश की शबा की रानी को दावत तौहीद कर रहे हैं, और हुदहुद का उल्लेख किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनके चमत्कारों की कहानी, हदहाद के साथ सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की कहानी, बिलकिस के साथ सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की कहानी उनके रूपांतरण तक (7-44)

यूनिट नंबर 20:

- उन्नीसवें पारे सूरह अल-नमल, सूरह नंबर 27, आयत नंबर 29 से आयत नंबर 44 तक सुलेमान (अलैहिस्सलाम) का पैगाम पहुंचाने का तरीका बताया जा रहा है, उसके बाद लोगों के सबा की रानी ने सबा की रानी से कहा, सुलेमान (अलैहिस्सलाम) को उपहार भेजा जाना चाहिए यदि वे उन्हें स्वीकार करते हैं तो उन्हें काबू में किया जा सकता है और यदि वे उपहार स्वीकार नहीं करते हैं, तो इसका स्पष्ट अर्थ होगा कि वे एक शक्तिशाली व्यक्ति हैं इसके बाद, सबा की रानी का सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के समक्ष सिंहासन प्रस्तुत किये जाने का उल्लेख मिलता है।

"यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

- मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनके चमत्कारों की कहानी, हुदहुद के साथ सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की कहानी, सुलैमान (अलैहिस्सलाम) की कहनी बलकिस के साथ उस के इमान लाने तक (7-44)।

यूनिट नंबर 21:

उन्नीसवें पारा सूरह् अल-नमल के सूरह् नंबर 27 की आयत 45 से आयत 53 तक में सालेह् (अलैहिस्सलाम) की कहानी वर्णित है।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- सालेह् और लूत (अलैहिस्सलाम) की कहानियाँ उनके लोगों के साथ (45-58)

यूनिट नंबर 22:

उन्नीसवें पारा सूरह् अल-नमल, सूरत अल-नमल, सूरह् नंबर 27 की आयत 54 से आयत 58 तक, लूत(अलैहिस्सलाम) की कहानी का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- सालेह् और लूत (अलैहिस्सलाम) की कहानियाँ उनके लोगों के साथ (45-58)

यूनिट नंबर 23:

उन्नीसवें पारे सूरत अल-नमल, सूरह् नंबर 27 की आयत 59 से आयत 66 तक, एकेश्वरवाद को तर्कों के साथ सिद्ध किया गया है और परलोक में पुनरुत्थान का उल्लेख किया गया है, जिसके बाद पुनरुत्थान के संकेतों का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 23 के कुछ विषय"

- ब्रह्मांड में दैवीय शक्ति की अभिव्यक्तियाँ इसकी एकता को दर्शाती हैं और मृत्यु के बाद पुनरुत्थान के संबंध में बहुदेववादियों की स्थिति पवित्र कुरान और इसके महत्व पर आधारित है (59-78)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

فما كان جواب قومہ

20

BISWAN PAARA (JUZ) "فما كان جواب قومہ" KA MUKHTASAR TAAARUF

बिसवां पारा (भाग) " فما كان جواب قومہ " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय |

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

جزاكم الله خيرا

سورة نمل सूरह अल-नमल	बीसवें भाग/ पारे का संक्षिप्त परिचय	من خلق "पारा 20वाँ - अम्मान खलाका"
बीसवें भाग का संक्षिप्त परिचय (भाग)		
बीसवें पैरा को विद्वानों ने 18 इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:		
पैरा संख्या 20 "अम्मान ख़ल्क़" के छंदों और लेखों का इकाइयों के अनुसार वितरण		

विषयों	**आयत**		**इकाइयों**
सूरह अल-नमल			
आलम अल-ग़ैब केवल अल्लाह की ज़ात, पुनरुत्थान के अविश्वासियों और मृत्यु के बाद पुनरुत्थान के अविश्वासियों का उल्लेख, पृथ्वी का वर्णन, तुरही बजाना, मक्का शहर की पवित्रता का वर्णन .	93	66	**यूनिट नंबर: 1**
सूरह अल-क़सस			
फ़िरऔन की अवज्ञा और उसके अन्त का वर्णन, अल्लाह की ओर से दीन-दुखियों की सहायता का उल्लेख।	6	1	**यूनिट नंबर: 2**
मूसा (उन पर शांति) के जन्म के समय की परिस्थितियों और फिरौन के महल में मूसा (उन पर शांति) के पालन-पोषण का वर्णन।	13	7	**यूनिट नंबर: 3**
मूसा (उन पर शांति हो) द्वारा एक कॉप्ट को मुक्का मारने का उल्लेख और उनके (शांति उन पर) मदीना की ओर पलायन करने का बयान।	21	14	**यूनिट नंबर: 4**
मदयन पहुँचने के बाद की परिस्थितियाँ, पैग़म्बर की शादी का मामला, अपनी पत्नी के साथ मिस्र लौटने पर पैग़म्बरी की घटना का विवरण।	28	22	**यूनिट नंबर: 5**
मूसा (उन पर शांति) के समर्थन और समर्थन में, उनके भाई हारून (उन पर शांति) का भी पैगंबर के रूप में उल्लेख किया गया है।	35	29	**यूनिट नंबर: 6**
जब फ़िरऔन और उसकी क़ौम ने इस्लाम कबूल करने से इन्कार कर दिया तो उन पर जो अज़ाब का सिलसिला चला उसका वर्णन।	42	36	**यूनिट नंबर: 7**

अविश्वासियों तथा बहुदेववादियों द्वारा ईश्वरीय पुस्तकों के इन्कार का कथन |	50	43	**यूनिट नंबर: 8**

अहले किताब के विश्वासियों को संबोधित करते हुए, मक्का के अविश्वासियों के खिलाफ चेतावनी का एक बयान।	61	51	**यूनिट नंबर: 9**
पुनरुत्थान (क़यामत) के दिन बहुदेववादियों की स्थिति का विवरण।	75	62	**यूनिट नंबर: 10**
क़ारुन की कहानी और उसका अंत।	84	76	**यूनिट नंबर: 11**
मक्का के बहुदेववादियों, काफ़िर क़ुरैश को चेतावनी दी जा रही है और मक्का की फ़तह की ख़बर दी जा रही है।	88	85	**यूनिट नंबर: 12**
सूरह अल-अंकबुत			
विश्वासियों की परीक्षाओं का वर्णन |	7	1	**यूनिट नंबर: 13**
माता-पिता के प्रति सद्व्यवहार का कथन |	13	8	**यूनिट नंबर: 14**
नूह का जिक्र	15	14	**यूनिट नंबर: 15**
इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दावत देने का तरीक़ा और क़ौम की इज़ा रसानी का बयान।	27	16	**यूनिट नंबर: 16**
लूत (उस पर शांति हो) का उल्लेख और उसकी क़ौम के भाग्य का वर्णन।	35	28	**यूनिट नंबर: 17**
शोएब (उन पर शांति), हुद (उन पर शांति), सालेह (उन पर शांति) की कहानियों का उल्लेख।	43	36	**यूनिट नंबर: 18**

यूनिट नंबर 1 :

सूरह अल-नमल (सूरह नंबर 27) की आयत 66 से 93 तक एक गहन और अर्थपूर्ण संदेश प्रदान करती है। इसमें मुख्यतः निम्नलिखित विषयों का उल्लेख किया गया है:

1. **अदृश्य का ज्ञान केवल अल्लाह के पास है**:
   आयत 66 में यह स्पष्ट किया गया है कि कोई भी प्राणी अल्लाह की अनुमति के बिना ग़ैब (अदृश्य) का ज्ञान नहीं रख सकता। यह मनुष्य की सीमितता और अल्लाह के असीम ज्ञान की ओर इशारा करता है।
2. **मक्का के मूर्तिपूजकों का इनकार**:
   इन आयतों में उन लोगों का उल्लेख है जो पुनर्जीवित होने और क़यामत के दिन से इनकार करते थे। मक्का के मुशरिक (मूर्तिपूजक) यह मानने को तैयार नहीं थे कि मरने के बाद उन्हें दोबारा जीवित किया जाएगा और उनके कर्मों का हिसाब लिया जाएगा।
3. **दब्बत अल-अर्ज़ का उल्लेख**:
   आयतों में क़यामत के दिन के निकट एक विशेष घटना का जिक्र किया गया है जिसमें "दब्बत अल-अर्ज़" (पृथ्वी का जीव) प्रकट होगा। यह एक महत्वपूर्ण संकेत है जो यह दिखाएगा कि सत्य को मानने और न मानने वालों में स्पष्ट अंतर किया जाएगा।

यूनिट नंबर 1 के विषय:

- ब्रह्मांड में दैवीय शक्ति की अभिव्यक्तियाँ इसकी एकता को दर्शाती हैं। मृत्यु के बाद पुनरुत्थान के संबंध में बहुदेववादियों की स्थिति को पवित्र कुरान ने स्पष्ट रूप से वर्णित किया है। यह कुरान के महत्व और इसके संदेश (आयत 59-78) को समझने का आह्वान करता है।
- सत्य और असत्य के बीच कुरान फैसल (81-79) है।
- क़यामत की निशानियाँ, अल्लाह के शब्दों पर अविश्वास करने वालों का भाग्य, क़यामत की भयावहता, तुरही का फूँकना (90-82)।
- अल्लाह की इबादत करने का पैगंबर का आदेश, काबा की महिमा और पवित्रता, पैगंबर के लिए अल्लाह का मिशन।

सूरह अल-क़सस		
कथन	अल-क़सस	कहानियां

"रहस्योद्घाटन का स्थान मक्का" (उतरने का स्थान मक्का)
"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- अल्लाह के वादे पर भरोसा करना.
- इस सूरह में, मूसा (उन पर शांति हो) की परिस्थितियों का उल्लेख किया गया है: जन्म, विकास, विवाह, फिर मिस्र लौटना और भगवान के वादे की पूर्ति।
- **हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की कहानी में उल्लेख किया गया है

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ أُمِّ مُوسَىٰٓ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيهِ فِى ٱلْيَمِّ وَلَا
تَخَافِى وَلَا تَحْزَنِىٓ ۖ إِنَّا رَآدُّوهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهُ مِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿٧﴾

कि अल्लाह ने उनकी माँ को वह्य (प्रकाशना) के माध्यम से बताया कि वह मूसा को स्तनपान कराएँ। यदि वह डर महसूस करें, तो बच्चे को टोकरी में रखकर नदी में छोड़ दें। अल्लाह ने आश्वासन दिया कि वह उन्हें उनके पास वापस लौटा देगा और उसे अपने दूतों में से एक बनाएगा (सूरह अल-क़सस, आयत 7)।

अल्लाह के रसूल की कहानियों में यह भी उल्लेख है:

إِنَّ ٱلَّذِى فَرَضَ عَلَيْكَ ٱلْقُرْءَانَ لَرَآدُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ ۚ قُل رَّبِّىٓ أَعْلَمُ مَن جَآءَ بِٱلْهُدَىٰ
وَمَنْ هُوَ فِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿٨٥﴾

"निश्चित रूप से, जिसने आप पर यह कुरान (वही) को फरज किया है, वही आपको आपके उद्देश्य तक पहुँचाएगा।" (सूरह अल-क़सस, आयत 85)। यह आयत मार्गदर्शन प्रदान करने और सच्चाई पर स्थिर रहने की प्रेरणा देती है। यह इस बात की याद दिलाती है कि अल्लाह जानता है कि कौन मार्गदर्शन के साथ आया और कौन गुमराही में है। इन आयतों और घटनाओं से अल-क़सास (कहानी) में आराम और विश्वास का संदेश मिलता है।**

(अधिक जानकारी के लिए यह किताब पढ़ें। **अल तवक्कुल अलल्लाह व असरोहो फि हयातील मुस्लिम**: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)

कि जैसे मूसा दु:ख उठाकर अपने नगर को लौटाया गया, वैसे ही आप को भी अपने नगर को लौटाये जायेगा, हज़रत मूसा (उन पर शांति हो) की कहानी और अल्लाह के दूत की कहानी में गहरी समानताएँ पाई जाती हैं:

- हज़रत मूसा (उन पर शांति हो) 10 साल के लिए अपने लोगों से अलग हो गए थे। उसी तरह रसूल सल्ललाहो अलैहि वसल्लम भी १० साल अपनी क़ायम से दूर रहे ।
- "जिस प्रकार अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने गुप्त रूप से प्रवास किया था, उसी प्रकार हज़रत मूसा (अलैहि सलाम) ने भी गुप्त रूप से प्रवास किया था।"

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- सूरह निमल में चेतावनी - आयतों को नियाह के माध्यम से सूरह क़सस में मूसा (उन पर शांति) की घटना के ऐतिहासिक तथ्यों के प्रकाश में समझाया गया है।
- सूरह युसूफ और सूरह क़सस में। अगर मैं तुलना करें तो दोनों में अंतर यह है कि सूरह यूसुफ़ में ग़लती का मुरतकिब रुजू कर रहा है, जबकि सूरह अल-क़सास में संघर्ष और टकराव का माहौल है।

यूनिट नंबर 2

बीसवाँ पारा, सूरह अल-कसास, सूरह नं. 28 की आयत नं. 1 से आयत नं. 6 तक फिरौन की अवज्ञा और उसके अंत का उल्लेख है, कमजोरों और उत्पीड़ितों को अल्लाह की मदद का वर्णन –

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन की कहानी का मामला और ज़मीन में फ़िरऔन की शरारतों और उसकी वईद (धमकी) का ज़िक्र (6-1)

यूनिट नंबर 3

बिसवां पारा, सूरह अल-कसस, सूरह नंबर 28 की आयत 7 से आयत 13 तक, मूसा (उन पर शांति हो) के जन्म के समय की परिस्थितियों का उल्लेख करता है और सभी बच्चों को मारने के लिए फिरौन की घोषणा का उल्लेख करता है और मूसा के फिरौन (उन पर शांति हो) के महल में उनके पालन-पोषण का विवरण।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- मूसा (उन पर शांति हो) की कहानी विस्तार से वर्णित है (7-32)।

यूनिट नंबर 4

बीसवाँ पारा, सूरह अल-कसास, सूरह नंबर 28 की आयत 14 से आयत 21 तक, मूसा (उस पर शांति हो) का एक क़िब्ती को मुक्का मार मरना और उसके मर जने का ज़िकर और मौसा अलैहिस्सलाम का मदयन हिजरत करने का बयान

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- मूसा (उन पर शांति हो) की कहानी विस्तार से वर्णित है (7-32)।

यूनिट नंबर 5

बीसवाँ पारा, सूरह् अल-कसास, (सूरह् नंबर 28) की आयत 22 से आयत 28 तक, हज़रत मूसा (उन पर शांति) के मदयन पहुंचने के बाद की परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। इनमें उनकी सेवा के कार्य के लिए नियुक्ति, उनके विवाह् का प्रसंग, फिर अपनी पत्नी के साथ मिस्र लौटने और अंततः भविष्यवक्ता के पद पर आसीन होने का उल्लेख किया गया है।"

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- "सूरह् अल-क़सस में आयत 7 से 32 तक हज़रत मूसा (अलैहि सलाम) की कहानी विस्तार से वर्णित है।

यूनिट नंबर 6

सूरह् अल-क़सस, सूरह् नंबर 28 की आयत 29 से आयत 35 तक, यह बताया जा रहा है कि हमने मूसा (अलैहि सलाम) की मदद और समर्थन में आप के भाई हारून (अलैहि सलाम) को भी पैगंबरी प्रदान की थी।.

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- "सूरह् अल-क़सस में आयत 7 से 32 तक हज़रत मूसा (अलैहि सलाम) की कहानी विस्तार से वर्णित है।

यूनिट नंबर 7

बीसवाँ पारा, सूरह् अल-कसास, सूरह् नंबर 28 की आयत 36 से आयत 42 तक कहा गया है कि मूसा (अलैहि सलाम) ने फिरौन और उसके दरबारियों को धर्म का निमंत्रण देने का काम शुरू किया। सेना के

अधिकारियों और सरकारी मंत्रियों को एकेश्वरवाद के लिए आमंत्रित किया गया था, लेकिन उन सभी ने इनकार कर दिया।

क्रमांक 7 के कुछ विषय

- फ़िरऔन का इन्कार और उसकी अवज्ञा का अन्त तथा लोगों को दूतों (रसूलों) की आवश्यकता का उल्लेख (46-33)

यूनिट नंबर 8

बीसवाँ पारा, सूरह अल-कसास, (सूरह नंबर 28) की आयत 43 से 50 तक यह उल्लेख किया गया है कि हज़रत मूसा (अलैहि सलाम) को तोराह प्रदान की गई और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को पवित्र कुरान दिया गया। लेकिन अविश्वासियों और बहुदेववादियों ने हर मोड़ पर इन स्वर्गीय पुस्तकों का इनकार और विरोध किया।"

"क़ुरआन मजीद की विशेष शैली यह है कि "जहाँ हज़रत मूसा (अलैहि सलाम) का उल्लेख किया जाता है, वहाँ अधिकतर स्थानों पर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का भी उल्लेख किया जाता है। इसी प्रकार, जहाँ तौरात का ज़िक्र होता है, वहाँ साथ में क़ुरआन का भी ज़िक्र किया जाता है।"

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- "फ़िरऔन के इनकार और उसकी अवज्ञा के अंत का वर्णन, साथ ही लोगों के लिए दूतों की आवश्यकता का उल्लेख आयत 33 से 46 तक किया गया है।
- मक्का के अविश्वासियों द्वारा पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और क़ुरआन को झुठलाने का उल्लेख, और उनके संदेहों का खंडन आयत 47 से 51 तक किया गया है।"

यूनिट नंबर 9

बीसवाँ पारा, सूरह अल-कसास, सूरह नंबर 28 की आयत 51 से आयत 61 तक, अहल किताब के लोगों के विश्वासियों की ओर इशारा किया गया है और कुरैश के अविश्वासियों को चेतावनी दी गई है कि उन्हें इसका पालन नहीं करना चाहिए। अल्लाह के पैगम्बर का ज्ञान एक आदेश दिया गया और कहा गया कि काबा की पवित्रता के कारण आपके लिए शांति और व्यवस्था स्थापित है, अन्यथा आप मारे गए होते।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- अहल किताब में से उन लोगों का ज़िक्र जो इमान लाये उन के जज़ा और सिफ़त का तज़किरह
- बहुदेववादियों के संदेह और उनके खंडन, बहुदेववादियों की स्थिति और प्रलय के दिन उनकी स्थिति और विश्वासियों की सफलता का उल्लेख (56-67)

यूनिट नंबर 10

बीसवाँ पारा, सूरह अल-कसास, सूरह नंबर 28 की आयत 62 से आयत 75 तक, क़यामत के दिन बहुदेववादियों की स्थिति का वर्णन किया जा रहा है और उस के जारीया दावते दीन दी जा रही है कहीं ऐसा ना हो की बहलाते कुफ्र तुम पर मौत जाये।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों के संदेह और उनके खंडन, बहुदेववादियों की स्थिति और प्रलय के दिन उनकी स्थिति और विश्वासियों की सफलता का उल्लेख (56-67)।
- ब्रह्मांड में अल्लाह की शक्ति और उसकी पूर्ण इच्छा और उसके पुरस्कार और उसके सेवकों पर उसकी दया का उल्लेख (75-68)

यूनिट नंबर 11

बीसवाँ पारा, सूरह अल-कसास, में सूरह नंबर 28 की आयत 76 से आयत 84 तक क़ारून की कहानी और उसके घमंड और अहंकार का वर्णन किया गया है और उसके धन और संपत्ति और उसके खजाने का उल्लेख किया गया है मामला यह है कि कई ऊँटों पर इन ख़ज़ानों की चाबियाँ लाद दी गईं और उसके बाद क़ारून के बुरे अंत का वर्णन किया गया।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- क़ारून की कहानी, और इसका अंत और इससे सबक, और पैगंबर (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) के लिए कुछ निर्देश (76-88)।

यूनिट नं: 12

बीसवाँ पारा, सूरह अल-कसास, (सूरह नंबर 28) की आयत 85 से 88 तक में कुरैश के अविश्वासियों और मक्का के बहुदेववादियों को यह सूचित किया जा रहा है कि अल्लाह के पैगंबर, अपनी महान जीत के बाद, इस शहर (मक्का) में प्रवेश करेंगे। इसलिए, उनसे यह कहा जा रहा है कि वे उनके मार्ग से हट जाएं। इसके बाद, सूरह अल-कसस की अंतिम आयतों में अल्लाह के पैगंबर को सांत्वना दी जा रही है।"

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- क़ारून की कहानी, और इसका अंत और इससे सबक, और पैगंबर (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उस पर हो) के लिए कुछ निर्देश (76-88)।

सूरह अल-अंकबुत		
मकड़ी	(मकड़ी का जाला)	
"रहस्योद्घाटन का स्थान मक्का"		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- इस्लामी शिक्षाओं और पैगंबरों के जीवन की रोशनी में प्रलोभनों का मुकाबला करना। 1
- इस सूरह अल-अंकबुत (मकड़ी का जाल) का नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि जिस तरह मकड़ी का जाल एक प्रलोभन है, उसी तरह प्रलोभन भी ऐसे होते हैं जो इंसान को अपना शिकार बना लेते हैं, लेकिन जो अल्लाह पर भरोसा रखता है, ये प्रलोभन उसके लिए हैं मकड़ी के जाल की तरह बहुत ही तुच्छ साबित होता है। 2
- सूरह इस आदेश के साथ समाप्त होता है कि जो लोग प्रलोभनों में धैर्यपूर्वक बने रहते हैं और जीवन और धन के साथ जिहाद करते हैं, अल्लाह इस परीक्षण में उनकी मदद करेगा।

1 (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें: समात अल-मुमिनीन फ़ि अल-फ़तन वा तक़ालूबुल आहवाल : सालेह बिन अब्द अल-अजीज आल-शेख 2 (अल-इस्तिकामा: अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)

وَٱلَّذِينَ جَٰهَدُواْ فِينَا لَنَهۡدِيَنَّهُمۡ سُبُلَنَاۚ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَمَعَ ٱلۡمُحۡسِنِينَ ٦٩

- गंभीर परीक्षणों के सामने दृढ़ता.
- सोना आग पर तपकर ही कुंदन बनता है, इस प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।
- अरबी में फितना सोने को तपाने को कहते हैं, जब किसी मोमिन को परखा जाता है तो उसका ईमान चमकने लगता है, अल्लाह को सबसे ज्यादा चमकने वाला ईमान पसंद है।
- परिस्थितियाँ चाहे अच्छी हों या बुरी, अच्छे में कृतघ्नता और बुरे में अधीरता से बचना ही सच्ची सफलता है।

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- गुज़श्ता सूरह में अहले किताब की मुखालिफत का तज़किरह हुवा इस सूरह में उन की हक़ीक़त और और उजागर की गई है

यूनिट नंबर 13

बीसवाँ पारा, सूरह अल-अंकबुत, सूरह नंबर 29 की आयत 1 से आयत 7 तक, यह बताया जा रहा है कि विश्वासियों का परीक्षण किया जाएगा और बदले में उन्हें बहुत बड़े पुरस्कार और सम्मान से पुरस्कृत किया जाएगा, जिसमें धैर्य की शिक्षा भी शामिल है।

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- इस दुनिया में लोगों की परीक्षा लेना और सफल लोगों के इनाम का जिक्र करना अल्लाह की सुन्नत है (1-9)

यूनिट नंबर 14

बीसवाँ पारा, सूरह अल-अंकबुत, सूरह नंबर 29, आयत नंबर 8 से आयत नंबर 13 माता-पिता के प्रति दया और अच्छे व्यवहार का आदेश देता है, और पाखंडियों के चरित्र का वर्णन करता है।

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- मुनाफ़िक़ों की फ़रेबी और काफ़िरों के इन्कार और उनके ख़त्म होने की धमकी का ज़िक्र (10-13)

यूनिट नंबर 15

बीसवाँ पारा, सूरह अल-अंकबुत, सूरह नंबर 29 की आयत 14 से आयत 15 तक नूह (उन पर शांति हो) की कहानी वर्णित है।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- नूह अलीला की कहानी अपने लोगों के साथ, इब्राहीम अपने लोगों के साथ और आग से उनकी मुक्ति की कहानी (14-25)

यूनिट नंबर 16

बीसवाँ पारा, सूरह अल-अंकबुत, सूरह नंबर 29, आयत नंबर 16 से आयत नंबर 27 तक इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के दीन की दावत का तरीक़ा बताया गया और लोगों की उत्पीड़न और आग में डालने की धमकी का वर्णन किया गया।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- अपने लोगों के साथ नूह की कहानी, अपने लोगों के साथ इब्राहिम और आग की कहानी उनके उद्धार का उल्लेख (14-25)

यूनिट नंबर 17

बीसवाँ पारा, सूरह अल-अंकबुत, सूरह नंबर 29 की आयत 28 से आयत 35 तक, लूत (उस पर शांति हो) का उल्लेख और उसके राष्ट्र के अंत का विवरण।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- इब्राहीम में लूत का विश्वास और अपने लोगों के साथ लूत की कहानी का वर्णन। (39-26)

यूनिट नंबर 18

बीसवाँ पारा, सूरह अल-अंकबुत, सूरह नंबर 29 की आयत 36 से आयत 43 में शुएब अलैहिस्सलाम की कहानियों का वर्णन, हुद अलैहिस्सलाम, सालेह अलैहिस्सलाम कहानियों का वर्णन।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- अपने लोगों के साथ शोएब, हूद, सालेह और मूसा (अलैहिस्सलाम) की कहानियाँ उन लोगों के भाग्य की कहानी में उल्लिखित हैं जिन्होंने इस दुनिया में पैगम्बरों को अस्वीकार कर दिया (40-36)।
- उस व्यक्ति का उदाहरण जिसने अल्लाह के स्थान पर दूसरों को संत मान लिया (44-41)।

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

ولا تجادلوا

21

EKKISWAN PAARA (JUZ) "ولا تجادلوا "KA MUKHTASAR TAAARUF

इक्कीसवाँ पारा (भाग) " ولا تجادلوا " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय।

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

اتل ما اوحی	इक्कीसवें पारे (भाग) का संक्षिप्त परिचय।	سورة عنكبوت सूरह अल-अंकबुत
विद्वानों ने इक्कीसवें पारा को अड़तीस (38) इकाइयों में इस प्रकार विभाजित किया है:		

पारा संख्या 21 "अतलू मा आव्ही" के छंदों और विषयों का इकाइयों द्वारा विभाजन			
इकाइयों	**आयत**		**विषयों**
सूरह अल-अंकबुत			
यूनिट नंबर: 1	45	---	पवित्र कुरान का पाठ इकामा सलात का वर्णन है।
यूनिट नंबर: 2	46	55	"अकादमिक चर्चा" किताब के लोगों के साथ प्रेरणा का बयान, अल्लाह के पैगंबर की उम्मी (अनपढ़)होने का जिक्र
यूनिट नंबर: 3	56	60	उत्प्रवास कथन.
यूनिट नंबर: 4	61	69	दुनिया के खेल तमाशा होने का ज़िक्र, यह बयान कि अल्लाह अच्छे कामों को बर्बाद नहीं होने देता।
सूरह अल-रम			
यूनिट नंबर: 5	1	7	रोमनों की हार और फिर विजय का विवरण।
यूनिट नंबर: 6	8	16	सृष्टि की रचना के माध्यम से सच्चे रचयिता के ज्ञान की व्याख्या यह है कि अल्लाह ने पहली बार रचना की, इसलिए दूसरी बार रचना करना उसके लिए कोई कठिन कार्य नहीं है।
यूनिट नंबर: 7	17	28	अल्लाह तआला हर प्रकार के दोषों से मुक्त हैं। उनकी ईश्वरीयता और प्रभुत्व का बयान किया गया है। अल्लाह ने हर चीज के जोड़े बनाए और विभिन्न चिन्हों का उल्लेख किया।
यूनिट नंबर: 8	29	32	एकेश्वरवाद का कथन, अनेकेश्वरवाद की निन्दा, इस्लाम के मार्ग पर चलने का आदेश।
यूनिट नंबर: 9	33	37	मनुष्य के शुभ और अशुभ आचरण का वर्णन |

यूनिट नंबर: 10	38	40	अल्लाह की राह में ख़र्च करने का बयान, हराम और सूदखोरी का लेन-देन वर्जित है।
यूनिट नंबर: 11	41	45	बहरो बर में राजद्रोह एवं भ्रष्टाचार के कारणों की व्याख्या।
यूनिट नंबर: 12	46	53	हवाओं और बारिश का उल्लेख किया जाता है और कहा जाता है कि ये अल्लाह की प्रभुता और दिव्यता का प्रमाण हैं, और जो लोग इन संकेतों को देखकर भी विश्वास नहीं करते हैं उनकी तुलना मृत (मुर्दाह) से की जाती है।
यूनिट नंबर: 13	54	57	मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओं एवं कालों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 14	58	60	सलाह, धैर्य, धर्म के निमंत्रण का एक बयान।
सूरह लुकमान			
यूनिट नंबर: 15	1	5	पवित्र कुरान का परिचय: यह उपकारों के लिए मार्गदर्शन का स्रोत है और मुक्ति प्राप्त लोगों का विवरण प्रस्तुत करता है।
यूनिट नंबर: 16	6	7	संगीत की बुराई का वर्णन |
यूनिट नंबर: 17	8	11	अल्लाह तआला की ताक़त की निशानियों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 18	12	17	लुकमान की सलाह का वर्णन, बुद्धि अल्लाह का एक महान आशीर्वाद है।
यूनिट नंबर: 19	18	21	अल्लाह की नेमतों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 20	22	26	धन्यवाद और निन्दा का बयान.
यूनिट नंबर: 21	27	28	अल्लाह तआला की कभी न ख़त्म होने वाली स्तुति का वर्णन।
यूनिट नंबर: 22	29	32	अल्लाह ताला ने सारी कायनात इंसानों के लिए बनाई है, इंसानों की रचना का कारण।
यूनिट नंबर: 23	33	34	अदृश्य ज्ञान का कथन.

सुवात अल-सजदा			
यूनिट नंबर: 24	1	3	पवित्र कुरान का परिचय.
यूनिट नंबर: 25	4	9	6 दिन में सृष्टि की रचना का कथन |
यूनिट नंबर: 26	10	11	उन लोगों का बयान जो पुनरुत्थान से इनकार करते हैं।
यूनिट नंबर: 27	12	17	पुनरुत्थान के दिन, विश्वासियों, अविश्वासियों, बहुदेववादियों और पाखंडियों का लक्षणों का वर्णन.
यूनिट नंबर: 28	18	22	पुनरुत्थान के दिन अल्लाह का न्याय स्थापित किया जाएगा।
यूनिट नंबर: 29	23	25	इमामत, नेतृत्व और नेतृत्व की निशानियों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 30	26	30	सलाह का एक बयान.
सूरह् अल-अहज़ाब			
यूनिट नंबर: 31	1	3	तक़वा, आज्ञाकारिता, (तवक्कुल अलल्लाह) अल्लाह पर भरोसा का बयान।
यूनिट नंबर: 32	4	5	मुंह बोले बेटे और बेटी की शरई हैसियत का बयान।
यूनिट नंबर: 33	6	8	पैग़म्बरों (उन पर शांति हो) के निमंत्रण और उपदेश का वर्णन।
यूनिट नंबर: 34	9	11	**ग़ज़वा ए अहज़ाब का विस्तृत विवरण**
यूनिट नंबर: 35	12	21	ग़ज़वा अहज़ाब में मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों की हार का विवरण।
यूनिट नंबर: 36	21	24	अल्लाह के दूत (रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसवाए हसना का कथन।
यूनिट नंबर: 37	25	27	ग़ज़वा अहज़ाब में काफ़िरों और पाखंडियों के भाग्य का वर्णन।

यूनिट नंबर: 38	28	30	उम्महातुल मोमिनीन (ईमानवालों की माताओं) का वर्णन (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो सकता है)।

यूनिट नंबर 1 :

इक्कीसवाँ पारा, सूरह अल-अंकबुत, सूरह नंबर 29, आयत नंबर 45 में पवित्र कुरान की तिलावत और इकामा प्रार्थना का एक बयान है।

यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय

- पैगंबर (उन पर शांति हो) के लिए निर्देश और कुरान पढ़ने वालों और प्रार्थना की स्थापना करने वालों के फल का विवरण (45)।

यूनिट नंबर 2

इक्कीसवें पारे, सूरह अल-अंकबूत (सूरह नंबर 29) की आयत 46 से 55 में अहले किताब के लोगों के साथ शैक्षणिक चर्चा को प्रोत्साहित किया गया है। इसके बाद यह उल्लेख किया गया है कि अल्लाह के पैगंबर अनपढ़ थे।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- "अहले किताब के लोगों से तर्कसंगत दलील की हिदायत और उनके शुब्हात का रद्द करने के सिलसिले में नसीहतें।"

यूनिट नंबर 3

इक्कीसवें पारे, सूरह अल-अंकबूत (सूरह नंबर 29) की आयत 56 से 60 में , प्रवास के महत्व, उत्कृष्टता और लाभों को समझाया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- ईमान वालों को हिजरत करने का हुक्म और सब्र करने वालों को इनाम देना और मुश्रिकों को अल्लाह की ताकत का स्वीकार करना कि वह पालनहार है (63-56)।

यूनिट नंबर 4

इक्कीसवें पारे, सूरह अल-अंकबूत (सूरह नं. 29), आयत 61 से 69 में कहा गया है कि यह दुनिया एक खेल और मनोरंजन मात्र है। इसके बाद यह भी बताया गया है कि जो लोग अच्छे कर्म करते हैं, अल्लाह उनके इनाम को व्यर्थ नहीं जाने देगा।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- ईमान वालों को हिजरत करने का हुक्म और सब्र करने वालों को इनाम देना और मुश्रिकों को अल्लाह की ताकत का स्वीकार करना कि वह पालनहार है (63-56)।
- दुनिया की हक़ीक़त और काफ़िरों की प्रकृति और काफ़िरों की सज़ा और ईमान वालों के इनाम का उल्लेख किया गया है (69)

सूरह अल-रूम

The roman	देश रोम	रोमन
"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का		
"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य		

- "इस सूरह का उद्देश्य सत्य और असत्य के बीच के संघर्ष को उजागर करना और असत्य पर सत्य की विजय को प्रमाणित करना है।
- अल्लाह के संकेतों पर विचार करने का निमंत्रण।
- यह सूरह एक भविष्यवाणी से शुरू होता है। अर्थात् पराजय के बाद रोम फारस पर हावी हो जायेगा।

(अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर, खंड 7, पृष्ठ 297 देखें) (अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक पढ़ें - इज़्हारुलहक़ रहमतुल्लाह बिन खलीलुर्रहमान अल हिंदी)

प्रासंगिकता/लताई फे तफ़्सीर (रोम और फारस के बीच तुलना)	
फारस	रोम
धार्मिक रूप से जादूगर और सबाईन	धर्म से ईसाई
भाषा: फ़ारसी	भाषा: हिब्रू आदि
17 देशों में वितरित	37 देशों में वितरित
द्वंद्व (द्वैतवाद)	ट्रिनिटी का सिद्धांत
मजूसी आग बुराई 2- सबाई - नजम (सितारा) अच्छा	हज़रत मुस्तवर्द कुरैशी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि उन्होंने कहा:

वैज्ञानिक दृष्टि से तारा कोई अच्छी चीज़ नहीं है बल्कि सूरज से भी ज्यादा खतरनाक गर्मी और आग है. इस तरह पूरे पारसी अक़ीदे की नींव हिल गयी	**"मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह कहते हुए सुना:** **'क़यामत उस समय आएगी जब रोम (ईसाई) लोगों की संख्या सबसे अधिक होगी।'"** इस पर हज़रत अम्र बिन आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: **"जो तुम कह रहे हो, उसे ध्यान से देखो (यानी क्या तुमने सही सुना?)"** मुस्तवर्द (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: **"मैं वही कह रहा हूँ जो मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से सुना है।"** फिर हज़रत अम्र बिन आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: **"अगर ऐसा है, तो उनमें चार विशेषताएँ हैं: 1. वे सबसे अधिक सहनशील होते हैं जब फितना (संकट) आता है। 2. मुसीबत खत्म होने के बाद सबसे जल्दी संभलने वाले होते हैं। 3. हारने के बाद सबसे जल्दी पलटकर वार करने वाले होते हैं। 4. गरीब, यतीम और कमजोर लोगों के लिए सबसे अच्छे होते हैं। और एक पाँचवीं खूबी जो बहुत अच्छी है: वे अपने बादशाहों के जुल्म को रोकने में सबसे आगे रहते हैं।"** **(सही मुस्लिम**: किताब अल-फितन व अशरात अस-सा'ह, हदीस नंबर: 2898।) 5. और पांचवीं खसलत निहायत उम्दह ये है की वह लोगों में से सब से ज़ियादा बादशाहों को ज़ुल्म से रोकने वाले होंगे

	इब्न कथिर के शोध के अनुसार, भगवान उस पर दया करे, दज्जाल के आने से पहले यूरोप (रोम) इस्लाम स्वीकार कर लेगा।

यूनिट नंबर 5

इकीसवाँ पारा सूरह अल- रू म, सूरह नंबर 30 की आयत 1 से 7 में बताया जा रहा है कि रोमन हार गए थे और कुछ वर्षों में वे फिर से उनसे हार जाएंगे, और उस दिन मुसलमान खुश होंगे

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- फारस और रोम के बारे में अदृश्य ख़बरें, जिससे बहुदेववादियों को डर लगता है और उन्हें ब्रह्मांड पर विचार करने के लिए आमंत्रित किया जाता है (1-8)

यूनिट नंबर 6

इकीसवाँ पारा सूरह अल- रू म, सूरह नंबर 30 की आयत 8 से 16 में बताया जा रहा है कि जब कोई अल्लाह द्वारा बनाई गई ब्रह्मांड पर विचार करेगा, तो वह वास्तविक निर्माता को समझने में मदद मिले गी और आसान हो गी , उस के बाद कहा कि जिसने पहली बार रचना की उसके लिए दूसरी बार रचना करना या पैदा करना कोनसा मुश्किल काम है।

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- पिछले राष्ट्रों के अविश्वासियों के विनाश से सीखने के लिए पृथ्वी पर घूमने का आदेश (9-10)

- मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की पुष्टि, उस दिन लोगों की स्थिति, अल्लाह् की प्रशंसा और महिमा और उसकी एकता, शक्ति और पुरस्कार का उल्लेख (11-27)

यूनिट नंबर 7

इक्कीसवें पारा, सूरह् अल-रूम, सूरह् नंबर 30 की आयत 17 से 28 में बताया जा रहा है कि अल्लाह् हर दोष से मुक्त है और हर ऐब से बरी है उस के बाद रुबूबियत और उलूहियत के दलील बयान किये गए हैं, और उसके बाद कहा गया कि हमने हर चीज़ को जोड़े में बनाया है। और विभिन्न संकेतों का उल्लेख किया गया है।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- "मृत्यु के बाद पुनरुत्थान का प्रमाण", उस दिन लोगों की स्थिति, अल्लाह् की महिमा और प्रशंसा और उसकी एकता, शक्ति और पुरस्कार का उल्लेख (11-27)

यूनिट नंबर 8:

इक्कीसवां पारा, सूरह् अल-रूम, सूरह् नंबर 30 की आयत 29 से 32 में एकेश्वरवाद को सिद्ध किया गया है और बहुदेववाद की निंदा की गई है और इस्लाम के मार्ग पर चलने का आदेश दिया गया है क्योंकि इस्लाम धर्म प्राकृतिक धर्म है।

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- अल्लाह की एकता का उदाहरण समझाया गया है, इस्लाम प्रकृति और एकता का धर्म है जिसका उल्लेख 3-28 में किया गया है।

यूनिट नंबर 9

इकिस्वां पारा सूरह अल-रूम, सूरह नंबर 30 की आयत 33 से 37 में बताया जा रहा है कि जब लोग मुसीबत में घिर जाते हैं तो अल्लाह की ओर रुख करते हैं, लेकिन जब मुसीबत दूर हो जाती है और अच्छे दिन आते हैं .तो वे अल्लाह को भूल जाते हैं.

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- खुशहाली और तंगदस्ती में लोगों की फितरत, हुक़ूक़ की अदायगी (ज़कात) पर उभारा गया है और सूदखोरी से रोक दिया गया (33-39)।

यूनिट नंबर 10

इक्कीसवें पपारा, सूरह अल-रूम, सूरह नंबर 30 की आयत 38 से 40 में, अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, दान को प्रोत्साहित किया जा रहा है, और निषिद्ध साधनों, विशेष रूप से सूदखोरी से कमाई करना निषिद्ध है। । वर्जित है।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- खुशहाली और तंगदस्ती में लोगों की फितरत, हुक़ूक़ की अदायगी (ज़कात) पर उभारा गया है और सूदखोरी से रोक दिया गया (33-39)।

- एकेश्वरवाद के लिए तर्क और विश्वासियों के कार्यों के परिणाम, धर्म का पालन करना और अंतिम दिन की चेतावनी दिया गया है (40-44)

यूनिट नंबर 11

इक्कीसवें पारा सूरह अल-रम, सूरह नंबर 30 की आयत 41 से 45 में बताया जा रहा है कि बहरो बार और खुश्की और तरी में लोगों के पापों के कारण उपद्रव और उत्पात पैदा हुआ है।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- एकेश्वरवाद के लिए तर्क और विश्वासियों के कार्यों के परिणाम, धर्म का पालन करना और अंतिम दिन की चेतावनी दी जाना (44-40)

यूनिट नंबर 12

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-रूम, सूरह नंबर 30 की आयत 46 से 53 में, हवाओं और बारिश का उल्लेख किया गया है और कहा गया है कि ये ईश्वर की प्रभुता और दिव्यता के संकेत हैं जो उन लोगों का उदाहरण हैं जो उन सब निशानियों और दलाइल को देखने के बावजूद भी अल्लाह पर इमान नहीं लाते उन की मिसाल मुर्दों जैसी है।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- पुनरुत्थान के दिन ईमानवालों का इनाम, अल्लाह की शक्ति और एकेश्वरवाद का प्रमाण, अपराधियों का अंत और अविश्वासियों की तबियत का तज़किराह (51-45)।

- अविश्वासियों और विश्वासियों के बीच पैगंबर (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद) की शिक्षाओं की प्रभावशीलता, मानव निर्माण के विभिन्न अवधियों में अल्लाह की शक्ति का उल्लेख (54-52)।

यूनिट नंबर 13

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-रूम, सूरह नंबर 30 की आयत 54 से 57 में मानव जीवन के विभिन्न चरणों और अवधियों का वर्णन किया गया है कि एक व्यक्ति कितना कमजोर हो जाता है, फिर मजबूत हो जाता है, फिर कमजोर हो जाता है, फिर बूढ़ा हो जाता है , और फिर कुछ यह किस पर आधारित है?

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- अविश्वासियों और विश्वासियों पर पैगंबर के ज्ञान के प्रभाव की सीमा, मानव रचना के विभिन्न कालखंडों में ईश्वर की शक्ति का उल्लेख (54-52)।
- पुनरुत्थान के दिन लोगों की स्थिति, अल्लाह की आयतों के बारे में अविश्वासियों का रवैया और पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का धैर्य रखने का आदेश (55-60)।

यूनिट नंबर 14

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-रूम, सूरह नंबर 30 की आयत 58 से 60 में, उदाहरणों के माध्यम से बताया जा रहा है कि आप सलाह को मजबूती से पकड़ें, जिसके बाद धैर्य रखने और धर्म के आह्वान पर जुड़े रहने की सलाह दी जाती है।

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- पुनरुत्थान के दिन लोगों की स्थिति, अल्लाह् की आयतों के बारे में अविश्वासियों का रवैया और धैर्य रखने के लिए पैगंबर का आदेश (60-55)।

सूरह लुकमान		
लुकमान (एक बुद्धिमान व्यक्ति)	लुक़्मान	लुकमान (एक बुद्धिमान व्यक्ति)
"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- इस सूरह का लक्ष्य बच्चों का प्रशिक्षण है

"स्वर्णिम पाठ" निश्चित पाठ

- लुकमान अपने बेटे को प्यार से इस प्रकार सलाह देते हैं:
  - ➢ बहुदेववाद न करना, (आयत नं. (13))
  - ➢ माता-पिता के प्रति दयालु रहें, (श्लोक नं. 14)
  - ➢ प्रार्थना, भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना और धैर्य, (आयत नं. (17))
  - ➢ शिष्टाचार, (आयत नं. 18)
  - ➢ चाल और आवाज की मृदुलता, (आयत नं. 19)
- यह सूरह पितृसत्ता पर रोक लगाता है। (आयत नं.(21)
- और यह भी कहता है कि यह पिता की जिम्मेदारी है कि वह अपने बच्चों को अच्छी तरह से प्रशिक्षित करे।
- अंत में यह कहा गया है कि ब्रह्माण्ड में केवल अल्लाह की ही चलती है।
- पिता को स्पष्ट करना चाहिए कि संसार का जीवन तुम्हें जीवनदाता से दूर न ले जाए।
- आशीर्वाद का उल्लेख करें और कृतज्ञता और विश्वास का आह्वान करें

- पाँच बातें तो अल्लाह ही जानता है। (श्लोक क्रमांक 34)
- क़ुरैश के काफ़िर अपने बाप-दादों का आदर करते थे और अपनी कविताओं में ब्रह्माण्ड का नक्शा बनाते थे।
- अरब के लोग अपने पूर्वजों पर बहुत विश्वास करते थे, उन्हें लुकमान हकीम की बातों पर विश्वास करने के लिए कहा जा रहा है क्योंकि उनकी गणना अरबों के बुजुर्गों में की जाती है।

पाँच रहस्य:

1. पुनरुत्थान का समय
2. मूसलाधार बारिश
3. माँ के गर्भ के अंदर का विवरण
4. कल क्या कमाएंगे?
5. वह कहाँ मरेगा?

- अल्लाह सर्वशक्तिमान ने इस कुरान को सभी प्रकार के ज्ञान से भर दिया है। कुरान में कोई मतभेद या गड़बड़ी नहीं है. पवित्र कुरान सभी मानव जाति के लिए मार्गदर्शन और दया के कारण अल्लाह का एक महान आशीर्वाद है।
- कुरान पर आस्था और अमल इस दुनिया में सलाह और आख़िरत में समृद्धि का स्रोत है।
- आख़िरत पर विश्वास दिलों को जगाता है, शब्दों को सच्चा और कार्यों को नेक बनाता है।
- मानवता में ऐसे लोग होते हैं जो स्वयं गुमराह होते हैं और दूसरों को भी गुमराह करते हैं और बुराई को बढ़ावा देते हैं।
- अज्ञानता और अहंकार एक ऐसी बीमारी है जो व्यक्ति को सत्य सुनने और स्वीकार करने से रोकती है।
- लोगों का मज़ाक उड़ाने वाले के लिए एक कठिन वादा है।
- अल्लाह का हर वादा सच्चा है।
- अल्लाह अपने कानून में हकीम और अपने आदेश में शक्तिशाली है।
- ऊँचे आकाश, विशाल धरती और उनके बीच के सभी प्राणी अल्लाह की निशानियाँ हैं।
- और ये सभी संकेत सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और उसकी सृष्टि की विशेषता और उसकी पूजा के एकमात्र योग्य होने का संकेत देते हैं।
- हर चीज़ में एक संकेत होता है जो बताता है कि उनका रचयिता अल्लाह ही है।
- आस्था और नेक कर्म दो महत्वपूर्ण तत्व हैं जिनके बिना मुक्ति संभव नहीं है। विश्वास कर्म की सत्यता का प्रमाण है और कर्म आस्था की सत्यता का प्रमाण है।
- सभी अधिकारों में सबसे बड़ा अधिकार एकेश्वरवाद है।
- शिर्क सबसे बड़ा पाप है, जिसे बड़े ज़ुल्म के रूप में परिभाषित किया गया है।

- शिर्क की निंदा की गई और इससे बचने की सीख दी गई।
- अल्लाह का हक़ पूरी कायनात के लोगों के हक़ से बढ़कर है।
- अल्लाह की अवज्ञा में कोई अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन नहीं कर सकता और कोई राजा की आज्ञा का पालन नहीं कर सकता।
- माता-पिता की आज्ञा मानना बच्चों पर अनिवार्य है।
- मुसलमानों और गैर-मुसलमानों दोनों के प्रति दयालु रहें।
- अल्लाह के बाद अपने बच्चों पर सबसे बड़ा अधिकार माता-पिता का होता है।
- इस्लाम ने लोगों से अच्छा व्यवहार करना सिखाया है.
- अल्लाह की महानता का एहसास दिलाया जा रहा है
- नमाज़ पढ़ना वाजिब है।
- सब कुछ अल्लाह के ज्ञान में है और वह सब कुछ करने में समर्थ है।
- एक आस्तिक को लोगों को अच्छा करने का आदेश देना चाहिए और उन्हें बुराई से रोकना चाहिए और रास्ते में आने वाली कठिनाइयों पर धैर्य रखना चाहिए।
- शब्दों और कार्यों में अहंकार वर्जित है।
- चलने में मियाना रवि सिखाया गया।
- धर्म की ओर आह्वान करने का एक तरीका सृष्टि से रचयिता और आशीर्वाद से आशीर्वाद दाता की ओर तर्क करना है।

- आशीर्वाद कई प्रकार के होते हैं जिनमें एक प्रकार बाहरी होता है और दूसरा आंतरिक होता है।
- अल्लाह की नेमतों को याद करना और उसका आभार व्यक्त करना अनिवार्य है।
- आशीर्वाद के लिए कृतज्ञता के लिए आवश्यक है कि सेवक अल्लाह का आज्ञापालन करे।
- बिना ज्ञान के तर्क करने से त्रुटि होती है।
- लोग दो प्रकार के होते हैं (1) मुसलमान (2) काफिर और बहुदेववादी।
- एहसान इस्लाम में उच्चतम स्तर की पवित्रता का नाम है।
- मनुष्य को एक प्रकाश की आवश्यकता है जिसके द्वारा वह निर्देशित हो सके और एक द्वार की आवश्यकता है जिससे वह दृढ़ता से जुड़ा हुआ है और यही अल्लाह का धर्म है।
- आबा व अजदाद का अंधानुकरण मनुष्य के ज्ञान और अधिकार की स्वीकृति में बाधक बन जाता है।
- एक अविश्वासी अपने अविश्वास से किसी दूसरे को हानि नहीं पहुँचा सकता। उस के कुफ्र का वबाल उसी पर होगा
- बहुदेववादी अरब आधिपत्य में एकेश्वरवादी और पूजा (ओबुडिट) में बहुदेववादी थे।
- अल्लाह अविश्वासी को उसके अविश्वास की सज़ा देगा।
- सर्वशक्तिमान अल्लाह को अपने प्राणियों की आवश्यकता नहीं है।
- सर्वशक्तिमान अल्लाह की ज़ात सभी प्रकार की प्रशंसा के योग्य है, पूरी दुनिया का स्वामित्व और प्रबंधन उसी के द्वारा है।

- अल्लाह् ताला का ज्ञान विशाल है और उसकी प्रशंसा के शब्द कभी ख़त्म नहीं होते।
- अल्लाह् लोगों को तथ्य समझाने के लिए उदाहरण देता है।
- अल्लाह् ताला के लिए सम्मान, ज्ञान, सुनने और देखने के गुणों का उल्लेख किया गया है। अल्लाह अपने गुणों में अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं।
- ब्रह्माण्ड में शक्ति के संकेतों द्वारा सलाह दी जा रही है।
- अल्लाह् ताला ने इंसान की सुविधा और फायदे के लिए कायनात की निशानियों को वश में कर लिया है।
- प्राणियों को अपने वश में करने के लिए मनुष्य को अल्लाह् का आभारी होना चाहिए।
- ब्रह्माण्ड के संकेत बता रहे हैं कि अल्लाह् ही सच्चा ईश्वर है।
- इस्लामी अल्लाह् के अलावा किसी अन्य की पूजा और दावा का कोई अधिकार नहीं है, जिसकी अमान्यता पर संदेह नहीं किया जाना चाहिए। मुक्त
- आज्ञाकारिता के लिए धैर्य, पाप के लिए धैर्य और आशीर्वाद के लिए कृतज्ञता उत्तम गुण हैं।
- अनेकेश्वरवादियों का एक कार्य कठिनाई के समय एकेश्वरवाद और सुख के समय अनेकेश्वरवाद को अपनाना है।
- अल्लाह् का तकवा अनिवार्य है।
- क़यामत के दिन दोबारह उठाये जाने को साबित किया गया है।
- क़यामत का दिन बहुत कठिन दिन होगा जिसमें पिता और पुत्र के बीच का रिश्ता किसी काम का नहीं रहेगा।
- उन्हें सांसारिक जीवन के धोखे और उसकी वासनाओं से दूर रहने की शिक्षा दी गई।
- परोक्ष की पाँच कुंजियाँ केवल अल्लाह् ही जानता है।

मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

- सूरह लुकमान में एक ऋषि की शिक्षाएं भी बहुदेववाद के खिलाफ थीं और कुरान भी बहुदेववाद के खिलाफ कह रहा है और एकेश्वरवाद की दावत दे रहा है, इसलिए हे कुरैश के अविश्वासियों, कुरान की शिक्षाएं सामान्य ज्ञान के अनुरूप हैं, कुरान की शिक्षाओं से मुंह मोड़ना प्रकृति से भागने के अनुरूप है, यह अल्लाह ही है जो इस प्राकृतिक विचार और स्थितियों को बताता है लोग कहते हैं कि यह सब प्राकृतिक है, लेकिन जिसने इस प्रकृति को बनाया वह इसकी खोज नहीं कर सका

- सूरह सजदा में भी कुरान को मनगढ़ंत बताकर उसका मजाक उड़ाने वालों को चेतावनी दी गई और कुरान के विरोधियों को परेशान और भयभीत करने वाली बातों का जवाब यह दिया गया कि जब तौरात आई तो उसका विरोध करने वालों ने कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन नतीजा क्या हुआ? तौरात की जीत हुई, ठीक उसी तरह जैसे कि जो लोग कुरान द्वारा बताए गए मार्ग और पैगंबर (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण करते हैं, वे विजयी होंगे।

यूनिट नंबर 15

इक्कीसवें पारा सूरह लुकमान, सूरह नंबर 31 की आयत 1 से 5 में कुरान को हक़ीम कहा गया और कहा गया कि कुरान परोपकारियों के लिए मार्गदर्शन और मार्गदर्शन का स्रोत है।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- कुरान कार्य. (1-3)
- मुहसिनिन और मुज़िलिन के गुण और उनका इनाम। (4-7)

यूनिट नंबर 16

इक्कीसवें पारा सूरह लुक़मान, सूरह नंबर 31 की आयत 6 से 7 में कुछ लोगों की बुराइयों का जिक्र किया गया है जो गाने-बजाने और गेम खेलने में लगे हुए हैं।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- मुहसिनिन और मुज़िलीन की सिफ़ात और उनका इनाम। (4-7)

यूनिट नंबर 17

इक्कीसवें पारा सूरह लुकमान, सूरह लुकमान सूरह नंबर 31 की आयत 8 से 11 में अल्लाह की बुद्धि और शक्ति की निशानी बताया गया है।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- अल्लाह और उसकी शक्ति की एकता के लिए तर्क। (8-11)

यूनिट नंबर 18

इक्कीसवें पारा, सूरह लुकमान, सूरह नंबर 31, आयत 12 से 17 में कहा गया है कि बुद्धि और हिकमत अल्लाह का एक बड़ा आशीर्वाद है और इस आशीर्वाद के लिए आभारी होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, इसके बाद लुकमान की सलाह का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- लुकमान (अलैहिस्सलाम) की कहानी और उनके बेटे को उनकी सलाह। (12-19)

यूनिट नंबर 19:

इक्कीसवें पारा सूरह लुक़मान, सूरह नंबर 31 की आयत 18 से 21 में आशीर्वाद का विवरण दिया जा रहा है और बताया जा रहा है कि अल्लाह के आशीर्वाद (नेमत) असंख्य हैं और उन्हें किसी भी नाम से नहीं गिना जा सकता है।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- लुकमान की कहानी और अपने बेटे को उसकी सलाह। (12-19)
- अल्लाह की नेमतें और मुश्रिकों की जिद। (20-24)

यूनिट नंबर 20

इक्कीसवें पारा सूरह लुकमान, सूरह नंबर 31 की आयत 22 से 26 में बताया गया है कि एक व्यक्ति कृतज्ञता और कृतघ्नता के बीच कैसे रहता है, इसके फायदे और नुकसान हैं।

"यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

- अल्लाह की नेमतें और मुश्रिकों की जिद। (20-24)
- बहुदेववादियों द्वारा अल्लाह की शक्ति की पहचान, और अल्लाह की शक्ति और उसके ज्ञान की सीमा की पुष्टि। (25-27)

यूनिट नंबर 21

इक्कीसवें पारा सूरह लुकमान, सूरह नंबर 31, आयत 27 से 28 में कहा गया है कि अल्लाह की नेमतें अनगिनत हैं, इसके बाद अल्लाह की प्रशंसा का वर्णन है और अल्लाह की प्रशंसा कभी खत्म नहीं हो सकती। यदि सारे संसार को वृक्ष को कलम बना दिया जाए और सागर को स्याही बना दिया जाए और उससे अल्लाह की प्रशंसा लिखी जाए तो सारे कलम और सारी स्याही समाप्त हो जाएगी, परन्तु अल्लाह की प्रशंसा कभी समाप्त नहीं होगी।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की पुष्टि (28)

यूनिट नंबर 22

इक्कीसवें पारा सूरह लुकमान, सूरह नंबर 31, आयत 29 से 32 तक में बताया जा रहा है कि अल्लाह ने पूरी कायनात को इंसानों के अधीन कर दिया है, इसलिए इंसानों को केवल अल्लाह की इबादत के लिए बनाया गया है।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- अल्लाह के अस्तित्व और उसके प्रचुर आशीर्वाद और शक्तियों पर आगे के तर्क। (29-31)
- अविश्वासी की मनोदशा. (32)

यूनिट नंबर 23

इक्कीसवें पारा सूरह लुकमान, सूरह नंबर 31 की आयत 33 से 34 तक, अनदेखी चीजों के उदाहरणों का वर्णन किया गया है, उदाहरण के लिए: पुनरुत्थान के दिन का ज्ञान, बारिश का उतरना, गर्भावस्था का विवरण, वह कल क्या कमाएगा और उसकी मृत्यु के बारे में, वह कहाँ और किस धरती पर मरेगा।

"यूनिट नंबर 23 के कुछ विषय"

- तक़वा का हुक्म, आख़िरत का ख़ौफ़ और दुनिया और शैतान से बचने की हिदायत (33)
- परोक्ष की कुंजियाँ केवल अल्लाह के हाथ में हैं। (34)

सूरह अल-सजदा		
The prostration	سجدة	सजदा
"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य Few topics

- अपने प्रभु के सामने झुक जाना. 1
- इस सूरह में उन लोगों के भाग्य का भी उल्लेख किया गया है जो अपने भगवान के सामने नहीं झुकते। (श्लोक नं. 20, 14)
- पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस सूरह को शुक्रवार की सुबह पढ़ते थे और सजदा करते थे । (सहीह मुस्लिम (879)

(अधिक जानकारी के लिए यह किताब पढ़ें - تذكير البشر بفضل التواضع وذم الكبر: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी
---मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

- सूरह लुकमान में एक ऋषि की शिक्षाएं भी बहुदेववाद के खिलाफ थीं और कुरान भी बहुदेववाद के खिलाफ कह रहा है और एकेश्वरवाद की दावत दे रहा है, इसलिए हे कुरैश के अविश्वासियों, कुरान की शिक्षाएं सामान्य ज्ञान के अनुरूप हैं, कुरान की शिक्षाओं से मुंह मोड़ना प्रकृति से भागने के अनुरूप है, यह अल्लाह ही है जो इस प्राकृतिक विचार और स्थितियों को बताता है लोग कहते हैं कि यह सब प्राकृतिक है, लेकिन जिसने इस प्रकृति को बनाया वह इसकी खोज नहीं कर सका
- सूरह सजदा में भी कुरान को मनगढ़ंत बताकर उसका मजाक उड़ाने वालों को चेतावनी दी गई और कुरान के विरोधियों को परेशान और भयभीत करने वाली बातों का जवाब यह दिया गया कि जब तौरात आई तो उसका विरोध करने वालों ने कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन नतीजा क्या हुआ? तौरात की जीत हुई, ठीक उसी तरह जैसे कि जो लोग कुरान द्वारा बताए गए मार्ग और पैगंबर (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण करते हैं, वे विजयी होंगे।

यूनिट नंबर 24

इक्कीसवें पारा, सूरह अल- सजदा, सूरह नंबर 32, आयत 1 से 3 में, पवित्र कुरान का परिचय प्रस्तुत किया गया है और कहा गया है कि पवित्र कुरान अल्लाह द्वारा प्रकट किया गया था।

"इकाई संख्या 24 के कुछ विषय"

- कुरान अल्लाह की ओर से है और जो लोग कहते हैं कि यह घडी हुवी है उन का रद । (1-3)

यूनिट नंबर 25

इक्कीसवें पारा सूरह अल-सजदा सूरह नंबर 32 की आयत 4 से 9 बताया जा रहा है कि अल्लाह ने पूरी कायनात की रचना 6 दिन में की।

"यूनिट नंबर 25 के कुछ विषय"

- अल्लाह की शक्ति, एकता और उसके आशीर्वाद के कुछ प्रमाण। (4-9)

यूनिट नंबर 26

सूरह नंबर 32 की आयत 10 से 11, सूरह अल-सजदा, उन लोगों को अस्वीकार करती है जो पुनरुत्थान के बाद दोबारह उठाये जाने का इंकार करती है पुनरुत्थान से इनकार करते हैं।

"यूनिट नंबर 26 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों का मृत्यु के बाद पुनरुत्थान से इनकार और क़ियामत के दिन उनका अंजाम (10-14)

यूनिट नंबर 27

इक्कीसवें पारा में, सूरह अल-सजदा, सूरह नंबर 32, आयत 12 से 17 तक, यह कहा गया था कि पुनरुत्थान के दिन, अविश्वासियों, बहुदेववादियों, पाखंडी और पापियों को अपमानित किया जाएगा उसके बाद क़यामत के दिन ईमान लाने वालों की निशानियाँ बताई गई।।

"यूनिट नंबर 27 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों का मृत्यु के बाद पुनरुत्थान से इन्कार और पुनरुत्थान के दिन उनका अन्जाम। (10-14)
- ईमानवालों के गुण और उनका प्रतिफल। (15-19)

यूनिट नंबर 28

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-सजदा, सूरह नंबर 32, आयत 18 से 22 तक, यह कहा गया कि अल्लाह एक है जो न्यायी और निष्पक्ष है।

"यूनिट नंबर 28 के कुछ विषय"

- अल्लाह की निशानियों और उनके इनाम के साथ काफ़िरों के लक्षण। (20-22)
- ईमानवालों के गुण और उनका प्रतिफल। (15-19)

यूनिट नंबर 29

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-सजदा, सूरह नंबर 32 की आयत 23 से 25 में, इमामत, सियादत और नेतृत्व के संकेतों का वर्णन किया गया है कि जो लोग निर्देशित होंगे वे धैर्यवान होंगे और जो हमारी आयतों पर विश्वास करेंगे।

"इकाई संख्या 29 के कुछ विषय"

- मूसा (अलैहिस्सलाम) पर तोरैत के रहस्योद्घाटन और उनके अनुयायियों का सम्मान करने का उल्लेख। (23-25)

यूनिट नंबर 30

इक्कीसवें पारा सूरह अल-सजदा सूरह नंबर 32 की आयत 26 से 30 में अल्लाह ने सलाह दी है।

"यूनिट नंबर 30 के कुछ विषय"

- हर चीज़ पर अल्लाह की शक्ति की पुष्टि। (26-27)
- पुनरुत्थान के बाद मृत्यु की पुष्टि (28-30)

	इक्कीसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय।	सूरह अल-अहज़ाब
	Surah Al-Ahzab सूरह अल-अहज़ाब	

समूह	समूह	گروه
	"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मदीना	
	"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य	

गंभीर परिस्थिति में भी अल्लाह के प्रति समर्पण कर दो। एक मुसलमान का सम्मान यह है कि वह खुद को अल्लाह के हवाले कर दे।1

इस सूरह का फोकस यह आयत है:

قَالَ تَعَالَى: ﴿وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥٓ أَمْرًا أَن يَكُونَ لَهُمُ ٱلْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ ۗ وَمَن يَعْصِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَٰلًا مُّبِينًا ﴿٣٦﴾﴾ الأحزاب

2

(अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें: (من أسباب السعادة لعبد العزيز بن محمد السدحان

(अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर अल-कुर्तुबी खंड 14 / पृष्ठ 169 देखें)

- इस सूरह को अहज़ाब नाम दिया गया है क्योंकि अहज़ाब उस सबसे गंभीर स्थिति का संकेत है जिससे साथी (सहाबा) गुज़रे थे, बहुदेववादी हर तरफ से हमला कर रहे थे, ऐसे समय में जब उन्होंने खुद को अल्लाह के हवाले कर दिया था, जिस पर अल्लाह ने स्वर्गदूतों (फ़रिश्ते) और हवाओं के साथ उनकी मदद की। महान ने कहा:

- मनुष्य बाध्य है. उन्होंने ट्रस्ट को संभालने और उसे चुकाने की जिम्मेदारी ली है. अमानत का तात्पर्य ईश्वरीय आज्ञाकारिता और शरीयत कष्टों से है।

मुनासिबत / लताइफे तफ़्सीर

- कुरान और पैगम्बरत्व के बारे में उठाए गए प्रश्नों के उत्तरों का सिलसिला जारी है, और हम सूरह फुरकान पर विचार कर रहे हैं।

यूनिट नंबर 31

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33 की आयत 1 से 3 में, अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम) को अल्लाह से डरने (तक़वा इख़्तियार करने) , रहस्योद्घाटन का पालन करने और अल्लाह पर भरोसा रखने और अविश्वासियों और पाखंडियों का विरोध करने के लिए कहा जा रहा है।

"इकाई संख्या 31 के कुछ विषय"

- पैगंबर का मार्गदर्शन. (1-3)

यूनिट नंबर 32

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-अहजाब, सूरह नंबर 33 की आयत 4 से 5 में समाज में पाई जाने वाली एक बुराई को खत्म करने की बात कही गई है और बताया गया है कि मुंह बोले बेटे या बेटी की कोई हैसियत नहीं है, बच्चों को उनके असली माता-पिता के पास भेजो।

"इकाई संख्या 32 के कुछ विषय"

- ज़ीहार और मुतबन्ना की पवित्रता। (4-5)

यूनिट नंबर 33

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-अहजाब, सूरह नंबर 33 की आयत 6 से 8 में, यह बताया जा रहा है कि अल्लाह के पैगंबर सभी विश्वासियों के बहुत करीब हैं, इसके बाद यह कहा गया कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम), और अन्य सभी पैगंबर अलैहिमस्सलाम, उन्होंने अल्लाह के साथ उपदेश देने और प्रचार करने का समझौता किया था।

"इकाई संख्या 33 के कुछ विषय"

- पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम का स्थान, और रिश्तेदारों के बीच विरासत की वैधता। (6)
- भविष्यवक्ताओं अंबिया सेवाचा ली गई थी। (7-8)

यूनिट नंबर 34

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-अहजाब, सूरह नंबर 33 की आयत 9 से 11 में, हमलावर दलों का विवरण दिया गया है, और यहूदियों के अविश्वास और पाखंडियों के पाखंड और उनकी उत्पत्ति का खुलासा किया गया है, कैसे मक्का के बहुदेववादी और कुरैश के काफिर एक साथ उनके अनुबंध बन गए। और वे उन्हें आर्थिक और शारीरिक रूप से मदद कर रहे हैं, उनके जवाब में, अल्लाह के पैगंबर, सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम, और उनके साथियों, रज़ियल्लाहो अन्हो, मदीना के चारों ओर खाइयां बनाईं ताकि दुश्मन मदीना में प्रवेश न कर सकें।

"इकाई संख्या 34 के कुछ विषय"

- अहज़ाब की कहानी और उससे प्राप्त कुछ सबक। (9-27)

यूनिट नंबर 35

इक्कीसवें पारा सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33 की आयत 12 से 20 में बताया जा रहा है कि अल्लाह ने अहज़ाब की लड़ाई में अविश्वासियों और पाखंडियों को अपमानित और अपमानित किया और उनके विजयी गुणों को प्रकट किया और उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

"इकाई संख्या 35 के कुछ विषय"

- ग़ज़वा अहज़ाब की कहानी और उससे प्राप्त कुछ छंद। (9-27)

यूनिट नंबर 36

इक्कीसवें पारा सूरह अल-अहजाब, सूरह नंबर 33 की आयत 21 से 24 तक, अल्लाह सर्वशक्तिमान ने अल्लाह के पैगंबर के गुणों का उल्लेख किया, सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम, और पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम के गुणों का वर्णन किया, और कहा कि जिसे यह गुण प्राप्त होगा वह परिपूर्ण होगा।

"इकाई संख्या 36 के कुछ विषय"

- ग़ज़वा अहज़ाब की कहानी और उससे प्राप्त कुछ छंद। (9-27)

यूनिट नंबर 37

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-अहजाब, सूरह नंबर 33 की आयत 25 से 27 में कहा जा रहा है कि अल-अहजाब की लड़ाई में काफिरों और पाखंडियों की मृत्यु विश्वासघात से हुई और अल्लाह सर्वशक्तिमान ने उन्हें वाचा तोड़ने के इनाम के रूप में उनके अंत तक पहुँचाया।

"इकाई संख्या 37 के कुछ विषय"

- ग़ज़वा अहज़ाब की कहानी और उससे प्राप्त कुछ छंद। (9-27)

यूनिट नंबर 38

इक्कीसवें पारा, सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33, आयत नंबर 28 से 30 में कहा जा रहा है कि हे अल्लाह के पैगंबर, सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अल्लाह आप को हुकुम देता है को अपनी पवित्र पत्नियों को दो तरीकों में से एक में अधिकार देने का आदेश दें। 1. यदि आप सांसारिक चीजों की चाहत रखते हैं, तो उन्हें अपने विवाह से बाहर कर दें। यदि वे तुमसे संतुष्ट रहें और निर्धनता में धैर्य रखें तो उन्हें परलोक में दुगुनी नेमतें मिलेंगी।

"इकाई संख्या 38 के कुछ विषय"

- पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की पत्नियों को इस दुनिया और उसके बाद के बीच चयन करने की शक्ति है - (28-29)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

ومن يقنت

22

BA'ESWAN PAARA (JUZ) "ومن يقنت "KA MUKHTASAR TAAARUF

बाईसवां पारा (भाग) " ومن يقنت " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय।

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓاْ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُوْلُواْ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

बाईसवें पारा /अध्याय का संक्षिप्त परिचय
" Para 22 – Wa Manyaqnut" وَمَن يَقْنُتْ

बाईसवें पारा का संक्षिप्त परिचय इस पारा को विद्वानों ने (31) इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:

पारा संख्या 22 ومن يقنت के छंद और विषयों का इकाई के अनुसार वितरण।			
इकाइयां			विषयों
		सूरह अल-अहज़ाब	
इकाई संख्या: 1	**31**	**34**	विवाहित जोड़ों के गुण और उनकी जिम्मेदारियाँ
यूनिट नंबर: 2	**35**		पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता की "लैंगिक समानता"। लिंग के आधार पर आदेश अलग-अलग होते हैं। यह समानता और न्याय पर आधारित है। सादृश्य से नहीं.
यूनिट नंबर: 3	**36**	**39**	ले पलक [मुंह मुंह बोले बेटे/बेटी] के फैसले और मुद्दे, उम्म अल-मुमिनीन ज़ैनब (रज़ियल्लाहो अन्हो) के तलाक और शादी का बयान।
यूनिट नंबर: 4	**40**	**44**	पैग़म्बरी के अंत की घोषणा।
यूनिट नंबर: 5	**45**	**48**	पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के कुछ नामों और कुछ विशेषताओं का विवरण।
यूनिट नंबर: 6	**49**	**52**	अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के विवाह नियमों का वर्णन, और उम्मत के विवाह नियम और मुद्दे।
यूनिट नंबर: 7	**53**	**55**	अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के घर में प्रवेश करने के शिष्टाचार का वर्णन। आस्थावानों की माताओं (उम्महातुल मोमिनीन) को हिजाब पहनने का आदेश
यूनिट नंबर: 8	**56**	**58**	दुरूद की फ़ज़ीलत और अहमियत का बयान।
यूनिट नंबर: 9	**59**		घूँघट और हिजाब के सामान्य क्रम का एक विवरण।
यूनिट नंबर: 10	**60**	**68**	पितरों का अनुसरण करने का निषेध.
यूनिट नंबर: 11	**69**	**71**	विश्वासियों के लिए उपदेश और सलाह का एक बयान।

यूनिट नंबर: 12	**72**	**73**	वही की ज़िम्मेदारी और इंसान का उस ज़िम्मेदारी को क़बूल करने का बयान
सूरह सबा'			
यूनिट नंबर: 13	**1**	**2**	अल्लाह की स्तुति का कथन।
यूनिट नंबर: 14	**3**	**9**	पुनरुत्थान के बाद जीवन से इनकार करने वालों की अस्वीकृति का बयान।
यूनिट नंबर: 15	**10**	**14**	दाऊद और सुलैमान की कृतज्ञता का उल्लेख तथा कृतघ्नों पर अल्लाह के दण्ड का वर्णन |
यूनिट नंबर: 16	**15**	**21**	सबा के लोगों का विस्तृत विवरण
यूनिट नंबर: 17	**22**	**28**	मनुष्यजाति का मार्गदर्शन करने के लिये भेजे जाने वाले दूतों का कथन |
यूनिट नंबर: 18	**29**	**33**	अविश्वासियों और बहुदेववादियों की अवज्ञा का स्पष्ट उल्लेख।
यूनिट नंबर: 19	**34**	**39**	लोगों ने अल्लाह के पैगंबर (उन पर शांति हो) के निमंत्रण को स्वीकार नहीं करने के कारण का स्पष्टीकरण।
यूनिट नंबर: 20	**40**	**42**	पुनरुत्थान के दृश्यों और उत्पीड़कों के भाग्य का वर्णन।
यूनिट नंबर: 21	**43**	**45**	काफ़िरों और मुश्रिकों की निशानियों का वर्णन.
यूनिट नंबर: 22	**46**	**54**	चिंतन के लिए निमंत्रण का एक वक्तव्य।
सूरह फातिर			
यूनिट नंबर: 23	**1**	**8**	अल्लाह की स्तुति और उपासना का वर्णन और अल्लाह के नबी-अल्लाह की तसल्ली का जिक्र और दुनिया के धोखे के कारणों की व्याख्या।
यूनिट नंबर: 24	**9**	**14**	अल्लाह तआला की ताक़त की निशानियों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 25	**15**	**26**	अल्लाह का न्याय कथन.
यूनिट नंबर: 26	**27**	**28**	विद्वानों की श्रेष्ठता का कथन |
यूनिट नंबर: 27	**29**	**35**	पवित्र कुरान एक आशीर्वाद है और विश्वासियों का निवास स्वर्ग है।
यूनिट नंबर: 28	**36**	**37**	अविश्वासियों एवं बहुदेववादियों के अन्जाम का वर्णन |
यूनिट नंबर: 29	**38**	**41**	अल्लाह की महिमा और अल्लाह की प्रभुता के उदाहरणों का विवरण।
यूनिट नंबर: 30	**42**	**43**	लोगों का इस्लाम से दूर रहने की वुजूहात का बयान

यूनिट नंबर: 31	**44**	**45**	इंसानों के कई पापों के बावजूद, अल्लाह एक निश्चित अवधि के लिए मोहलत देता है।

यूनिट नंबर 1 :

बाईसवें पारा, सूरह अल-अहजाब, सूरह नंबर 33 की आयत 31 से 34 में कहा जा रहा है कि अल्लाह के पैगंबर की पवित्र पत्नियों के गुणों के तहत उनसे प्रश्न भी कठिन होंगे, भगवान उन्हें आशीर्वाद दें और उन्हें शांति प्रदान करें, इसलिए पवित्र पत्नियों को सिखाया जा रहा है कि उनकी जिम्मेदारियां भी दोगुनी हो गई हैं।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- पैग़म्बरी के शिष्टाचार और निर्देश। (30-34)

यूनिट नंबर 2

बाईसवें पारा, सूरह अल-अहजाब,सूरह नंबर 33 की आयत 35 में कहा गया है कि पुरुष और महिलाएं पुरस्कार और इनाम के मामले में समान हैं, लेकिन उनके लिंग के अनुसार आदेश अलग-अलग हैं, और पुरुष और महिला दोनों को अनिवार्य घोषित किया गया है, और वे दोनों स्वर्ग के आशीर्वाद में समान हैं।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- ज़ैनब और ज़ैद की कहानी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनकी शादी ताकि मुंहबोले बेटे की अवधारणा को खत्म किया जा सकता है

यूनिट नंबर 3

बाईसवें पारा, सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33 की आयत 36 से 39 में, दत्तक (बोला हुआ) बेटी, या बेटे के फैसलों और समस्याओं का एक विस्तृत विवरण है, उम्म अल-मुमिनीन ज़ैनब की तलाक और शादी के बारे में विस्तार कथन।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- ज़ैनब और ज़ैद की कहानी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनकी शादी ताकि मुंहबोले बेटे की अवधारणा को खत्म किया जा सकता है (36-40)

यूनिट नं : 4

बाईसवें पारा सूरह अल-अहजाब, सूरह नंबर 33, आयत नंबर 40 से 44 में कहा जा रहा है कि अल्लाह के पैगंबर आखिरी पैगंबर हैं, उनके बाद कोई पैगंबर और दूत नहीं आएंगे, और कुरान और हदीस को संरक्षित किया गया है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- बार-बार अल्लाह का जिक्र करने का आदेश और ईमानवालों पर अल्लाह की कृपा। (41-44)

यूनिट नंबर 5

बाईसवीं आयत में, सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33, आयत 45 से 48, अल्लाह पैगम्बर के कुछ नामों और कुछ विशेषताओं का विवरण।

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का कार्य और उनकी कुछ विशेषताएँ। (45-48)

यूनिट नंबर 6

बाईसवें पारा, सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33, आयत नंबर 49 से 52 में कहा गया है कि अल्लाह के पैगंबर के विवाह आदेशों और उम्मह के विवाह के आदेशों के बीच अंतर, उम्मा को एक साथ चार से अधिक विवाह करने से मना किया गया था, लेकिन अल्लाह के पैगंबर को इसकी अनुमति दी।

बताया जा रहा है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उम्मत की शादी के संबंध में कुछ अलग-अलग कानून हैं

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- विवाह, तलाक और इद्दत के नियम, विशेष रूप से पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के विवाह के नियम। (49-52)

यूनिट नंबर 7

बाईसवें पारा, सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33 की आयत 53 से 55 तक, अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के घर में प्रवेश करने के शिष्टाचार का वर्णन किया गया है, और विश्वासियों की माताओं, (राज़ी अल्लाहो अणहूंना), को हिजाब पहनने का आदेश दिया गया है।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- विश्वासियों के लिए पैगंबर के घर में प्रवेश करने का शिष्टाचार। (53-55)

यूनिट नंबर 8

बाईसवें पारा, सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33 की आयत 56 से 58 में, दरूद के गुणों और दरूद के महत्व का वर्णन किया गया है।

यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय

- पैगम्बर पर दरूद भेजने का आदेश और उसके गुण ।(56)
- जो लोग अल्लाह और उसके रसूल और ईमानवालों को यातना देंगे, उनका अंत दुखद होगा (57-58)।

यूनिट नं: 9

बाईसवें पारा, सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33 की आयत 59 में, मुस्लिम महिलाओं और विश्वासियों की माताओं के लिए पर्दे का आदेश, राज़ी अल्लाहो अणहूंना (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो), और इसके नियमों और समस्याओं की व्याख्या।

इकाई संख्या 9 के विषय।

- पर्दे का क्रम (59)

यूनिट नंबर 10

बाईसवें पारा सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33 की आयत 60 से आयत 68 तक, पूर्वजों का अनुसरण करने से मना किया गया और अविश्वासियों और पाखंडियों ने इस पर आपत्ति जताई थी, इसलिए उन आपत्तियों का जवाब भी दे दिया गया है.

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- पाखंडियों का खतरा. (60-62)
- पुनरुत्थान का दिन कैसे आएगा, और अल्लाह ने अविश्वासियों के लिए जो तैयार किया है। (63-68)

यूनिट नंबर 11

बाईसवें पारा सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33 की आयत 69 से आयत 71 तक, विश्वासियों को कुछ सलाह दी गईं।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- ईमानवालों को हिदायतें और उन पर करबंद रहने का बदला। (69-71)

यूनिट नंबर 12

बाईसवें पारा सूरह अल-अहज़ाब, सूरह नंबर 33 की आयत 72 से आयत 73 तक, रहस्योद्घाटन की जिम्मेदारी का उल्लेख है आकाश, धरती, पहाड़, सभी चीजें रहस्योद्घाटन की जिम्मेदारी से पीछे हट गईं। जब मनुष्य ने रहस्योद्घाटन की जिम्मेदारी स्वीकार की, तो कहा गया, "तुमने रहस्योद्घाटन की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली है; इस जिम्मेदारी को पूरा करो।"।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- अमानत की अहमियत और विश्वासघात के महत्व पर चेतावनी। (72-73)

सूरह सबा
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का
"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य”

- स्वयं को अल्लाह के प्रति समर्पित करना प्रगति और सभ्यता के अस्तित्व की गारंटी है। और कृतघ्नता के विनाश की चेतावनी
- यह एक मक्की सूरह है, जिसमें परिष्कृत सभ्यताओं के दो उदाहरण वर्णित हैं:
  - डेविड (उस पर शांति हो) और सुलैमान (उस पर शांति हो)।
  - सबा

- तौहीद की पुष्टि और आख़िरत की पुष्टि के माध्यम से उन्होंने कृतघ्नता की इस बीमारी को दूर करने का संदेश दिया।
- दाऊद अलैहिस्सलाम और सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए अपने आशीर्वाद की वर्षा की, अल्लाह ने सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए हवा और जिन्न और सभी चीजों को अपने अधीन कर दिया और दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए लोहे को नरम कर दिया।

(अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें: من أسباب السعادة لعبد العزيز بن محمد السدحان)

- समर्पण के कारण अल्लाह ने उन्हें हर प्रकार की नेमतें प्रदान कीं। दूसरी ओर, इसके विपरीत, राष्ट्र सबा था।
- क़ौमे सबा जो अपने आप को समर्पित नहीं करते, उनका भाग्य अल्लाह के सामने विनाश और विनाश के अलावा कुछ नहीं है। 2
- छोटी चिड़िया हुदहुद को तक शिर्क बिल्कुल भी पसंद नहीं है।
- अल्लाह ने सुलेमान (अलैहिस्सलाम) को पक्षी की बोली सिखाई, इसलिए उन्होंने पलट कर अपनी इसी काबिलियत से एकेश्वरवाद फैलाया, रानी सबा ने इस्लाम कबूल कर लिया।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सूरह सबा और सूरह फातिर में एकेश्वरवाद मजबूती से स्थापित है।3

यूनिट नं: 13

बाईसवां पारा सूरह सबा, सूरह नंबर 34 में आयत 1 से आयत 2 तक अल्लाह की स्तुति और प्रशंसा का वर्णन किया गया है। अल्लाह सुभानहु व ताआला की प्रशंसा और महिमा व्यक्त की गई है।

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- अल्लाह ही सभी प्रशंसाओं का पात्र है। (1-2)

2 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 7 / पृष्ठ 504 देखें)

3 (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें - شرح كتاب التوحيد للإمام ابن عبد الوهاب:: शेख मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन

यूनिट नंबर 14

बाईसवां पारा सूरह सबा, सूरह नंबर 34 की आयत 3 से आयत 9 तक, जो लोग पुनरुत्थान के बाद फिर से जीवन से इनकार करते हैं, उन्हें अस्वीकार कर दिया जाता है।

"इकाई संख्या 14 के कुछ विषय"

- अविश्वासियों का पुनरुत्थान से इनकार, पुनरुत्थान की वैधता, मृत्यु के बाद पुनरुत्थान

यूनिट नंबर 15

बाईसवें पारा, सूरह सबा, सूरह नं. 34, आयत नं. 10 से आयत नं 14 में दाऊद (अलैहिस्सलाम) और सुलेमान (अलैहिस्सलाम) का जिक्र किया गया है और कहा गया है कि ये दोनों बहुत आभारी बंदे हैं, उसके बाद अल्लाह ने अपनी नेमतों का जिक्र किया और मीठे फलों के बागों का जिक्र किया और बताया गया कि अल्लाह की ओर से बाढ़ आई और वे सभी बह गए क्योंकि वे इन नेमतों के लिए आभारी नहीं थे। अल्लाह तआला ने शुक्रगुजार बंदों का भी जिक्र किया।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- दाऊद (अलैहिस्सलाम), सुलैमान (अलैहिस्सलाम) और उन पर अल्लाह की नेमतों का तज़किराह । (10-14)

यूनिट नंबर 16

बाईसवें पारा, सूरह सबा, सूरह नंबर 34 की आयत 15 से आयत 21 में विस्तार से किया गया है।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- सबा और सैले ईरम की घटना. (15-19)
- शैतान का प्रलोभन। (20-21)

यूनिट नंबर 17

बाईसवें पारा, सूरह सबा, सूरह नं. 34, आयत नं. 22 से आयत नं. 28 तक बहुदेववादियों के लिए उदाहरण वर्णित किए गए हैं और कहा गया है कि हम मानव जाति का मार्गदर्शन करने के लिए दूत और पैगम्बर भेजते हैं।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- जहाँ में सारा अधिकार अल्लाह का है। (22-27)
- मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के सार्वजनिक मिशन का उल्लेख।

यूनिट नंबर 18

- सूरह सबा की आयत 29 से आयत 33 तक अविश्वासियों और बहुदेववादियों की अवज्ञा का स्पष्ट वर्णन, सूरह सबा, आयत 29।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के लिए ज्ञान के सार्वजनिक मिशन का उल्लेख। (28-30)
- बहुदेववादियों द्वारा कुरान पर ईमान न लाना तथा प्रलय के दिन गुमराह लोगों और गुमराह करने वालों के बीच बहस।- (31-33)

यूनिट नंबर 19:

बाईसवें पारा, सूरह सबा, सूरह नंबर 34 की आयत 34 से आयत 39 तक, कहा गया है कि जो लोग विलासिता और आरामदायक जीवन के कारण अल्लाह के पैगंबर, भगवान उन्हें आशीर्वाद दें और उन्हें शांति प्रदान करें, के निमंत्रण को अस्वीकार कर रहे थे, उन्हें इस प्रथा से दूर रहने का आदेश दिया गया था।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- इस दुनिया और उसके बाद अविश्वासियों का भाग्य (34-45)।

यूनिट नंबर 20

बाईसवें पारे सूरह सबा में सूरह नंबर 34 की आयत 40 से आयत 42 तक क़यामत के दिन के मंजर बताए जा रहे हैं और ज़ालिमों का हश्र बताया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

- दुनिया और उसके बाद अविश्वासियों का अंजाम (34-45)

यूनिट नंबर 21

बाईसवें पारा सूरह सबा के, सूरह नंबर 34, आयत 43 से आयत 45 तक में कहा गया है कि मुश्रिकों ने इस दुनिया की लापरवाही मोल ले ली है और उनमें से कुछ ऐसे हैं कि आख़िरत को भूल गए हैं।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- दुनिया और उसके बाद अविश्वासियों का अंजाम (34-45)

यूनिट नंबर 22

बाईसवें पारा सूरह सबा, सूरह नंबर 34 की आयत 46 से आयत 54 तक लोगों को सोचने और प्रोत्साहित करने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुरक्षा और पवित्र पैगम्बर की शुभकामनाओं का बयान। (46-50)
- क़यामत के दिन काफ़िरों की घबराहट और उनके अंत का वर्णन (51-54)

	बाईसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	
सृष्टा	Paida karne wala	सूरह फातिर
	"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का	

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- अल्लाह के प्रति आत्म-समर्पण सम्मान पाने का साधन है।

مَن كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ
وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ وَمَكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يَبُورُ. (10) [2]

- इस सूरह की कई आयतों में ब्रह्मांड में अल्लाह की शक्ति के संकेतों का उल्लेख किया गया है, और बताया गया है कि वे सभी अल्लाह के सामने सर झुकाये हुवे हैं। 3

(अधिक जानकारी के लिए देखें: من أسباب السعادة لعبد العزيز بن محمد السدحان)

2 (अधिक जानकारी के लिए, أضواء البيان فى إيضاح القرآن بالقرآن)

[3] (التفكير في آيات الله تعالى ومخلوقاته في ضوء القرآن والسنة للدكتور : عبد الله بن إبراهيم اللحيدان)

- यदि शिर्क की निंदा को (उदाहरणों के माध्यम से आसानी से) समझना या समझाना है, तो इस सूरह को बार-बार पढ़ें, शिर्क की निंदा और विनाश स्पष्ट हो जाएगा
- झूठे देवताओं की अस्वीकृति, विशेषकर जब फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ बना दिया जाता है और देवता बना दिया जाता है, तो इसे दृढ़ता से अस्वीकार किया जाता है।
- यह सूरह बहुदेववाद की अस्वीकृति और एकेश्वरवाद की समझ के लिए पर्याप्त है।
- इस सूरह के उद्देश्यों में प्रसिद्ध प्रश्नों के उत्तर शामिल हैं जैसे:

1) हम कौन हैं?

2) हमें किसने बनाया?

3) मृत्यु के बाद व्यक्ति कहाँ जाता है?

4) हमें क्यों बनाया गया?

5) हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए?

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- तौहीद को सूरह सबा और सूरह फातिर में दृढ़ता से स्थापित किया गया है। 5

4 (अधिक जानकारी के लिए देखें - مجموع فتاوى ابن تيميةج1/ ص 88))

5 (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें - شرح كتاب التوحيد للإمام ابن عبد الوهاب: शेख मुहम्मद बिन सालेह अल-उथैमीन

यूनिट नंबर 23

बाईसवाँ पारा, सूरह फातिर, सूरह नं. 35, आयत नं. 1 से आयत नं. 8 तक, जिसमें अल्लाह तआला की स्तुति का वर्णन किया गया है और उसके बाद अल्लाह के नबी को तसल्ली दी गई है, उसके बाद उन कारणों और वजहों को बताया जा रहा है जिनके कारण लोग दुनिया के धोखे और उपेक्षा का शिकार होते हैं।

"यूनिट नंबर 23 के कुछ विषय"

- अल्लाह की स्तुति करो क्योंकि सब कुछ उसके हाथ में है और वह रचयिता और प्रतिफल देने वाला है (1-4)
- दुनिया और शैतान से बचने का उपदेश और इस मामले में लोगों के दो समूहों (5-)।

यूनिट नं : 24

बाईसवें पारा, सूरह फातिर, सूरह नंबर 35 की आयत 9 से आयत 14 तक, अल्लाह की निशानियों का जिक्र किया जा रहा है जैसे हवा का अस्तित्व, हवाओं का चलना, इंसान के मिट्टी से बने होने का जिक्र और खारे पानी और ताजे पानी का एक प्रणाली के तहत समुद्र में न मिलने का जिक्र।

"इकाई संख्या 24 के कुछ विषय"

- मृत्यु के बाद पुनरुत्थान तथा हिसाब-किताब की पुष्टि | (9-10)
- ईश्वर की शक्ति का प्रकटीकरण. (11-13)

यूनिट नंबर 23

बाईसवाँ पारा, सूरह फातिर, सूरह नं. 35, आयत नं. 1 से आयत नं. 8 तक, जिसमें अल्लाह तआला की स्तुति का वर्णन किया गया है और उसके बाद अल्लाह के नबी को तसल्ली दी गई है, उसके बाद उन कारणों और वजहों को बताया जा रहा है जिनके कारण लोग दुनिया के धोखे और उपेक्षा का शिकार होते हैं।

"यूनिट नंबर 23 के कुछ विषय"

- अल्लाह की स्तुति करो क्योंकि सब कुछ उसके हाथ में है और वह रचयिता और प्रतिफल देने वाला है (1-4)
- दुनिया और शैतान और इस मामले में लोगों के दो समूहों से बचने का उपदेश (5-)।

यूनिट नं: 24

पीडिया बा इक्कीस पारा, सूरह फातिर, र,, सूरह नंबर 35 की आयत 9 से आयत 14 तक, अल्लाह की निशानियों का जिक्र किया जा रहा है जैसे हवा का अस्तित्व, हवाओं का चलना, इंसान के मिट्टी से बने होने का जिक्र और नमक और ताजे पानी का एक प्रणाली के तहत समुद्र में न मिलने का जिक्र।

"इकाई संख्या 24 के कुछ विषय"

- मृत्यु के बाद पुनरुत्थान तथा हिसाब-किताब की पुष्टि | (9-10)
- ईश्वर की शक्ति का प्रकटीकरण. (11-13)
- मूर्तियों की हकीकत. (14)

यूनिट नंबर 25

सूरह फातिर, सूरह नंबर 35 की आयत 15 से आयत 26 तक, बताया जा रहा है कि अल्लाह सर्वशक्तिमान सभी चीजों से स्वतंत्र है और अल्लाह सर्वशक्तिमान को सेवकों की आवश्यकता नहीं है, फिर भी अल्लाह सर्वशक्तिमान सभी लोगों के बीच न्याय स्थापित करेगा।

"यूनिट नंबर 25 के कुछ विषय"

- अल्लाह की शक्ति, अल्लाह की संपत्ति और मनुष्य की गरीबी का वर्णन। (15-18)

- आस्तिक और अविश्वासी के लिए दृष्टांत (19-22)
- पैग़म्बर की सच्चाई (23-26) •

यूनिट नं: 26

बाईसवें पारा, सूरह फातिर, सूरह नं. 53, आयत 27 से आयत 28 तक में अल्लाह की और भी निशानियों का उल्लेख किया गया है और कहा जा रहा है कि जो लोग अल्लाह से सबसे ज्यादा डरते हैं, वे विद्वान हैं और विद्वानों में जितना अधिक ज्ञान होता है, वे उतना ही अधिक अल्लाह से डरते हैं।

"यूनिट नंबर 26 के कुछ विषय"

- सृष्टि में विविधता सृजक की एक ही व्यवस्था से एकता तथा विद्वानों की उत्कृष्टता को इंगित करती है। (27-28)

यूनिट नंबर: 27

बाईसवें पारे, सूरह फातिर, सूरह नं. 35 की आयत नं. 29 से आयत नं. 35 तक बताया जा रहा है कि पवित्र कुरान एक आशीर्वाद है और स्वर्ग विश्वासियों का निवास है।

"यूनिट नंबर 27 के कुछ विषय"

- अल्लाह की किताब पढ़ने वालों की श्रेष्ठता और उनके उत्तराधिकारियों और उनके प्रतिफल। (29-35)

यूनिट नंबर 28

बाईसवें पारा सूरह फातिर सूरह नं 35 की आयत 36 से आयत 37 तक अविश्वासियों और बहुदेववादियों के अंत का जिक्र किया जा रहा है।

"इकाई संख्या 28 के कुछ विषय"

- नरक में अविश्वासियों की स्थिति और बहुदेववादियों से उनके विश्वास के विषय में बहस। (36-43)

यूनिट नंबर 29

बाईसवें पारे सूरह फातिर में सूरह नंबर 35 की आयत 38 से आयत 41 तक अल्लाह तआला की महिमा का वर्णन किया जा रहा है और अल्लाह तआला की प्रभुता के उदाहरणों का वर्णन किया जा रहा है।

"इकाई संख्या 29 के कुछ विषय"

- नरक में अविश्वासियों की स्थिति और बहुदेववादियों से उनके विश्वास के विषय में बहस (36-43)

यूनिट नंबर 30

बाईसवें पारा, सूरह फातिर, सूरह नंबर 35 की आयत 42 से आयत 43 में उन कारणों और कारणों का वर्णन किया जा रहा है जिनके कारण लोग इस्लाम से दूर हो जाते हैं या इन कारणों से लोग इस्लाम के बारे में गलत समझते हैं।

"यूनिट नंबर 30 के कुछ विषय"

- नरक में अविश्वासियों की स्थिति और बहुदेववादियों से उनके विश्वास के विषय में बहस (36-43)

यूनिट नं: 31

बाईसवें पारा सूरह फातिर सूरह नं 35 आयत 44 से आयत 45 तक में बताया जा रहा है कि यदि अल्लाह ताला सभी पर महाभियोग चलाने लगे तो धरती पर इंसान का अस्तित्व शून्य हो जाएगा और कहा गया कि अल्लाह ताला एक निश्चित समय के लिए मोहलत देता है।

"इकाई संख्या 31 के कुछ विषय"

- अनुग्रह अवधि के बाद अविश्वासियों को हलाक के संबंध में अल्लाह की सुन्नत। (44-45)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

وما أنزلنا

23

TE'ESWAN PAARA (JUZ) "وما أنزلنا "KA MUKHTASAR TAAARUF

तेइसवां पारा (भाग) " وما أنزلنا " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय |

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَـٰبٌ أَنزَلْنَـٰهُ إِلَيْكَ مُبَـٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَـٰتِهِۦ
وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَـٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

جزاكم الله خيرا

	तेईसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।		
विद्वानों ने तीसवें पारा को उनतालीस (39) इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:			
पैरा संख्या 23 "वामाली" के छंदों और लेखों का इकाइयों द्वारा विभाजन			
इकाइयों	वर्सेज		विषयों
सूरह यासीन			
यूनिट नं.: 1	**1**	**12**	पवित्र कुरान ज्ञान की किताब है, अल्लाह के पैगंबर के गुणों का वर्णन है, पवित्र कुरान के माध्यम से लोगों को डराने की याद दिलाता है।
यूनिट नं.: 2	**13**	**19**	अल-करया के लोगों का वर्णन।
यूनिट नं.: 3	**20**	**32**	आस्तिक की पहचान का बयान.
यूनिट नं.: 4	**33**	**44**	भगवान की दिव्यता और प्रभुत्व का कथन।
यूनिट नं.: 5	**45**	**47**	अविश्वासियों की मनोवृत्ति का वर्णन |
यूनिट नं.: 6	**48**	**54**	बहुदेववादियों का पुनर्जीवित होने से इंकार का कथन
यूनिट नं.: 7	**55**	**58**	धर्मात्मा एवं सज्जनों के लिए परलोक में उत्तम प्रतिफल का वर्णन |
यूनिट नं.: 8	**59**	**68**	अविश्वासियों का अंतिम निवास नर्क है।
यूनिट नं.: 9	**69**	**76**	अल्लाह की एकता का वर्णन और काफ़िरों की कृतघ्नता का उल्लेख।
यूनिट नं.: 10	**77**	**83**	मनुष्य की सच्ची स्थिति और सही समय का उल्लेख करते हुए, मृत्यु के बाद पुनरुत्थान को नकारने वालों की आपत्तियों का प्रमाण सहित उत्तर दिया गया है।
सूरह साफ़्फ़ात			
यूनिट नं.: 11	**1**	**10**	अल्लाह के एक होने का ऐलान, आसमान में जिन्न और शैतान फ़रिश्तों की बातों को उचकने की कोशिश करते रहते हैं, उन को शिहाबे साक़िब से मार गिराने का ज़िक्र.
यूनिट नं.: 12	**11**	**21**	हशर नशार के मंजर और मौत के बाद की जिंदगी का बयान।
यूनिट नं.: 13	**22**	**33**	क़यामत के दिन बहुदेववादियों के प्रश्नों और उत्तरों का वर्णन।
यूनिट नं.: 14	**38**	**61**	पुनरुत्थान के दिन स्वर्ग के लोगों और नरक के लोगों की स्थिति का विवरण।

यूनिट नं.: 15	**62**	**74**	**दण्ड का उल्लेख तथा ज़क़्क़ूम के पेड़ का वर्णन |**
यूनिट नं.: 16	**75**	**82**	नूह (उन पर शांति हो) की कहानी का उल्लेख करें।
यूनिट नं.: 17	**83**	**113**	इब्राहीम और इस्माइल का जिक्र और इब्राहिम के सपने का जिक्र, इस्माइल का ज़बह के लिए तैयार होने का बयान.
यूनिट नं.: 18	**114**	**122**	मूसा और हारून की कहानी का उल्लेख।
यूनिट नं.: 19	**123**	**132**	इलियास (अलैहिस्सलाम) की कहानी का जिक्र.
यूनिट नं.: 20	**133**	**138**	लूत (अलैहिस्सलाम) की कहानी का ज़िक्र।
यूनिट नं.: 21	**139**	**148**	यूनुस (अलैहिस्सलाम) की कहानी का उल्लेख।
यूनिट नं.: 22	**149**	**170**	मक्का के मूर्तिपूजक देवदूतों को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे।
यूनिट नं.: 23	**171**	**182**	मक्का के मूर्तिपूजक देवदूतों (फरिश्तों)को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे। ये शिर्क की बदतरीन और घिनौनी शकल है जिस पर अल्लाह ता'आला ग़ज़बनाक हैं
			सूरह साद
यूनिट नं.: 24	**1**	**11**	अविश्वासियों और बहुदेववादियों के आश्चर्य का वर्णन।
यूनिट नं.: 25	**12**	**16**	काफ़िरों और बहुदेववादियों पर दण्ड का वर्णन।
यूनिट नं.: 26	**17**	**26**	दाऊद (अलैहिस्सलाम) का विस्तार से वर्णन किया गया।
यूनिट नं.: 27	**27**	**29**	ब्रह्मांड के निर्माण के ज्ञान की व्याख्या और कुरान का रहस्योद्घाटन।
यूनिट नं.: 28	**30**	**40**	सुलेमान अलैहिस्सलाम की कहानी का विस्तार से वर्णन।
यूनिट नं.: 29	**41**	**44**	अय्यूब के धैर्य और दृढ़ता का वर्णन.
यूनिट नं.: 30	**45**	**54**	इब्राहीम और उसकी संतान का वर्णन|
यूनिट नं.: 31	**55**	**64**	विद्रोही एवं अवज्ञाकारियों के दण्ड का वर्णन |
यूनिट नं.: 32	**65**	**70**	अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को बुलाने का उद्देश्य एकेश्वरवाद की पुष्टि है।
यूनिट नं.: 33	**71**	**88**	आदम अलैहिस्सलाम और इबलीस की कहानी का वर्णन।
			सूरह अल-ज़ूम्र
यूनिट नं.: 34	**1**	**4**	क़ुरआन का परिचय, ग़लत मान्यताओं के खण्डन का कथन।
यूनिट नं.: 35	**5**	**7**	अल्लाह की निशानियों पर विचार करने के निमंत्रण का वर्णन जो आकाशों और धरती पर फैली हुई हैं।
यूनिट नं.: 36	**8**	**9**	आस्तिक और अविश्वासी दोनों समान नहीं हैं।
यूनिट नं.: 37	**10**	**21**	आस्तिक (मोमिन) को मार्गदर्शन दिया जा रहा है और अविश्वासी को धमकाया जा रहा है।

यूनिट नं.: 38	**22**	**26**	कुरान के प्रति आस्तिक (मोमिन) के प्रेम का वर्णन।
यूनिट नं.: 39	**27**	**31**	उदाहरणों के माध्यम से उपदेश और नसीहत, अरबी में कुरान के रहस्योद्घाटन का वर्णन।

	तेईसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	सूरह यासीन

यासीन	यासीन	यासीन
	"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का	

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- यह दावा कार्यों से लगातार जुड़े रहने के महत्व पर प्रकाश डालता है।'
- यह सूरह उन लोगों के बारे में बात कर रही है जो अभी तक ईमान नहीं लाए हैं।

قَالَ تَعَالَى: ﴿وَسَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَأَنذَرۡتَهُمۡ أَمۡ لَمۡ تُنذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُونَ ١٠﴾

(अधिक जानकारी के लिए, देखें: ज़ाद अल दइआ अल्लामा मुहम्मद सलीह अल-उथैमीन)

- फिर अन्ताकिया गाँव का उदाहरण दिया जा रहा है जहाँ अल्लाह ने तीन पैगम्बरों को एकेश्वरवाद की दावत देने के लिए भेजा, लेकिन उन्होंने इसका खंडन किया, लेकिन उनमें से एक व्यक्ति, जो दूर के गाँव में रहता था, ईमान लाया और पैगम्बरों का पूरा समर्थन करते हुए कहा:

1 (अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें - الأمة الوسط والمنهاج النبوي في الدعوة إلى الله: अब्दुल्ला बिन अब्द अल-मोहसिन अल-तुर्की

وَجَآءَ مِنۡ أَقۡصَا ٱلۡمَدِينَةِ رَجُلٞ يَسۡعَىٰ قَالَ يَٰقَوۡمِ ٱتَّبِعُواْ ٱلۡمُرۡسَلِينَ ﴿٢٠﴾

इस आयत में कहा गया है कि वह आदमी न केवल विश्वास करने लगा, बल्कि लोगों को भी आमंत्रित करने लगा।

(अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर अल-कुर्तुबी खंड 15 / पृष्ठ 19 देखें)

- सुरत के अंत में मृत्यु का उल्लेख किया गया है क्योंकि हर चीज़ की मृत्यु होती है। और दुनिया में सब कुछ विलुप्त हो गया है। और इसीलिए सूरह के अंत में तक्विनी कविता का उल्लेख किया गया है।

وَٱلشَّمۡسُ تَجۡرِي لِمُسۡتَقَرّٖ لَّهَاۚ ذَٰلِكَ تَقۡدِيرُ ٱلۡعَزِيزِ ٱلۡعَلِيمِ ﴿٣٨﴾
وَٱلۡقَمَرَ قَدَّرۡنَٰهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَٱلۡعُرۡجُونِ ٱلۡقَدِيمِ ﴿٣٩﴾

सूर्य और चंद्रमा पतन की ओर बढ़ रहे हैं, संपूर्ण विश्व पतन की ओर बढ़ रहा है।

- इस सूरा में परलोक की पुष्टि को करुणा और तार्किक एवं प्राकृतिक तर्कों से परिपूर्ण ढंग से सजाया गया है। यदि मनुष्य अपनी सम्यक एवं सुदृढ़ बुद्धि का प्रयोग करे तो उसके परलोक का संशय दूर हो जाता है। अगर शुरुआत में कोई कठिनाई नहीं हुई तो इसे दोहराना कैसे कठिन होगा?

(अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 7 / पृष्ठ 594 देखें)

2 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें: शरह रियाद अल-सलीहीन, अध्याय ज़िक्र अल-अलमत वक़्सिर अल-अमल, खंड III: शेख अल्लामा मुहम्मद बिन सालेह अल-उथैमीन द्वारा।

मौक़ा/लताएफ़ तफ़सीर

- मक्का सूरह में, तौहीद, पैग़म्बरी और आख़िरत का पहलू पिछले दो सूरहों की तरह ही इसमें भी प्रबल है।

यूनिट नंबर 1 :

सूरह यूनुस

अल्लाह् का तेईसवाँ पैराग्राफ, सूरह लिस, सूरह नंबर 36 की आयत 1 से 12 तक, जिसमें अल्लाह सर्वशक्तिमान की कसम है कि पवित्र कुरान महान ज्ञान की किताब है, जिसके बाद अल्लाह के पैगंबर के गुण, उन पर शांति हो और अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस कुरान के माध्यम से लोगों को चेतावनी देने का आदेश दिया गया, उसके बाद कहा गया कि इन दुर्भाग्यशाली लोगों के लिए मार्गदर्शन तक पहुंचना बहुत मुश्किल है, इसके बाद कि उन्होंने मक्का के बहुदेववादियों और कुरैश के काफिरों के बारे में कहा। ऐसा कहा जाता है कि उनकी आंखें, कान और सभी चीजें बंधी हुई हैं, इसलिए वे सुन या देख नहीं सकते हैं, यहां अल्लाह के पैगंबर के प्रवास की ओर भी इशारा किया गया है।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- कुरान का अल्लाह की ओर से रसूल पर अवतरण, जिसने अवज्ञाकारी बहुदेववादियों को दंडित किया
- वे ईमानवालों को धमकाते हैं और अच्छे प्रतिफल की शुभ सूचना देते हैं। (1-12)

यूनिट नंबर 2:

सूरह लेस तेईसवें पारा को लें, सूरह नंबर 36 की आयत 13 से 19 तक, "अशब अल-कुरियाह" में ग्रामीणों की एक कहानी बताई गई है।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

एक गांव के विद्रोही लोगों की कहानी. (13-32)

यूनिट नंबर 3:

तेईसवें पारा, सूरह लिस, सूरह नंबर 36 की आयत 20 से 32 में, यह कहा गया है कि एक आस्तिक लोगों को सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर बुलाता है और मैसेंजर का अनुसरण करता है।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- एक गांव के विद्रोही लोगों की कहानी. (13-32)

यूनिट नं 4:

तेईसवाँ पारा, सूरह लिस, सूरा नं. 36 की आयत नं. 33 से 44 में आधिपत्य और देवत्व के संकेतों का उल्लेख है कि अनाज मृत भूमि में उगता है और वह भूमि लहलहाते खेतों में बदल जाती है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- पृथ्वी, आकाश और समुद्र में अल्लाह की शक्ति और कृपा की अभिव्यक्ति। (33-44)

यूनिट नंबर 5:

सूरह लिस के तेईसवें पारा, सूरह नंबर 36 की आयत 45 से 47 में काफ़िरों के बारे में कहा गया है कि वे सच्चाई से इनकार करते हैं और मार्गदर्शन से मुंह मोड़ते हैं और न ही आख़िरत से डरते हैं।

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- अल्लाह की निशानियों के बारे में अविश्वासियों के बारे में जो परहेज़गारी और दान की मांग करते हैं

यूनिट नंबर 6:

सूरह लिस के तेईसवें पारा, में सूरह नंबर 36 की आयत 48 से 54 तक में कहा गया है कि मुश्रिक इस बात से इनकार करते थे और कहते थे कि वे पुनरुत्थान में पुनर्जीवित नहीं होंगे।

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

पुनरुत्थान के बाद मृत्यु की पुष्टि, विश्वासियों को स्वर्ग में और अविश्वासियों को नरक में इनाम(49-68)

यूनिट नंबर 7:

तेईसवें पारा, सूरह लिस, सूरह नं. 36, आयत नं. 55 से 58 में बताया जा रहा है कि जो लोग नेक और परहेज़गार होंगे उन्हें परलोक में सबसे अच्छा इनाम दिया जाएगा।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- पुनरुत्थान के बाद मृत्यु की पुष्टि, विश्वासियों को स्वर्ग में और अविश्वासियों को नरक में इनाम(49-68)

यूनिट नंबर 8:

सूरह लिस के तेईसवें पारा, सूरह नंबर 36 की आयत 59 से 68 में कहा गया है कि जो लोग नेक हैं, जिनके दिल कठोर हो गए हैं और जो दुष्ट हैं, उनका निवास स्थान सबसे बड़ा है दमनकारी नरक.

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

पुनरुत्थान के बाद मृत्यु की पुष्टि, विश्वासियों को स्वर्ग में और अविश्वासियों को नरक में इनाम(49-68) सज़ा

यूनिट नं 9:

सूरह लिस के तेईसवें पारा, सूरह नं. 36 की आयत 69 से 76 में अल्लाह के एक होने का प्रमाण बताया गया है और काफिरों के बारे में कहा गया है कि उन्हें अल्लाह की नेमतों से फायदा होता है, लेकिन शुक्र है अल्लाह। वे ऐसा नहीं करते, इसके बजाय वे सर्वशक्तिमान अल्लाह को छोड़ देते हैं और झूठे देवताओं की पूजा करना शुरू कर देते हैं।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- अल्लाह के दूत का कार्य, ईश्वर उसे आशीर्वाद दे और उसे शांति प्रदान करे, और इस तथ्य का खंडन करे कि वह एक कवि है। (69-70)
- अल्लाह की शक्ति और उसकी नेमतों का वर्णन। (71-73)
- अल्लाह की नेमतों के प्रति बहुदेववादियों का रवैया। (74-76)

यूनिट नंबर 10:

तेईसवें पारा, सूरह लिस, सूरह नं. 36, आयत नं. 77 से 83 में कहा गया है कि हमने मनुष्य को पानी की एक बूंद से बनाया, लेकिन वह खुला झगड़ालू हो गया और अपनी उत्पत्ति को भूल गया। "कौन है जो मृत हड्डियों को जीवित कर सकता है?" यहां ऐसे उदाहरण दिए गए कि मृत्यु के बाद पुनर्जीवित होने से इनकार करने वालों को उत्तर दिया गया।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की पुष्टि के लिए तर्क। (77-83) मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की पुष्टि (77-83)

सूरह अस-सफ़्फ़ात SURAH AS-SAAFFAAT		
Those Ranged in Ranks	Saf Baandhne wale Fariste	साफ बांधने वाले फरिश्ते
“The Place of Revelation”MAKKAH”\ "रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का		

“Few Topics” "कुछ विषय"

- यदि आप जांच कर लें तो भगवान को समर्पण कर दें! जाहिर है मामला समझ से परे है.
- धुरी: रहस्योद्घाटन, भविष्यवाणी, पुनरुत्थान, तौहीद में विश्वास - 1
- इब्राहिम (अल्लहे व सल्लम) अपने बेटे की बलि देने के लिए तैयार थे:

قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿١٠٠﴾
فَبَشَّرْنَٰهُ بِغُلَٰمٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ ٱلسَّعْيَ قَالَ يَٰبُنَيَّ إِنِّيٓ أَرَىٰ فِي ٱلْمَنَامِ
أَنِّيٓ أَذْبَحُكَ فَٱنظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَٰٓأَبَتِ ٱفْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ سَتَجِدُنِيٓ إِن
شَآءَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّآ أَسْلَمَا وَتَلَّهُۥ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾﴾ الصافات

(अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक पढ़ें – معنى لا الہ الا اللہ و مقتضاھا و اثارھا فی الفرد والمجتمع- صالح بن فوزان الفوزان

- इस सूरह का नाम अल-सफ़ात रखा गया है ताकि सेवकों को पता चले कि फ़रिश्ते अल्लाह के आदेश के अधीन हैं। 2

मौक़ा/ताएफ़ तफ़सीर

- सूरह अस-सफ़ात के बाद सूरह साद पढ़ने से पता चलता है कि सूरह अस-सफ़ात में पैगंबरों का उल्लेख किया गया था और बाकी पैगंबरों का सूरह साद में उल्लेख किया गया था और निरंतरता इस तरह रखी गई थी जैसे कि यह निरंतरता या तम हो। उदाहरण के लिए: सूरह शायरा के बाद नमल, ताहा और पैगंबर के बाद सूरह मरियम, हुद के बाद सूरह अस्किसलाम।
- सूरह अल-सफात में नूह, इब्राहिम, जबीहुल्लाह, मूसा, हारून, लूत और इलियास ((अल्लहे व सल्लम) का उल्लेख है। और सूरत में दाऊद, सुलेमान, अय्यूब ((अल्लहे व सल्लम) का जिक्र है।

यूनिट नंबर 11:

तेईसवाँ पारा, सूरह अस-सफ़ात, सूरह संख्या 37 की आयत 1 से 10 तक, कि अल्लाह सुभानाहु वा ताआला की एकता की घोषणा की गई और उसके बाद जिन्न और शैतानों से आकाश की सुरक्षा की गई . विधि का वर्णन किया गया था जिसका अर्थ है कि जिन्न और शैतानों को उल्काओं द्वारा मार दिया जाता है, जिन्न स्वर्ग में स्वर्गदूतों के शब्दों को बाधित करने की कोशिश करते हैं, इसलिए स्वर्ग को इन बुराइयों से बचाने के लिए स्वर्गदूतों द्वारा यह रणनीति अपनाई गई थी

2 (इस पुस्तक को पढ़ना न भूलें – تعارض العقل والنقل तैमियाह खंड 5/पृष्ठ 385)

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- अल्लाह् और उसकी शक्ति की एकता और शैतानों से स्वर्ग की सुरक्षा (1-10)

यूनिट नंबर 12:

तेईसवें पारा, सूरह् अल-सफ़ात, सूरह् नंबर 37 की आयत 11 से 21 में दुनिया के अंत का उल्लेख है और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म के दृश्य का वर्णन है।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों का बाथ के बाद मृत्यु से इन्कार और पुनरुत्थान के दिन उनका प्रतिशोध। (11-39)

यूनिट नंबर 13:

तेईसवें पारा, सूरह् अस-सफात, सूरह् नंबर 37, आयत नंबर 22 से 37 में कहा गया है कि पुनरुत्थान के दिन बहुदेववादियों से पूछा जाएगा कि उन्होंने इस दुनिया में वचन पढ़ने से इनकार कर दिया,। इस सवाल के जवाब में गर्व और अहंकार के साथ उन पर हमला किया जाएगा.

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों का बाथ के बाद मृत्यु से इन्कार और पुनरुत्थान के दिन उनका प्रतिशोध। (11-39)

यूनिट नंबर 14:

तेईसवें पारा, सूरह अस-सफ़फ़ात, सूरह नंबर 37, आयत नंबर 38 से 61 में, यह कहा गया था कि कयामत के दिन, जो विश्वासी स्वर्ग में हैं, उन्हें स्वर्ग का दृश्य बताया जाएगा, और काफ़िरों और मुशरिकों के सामने नर्क का दृश्य प्रस्तुत किया जाएगा। तुम नर्क को देखकर डर जाओगे।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

जन्नत और उसकी नेमतों और इस दुनिया के बुरे लोगों की याद। (40-61)

यूनिट नंबर 15:

तेईसवें पारा, सूरह अस-सफ़फ़ात, सूरह नंबर 37 की आयत 62 से 74 में, सज़ाओं का चित्रण किया गया है और सज़ा के पेड़ का उल्लेख किया गया है, जो गलत काम करने वालों के लिए तैयार किया जाता है और आज उन्हें फेंक दिया जाएगा उसी सज़ा में|

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- नरक में उत्पीड़कों से मुक्त हो जाओ। तो दण्ड का वृक्ष और उनके दण्ड का कारण। (62-74)

यूनिट नंबर 16:

नूह की कहानी, (अल्लहे व सल्लम) , तेईसवें पारा, सूरह अस-सफ़फ़ात, सूरह संख्या 37, आयत संख्या 75 से 82 में वर्णित है।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- नूह (अल्लहे व सल्लम) की कहानी और इन्कार करने वालों का अंत। (75-82)

यूनिट नंबर 17:

तेईसवें पारा में, सूरह अस-सफ़्फ़ात, सूरह नंबर 37, आयत नंबर 83 से 113, इब्राहिम(अल्लहे व सल्लम) और इस्माइल(अल्लहे व सल्लम) का उल्लेख किया गया है और इब्राहिम(अल्लहे व सल्लम) के सपने का उल्लेख किया गया है, उसके बारे में बताया गया है अपने नग्न जिगर का वध कर रहा है और जब इस्माइल (अल्लहे व सल्लम) ने यह सपना सुना, तो वह तुरंत अल्लाह के आदेश पर वध करने के लिए सहमत हो गया, जबकि यह केवल एक परीक्षा थी जो इब्राहिम(अल्लहे व सल्लम)और इस्माइल (अल्लहे व सल्लम) के नाम से ली गई थी। वे दोनों इस परीक्षा में असफल हो गए। जाएगा उसी सज़ा में |

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- इब्राहीम(अल्लहे व सल्लम) की कहानी और आग को ठंडा करने का चमत्कार (83-98)
- इस्माइल की ख़बरें, उसका वध और इस्हाक़ की ख़बरें। (99-113)

यूनिट नं 18:

तेईसवें पारा, सूरत अल-सफ़ात, सूरत नंबर 37 की आयत 114 से 122 में, मूसा और हारून(अल्लहे व सल्लम) की कहानी का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- मूसा, हारून , इस्माइल , लूत, यूनुस (अल्लहे व सल्लम) की कहानी। (114-148)

यूनिट नंबर 19:

तेईसवें पारा में, सूरह अल-सफात, सूरह नंबर 37 की आयत 123 से 132, इलियास (अल्लहे व सल्लम) की कहानी है

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

मूसा, हारून, अल्यास, लूत, यूनुस (अल्लहे व सल्लम) की कहानी। (114-148)

यूनिट नंबर 20:

तेईसवें पारा , सूरह अल- सफ़्फ़ात, सूरह नंबर 37, आयत 133 से 138 में लूत की कहानी है।

"यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

मूसा, हारून, इलियास, लूत, यूनुस (अल्लहे व सल्लम) की कहानी। (114-148)

यूनिट नं 21:

तेईसवें भाग में यूनुस (अल्लहे व सल्लम) की कहानी का वर्णन, सूरह अल-सफात, सूरह नंबर 37 की आयत 139 से 148 तक।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- मूसा, हारून, इलियास , लूत, यूनुस (अल्लहे व सल्लम) की कहानी। (114-148)

यूनिट नंबर 22 :

सूरह संख्या 37, सूरह अस-सफ़फ़ात के तेईसवें पैराग्राफ में, आयत संख्या 149 से 170 तक, अल्लाह के क्रोध, निंदा और अविश्वासियों और बहुदेववादियों की निंदा का उल्लेख किया जा रहा है।

उनके इस विश्वास के कारण कि वे अल्लाह की बेटियाँ हैं, अल्लाह तआला उनसे नाराज़ हो रहे हैं और उन्हें इस विश्वास के कारण फटकार लगाई जा रही है, उनके लिए एक वादा किया गया है।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों की मान्यताओं की आलोचना और परलोक में उनका अंत (149-170)

यूनिट नंबर 23 :

तेईसवें परिच्छेद, सूरह अस-फ़सफ़ात, सूरह नं. 37, आयत नं. 171 से 182 में कहा गया है कि यह अल्लाह का वादा है कि ईमान वाले अल्लाह के वश में हो जायेंगे और वह अविश्वासियों को हरा देगा और उत्पीड़क.

"यूनिट नंबर 23 के कुछ विषय"

- अल्लाह का वादा सच्चा है कि केवल उसका रसूल ही विजयी रहेगा। अल्लाह को प्रार्थना करें और नबियों पर शांति हो। (171-182)

वामालि 23	तेईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय	सूरह साद

<table>
<tr><td colspan="3">सूरह साद

SURAH SAAD</td></tr>
<tr><td>Arabic Alphabet “Saad”</td><td>Saad</td><td>साद</td></tr>
<tr><td colspan="3">“The Place of Revelation’MAKKAH”/ "रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का</td></tr>
</table>

“Few Topics” "कुछ विषय"

- अल्लाह की ओर कैसे मुड़ें?
- इस सूरह में, तीन पैगम्बरों की कहानियों का उल्लेख किया गया है कि वे कैसे अल्लाह की ओर मुड़े

(1)दाऊद की कहानी:

ٱصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَٱذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُۥدَ ذَا ٱلْأَيْدِ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴿١٧﴾

सत्य की ओर उनकी वापसी:

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِۦ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ ٱلْخُلَطَآءِ لَيَبْغِى بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ
إِلَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُۥدُ أَنَّمَا فَتَنَّـٰهُ فَٱسْتَغْفَرَ
رَبَّهُۥ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾

(अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें - ايهاالعاصى اقبل - لابن خزيمۃ

(2)सुलैमान अलैहिस्सलाम का क़िस्सा

وَوَهَبْنَا لِدَاوُۥدَ سُلَيْمَـٰنَ ۚ نِعْمَ ٱلْعَبْدُ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾

सत्य की ओर उनकी वापसी:

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَـٰنَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِۦ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ﴿٣٤﴾

(3)अय्यूब अलैहिस्सलाम का क़िस्सा

وَٱذْكُرْ عَبْدَنَآ أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُۥٓ أَنِّى مَسَّنِىَ ٱلشَّيْطَـٰنُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ﴿٤١﴾

सत्य की ओर उनकी वापसी:

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَٱضْرِب بِّهِۦ وَلَا تَحْنَثْ ۗ إِنَّا وَجَدْنَـٰهُ صَابِرًا ۚ نِّعْمَ ٱلْعَبْدُ ۖ إِنَّهُۥٓ أَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

- और जो गलती के बाद फिर न पलटा वह इबलीस है, जिसका उदाहरण इस सूरह में भी वर्णित है।

1. अधिक जानकारी के लिए देखें. तफ़सीर अल-कुर्तुबी खंड 15 / पृष्ठ 143
2. अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर अल-तबरी खंड 21/पी 192) 3 देखें
3. अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 4 / पृष्ठ 74) देखें
4. (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 4 / पृष्ठ 75 देखें) 5

قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ فَسَجَدَ ٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٧٣﴾ إِلَّآ إِبْلِيسَ ٱسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ
ٱلْكَـٰفِرِينَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يَـٰٓإِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَىَّ ۖ أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ
كُنتَ مِنَ ٱلْعَالِينَ ﴿٧٥﴾ قَالَ أَنَا۠ خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِى مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُۥ مِن طِينٍ ﴿٧٦﴾ ﴾ ص

- उस पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होता है

قَالَ فَٱخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٧٧﴾

وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِىٓ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلدِّينِ ﴿٧٨﴾

- इस सूरह में लड़ाई-झगड़ों का जिक्र किया गया है. इब्न क़य्यिम, भगवान उस पर दया कर सकते हैं, कहते हैं: यदि आप युद्धों का विस्तार से अध्ययन करना चाहते हैं, तो इस सूरह का अध्ययन करें। सबसे पहले अल्लाह के रसूल और काफ़िर क़ुरैश के बीच लड़ाई का ज़िक्र है। फिर दाऊद के पास दो झगड़ों का आना, (अल्लहे व सल्लम), नरक के लोग आपस में लड़ रहे हों, फिर दुनिया के भगवान के साथ इबलीस की असहमति, फिर आदम के बच्चों के बारे में गुमराह करने के लिए शैतान की असहमति, इसी कारण से , इस सूरह में उन्होंने प्रलोभनों और परीक्षणों का उल्लेख किया है (बादी' अल-फ़वादी: 3/693)

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सूरह अस- सफ़्फ़ात के बाद सूरह साद पढ़ने से पता चलता है कि सूरह अस- सफ़्फ़ात में पैगंबरों का जिक्र था और बाकी पैगंबरों का जिक्र सूरह साद में किया गया था और निरंतरता इस तरह रखी गई थी जैसे कि यह अगली कड़ी या निरंतरता हो। . उदाहरण के लिए: सूरह शायरा के बाद नमल, ताहा और पैगंबरों के बाद सूरह मरियम, सूरह हुद के बाद सूरह यूसुफ ,नूह, इब्राहिम, जबीहुल्लाह, मूसा, हारून, लूत और इलियास (अल्लहे व सल्लम) का उल्लेख सूरह अस-सफ़्फ़ात में किया गया है। और सूरत में दाऊद, सुलेमान, अय्यूब(अल्लहे व सल्लम) का जिक्र है।

यूनिट नंबर 24 :

तेईसवें परिच्छे, सूरह साद, सूरह नं. 38, आयत नं. 1 से 11 में बताया जा रहा है कि क़ुरआन की इस सलाह से काफ़िर घमंड और अहंकार में पड़े हुए हैं और कुछ काफ़िर और मुश्रिक इस बात पर अचंभित हैं कि हम उनमें से हैं।

“यूनिट संख्या 24 के कुछ विषय"

मूर्तिपूजकों का अहंकार और घमण्ड, इन्कार और यह (1-11)

यूनिट नंबर 25 :

तेईसवें पैराग्राफ में, सूरह साद, सूरह नंबर 38 की आयत 12 से 16 में, कुरैश के अविश्वासियों को संबोधित करते हुए कहा जा रहा है, "आप अपने से पहले राष्ट्रों, नूह के राष्ट्र पर विचार क्यों नहीं करते हैं, आद की क़ौम, समूद की क़ौम, लूत की क़ौम?" अलायक़ा के साथियों और अन्य लोगों ने सज़ा का स्वाद चखा है, वे सभी नष्ट हो गए, केवल पैग़म्बर और उन पर ईमान लाने वाले लोग इस सज़ा से बच गए।

"यूनिट नंबर 25 के कुछ विषय"

- पिछली क़ौमों का ज़िक्र, रसूलों का इन्कार और उसका अंत (12-16)

यूनिट नंबर 26 :

सूरह साद, दाऊद (अल्लहे व सल्लम) की कहानी सूरह नंबर 38, अध्याय तेईसवें की आयत 17 से 26 में विस्तार से वर्णित है।

"यूनिट नंबर 26 के कुछ विषय"

- दाऊद, सोलोमन, अय्यूब, इब्राहिम (अल्लहे व सल्लम) की कहानी। (17-48)

यूनिट नंबर 27:

ब्रह्मांड के निर्माण का ज्ञान तेईसवें पैराग्राफ, सूरह साद, सूरह नंबर 38 में श्लोक 27 से 29 तक और पवित्र कुरान के रहस्योद्घाटन के ज्ञान में वर्णित है।

"यूनिट नंबर 27 के कुछ विषय"

- दाऊद, सोलोमन, अय्यूब, इब्राहिम (अल्लहे व सल्लम) की कहानी। (17-48)

यूनिट नंबर 28 :

सुलेमान (अल्लहे व सल्लम) की कहानी सूरह नंबर 38 के तेईसवें पैराग्राफ की आयत 30 से 40 में विस्तार से वर्णित है।

"यूनिट नंबर 28 के कुछ विषय"

- दाऊद, सोलोमन, अय्यूब, इब्राहिम (अल्लहे व सल्लम) की कहानी (17-48)

यूनिट नंबर 29 :

तेईसवें पैराग्राफ, सूरह साद, सूरह नंबर 38 की आयत 41 से 44 में, अयूब अली सलाम (अल्लहे व सल्लम) के धैर्य और दृढ़ता का उल्लेख किया गया है।

"यूनिट नंबर 29 के कुछ विषय"

- दाऊद , सोलोमन, अय्यूब, इब्राहिम (अल्लहे व सल्लम) की कहानी - (17-48)

यूनिट नंबर 30 :

तेईसवें पैराग्राफ, सूरह साद , सूरह नंबर 38 की आयत 45 से 54 में, इब्राहीम और उसकी संतान का नाम, इशाक (अल्लहे व सल्लम), इस्माइल (अल्लहे व सल्लम), याकूब (अल्लहे व सल्लम), मूसा (अल्लहे व सल्लम), यीशु (अल्लहे व सल्लम) और जावल कफीर (अल्लहे व सल्लम) का उल्लेख किया गया है

"यूनिट नंबर 30 के कुछ विषय"

- दाऊद , सोलोमन, अय्यूब, इब्राहिम (अल्लहे व सल्लम) की कहानी। (17-48)
- धर्मनिष्ठ और विद्रोही लोगों के लिए प्रलय का दिन। (49-64)

यूनिट नंबर 31:

सूरह नं.38 की आयत 56 से 64 में विद्रोही और अवज्ञाकारियों की सज़ा का विस्तार से उल्लेख किया गया है।

"यूनिट नंबर 31 के कुछ विषय"

- धर्मनिष्ठ और विद्रोही के लिए प्रलय का दिन। (49-64)

यूनिट नंबर 32 :

तेईसवें पैराग्राफ में, सूरह साद, सूरह नंबर 38, आयत नंबर 65 से 70, अल्लाह के पैगंबर (PBUH) को दावा की शिक्षा के लिए बुलाने के उद्देश्यों का वर्णन किया गया है। इन उद्देश्यों में से पहला उद्देश्य की पुष्टि है तौहीद.

"यूनिट नंबर 32 के कुछ विषय"

- पैगंबर के ज्ञान के मिशन पर जोर। (65-70)

यूनिट नंबर 33 :

तेईसवें पैराग्राफ, सूरह साद, सूरह नंबर 38 में आयत 71 से 88 तक आदम (अलैहि व सल्लम) नाम के इबलीस की कहानी का उल्लेख किया गया है, और कहा जा रहा है कि आदम पाप करने के बाद वापस आ गए और पश्चाताप किया और उन्हें स्वीकार कर लिया गया इबलीस घमंडी और जिद्दी हो गया और अपनी जिद पर अड़ा रहा और अल्लाह ने उसे डांटा।

"यूनिट नंबर 33 के कुछ विषय"

- आदम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की रचना, फ़रिश्तों का सजदा और आदम से इबलीस और उसके बच्चों का अहंकार
- .रसूल और क़ुरआन का कार्य (86-88)

वामालि 23	तेईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय	सूरह अल-ज़म्र

सूरह अल-ज़म्र SURAH AZ-ZUMAR		
The Groups	Mukhtalif jama'atein	अलग-अलग पार्टियां
The Place of Revelation'MAKKAH\ "रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

“Few Topics"कुछ विषय"

- तौहीद शुद्ध होनी चाहिए, मिलावटी नहीं।
    - पूजा में इखलास: सर्वशक्तिमान ने कहा:

أَمَّنْ هُوَ قَـٰنِتٌ ءَانَآءَ ٱلَّيْلِ سَاجِدًا وَقَآئِمًا يَحْذَرُ ٱلْـَٔاخِرَةَ وَيَرْجُوا۟ رَحْمَةَ رَبِّهِۦ ۗ قُلْ هَلْ
يَسْتَوِى ٱلَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَـٰبِ ﴿٩﴾

    - तौबा में इखलास:

۞ قُلْ يَـٰعِبَادِىَ ٱلَّذِينَ أَسْرَفُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا۟ مِن رَّحْمَةِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ
يَغْفِرُ ٱلذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾

وَأَنِيبُوٓا۟ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا۟ لَهُۥ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ ٱلْعَذَابُ ثُمَّ لَا
تُنصَرُونَ ﴿٥٤﴾

(अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें: फ़िक़्ह अल-इबादत, शेख मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन द्वारा)

2 (अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें - अल-अक्मे बलनियात लाबान तैमियाह)

"अनीबू (انيبوا) " शब्द का प्रयोग अल्लाह के पास जल्दी लौटने से है। पैगम्बर के साथियों का कहना है कि पूरे कुरान में यह आयत उम्मीद जगाने वाली है, जिसमें अल्लाह की रहमत की हद और गुनाहों की माफी की खुशखबरी है। सेवक चाहे कितने भी पाप करे, उसकी दया के सामने वे बिल्कुल नगण्य हैं। 3

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

युद्ध क्षेत्र की स्थितियाँ पहले से सूचित कर दी जाती हैं और फिर युद्ध के दौरान वे स्थितियाँ पूरी तरह व्याप्त हो जाती हैं। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे किसी निमंत्रण के क्षेत्र में जब सत्य और असत्य का टकराव अपने चरम पर होता है। उस समय मनुष्य की 'सात

हा मीम वाली सूरतें ' इंसान के लिए तसल्ली करती है, जिससे उसे सांत्वना मिलती है। इसी प्रकार, इतिहास में भी ऐसे ही ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से सांत्वना दी गई है।

यूनिट नंबर 34 :

तेईसवें पारा , सूरह अल-ज़ूम्र , सूरह नंबर 39 की आयत 1 से 4 में कहा जा रहा है कि यह कुरान अल्लाह का कलाम है और अल्लाह ने इसे उतारा है, और कुरान के अस्तित्व के बारे में किसी को कोई संदेह नहीं होना चाहिए, और उसके बाद उक्त पूजा केवल एक ईश्वर की होनी चाहिए किसी और के लिए नहीं, और उसके बाद अल्लाह अविश्वासियों और बहुदेववादियों के बीच पाए जाने वाले गलत विश्वासों को सही करते हुए कह रहा है, हम उन लोगों का मार्गदर्शन नहीं करते जो गुमराही पर कायम रहते हैं, अल्लाह की कोई संतान नहीं है, वह एक और प्रभुत्वशाली है।

شروط التوبة النصوح - शेख इब्न बाज़ द्वारा, भगवान उस पर दया कर सकते हैं)

"यूनिट नंबर 34 के कुछ विषय"

- कुरान के गुण, अकेले अल्लाह की पूजा करने का आदेश, बहुदेववादियों का विवरण (1-4)

यूनिट नंबर 35 :

तेईसवें पारा , सूरह अल-ज़ूम्र, सूरह नंबर 39 की आयत 5 से 7 में बताया जा रहा है कि अल्लाह की निशानियाँ आकाशों और आत्माओं में फैली हुई हैं, और इस पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 35 के कुछ विषय"

- अल्लाह की शक्ति और उसके आशीर्वाद की अभिव्यक्ति, पुनरुत्थान और मृत्यु की गणना की पुष्टि। (5-7)

यूनिट नंबर 36 :

तेईसवें पारा, सूरह अल-ज़ूम्र, सूरह नंबर 39 की आयत 8 से 9 में कहा गया है कि आस्तिक और अविश्वासी कभी भी बराबर नहीं हो सकते।

"यूनिट नंबर 36 के कुछ विषय"

- समृद्धि और गरीबी में मानव स्वभाव (8)
- ईमानवालों का विवरण और उनका प्रतिफल - (9-14)

यूनिट नंबर 37 :

तेईसवें पारा, सूरह अल-ज़म्र, सूरह नंबर 39 की आयत 10 से 21 में, विश्वासियों को निर्देशित किया जा रहा है जबकि अविश्वासियों और पाखंडियों को सजा की धमकी दी जा रही है।

"यूनिट नंबर 37 के कुछ विषय"

- विश्वासियों का लेखा-जोखा और उनका इनाम। (9-14)
- काफ़िरों का अन्त और ईमानवालों की विशेषताएँ और उनका प्रतिफल (15-19)
- दुनिया की स्थिति, इस्लाम की रोशनी और कुरान का प्रभाव। (21-23)

यूनिट नं 38 :

तेईसवें पारा , सूरह अल-ज़ूम्र, सूरह नंबर 39, आयत 22 से 26 तक, आस्तिक का पवित्र कुरान के साथ बहुत करीबी संबंध है, मामला पूरी तरह से उलट है और उन्हें नरक की आग में डाल दिया जाएगा .

"यूनिट नंबर 38 के कुछ विषय"

- दुनिया की स्थिति, इस्लाम की रोशनी और कुरान का प्रभाव। (21-23)
- अविश्वासियों का अंत (24-26)

यूनिट नंबर 39 :

तेईसवें पारा , सूरह अल-ज़ूम्र, सूरह नंबर 39 की आयत 27 से 31 में उदाहरणों के माध्यम से उपदेश और सलाह दी जा रही है और कहा जा रहा है कि हमने इस कुरान को अरबी भाषा में उतारा है ताकि लोग सलाह प्राप्त कर सकें।

"यूनिट नंबर 39 के कुछ विषय"

- सच्चों का प्रतिफल. (27-35)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

فمن أظلم

24

CHAOBISWAN PAARA (JUZ) "فمن أظلم " KA MUKHTASAR TAAARUF

चौबीसवां पारा (भाग) " فمن أظلم " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय।

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

جزاكم الله خيرا

24 - फ़मान अज़लामु"	चौबीसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय	सूरह अल-ज़ुम्र

चौबीसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय
-"Para24 –Faman Azlamu" फ़मान अज़लामु"

विद्वानों ने चौबीसवें पारा को सत्ताईस (27) यूनिट में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:

पैरा संख्या 24 "फ़म्मन अज़लम" के छंदों और विषयों का यूनिट के अनुसार वितरण।			
यूनिट नंबर	आयत		विषयों
सूरह अल-ज़ुम्र			
यूनिट नंबर: 1	32	37	अविश्वासी से आस्तिक के वादे का एक बयान।
यूनिट नंबर: 2	38	40	मक्का के क़ुरैश के अविश्वास और कृतज्ञता का वर्णन।
यूनिट नंबर: 3	41	48	अल्लाह ताला की निशानियों पर ग़ौर करने की दावत का बयान।
यूनिट नंबर: 4	49	52	मनुष्य के दुःख और सुख की स्थिति का वर्णन |
यूनिट नंबर: 5	53	59	मृत्यु के समय तोबा किसी काम नहीं आएगी।
यूनिट नंबर: 6	60	67	शिर्क सभी कर्मों को नष्ट कर देता है।
यूनिट नंबर: 7	68	70	सुर फूंकने का वर्णन
यूनिट नंबर: 8	71	75	कयामत के दिन अच्छे और बुरे के स्वागत का वर्णन।

सूरह गफ़िर /मोमिन

यूनिट नंबर: 9	1	6	सफल होना विश्वासियों की विशेषता है।
यूनिट नंबर: 10	7	9	देवदूत मुसलमानों की मदद करते हैं और उनके लिए प्रार्थना करते हैं।
यूनिट नंबर: 11	10	12	बहुदेववादियों के अन्त का वर्णन।
यूनिट नंबर: 12	13	17	अल्लाह के नाम और गुणों का वर्णन.

यूनिट नंबर: 13	18	22	क़यामत के दिन की अवस्थाओं और अल्लाह् ताला के न्याय का वर्णन।
यूनिट नंबर: 14	23	50	दावेदारों के गुणों का विवरण.
यूनिट नंबर: 15	51	55	विश्वासियों की सहायता एवं सहायता का वर्णन |
यूनिट नंबर: 16	56	59	बहुदेववादियों के बहुदेववाद के कारण की व्याख्या।
यूनिट नंबर: 17	60	68	विश्वासियों के मार्गदर्शन और मार्गदर्शन का प्रावधान।
यूनिट नंबर: 18	69	77	बहुदेववादियों को परलोक में दण्ड की प्रकृति का वर्णन |
यूनिट नंबर: 19	78	85	

फुस्सिलत / हा मीम सजदह			
यूनिट नंबर: 20	1	8	पवित्र कुरान का परिचय, अल्लाह् के पैगंबर के गुणों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 21	9	12	ब्रह्मांड के संकेतों को सबूत के रूप में वर्णित किया गया था और अल्लाह् के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के निमंत्रण का उल्लेख किया गया था।

यूनिट नंबर: 22	13	18	मुश्रिकों के अन्त का उल्लेख और उनकी खालों की गवाही।
यूनिट नंबर: 23	19	24	मक्का और पूर्ववर्ती राष्ट्रों के बहुदेववादियों की भी यही स्थिति थी।
यूनिट नंबर: 24	25	29	मक्का के बहुदेववादियों के हठ का वर्णन।

यूनिट नंबर: 25	30	36	मक्का की कठिन परिस्थितियों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 26	37	40	आफ़ाक़ और ख़ुदा की निशानियों के ज़रिए हुज्जत का बयान।
यूनिट नंबर: 27	41	46	कुरान की विशेषताओं का वर्णन।

यूनिट नंबर 1:

चौबीसवें पारा, सूरह अल-ज़ुम्र, सूरह नंबर 39 की आयत 32 से 37 में, अविश्वासियों और बहुदेववादियों को सजा का वादा किया गया था, और विश्वासियों को स्वर्ग और अन्य आशीर्वाद का वादा किया गया था।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- धर्मी का प्रतिशोध (33-35)
- केवल अल्लाह ही लाभ और हानि का स्वामी है, बहुदेववादियों के विश्वासों का निराकरण, कुरान का अवतरण। (36-41)

यूनिट नंबर 2 :

चौबीसवें पारा, सूरह अल-ज़ुम्र के सूरह नंबर 39, आयत 38 से 40 में कहा जा रहा है कि वे गुमराह हो गए, हालांकि जब उनसे पूछा गया कि आकाश और धरती को किसने बनाया, तो उन्होंने कहा

वे कहते थे कि अल्लाह् ने पैदा किया है, और जब उनसे लाभ और हानि के बारे में पूछा जाता था, तो वे अपने स्वयं के बनाए देवताओं का उल्लेख करते थे, इसके बाद कहा जाता था, हे पैगंबर, हम कह दें: अल्लाह् मेरे लिए काफी है, फिर देखते हैं कि अल्लाह् किसे सजा देगा और किसे इनाम देगा।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- केवल अल्लाह ही लाभ और हानि का स्वामी है, बहुदेववादियों के विश्वासों का निराकरण, कुरान का अवतरण। (36-41)

यूनिट नंबर 3:

चौबीसवीं पारा,सूरह अल-ज़ुम्र, सूरह नंबर 39, आयत 41 से 48 तक में कहा जा रहा है कि अल्लाह तआला की निशानियों पर गौर करो, अल्लाह् तआला ने हमारी थकान दूर करने के लिए हमें नींद जैसी नेमत अता की है।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- अल्लाह की शक्ति, मुश्रिकों से विवाद, क़यामत के दिन ज़ालिमों की दुर्दशा, कठिनाई और खुलेपन में मनुष्य का स्वभाव, जीविका अल्लाह् के हाथ में है। (42-52)

यूनिट नंबर 4:

चौबीसवीं पारा,सूरह अल-ज़ुम्र सूरह नंबर 39 की आयत 49 से 52 तक बताया जा रहा है कि व्यक्ति दुख की स्थिति में कुछ और होता है और खुशी की स्थिति में कुछ और होता है, इसलिए यहां

लेकिन दोनों ही स्थितियों में संतुलन बनाए रखने की सलाह दी जाती है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- अल्लाह की शक्ति, बहुदेववादियों के साथ विवाद, पुनरुत्थान के दिन अत्याचारियों की दुर्दशा, कठिनाई और खुलेपन में मनुष्य का स्वभाव, जीविका अल्लाह के हाथ में है। (42-52)

यूनिट नंबर 5 :

चौबीसवें पारा, सूरह अल-ज़म्र, सूरह नं. 39, आयत नं. 53 से 59 में कहा गया है कि समय रहते अल्लाह ताला की ओर मुड़ना मृत्यु और मृत्यु के निकट के अलावा किसी के लिए उपयोगी नहीं होगा।

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- विश्वकोश तुबाह और अनाबत के सेवकों के लिए अल्लाह का आह्वान (53-55)
- अल्लाह की पुकार न सुनने वालों का अंत और क़ियामत के दिन ईमानवालों की वापसी (56-61)

यूनिट नंबर 6:

चौबीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़म्र, सूरह संख्या 39, आयत 60 से 67।क़यामत के दिन की भयावहता के बारे में बताया जा रहा है, और अल्लाह ताला की एकता, प्रभुत्व और दिव्यता के बारे में बताया जा रहा है।चल रहा है, और कहा जा रहा है कि जो कोई शिर्क करेगा, उसके सारे कर्म दोषमुक्त हो जायेंगे

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- अल्लाह् की एकता, बहुदेववाद का निषेध। (62-67)

यूनिट नंबर 7:

चौबीसवें पारा, सूरह् अल-ज़म्र, सूरह् नंबर 39 की आयत 68 से 70 में तुरही बजाने का कथन (सुर फुकना) बताया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- तुरही फूंकी(सुर फुकना) जाएगी और हिसाब लिया जाएगा, काफ़िरों और ईमानवालों की हालत और क़यामत के दिन उनका अंत, अल्लाह् की महिमा। (75,68)

यूनिट नंबर 8 :

चौबीसवें पारा, सूरह् अल-ज़म्र, सूरह् नंबर 39 की आयत 71 से 75 में कहा गया है कि न्याय के दिन, अच्छे और धर्मी लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया जाएगा, और जो बुरे काम करने वाले, काफिर और पाखंडी हैं, उन्हें मुंह के बल खींचकर नरक में सौंप दिया जाएगा।

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- तुरही फूंकी जाएगी और क़यामत के दिन अविश्वासियों और ईमान वालों की हालत और उनके अंत का हिसाब लिया जाएगा, अल्लाह् की महिमा (75, 68)।

<table>
<tr><td colspan="3">सूरह गफ़िर

SURAH GHAAFIR\MUMIN</td></tr>
<tr><td>The Forgiver\
The Believer</td><td>Tawbah Qubool Karne
Wala\Mumin</td><td>पश्चाताप स्वीकार करना
वाला/आस्तिक</td></tr>
<tr><td colspan="3">The Place Of Revelation'\MAKKAH "रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का</td></tr>
</table>

"Few Topics" "कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- दावा का महत्व और मामले को अल्लाह के हवाले करने का महत्व।
- इस सूरह में दावा का एक उदाहरण वर्णित है, रिज़ल मॉम, एक आस्तिक की कहानी, वह अपना दावा कैसे प्रस्तुत करता है:

  - तर्क का उपयोग:

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ ءَالِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَٰنَهُۥٓ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّىَ ٱللَّهُ وَقَدْ
جَآءَكُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ مِن رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ كَٰذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُۥ ۖ وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ
ٱلَّذِى يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ٢٨

(अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें: مكانۃ الدعوۃ الی اللہ و اسس دعوۃ غيرالمسلمين: अब्द अल-रज्जाक बिन अब्द अल-मुहासिन अल-अब्द अल-बद्र

और एक मोमिन व्यक्ति, जो फिरऔन के परिवार से था और अपना ईमान छुपाए हुए था, उसने कहा, **"क्या तुम एक व्यक्ति को सिर्फ इस बात पर क़त्ल करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और तुम्हारे रब की तरफ़ से वह दलीलें लेकर आया है?"**
अगर वह झूठा हो तो उसका झूठ उसी पर रहेगा, और अगर वह सच्चा हो तो जिस (अज़ाब) का वह तुमसे वादा कर रहा है, उसका कुछ न कुछ तो तुम पर आकर रहेगा।

निःसंदेह, अल्लाह ऐसे व्यक्ति को राह नहीं दिखाता जो हद से गुज़र जाने वाला और बहुत झूठा हो।

अधिक विवरण के लिए इस किताब को ज़रूर पढ़ें – *अल-रद्द अला अल-मंतक़ीय्यीन*
अहमद बिन अब्दुल हलीम इब्न तैमिय्या

- **झूठ और मक्कारी का इस्तेमाल:**

अल्लाह तआला ने फरमाया:

يَٰقَوْمِ لَكُمُ ٱلْمُلْكُ ٱلْيَوْمَ ظَٰهِرِينَ فِى ٱلْأَرْضِ فَمَن يَنصُرُنَا مِنۢ بَأْسِ ٱللَّهِ إِن جَآءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ
مَآ أُرِيكُمْ إِلَّا مَآ أَرَىٰ وَمَآ أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ ٱلرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

"फिरऔन ने कहा: ऐ मेरी कौम! क्या तुम्हारे लिए मुल्क की बादशाहत मेरी नहीं है? और ये नहरें मेरे नीचे बह रही हैं, तो क्या तुम देखते नहीं? बल्कि मैं उसे बेहतर समझता हूँ और ये मेरा मार्गदर्शन ही है जो सही राह दिखाने वाला है।" (सूरतुल ग़ाफ़िर: 29)

इस आयत में संकेत किया गया है कि एक मोमिन व्यक्ति ने सत्ता और हुकूमत को क़ौम की तरफ़ मंसूब किया ताकि वे यह न सोचें कि हुक्मरानों का कोई व्यक्तिगत स्वार्थ है। **"यह मुल्क तुम्हारा है,"** जब अज़ाब की बात आई, तो वह खुद भी इसमें शामिल हो गया। यह अत्यंत प्रेम की एक बड़ी मिसाल है।

➢ قوم سے محبت' نجات کی فکر اور انجام کا ڈر: قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿وَقَالَ ٱلَّذِىٓ
ءَامَنَ يَٰقَوْمِ إِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُم مِّثْلَ يَوْمِ ٱلْأَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ
دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَٱلَّذِينَ مِنۢ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا ٱللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا
لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾﴾ غافر

- **क़ौम से मुहब्बत, नजात की फ़िक्र और अंजाम का डर:**

अल्लाह तआला ने फरमाया:

"और वह व्यक्ति जिसने ईमान स्वीकार किया था, उसने कहा: ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर पिछले गिरोहों (क़ौमों) के दिन जैसा अज़ाब आने का डर रखता हूँ।"

"जैसा कि नूह की क़ौम, आद, समूद और उनके बाद आने वालों के साथ हुआ।"

"अल्लाह् अपने बंदों पर ज़ुल्म का इरादा नहीं रखता।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 31)*

- **इतिहास से तर्क (दलील):**

अल्लाह् तआला ने फरमाया:

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوسُفُ مِن قَبْلُ بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِى شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُم بِهِۦ
حَتَّىٰٓ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ ٱللَّهُ مِنۢ بَعْدِهِۦ رَسُولًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ ٱللَّهُ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ ﴿٣٤﴾

"और बेशक, इससे पहले यूसुफ़ तुम्हारे पास स्पष्ट निशानियाँ लेकर आए थे, मगर तुम उनके लाए हुए (संदेश) के बारे में संदेह् में पड़े रहे। यहाँ तक कि जब उनकी मृत्यु हो गई, तो तुम कहने लगे कि अब अल्लाह् उनके बाद कोई रसूल नहीं भेजेगा।"

"इसी तरह् अल्लाह् उसे गुमराह् करता है जो ह्द से गुज़र जाने वाला और बहुत झूठा हो।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 34)*

गुज़री हुई उम्मतों के इतिहास से तर्क पेश किया गया है, ताकि उनके अंजाम से नसीह्त और उनसे इबरत (सबक़) हासिल करने की शिक्षा दी जाए।

- **क़ियामत और अल्लाह् से मुलाक़ात की याद दिलाना:**

यह् चीज़ दिलों को नरम करने वाली है।

अल्लाह् तआला ने फरमाया:

"और ऐ मेरी क़ौम! मुझे डर है कि कहीं तुम पर पुकार के दिन (क़ियामत) का अज़ाब न आ जाए।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 32)*

शब्द 'अन्निदा' (पुकार) को क़ियामत की विशेषता बताने के लिए लाया गया है, ताकि यह दर्शाया जा सके कि उस दिन लोग एक-दूसरे को पुकारेंगे और ह्र आत्मा की स्थिति का ज्ञान होगा।

अल्लाह् तआला ने फरमाया:

"जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे, लेकिन तुम्हें अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं होगा। जिसे अल्लाह गुमराह कर दे, उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 33)*

अल्लाह् तआला ने फरमाया:

"और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम्हें नजात (सुरक्षा) की तरफ़ बुलाता हूँ, और तुम मुझे आग (जहन्नम) की तरफ़ बुलाते हो।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 41)*

जब क़ौम को हर संभव समझाया और आख़िरकार अपने मामले को अल्लाह् के हवाले किया:

अल्लाह् तआला ने फरमाया:

"तुम मुझे अल्लाह् के साथ कुफ्र और उसका साझी बनाने की दावत देते हो, जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं, जबकि मैं तुम्हें अत्यंत प्रभुत्वशाली और अति क्षमाशील (अल्लाह्) की ओर बुलाता हूँ।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 42)*

"तुम मुझे उसी की ओर बुलाते हो, जिसकी न तो दुनिया में कोई दावत है और न आख़िरत में, और हमारा लौटना केवल अल्लाह् की ओर है। और जो लोग हद से गुज़र गए हैं, वे आग (जहन्नम) के साथी होंगे।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 43)*

"तुम जल्दी ही याद करोगे, जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूँ। और मैं अपना मामला अल्लाह् के हवाले करता हूँ। निःसंदेह, अल्लाह् अपने बंदों को देख रहा है।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 44)*

फिर अल्लाह् की तरफ़ से नज़र आने वाला अंजाम:

अल्लाह् तआला ने फरमाया:

"तो अल्लाह् ने उन्हें उनके बुरे मक्कारियों से बचा लिया, और फिरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने घेर लिया।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 45)*

फिर हज़रत मूसा (अ.स.) ने अपने रब से पनाह मांगी:

अल्लाह् तआला ने फरमाया:

"(मूसा ने कहा:) मैं अपने रब और तुम्हारे रब की शरण लेता हूँ, हर घमंडी व्यक्ति से, जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं लाता।" *(सूरत ग़ाफ़िर: 27)*

- "एक दाई (इस्लाम के प्रचारक) के गुण कैसे होने चाहिए? उसे किस प्रकार बात करनी चाहिए? स्थिरता, हिम्मत और इज्जत का प्रदर्शन बुद्धिमत्ता के साथ कैसे करे? बड़े शासकों के सामने

इस्लाम को कैसे प्रस्तुत करे? तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसे) का उच्चतम स्तर कैसा होना चाहिए? यह सब कुछ इस सूरह में बताया गया है। सूरह मोमिन हर दाई को अवश्य पढ़नी चाहिए।"

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- "युद्ध के मैदान की स्थितियों की भविष्यवाणी की गई है, जो एक विशेष प्रकार की होती है, और फिर युद्ध के दौरान भी वही स्थिति बनी रहती है। बिल्कुल इसी तरह, जब सत्य और असत्य का टकराव दावती (इस्लाम के प्रचार) के मैदान में होता है, तो वही परिस्थिति उत्पन्न होती है। ऐसे समय में 'सात हम वाली सूरतें' इंसान को तसल्ली देती हैं। इनमें इसी तरह के ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से सांत्वना दी गई है।"

यूनिट नंबर 9:

चौबीसवीं पारा, सूरह ग़ाफ़िर/मोमिन, सूरह नंबर 40 की आयत 1 से 6 एक परीक्षण की तरह है जिसमें बताया गया है कि काफिर और बहुदेववादी भय और अहंकार के साथ चलते हैं, धन और संपत्ति किसी को धोखा नहीं देना चाहिए और इस कारण विश्वास कमजोर नहीं होता है, हालांकि यह भी वास्तविकता से परे है कि अंत में केवल ईमान वाले ही सफल और गौरवान्वित होंगे।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- कुरान अल्लाह का कलाम है. एम है, और अल्लाह, और अल्लाह के गुण (1-3)
- पूर्ववर्ती राष्ट्रों का खंडन एवं उनका अंत | (4-6)

यूनिट नंबर 10

चौबीसवें पारा सूरह ग़ाफिर/मोमिन, सूरह नंबर 40, आयत नंबर 7 में बताया जा रहा है कि अल्लाह के हुक्म से फ़रिश्ते मुसलमानों की मदद करते हैं और उनके लिए दुआ करते हैं।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- सिंहासन धारकों और उनके विश्वासियों के लिए प्रार्थना। (7-9)

यूनिट नंबर 11 :

चौबीसवीं पारा, सूरह ग़ाफिर/मोमिन, सूरह नंबर 40, आयत 10 से 12 में कहा जा रहा है कि मुश्रिकों का अंत बहुत बुरा होगा और उन्हें पछताने के अलावा कुछ नहीं मिलेगा।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों के भाग्य का वर्णन.

यूनिट नं : 12

चौबीसवीं पारा, सूरह ग़ाफिर/मोमिन सूरह नंबर 40, की आयत 13 से 17 में अल्लाह के गुणों का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय

- अल्लाह् के नाम और गुणों का विवरण।

यूनिट नंबर 13 :

सूरह ग़ाफिर/मोमिन सूरह गफ़र/मोमिन के चौबीसवें पैराग्राफ, सूरह नंबर 40 की आयत 18 से 22 में पुनरुत्थान के चरणों का वर्णन किया गया है और इस आधार पर विभिन्न प्रकार के लोगों का उल्लेख किया गया है अल्लाह् उनके बीच न्याय स्थापित करेगा.

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- क़ियामा के चरणों और अल्लाह् तआला के न्याय का वर्णन।

यूनिट नंबर 14 :

चौबीसवें पारा, सूरह ग़फिर/मोमिन, सूरह नंबर 40 की आयत 23 से 50 में, धर्म के समर्थकों के गुणों का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- मूसा(अलैहि व सल्लम) की कहानी, , फिरौन, हामान और कुरान(23-27)
- एक आस्तिक की कहानी - (28-46)

यूनिट नं 15:

चौबीसवाँ: पारा, सूरह ग़फ़र/मोमिन, सूरह नंबर 40 आयत नंबर 51 से 55 में बताया जा रहा है कि अल्लाह ने ईमानवालों को मदद और समर्थन का वादा किया है।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- विश्वासियों की सहायता एवं सहायता का वर्णन |

यूनिट नंबर 16:

चौबीसवाँ पारा, सूरह गफ़र/मोमिन, सूरह नं. 40, आयत नं. 56 से 59

मुश्रिकों के शिर्क करने का कारण यह बताया जा रहा है कि उनके अहंकार ने उन्हें सच्चे धर्म को स्वीकार करने से रोक दिया है।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय

- अनेकेश्वरवादियों के बहुदेववाद के कारण का कथन।

यूनिट नंबर 17 :

चौबीसवाँ पारा, सूरह गफ़िर / मोमिन, सूरह नंबर 40 की आयत 60 से 68, उदाहरणों के माध्यम से, विश्वासियों को मार्गदर्शन प्रदान करता है और उन्हें दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित करता है।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- विश्वासियों के मार्गदर्शन और मार्गदर्शन का प्रावधान।

यूनिट नंबर 18 :

चौबीसवें पारा, सूरह गफिर/मोमिन, सूरह नं. 40, आयत नं. 69 से 77 में कहा गया है कि बहुदेववादियों को परलोक में सबसे बुरी सजा दी जाएगी, और इस सजा का चित्रण यहां किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय

- बहुदेववादियों को परलोक में दण्ड की प्रकृति का वर्णन |

यूनिट नंबर 19:

चौबीसवें पारा, सूरह ग़फ़िर/मोमिन, सूरह नंबर 40 की आयत 78 से 85 तक, अल्लाह के पैगंबर, शांति और आशीर्वाद उन पर हो, और विश्वासियों को सांत्वना और आश्वासन दिया जा रहा है, और पिछले राष्ट्रों के उदाहरणों का वर्णन किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह का आदेश आने तक धैर्य रखने की सलाह दी गई। (82-85)

सूरह अल-फ़सलात

SURAH FUSSILAT/HAAM MEEM SAJDA		
Explained in detail	Khool khool kar Bayan karne wale	खोल खोल कर बयान करने वाले
“the place of Revelation” MAKKAH"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

“FEW TOPICS” "कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- पैग़म्बरी पर सवाल उठाया जाएगा. आपका कर्तव्य सभी को सच्चा संदेश देना है कि कर्तव्य क्या हैं और क्या नहीं करना चाहिए।
- इस सूरह को फ़सलात नाम दिया गया है क्योंकि इसमें हर चीज़ को विस्तार से समझाया गया है और अल्लाह ताला की शक्ति और एकता के तर्कों को स्पष्ट किया गया है, उसके अस्तित्व, महानता और भगवान के बारे में निश्चित तर्क बताए गए हैं।
- और इसमें मानवता से अल्लाह के वादे का भी वर्णन किया गया था कि अंत समय में वह दुनिया को रहस्यों और रहस्यों से अवगत कराएगा ताकि कुरान की सच्चाई सामने आ जाए।
- परंतु यह तभी होगा जब हम उनकी प्रकट पुस्तक के आलोक में उनके महान ब्रह्मांड के बारे में सोचेंगे।
- एकेश्वरवाद के तर्कों पर प्रकाश डाला गया। (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक (دلائل التوحید :محمد بن عبد الوهاب: मुहम्मद बिन अब्द अल-वहाब पढ़ें)

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- " حم" वाले सभी सूरह तौहीद की पुष्टि और बचाव, तौहीद का विरोध करने वालों को धैर्यपूर्वक जवाब देने और विरोधियों की भूमिका से संबंधित हैं।
- सूरह मोमिन में, पूर्व राष्ट्रों के संघर्ष, जबकि सूरह अल-फ़सलत में, अविश्वासी क़ुरैश के साथ संघर्ष की मुख्य बातें स्पष्टता के साथ प्रस्तुत की गई हैं।

चौबीसवें पारा, सूरह फ़सलत / हाम अल-सजदा, सूरह नंबर 41 की आयत 1 से 8 में, पवित्र कुरान का परिचय प्रस्तुत किया गया था, बहुदेववादियों की कार्य योजना के बारे में बताया गया था और उनकी योजना जो विफल हो गई थी, उसे पैगंबर को बताया गया था, उसके बाद अल्लाह के पैगंबर, शांति और आशीर्वाद उन पर हो, टीम के गुणों का वर्णन किया गया था और उनमें से कई की जिम्मेदारियों को समझाया गया था।

"यूनिट नंबर 20" के कुछ विषय"

- क़ुरआन और उसका कार्य (1-4)
- क़ुरआन के बारे में बहुदेववादियों का विचार, उसका उत्तर और उनकी सज़ा। (5-7)

यूनिट नंबर 21

चौबीसवें पारा, सूरह अल-फस्लत / लहुम अल-सजदा, सूरह नंबर 41 की आयत 9 से 12 में, अल्लाह ब्रह्मांड के संकेतों के माध्यम से साक्ष्य स्थापित कर रहा है और आगे कहा गया है कि अल्लाह के पैगंबर, शांति और आशीर्वाद उस पर हो, सच है।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- सृष्टि की कहानी, अल्लाह और उसकी शक्ति के अस्तित्व के लिए तर्क। (9-12)

यूनिट नंबर 22

चौबीसवें पारा, सूरह फ़सलात / लहुम अल-सजदा, सूरह नंबर 41 की आयत 13 से 18 में, यह कहा गया है कि बहुदेववादी छल और दिखावे के माध्यम से अल्लाह के पैगंबर को आमंत्रित कर रहे थे, शांति और आशीर्वाद उन पर हो, जैसा कि पिछले राष्ट्रों का मामला था, और इस अविश्वास के कारण, वे उन राष्ट्रों से मुंह मोड़ रहे थे, और सजा प्रकट हुई थी। आमंत्रित किया जा रहा था.

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- मक्का और पूर्ववर्ती राष्ट्रों के बहुदेववादियों की भी यही स्थिति थी।

यूनिट नंबर 23

चौबीसवें पारा, सूरह अल-फसलत/लहम अल-सजदा, सूरह नं. 41, आयत 19 से 24 अविश्वासी हैं।

और मुश्रिकों के भाग्य का उल्लेख किया जा रहा है और कहा जा रहा है कि अल्लाह ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया है और क़यामत के दिन उनकी खालें गवाही देंगी और उनके कर्म उन पर उलट जायेंगे।

"यूनिट नंबर 23 के कुछ विषय”

- अनेकेश्वरवादियों के अंत का ज़िक्र और उनकी खालों की गवाही।

यूनिट नंबर 24 :

चौबीसवें पारा, सूरह फ़स्लात/हाम अल-सजदा, सूरह नं. 41 की आयत 25 से 29 में बताया जा रहा है कि अविश्वासियों और बहुदेववादियों ने अपनी जिद और स्वार्थ पर कायम रहते हुए धर्म की पुकार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और उन्होंने अल्लाह के पैगंबर के खिलाफ उत्पीड़न और उत्पीड़न की हर विधि की कोशिश की, यहां तक कि हत्या की हद तक भी।

"यूनिट नंबर 24 के कुछ विषय”

- मक्का के बहुदेववादियों की हठधर्मिता का वर्णन।

यूनिट नंबर 25 :

चौबीसवें पारा, सूरह फ़स्लात / लहुम अल-सजदा, सूरह नं. 41 के आयत 30 से 36 में बताया जा रहा है कि मक्का की सबसे कठिन परिस्थितियों में, स्वर्गदूत नीचे आते थे और अल्लाह के पैगंबर को सांत्वना देते थे, भगवान उन्हें आशीर्वाद दें और उन्हें शांति प्रदान करें, और पैगंबर के साथी, भगवान उन्हें आशीर्वाद दें और उन्हें शांति प्रदान करें, उनके दिलों से डर दूर करें, उनके लिए प्रार्थना करें और उन्हें धैर्य रखने के लिए प्रेरित करें।

“यूनिट नंबर 25 के कुछ विषय”

- दावत-ए-अल्लाह के शिष्टाचार और गुण। (33-36)

यूनिट नंबर 26

चौबीसवें पारा, सूरह फ़सलात/हाम अल-सजदा, सूरह नं. 41 की आयत 37 से 40 तक, ब्रह्मांड के संकेतों और स्वयं और स्वयं के संकेतों का वर्णन किया गया और उनके माध्यम से साक्ष्य और सबूत स्थापित किए गए।

“यूनिट नंबर 26 के कुछ विषय”

- जगत् और आत्माओं के लक्षणों द्वारा प्रमाण का कथन |

यूनिट नंबर 27

चौबीसवें पारा, सूरह फ़सलात/हाम अल-सजदा, सूरह नंबर 41 की आयत 41 से 46 में पवित्र कुरान की विशेषताओं का वर्णन किया गया था और कहा गया था कि इसे न तो कम किया जा सकता है और न ही बढ़ाया जा सकता है क्योंकि यह कुरान अल्लाह, हामिद और हकीम द्वारा अवतरित किया गया है।

"यूनिट नंबर 27 के कुछ विषय"

- नास्तिकों को कुरान के खिलाफ कुछ भी कहने से बचना चाहिए. कुरान का प्रभाव. (40-44)
- मूसा और तोरैत (45-46)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

إليه يرد

25

PACHISWAN PAARA (JUZ) "إليه يرد "KA MUKHTASAR TAAARUF

पचीसवां पारा (भाग) " إليه يرد " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय।

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَـٰبٌ أَنزَلْنَـٰهُ إِلَيْكَ مُبَـٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَـٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَـٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

पच्चीसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय
इलाही युराद्दो"-" पारा 25

विद्वानों ने पच्चीसवें श्लोक को लगभग तीस इकाइयों (36) में विभाजित किया है जो इस प्रकार है:

पैरा संख्या 25 "इलैयह युर्द" की आयतों और लेखों का इकाइयों के अनुसार वितरण।			
यूनिट नंबर:	आयत		विषयों
सूरह अल-फ़सलात / लहेम अल-सजदाह			
यूनिट नंबर: 1	47	48	अल्लाह के ज्ञान का बयान.
यूनिट नंबर: 2	49	51	मनुष्य के साथ घटित होने वाली शुभ और अशुभ स्थितियों का वर्णन
यूनिट नंबर: 3	52	54	क़ुरआन की निशानियों और चमत्कारों का वर्णन।
सूरह अल-शूरा			
यूनिट नंबर: 4	1	6	रहस्योद्घाटन की विधि का उल्लेख, अल्लाह की महिमा और महिमा का वर्णन।
यूनिट नंबर: 5	7	12	रहस्योद्घाटन के उद्देश्यों का एक बयान.
यूनिट नंबर: 6	13	14	निश्चित आदेश.
यूनिट नंबर:7	15	19	काफ़िरों और बहुदेववादियों के ख़िलाफ़ सबूत ख़त्म हो चुके हैं।
यूनिट नंबर:8	20	26	यदि कोई व्यक्ति बिना पश्चाताप के मर जाता है तो बहुदेववाद के अलावा अन्य पाप भी माफ किये जा सकते हैं।
यूनिट नंबर:9	27	35	ईश्वर की संप्रभुता, बुद्धि और शक्ति का कथन।
यूनिट नंबर:10	36	43	विश्वासियों के गुणों का वर्णन |
यूनिट नंबर:11	44	46	नरक तथा उसके निवासियों का वर्णन |
यूनिट नंबर:12	47	50	संतान देने का अधिकार केवल अल्लाह के हाथ में है।
यूनिट नंबर:13	51	53	रहस्योद्घाटन के तीन प्रकार का वर्णन |
सूरह अल-ज़ख़राफ़			
यूनिट नंबर:14	1	8	पवित्र क़ुरआन की महिमा और उत्कृष्टता का वर्णन और इसका मज़ाक उड़ाने वालों के भाग्य का वर्णन।
यूनिट नंबर:15	9	14	मक्का के बहुदेववादी अल्लाह की प्रभुता के प्रति आश्वस्त थे, लेकिन वे उसकी दिव्यता के प्रति आश्वस्त नहीं थे।

यूनिट नंबर:16	15	25	मक्का के बहुदेववादी फ़रिश्तों को अल्लाह का बेटा कहते थे।
यूनिट नंबर:17	26	35	अल्लाह ताला के छिपे हुए ज्ञान के बारे में एक बयान।
यूनिट नंबर:18	36	46	धिक्कार और धिक्कार की उपेक्षा करते हैं, अल्लाह ताला उन पर शैतान थोप देता है। जो लोग नमाज़, रोज़ा,
यूनिट नंबर:19	47	56	फिरौन के दुखद अंत से सलाह लेने के बारे में एक बयान।
यूनिट नंबर:20	57	66	न्याय के दिन के निकट यीशु (अलैहि व सल्लम) के पुनः प्रकट होने का कथन।
यूनिट नंबर:21	67	73	अल्लाह की इस दुनिया और आख़िरत में मिलने वाली नेमतों का वर्णन।
यूनिट नंबर:22	74	80	पुनरुत्थान के दिन दुष्टों के भाग्य का वर्णन।
यूनिट नंबर:23	81	89	अनेकेश्वरवाद और सन्तान से अल्लाह की शुद्धि का कथन।
सूरत अल-दुखन			
यूनिट नंबर:24	1	9	कुरान का परिचय, कुरान के चमत्कार की व्याख्या, लैलात-उल-कद्र में कुरान के रहस्योद्घाटन का उल्लेख।
यूनिट नंबर:25	10	16	काफ़िरों और बहुदेववादियों को दण्ड की धमकी का वर्णन।
यूनिट नंबर:26	17	33	फिरौन और उसकी प्रजा की मृत्यु का विवरण।
यूनिट नंबर:27	34	39	फिरौन और उसकी प्रजा की मृत्यु का विवरण।
यूनिट नंबर:28	40	50	नरक की यातना का दृश्य और शजरज़ राष्ट्र का वर्णन।

यूनिट नंबर:29	51	59	ईमान वालों के लिए इनाम वाकराम का बयान।
सूरह अल-जस्तिया			
यूनिट नंबर:30	1	6	कुरान के रहस्योद्घाटन का विवरण और अल्लाह तआला की एकता और दिव्यता का वर्णन।
यूनिट नंबर31	7	11	अल्लाह की आयतों को झुठलाने वालों के लिए सबसे बुरे अज़ाब का वर्णन।
यूनिट नंबर:32	12	15	अल्लाह ताला की रहमतों की याद दिलाने वाला बयान।
यूनिट नंबर:33	16	20	इस्राएल की सन्तान को मिले आशीषों का वर्णन।
यूनिट नंबर:34	21	23	विश्वासियों और अविश्वासियों तथा बहुदेववादियों के बीच अंतर का वर्णन।
यूनिट नंबर:35	24	27	नास्तिकों एवं नास्तिकों की आपत्तियों के उत्तर का कथन।

यूनिट नंबर:36	28	37	क़यामत के दिन अवज्ञाकारी किस प्रकार बैठेंगे इसका विवरण।

यूनिट नंबर 1 :

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-फस्लत/ (हा मीम) अल-सजदा, सूरह नंबर 41, आयत 47 से 48 में बताया जा रहा है कि अल्लाह का ज्ञान सब कुछ कवर करता है।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- केवल अल्लाह ही परोक्ष का ज्ञान और क़ियामत के दिन का ज्ञान रखता है। (47-48)

यूनिट नंबर 2

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-फस्लत/ (हा मीम) अल-सजदा, सूरह नंबर 41 की आयत 41 से आयत नंबर 49 तक में बताया जा रहा है कि इंसान के सामने हर दो परिस्थितियां आती हैं, इंसान अच्छी परिस्थितियों से भी गुजरता है और उसे बुरी परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ता है।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- मनुष्य के साथ घटित होने वाली शुभ और अशुभ स्थितियों का वर्णन |

यूनिट नंबर 3

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-फस्लत/ (हा मीम) अल-सजदा सूरह नंबर 41 की आयत 52 से 54 तक बताया जा रहा है कि पवित्र कुरान अल्लाह सर्वशक्तिमान द्वारा अवतरित किया गया है, इस कुरान में

अल्लाह् सर्वशक्तिमान की शक्ति के संकेतों का वर्णन किया गया है। कुरान के संकेतों और चमत्कारों की श्रृंखला प्रलय के दिन तक समाप्त नहीं होगी।

“यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- ब्रह्मांड और आत्माओं में अल्लाह् के संकेतों पर विचार करना। (53-54)

सूरह अल-शूरा SURAH ASH-SHOORA		
The Consultation	Mash;wara	सलाह
“the place of revelation”/ रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का” MAKKAH		

“Few Topics” "कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य "

- परामर्श एवं एकता का महत्व तथा साम्प्रदायिकता की गंभीरता को समझाया गया है।
- इस सूरह में मिन्हाज सहीह की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है।

- **"विभिन्नता (मतभेद) अलग-अलग लोगों और स्वभावों का परिणाम है। और यह भी बताया गया कि मतभेद की स्थिति में अल्लाह का हुक्म और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का निर्णय ही अंतिम होगा।"**

وَمَا ٱخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُۥٓ إِلَى ٱللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبِّى عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ١٠

अल्लाह् तआला ने फ़रमाया:

"और जिस चीज़ में तुम मतभेद करते हो, उसका फ़ैसला अल्लाह की ओर है। यही अल्लाह मेरा

पालनहार है, उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर मैं रुजू करता हूँ।" *(सूरह अश-शूरा: 10)*

[1] **(الشورى في ظل نظام الحكم الإسلامي.لعبدالرحمن عبدالخالق)**
[2] (دلائل التوحيد:محمد بن عبد الوهاب)

- **"फिरका परस्ती ने पहले की क़ौमों को हलाक कर दिया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:**
  'उसने तुम्हारे लिए वही शरीअत मुक़र्रर की, जिसका आदेश उसने नूह को दिया था, और जिसकी हमने तुम्हारी ओर वही की है, और जिसका आदेश हमने इब्राहीम, मूसा और ईसा को दिया था कि तुम दीन को क़ायम रखो और उसमें फूट न डालो।' *(सूरह अश-शूरा: 13)*
- जहाँ तक संभव हो, मतभेद से बचना चाहिए। यदि मतभेद हो भी जाए, तो शूराई (परामर्शी) प्रणाली को अपनाना चाहिए। शूराई प्रणाली को घर से लेकर अदालत तक लागू किया जाना चाहिए, क्योंकि जीवन के पापमय (अपराधिक) हालात में मतभेद एक निश्चित बात है। इसलिए शूराई प्रणाली की अत्यधिक आवश्यकता है। इसी अहमियत को ध्यान में रखते हुए इस सूरत का नाम "अश-शूरा" रखा गया है।

  अल्लाह तआला ने फ़रमाया:
  'और जो लोग अपने पालनहार के आदेश को स्वीकार करते हैं, और नमाज़ क़ायम करते हैं, और उनका मामला आपसी परामर्श से तय होता है, और हमने उन्हें जो दिया उसमें से वे खर्च करते हैं।' *(सूरह अश-शूरा: 38)"*

[3] **(الأمر بالاجتماع والإئتلاف والنهي عن التفرق والإختلاف:عبد الله بن جار الله بن إبراهيم الجار الله)**

. · **केन्द्रिय विषय "तौहीद" है।** सभी "हम्" (ज़ोर देना) तौहीद को आधार बनाकर आख़िरत की याद दिलाने के लिए कराए गए हैं। जब मालिक (अल्लाह) की अवधारणा सही हो जाएगी, तो "यौमुद्दीन" (न्याय का दिन) को समझना आसान हो जाएगा।

· **सभी पैग़ंबरों ने तौहीद की दावत दी।**

(4) पैग़ंबरों का मूल विश्वास तौहीद है। **"अक़ीमुद्दीन"** से तात्पर्य केवल हुकूमत (शासन) नहीं, बल्कि

विश्वास है। अन्यथा, यह आवश्यक होता कि नूह (अलैहिस्सलाम), इब्राहीम (अलैहिस्सलाम), मूसा (अलैहिस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) सभी को शासन का आदेश दिया जाता।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

पैगम्बर की माँ होना ही उसके पैगम्बर होने का प्रमाण है। पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की माँ होने के नाते समुद्र का विवरण, माँ के गर्भ का विवरण, आकाश का विवरण, धरती के खज़ानों का विवरण बताना इस बात का प्रमाण है कि पैगंबर एक धर्मी दूत हैं। सर्वशक्तिमान ने कहा: और तुम उसके सामने एक किताब नहीं पढ़ोगे और अपनी शपथ के साथ उसे पार नहीं करोगे, अगर यह मकड़ी के अपमान का कारण बने।

4 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (مدارج السالكين بين منازل اياک نعبد و اياک نستعين: अबू अब्द अल्लाह मुहम्मद बिन अबी बक्र (इब्न कय्यिम अल-जवज़िया) पृष्ठ 411: भाग III)

यूनिट नंबर 4 :

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा, सूरह नंबर 42 की आयत 1 से 6 में रहस्योद्घाटन की विधि और उसके कारणों का उल्लेख किया जा रहा है और अल्लाह की महिमा और महिमा का वर्णन किया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- रहस्योद्घाटन की विधि का उल्लेख, अल्लाह की महिमा और महिमा का वर्णन।

यूनिट नंबर 5 :

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा, सूरह नंबर 42 की आयत 7 से 12 में, रहस्योद्घाटन के उद्देश्यों का वर्णन किया जा रहा है और बताया जा रहा है कि लोगों को कुरान के माध्यम से शुद्ध किया जाना चाहिए और

पुनरुत्थान के दिन के बारे में लोगों को चेतावनी दी जानी चाहिए, पवित्र कुरान सभी मानव जाति के लिए मार्गदर्शन और मार्गदर्शन का स्रोत है।

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- रहस्योद्घाटन के उद्देश्यों का एक बयान.

यूनिट नंबर 6 :

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा, सूरह नंबर 42 की आयत 13 से 14 में बताया जा रहा है कि सभी पैगम्बरों (उन पर शांति हो) का एक ही आह्वान था, वे अल्लाह की एकता के साथ भेजे गए थे। वे जाते थे और सभी पैगम्बरों का धर्म, उन पर शांति हो, इस्लाम धर्म है

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- रहस्योद्घाटन एक है, धर्म भी एक है, लेकिन लोग इसमें भिन्न हैं। (13-14)

यूनिट नंबर 7:

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा, सूरह नंबर 42 की आयत 15 से 19 में, आदेश दिए गए हैं और कहा जा रहा है कि काफिरों और बहुदेववादियों के खिलाफ सबूत समाप्त हो गए हैं।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- निमंत्रण का क्रम (15-16)

- अविश्वासियों और बहुदेववादियों के ख़िलाफ़ सबूत ख़त्म हो चुके हैं। (17-19)

यूनिट नं 8:

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा,सूरह नंबर 42 की आयत 20 से 26 में मोमिनों और गुनाहगारों के बारे में कहा गया है कि मोमिन की तौबा कबूल की जाएगी और गुनाहगारों के लिए सबसे बुरी सजा का वादा किया गया है और इससे संबंधित सिद्धांत दिया गया है कि अगर कोई बिना तौबा किए मर जाए तो शिर्क के अलावा अन्य पाप माफ किए जा सकते हैं और यह भी कहा गया है कि धर्म में कोई नई बात बर्दाश्त नहीं की जाती है। इच्छा

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- विश्वासियों और अविश्वासियों का प्रतिशोध। (20-26)

यूनिट नंबर 9

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा, सूरह नंबर 42 की आयत 27 से 35 में अल्लाह की बुद्धि का वर्णन है और अल्लाह की शक्ति के संकेतों का उल्लेख किया गया है और प्रभुत्व का उल्लेख किया गया है।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- ईश्वर की संप्रभुता, बुद्धि और शक्ति का कथन. (27-35)

यूनिट नंबर 10 :

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा, सूरह नंबर 42 की आयत 36 से 43 में, विश्वासियों के गुणों का वर्णन किया गया है और कहा गया है कि अल्लाह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता है।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- विश्वासियों के गुण, अविश्वासियों का भाग्य - (37-46)

यूनिट नंबर 11:

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा, सूरह नंबर 42 की आयत 44 से 46 में, नर्क के लोगों का उल्लेख किया गया था और नर्क के अपमान और पीड़ाओं को प्रस्तुत किया गया था।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- विश्वासियों के गुण, अविश्वासियों का भाग्य। (37-46)

यूनिट नंबर 12

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा, सूरह नंबर 42 की आयत 47 से 50 तक, ईमान वालों के गुणों का वर्णन किया गया है और कहा गया है कि केवल अल्लाह सर्वशक्तिमान को ही बच्चे पैदा करने का अधिकार है।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- पुनरुत्थान के दिन की पुष्टि, और यह कि इस दुनिया और उसके बाद का हर मामला अल्लाह के हाथ में है (47-50)

यूनिट नंबर 13 :

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-शूरा, सूरह नंबर 42 की आयत 51 से 53 में, तीन प्रकार के रहस्योद्घाटन का उल्लेख किया गया है और कहा गया है कि कभी-कभी अल्लाह सर्वशक्तिमान पैगंबरों से बात करते हैं।

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- रहस्योद्घाटन के प्रकार और इसकी वास्तविकता (51-53)

सूरह अल-ज़ख़राफ़ SURAH AZ-ZUKHRUF		
The gold adornment	Sona	सोना
“the place of Revelation” MAKKAH"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

“Few Topics” कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- दुनिया की चकाचौंध से मूर्ख मत बनो।

- यह सूरा उन लोगों के बारे में है जो दुनिया की चकाचौंध में डूबे रहते हैं। उन्हें ऐसा करने से रोका जा रहा है. क्योंकि पिछली जातियाँ इसलिए नष्ट हो गईं क्योंकि वे सांसारिक चमक-दमक में खो गए थे।
- यह बताया गया है कि आख़िरत को झुठलाने का मुख्य कारण धन है। 1
  - इस बात पर जोर दिया गया है कि असली सम्मान धन नहीं बल्कि धर्म है। सर्वशक्तिमान ने कहा: ﴿ وَإِنَّهُۥ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُونَ ﴿٤٤﴾ ﴾ الزخرف ،

(अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें – انما الحياة الدنيا متاع: सलाह बिन मुहम्मद अल-बदिर)

(ज़िक्र से तात्पर्य सम्मान से है) 2

- हजरत ईशा (अलैह सलाम) का भी उल्लेख किया गया है, जिन्हें तपस्या और पवित्रता का प्रतीक माना जाता है।

قَالَ تَعَالَى: ﴿ وَلَمَّا جَآءَ عِيسَىٰ بِٱلْبَيِّنَٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُم بِٱلْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُم بَعْضَ ٱلَّذِى تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ فَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿٦٣﴾ ﴾
الزخرف

  - स्पष्ट और अल्पकालिक आशीर्वाद के विपरीत ज्ञान प्रस्तुत किया।
  - समस्त सूरत को सांसारिक चमक-दमक के खतरे से अवगत कराया गया।

महान ने कहा:

قَالَ تَعَالَى: ٱلْأَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا ٱلْمُتَّقِينَ –

  - सांसारिकता भौतिकवाद पर आधारित है। लेकिन धर्मपरायणता और ज्ञान सदैव अभागे संसार की तुलना में परलोक की ओर ले जाते हैं।

- यही कारण है कि इस सूरह का नाम ज़ख्रफ़ है क्योंकि धन और संपत्ति की तुलना बिजली और चमकदार गहनों से की जाती है। बहुत से लोग इसे खाते-पीते हैं, परन्तु अल्लाह की दृष्टि में इसकी कीमत मच्छर के पंख के बराबर भी नहीं है। इसीलिए अल्लाह अच्छे और बुरे दोनों को दुनिया देता है। और आख़िरत में केवल नेक लोगों को ही लाभ होगा। सांसारिक व्यक्ति अल-फ़िनह है और आख़िरत अल-बक़ा है। 3

2 (من اسباب السعادة: अब्दुल अजीज बिन मुहम्मद अल-सुदाहन)
3 (अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें – الدنيا ظل زايل: अब्द अल-मलिक अल-कासिम)

- इस सूरह में फिरौन के साथ हजरत मूसा (अलैहै व सलाम) की कहानी और राष्ट्र के साथ हजरत ईशा (अलैहै व सलाम) की कहानी का वर्णन किया गया है।
- तर्क-वितर्क, आपत्ति, तर्क-वितर्क, भ्रांतियाँ सब भली-भांति निस्तारित हो गईं और किला खोल दिया गया और अविश्वास व्यक्त कर अलग कर दिया गया। किसी भी प्रकार के श्रृंगार से धोखा न खाएं, भले ही दुनिया हजारों श्रृंगार और आकर्षण लाती हो, सीधे रास्ते का रास्ता साफ है। " ليلها كنهارها" 4
- इस्लाम आपको इस दुनिया में अच्छा खाना खाने और कमाने से नहीं रोकता है, लेकिन आख़िरत के नुकसान के आधार पर इस दुनिया को प्राथमिकता देना बुरा है। दौलत उस्मान ग़नी के पास थी, लेकिन इस्लाम कहता है कि तुम क़ुरान मत बनो, स्थिति उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास भी थी, अल्लाह उस पर दया करे। इस्लाम कहता है कि तुम हामान और फिरऔन मत बनो।

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- इस सूरह में पुष्टि की तुलना में चेतावनी का पहलू अधिक प्रभावी है, जबकि पिछले सूरह में पुष्टि का पहलू अधिक दिखाई देता है।

यूनिट नंबर 14

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़रफ़, सूरह नं. 43, पवित्र क़ुरआन की आयत नं. 1 से 8। महानता, श्रेष्ठता और सम्मान का वर्णन है, और जो लोग कुरआन मजीद का अपमान करते हैं, यह उनके परिणाम और उनके विनाश की चेतावनी है।"

اقتضاء الصراط المستقيم : ابن تيمية

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- कुरान, उसकी भाषा और उसका स्थान (1-4)
- उल्लंघन करने वाले, नबियों का मज़ाक उड़ाना और उनका अंत (5-8)

यूनिट नंबर 15

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़राफ़, सूरह नंबर 43 की आयत 9 से 14 में कहा गया है कि मक्का के बहुदेववादी अल्लाह की प्रभुता के प्रति आश्वस्त थे, लेकिन उन्होंने अल्लाह की दिव्यता से इनकार किया।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- मक्का के बहुदेववादी अल्लाह की प्रभुता के प्रति आश्वस्त थे, लेकिन वे उसकी दिव्यता के प्रति आश्वस्त नहीं थे।(14-9)

यूनिट नंबर 16

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़राफ़, सूरह नंबर 43 की आयत 15 से 25 में, मक्का के मूर्तिपूजक स्वर्गदूतों को अल्लाह की बेटियाँ कहते थे, हालाँकि जब उनके यहाँ एक लड़की पैदा होती थी, तो वे इसे अपने लिए अपमान मानते थे।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- मुश्रिकों की (इफ्तरा पारदजियां) और इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कुछ कहानियाँ। (15-35)

यूनिट नंबर 17

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़राफ़, सूरह नंबर 43 की आयत 26 से 35 में बताया जा रहा है कि अल्लाह द्वारा रसूल बनाना और किसी को जीविका देना जैसे सभी मामलों में अल्लाह का ज्ञान छिपा है।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- मुश्रिकों की (इफ्तरा पारदजियां) और इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कुछ कहानियाँ। (15-35)

यूनिट नंबर 18

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़राफ़, सूरह नंबर 43, आयत 36 से 46 तक में कहा गया है कि जो लोग प्रार्थना, धिक्कार और पूजा के अन्य अनिवार्य कार्यों की उपेक्षा करते हैं, अल्लाह सर्वशक्तिमान ऐसे लोगों पर एक शैतान थोपता है जो उनका साथी बन जाता है और उन्हें सीधे रास्ते से भटका देता है।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- जो कोई अल्लाह की याद से बचता है, शैतान इस दुनिया और नरक में उसका साथी बन जाता है
- पैगंबर को कुछ निर्देश। (43-45)

यूनिट नंबर 19:

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़राफ़, सूरह नं. 43, आयत नं. 47 से 56 में फिरौन के भाग्य और घटना से सलाह लेने के लिए कहा जा रहा है।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

मूसा और ईसा (अलैहिस्सलाम) की कहानी, हजरत ईशा का रहस्योद्घाटन (अलैहिस्सलाम) पुनरुत्थान के संकेतों में से एक है (46-66)।

यूनिट नंबर 20

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़राफ़, सूरह नं. 43, आयत नं. 57 से 66 तक में कहा जा रहा है कि हमने ईसा (अलैहिस्सलाम) को इसराइल के बच्चों के लिए एक उदाहरण बनाया और यीशु के कार्य को पुनरुत्थान के दिन का संकेत बनाया, जिसका अर्थ है कि ईसा (अलैहिस्सलाम) पुनरुत्थान के दिन के करीब फिर से प्रकट होंगे।

"यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

मूसा और ईसा (अलैहिस्सलाम) की कहानी, हजरत ईशा का रहस्योद्घाटन (अलैहिस्सलाम) पुनरुत्थान के संकेतों में से एक है (46-66)।

यूनिट नंबर 21

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़राफ़, सूरह नंबर 43, आयत 67 से 73 तक, अल्लाह के आशीर्वाद का वर्णन है जो इस दुनिया में उसके बाद दिया जाएगा।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

पवित्र लोगों के लिए स्वर्ग और नारकीय लोगों के लिए सज़ा का उल्लेख (67-80)।

यूनिट नंबर 22

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़राफ़, सूरह नंबर 43, आयत नंबर 74 से 80, फज्र, पुनरुत्थान के दिन फज्र के लोगों के बुरे अंत का वर्णन है।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- धर्मनिष्ठों के लिए स्वर्ग और धर्मियों के लिए नरक की यातनाओं का उल्लेख (67-80)।

यूनिट नंबर 23

पचीसवाँ पारा, सूरह अल-ज़ुख़राफ़, सूरह नं. 43, आयत नं. 81 से 89 में बताया जा रहा है कि अल्लाह शिर्क और संतान से रहित है।

"यूनिट नंबर 23 के कुछ विषय"

- अल्लाह की एकता, बहुदेववाद और अल्लाह का बेटा होने से इनकार के तर्क (81-89)

सूरह अल-दुखान SURAH AD-DUKHAAN		
The Smoke	Dhuwaan	धुआं

“the place of Revelation” MAKKAH"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

“Few Topics” कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- साम्राज्य और सरकार का धुके से परहेज 1
- इस सूरह में सरकार की चमक-दमक का संकेत दिया गया है:

وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ (آية 27)

और परमेश्वर की कृपा उस में थी (आयत 27)

- इस सूरह में फ़िरऔन और उसकी प्रजा का ज़िक्र है और उनकी अवज्ञा और विद्रोह के कारण जो सज़ा सामने आई और जो सज़ा वे बगीचों और महलों में छोड़ गए, उसका ज़िक्र है।

(अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें – مسولية الدول الاسلامية عن الدعوة ونموذج المملكة العربية السعودية: अब्दुल्ला बिन अब्दुल मोहसिन अल-तुर्की)

- सभी का उल्लेख किया गया है। हालाँकि अल्लाह ने उन्हें सरकार दी थी, लेकिन उन्होंने इस आशीर्वाद को महत्व नहीं दिया, बल्कि अहंकारी थे, और इसका अंत विनाश और विनाश में हुआ। 2
- इस सूरह में पास ही घटी दुखन की घटना का ज़िक्र किया गया है इसलिए यह उदाहरण भी उदाहरण के लिए एक स्रोत है। अभी तक तो खतरा ही हो रहा था, धीरे-धीरे खतरा हकीकत में भी नजर आने लगा है। 3

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- इस सूरह में पुष्टि की तुलना में चेतावनी का पहलू अधिक प्रभावी है, जबकि पिछले सूरह में पुष्टि का पहलू अधिक दिखाई देता है।

यूनिट नं 24

पचीसवाँ पारा, सूरह अल- दुखान, सूरह नंबर 44 की आयत नंबर 1, में कुरान का परिचय प्रस्तुत किया गया था और कहा गया था कि कुरान एक चमत्कार है, और यह लैलतुल-कद्र की धन्य रात को प्रकट हुआ था।

"यूनिट नंबर 24 के कुछ विषय"

- लैलतुल-कद्र में कुरान का अवतरण। (1-6)
- ईश्वर की शक्ति का कथन (7-8)

2 अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़ें। (विनम्रता और नम्रता के कारण अल-बशर की याद: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)

3 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर अल-कुर्तुबी खंड 17 / पृष्ठ 117)

यूनिट नंबर 25

पचीसवाँ पारा, सूरह अल- दुखान, सूरह नंबर 44 की आयत 10 से 16 में काफिरों और मूर्तिपूजकों को चेतावनी दी गई और सज़ा की चेतावनी दी गई और सही रास्ते पर चलने की सलाह दी गई।

"यूनिट नंबर 25 के कुछ विषय"

- दावा के काम में बहुदेववादियों की साजिशें - (9-16)

यूनिट नंबर 26

पचीसवाँ पारा, सूरह अल- दुखान, सुरत नं. 44 की आयत 17 से 33 में फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम के विद्रोह और उसके अंत का ज़िक्र है और यह बयान भी है कि मूसा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसराइलियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया।

"यूनिट नंबर 26 के कुछ विषय"

- फिरौन के राष्ट्र की कहानी।(17-33)

यूनिट नंबर 27

पचीसवाँ पारा, सूरह अल- दुखान, अध्याय 44 की आयत 34 से 39 में मक्का के बहुदेववादियों को संबोधित करते हुए कहा जा रहा है कि जो लोग मृत्यु के बाद जीवन से इनकार करते हैं, उनके लिए तबा के लोगों का उदाहरण काफी है, जो शक्तिशाली और दिग्गज हुआ करते थे, लेकिन उनका अंत भयानक हुआ।

"यूनिट नंबर 27 के कुछ विषय"

- मृत्यु के बाद बहुदेववादियों की अस्वीकृति और उनकी अस्वीकृति। (34-50)

यूनिट नंबर 28

पचीसवाँ पारा, सूरह अल- दुखान,, सूरह नंबर 44 की आयत 40 से 50 में नरक के लोगों की सजा के दृश्य का उल्लेख किया गया है, और कहा गया है कि ज़कुम का पेड़ नरक के लोगों के लिए तैयार किया गया है।

"यूनिट नंबर 28 के कुछ विषय"

- मृत्यु के बाद बहुदेववादियों के पुनरुत्थान का इन्कार और उनका अस्वीकार (34-50)

यूनिट नं 29

पचीसवाँ पारा, सूरह अल- दुखान, सूरह नंबर 44, आयत नंबर 51 से 59 में बताया जा रहा है कि पुनरुत्थान के दिन, विश्वास करने वाले लोगों को सम्मान से पुरस्कृत किया जाएगा और उन्हें सबसे अच्छा इनाम दिया जाएगा।

"यूनिट नंबर 29 के कुछ विषय"

- जन्नत में परहेज़गारों का इनाम (51-59)

सूरह अल - जासिया SURAH AI-JATHIYAH		
The kneeling	Ghutno ke bal baithna	घुटनों के बल बैठना

<table>
<tr><td></td><td></td><td></td></tr>
<tr><td colspan="3">“the place of Revelation”
MAKKAH"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का</td></tr>
</table>

“Few Topics” कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- धरती से अहंकार का अंत-1
- इस सूरह में अहंकार के ख़तरे का वर्णन किया गया है और अहंकार एक ऐसी चीज़ है जो सीधे नरक में जाती है. ऐसा कोई भी व्यक्ति जन्नत में प्रवेश नहीं करेगा जिसके दिल में गर्व का एक कण भी हो। "जिसके दिल में राई जितना अहंकार है वह जन्नत में प्रवेश नहीं करेगा।"

(1999) अल-तिर्मिधि

(अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें। تذكير البشر بفضل التواضع و ذم الكبر: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)

अहंकार बहुत खतरनाक चीज है.

अल्लाह ने कहा:

يَسْمَعُ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ تُتْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ٨

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ ءَايَٰتِنَا شَيْـًٔا ٱتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ٩

- इस सूरह का नाम जस्तिया इसलिए रखा गया क्योंकि क़यामत के दिन विकट परिस्थितियों के कारण लोग घुटनों के बल बैठकर हिसाब-किताब का इंतज़ार नहीं करेंगे।
- जब वे अहंकार की स्थिति में पहुँच गये और वह तीव्र हो गया तो कुरैश के अविश्वासियों को स्पष्ट धमकी दे दी गयी।

- यहां तक कि जब यहूदियों ने गुप्त रूप से अविश्वासी कुरैश की मदद की तो उन्हें भी सबक याद दिलाया गया। पैगम्बरों की शिक्षाओं को त्यागने से, यदि सुधार नहीं हुआ तो, उन्हें कष्ट तो होगा ही
- सूरह जस्तिया में छह तर्कों के साथ एकता की पुष्टि की गई है:

1) स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण

(2) मनुष्य की रचना

(3) प्राणियों की रचना

(4) दिन और रात का घूमना

5) जल का आकाश से उतरना और पृथ्वी से बढ़ना

6) हवाओं की गति और उसकी प्रणाली

2 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें। مدارج السالكين بين منازل اياک نعبد: इब्न क़य्यिम अल-जवज़िया खंड 2 / पृष्ठ 311)

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- **इब्न तैमिय्या रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया:** सूरह जासिया (45:13) की इस आयत की रोशनी में **"जमीअन मिन्हु"** से **"रूह मिन्हु"** के ईसाई ग़लतफ़हमी का जवाब दिया। अगर **"रूह मिन्हु"** से तुमने ईसा (अलैहिस्सलाम) को अल्लाह का हिस्सा समझा, तो फिर **"जमीअन मिन्हु"** से भी पूरी कायनात को अल्लाह का हिस्सा समझो। फिर तुम तशबीह से निकल कर **"वहदतुल वजूद"** में चले जाओगे। और ईसाई **"वहदतुल वजूद"** को नहीं, बल्कि सिर्फ़ **"तशबीह अल-वजूद"** को लबास पहनाते हैं। यानी तशबीह = तौहीद का बदलाव, हरफ़ और ग़ैर-अक्ली तसव्वुर!

यूनिट नं 30

पचीसवाँ पारा, सूरह अल - जासिया, सूरह नंबर 45 की आयत 1 से 6 में कहा गया है कि पवित्र कुरान अल्लाह द्वारा प्रकट किया गया था, जिसके बाद अल्लाह की एकता और दिव्यता का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 30 के कुछ विषय"

- अल्लाह की एकता और शक्ति का संकेत देने वाले संकेत (1-6)

यूनिट नंबर 31

पचीसवाँ पारा सूरह अल - जासिया, सूरह नंबर 45 की आयत 7 से 11 में बताया जा रहा है कि लोग अल्लाह ताला की निशानियों को झुठलाते हैं और उन्हें झुठलाने वाले को सबसे बुरा और बुरा बदला दिया जाएगा।

"यूनिट नंबर 31 के कुछ विषय"

- अविश्वासियों और अल्लाह की आयतों को झुठलाने वालों के लिए चेतावनी। (7-11)

यूनिट नंबर 32

पचीसवाँ पारा सूरह अल - जासिया, सूरह नंबर 45 की आयत 12 से 15 में अल्लाह के आशीर्वाद को याद दिलाया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 32 के कुछ विषय"

- विश्वासियों को निर्देश. (14-15)

यूनिट नं 33

पचीसवाँ पारा सूरह अल - जासिया, सूरह नंबर 45 श्लोक 16 से 20 तक। इस्राईल को दी गई नेअमतों का बयान किया और कहा कि जब हमने बनी इस्राईल को शरीयत दी तो वह नेमत के तौर पर दी, लेकिन वह इन नेअमतों का शुक्र अदा करने से चूक गए।

"यूनिट नंबर 33 के कुछ विषय"

इसराइल के बच्चों पर अल्लाह का आशीर्वाद, उसके खिलाफ उनका विद्रोह (16-22) •

यूनिट नंबर 34

पचीसवाँ पारा सूरह अल - जासिया, सूरह नंबर 45 की आयत 21 से 23 में बताया जा रहा है कि जो लोग ईमान लाए और अच्छा किया, ईमान वाले और जो अविश्वास करते हैं और शिर्क करते हैं, वे बराबर नहीं हैं, ईमान वालों को सबसे अच्छा इनाम दिया जाएगा और अवज्ञाकारियों को सबसे खराब सजा दी जाएगी।

"यूनिट नंबर 34 के कुछ विषय"

- बनी इस्राइल पर अल्लाह की रहमत, उनके ख़िलाफ़ उनकी बग़ावत। (16-22)

यूनिट नंबर 35

पचीसवाँ पारा सूरह अल - जासिया, सूरह संख्या 45 की आयत 24 से 27, नास्तिक, तीसरा, और नास्तिक और उनकी आपत्तियों के उत्तर।

"यूनिट नंबर 35 के कुछ विषय"

- मृत्यु और उनके अंत के बाद बहुदेववादियों और काफिरों की अस्वीकृति। (23-35)

यूनिट नंबर 36

पचीसवाँ पारा सूरह अल - जासिया, सूरह नंबर 45 की आयत 28 से 37 में, अवज्ञाकारियों के लिए न्याय के दिन बैठने के एक विशेष तरीके का वर्णन है।

"यूनिट नंबर 36 के कुछ विषय"

- मृत्यु और उनके अंत के बाद बहुदेववादियों और काफिरों का अविश्वास। (23-35)
- अल्लाह की कृपा और उसकी महानता का उल्लेख। (36-37)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

حاميم

26

CHABBISWAN PAARA (JUZ) "حاميم "KA MUKHTASAR TAAARUF

छब्बीसवाँ पारा (भाग) " حاميم " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय।

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓاْ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُوْلُواْ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

	छब्बीसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय	सूरह अल-अहक़ाफ़

छब्बीसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय
- हा-मीम"-" पारा 26

छब्बीसवें श्लोक को विद्वानों ने 21 इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:

पैरा संख्या 26 "खथम" के छंदों और विषयों का इकाइयों द्वारा विभाजन			
यूनिट नंबर:	आयत		विषयों
अल-अहक़ाफ़			
यूनिट नंबर: 1	1	14	पवित्र कुरान अल्लाह द्वारा मुहम्मद (उन पर शांति) को प्रकट किया गया और एकेश्वरवाद की घोषणा की गई।
यूनिट नंबर: 2	15	20	दीन से इनकार करने वालों के अंजाम का ज़िक्र, आद वालों का ज़िक्र, समूद वालों का ज़िक्र और लोगों के अज़ाब का बयान।
यूनिट नंबर: 3	21	28	जन्नत वालों का ज़िक्र और माँ-बाप से न कहने का बयान।
यूनिट नंबर: 4	29	35	पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का बयान, अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उस पर हो, अल्लाह का सेवक होने के बारे में, जिन्न को धर्म में आमंत्रित करने का उल्लेख, और सजा देने में जल्दबाजी करने वालों का बयान।
सूरह मुहम्मद			
यूनिट नंबर:5	1	6	उचित और अनुचित के द्वंद्व का परिचय तथा उनके बीच होने वाले संघर्ष का वर्णन |
यूनिट नंबर:6	7	15	अल्लाह ताला की सुन्नतें नहीं बदलतीं.
यूनिट नंबर:7	16	28	बेईमानी करना मनुष्यों के गुणों का वर्णन |
यूनिट नंबर:8	29	38	पाखंडियों के विरुद्ध चेतावनी और ईमानवालों की रक्षा का कथन।
सूरह अल-फतह			
यूनिट नंबर:9	1	7	मक्का की विजय का वर्णन.
यूनिट नंबर:10	8	10	अल्लाह के पैग़ंबर की महानता और श्रेष्ठता का ज़िक्र और बैअत रिज़वान के अद्भुत नतीजों का वर्णन।
यूनिट नंबर:11	11	17	हुदैबिया की शांति के अवसर पर अल्लाह के पैगंबर द्वारा पेश किए गए बलिदानों का वर्णन।
यूनिट नंबर:12	18	24	बैत रिज़वान से जुड़ने वालों के लिए ख़ुशख़बरी का बयान।

यूनिट नंबर:13	25	26	हुदैबियाह की शांति द्वारा उत्पन्न सर्वोत्तम प्रभावों का विवरण।
यूनिट नंबर:14	27	29	अल्लाह के पैगंबर का सपना, शांति और आशीर्वाद उस पर हो, और इस सपने को हकीकत में बदलने का विवरण।
सूरह हुजरात			
यूनिट नंबर:15	1	3	अल्लाह और अल्लाह के पैग़ंबर से आगे न बढ़ने का ज़िक्र और उनके सम्मान और पवित्रता और श्रद्धा का बयान।
यूनिट नंबर:16	4	13	श्रेष्ठ समाज के सिद्धांत एवं नियम बताए गए, बिना शोध के किसी भी खबर को आगे न बढ़ाने की बात कही गई।
यूनिट नंबर:17	14	18	आस्था और इस्लाम का वर्णन और श्रेणियों का वर्णन।
सूरह काफ			
यूनिट नंबर:18	1	5	अल्लाह के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का ज़िक्र और मौत के बाद उनके जी उठने का ज़िक्र।
यूनिट नंबर:19	6	15	आयत अफ़ाक पर ग़ौर करने वालों और उनको झुठलाने वालों का बयान।
यूनिट नंबर:20	16	38	श्लोक पर विचार करने का कथन।
यूनिट नंबर:21	39	45	सब्र और नमाज़ सुबह और शाम की नमाज़ क़ायम करने का वर्णन।

सूरह अल-अहक़ाफ़ SURAH AL-AHQAAF		
The Curved sand Hills	Mitti ke bade tode	मिट्टी दो
“the place of Revelation” MAKKAH"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

“Few Topics” कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- इस सूरह में बताया गया है कि जब आप क़ुरआन पढ़ेंगे तो कुछ लोग इसे स्वीकार कर लेंगे और कई लोग इसे अस्वीकार कर देंगे।

- इस सूरह में कई घटनाएँ हैं। 1
    - एक ओर कहा गया कि जब पैगंबर कुरान पढ़ते हैं तो जिन्न भी उसे स्वीकार कर रहे हैं.
    - वहीं दूसरी ओर बताया जा रहा है कि पिता इस्लाम का न्यौता देता है लेकिन बेटा कबूल नहीं करता (अहक़ाफ़: 17)

(अंतर्विरोधों और अंतर्विरोधों के बारे में अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें – درء تعارض العقل والنقل: अहमद बिन अब्द अल-हलीम बिन तैमियाह
2 (अधिक जानकारी के लिए, سير اعلام النبلاء खंड 27/पेज 159)

- शब्द का सारांश यह है कि जो लोग अल्लाह की आज्ञाओं को स्वीकार करेंगे वे वही होंगे जिन्हें अल्लाह अनुमति देगा। और सफलता उसी को मिलती है जो सुनना और समझना चाहता है।
- अहक़ाफ़ का तर्क; यमन की ज़मीन में अहक़ाफ़ उस जगह का नाम है जहाँ आद के लोग रहते थे, अल्लाह ने उनकी अवज्ञा और विद्रोह के कारण उन्हें नष्ट कर दिया। 3
- यह राष्ट्र अद अहक़ाफ़ (यमन और सऊदी अरब के बीच रेतीली चोटियाँ जो रेगिस्तानों के बीच थीं) में रहता था।
- राष्ट्रभक्ति की कहानी सुनाई गई. उनके देवता उनके किसी काम के नहीं थे।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- जिस प्रकार कुछ सूरहों के नाम पैगम्बरों के नाम पर रखे गए थे जैसे सूरह युसूफ ((सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), सूरह इब्राहिम ((सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), सूरह यूनुस ((सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), सूरह हुद, उसी प्रकार कुछ सूरहों के नाम लोगों के नाम पर रखे गए थे जैसे: सूरह अल-अहकाफ, सूरह अल-हिज्र, आदि।
- लक्षण भी अविश्वास का कारण होते हैं। जब देश इस तरह की बीमारी में है. अगर वह इससे पीड़ित है तो उसे सूरह अल-अहकाफ पढ़ना चाहिए, इससे व्यक्ति को ठीक होने का मौका मिलेगा।
- सूरत अल-अहक़ाफ़ में एकता के प्रमाण हैं और इसे अस्वीकार करने वालों के भाग्य का उल्लेख किया गया है। जबकि सूरह मुहम्मद में शुरू से ही उन अवज्ञाकारियों की विशेषताओं का वर्णन किया गया था जिन्होंने सीधे रास्ते में बाधा डाली थी।

3 (विवरण के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 7 पृष्ठ 286 देखें)

यूनिट नंबर 1 :

छब्बीसवें पारा, सूरह अल-अहकाफ़, सूरह नंबर 46 की आयत 1 से 14 में, यह बताया जा रहा है कि पवित्र कुरान अल्लाह ने अपने पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर प्रकट किया था, यह एकेश्वरवाद का आह्वान करता है और अली को बहुदेववाद को त्यागने की शिक्षा देता है।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- दैवीय शक्ति की पुष्टि और बहुदेववादियों के बहुदेववाद का खंडन। (1-6)
- दृढ़ता से जीनेवालों का प्रतिफल (13-14)

यूनिट नंबर 2:

छब्बीसवें पारा, सूरह अल-अहकाफ़, सूरह नंबर 46 की आयत 15 से 20 में, जन्नत के लोगों का वर्णन है और कहा गया था कि अपने माता-पिता को "इफ़्त" न कहें, और कहा गया था कि हर किसी को उसके किए की सज़ा मिलेगी।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- माता-पिता और उनकी स्थिति से संबंधित वसीयत। (15-16)
- माता-पिता से भेदभाव करने वाले का अंत. (17-19)

यूनिट नंबर 3

छब्बीसवाँ पारा, सूरह अल-अहक़ाफ़, सूरह नंबर 46 की आयत 21 से 28 में बताया जा रहा है। कि जो लोग सच्चे धर्म से इनकार करते हैं वे इस दुनिया और उसके बाद अपने विनाश के लिए तैयार हैं, और इसके बाद क़ौम आद के भाई हूद का ज़िक्र किया जा रहा है, और समूद की क़ौम का ज़िक्र किया जा रहा है, और ख़ास तौर पर आद की क़ौम और उस सज़ा का ज़िक्र किया जा रहा है जो उन पर लाया गया था।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- हूद (अलैहि वसल्लम) की कहानी। (21-28)

यूनिट नंबर 4

छब्बीसवें पारा , सूरह अल-अहकाफ, सूरह नंबर 46 की आयत 29 से 35 में कहा गया था कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), अल्लहा के पैगम्बर और दूत हैं, और उसके बाद, भगवान का एक बयान है कि जिन्नों को धर्म के लिए आमंत्रित किया गया था, जिस पर जिन्न ने कहा, "हमने पवित्र कुरान सुना है, जो मूसा (अलैहि वसल्लम)के टोरा के बाद प्रकट हुआ था, ।" जिस दिन वे इसका स्वाद चख लेंगे, उन्हें पता चल जाएगा कि सज़ा क्या होती है.

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- जिन्नों का क़ुरान पर ईमान लाने की घटना. (29-32)

सूरह मुहम्मद		
पैगंबर मुहम्मद	मुहम्मद	
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मदीना		

मुशफ़ मदीना के अनुसार यह सूरह मदनी है

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- रसूल का अनुसरण करना कर्म स्वीकार करने का माध्यम है।[1]
- इस सूरह में 12 बुरे कामों का ज़िक्र है, जिसका मतलब है कि अगर आप मुहम्मद की शिक्षाओं को नहीं मानेंगे तो काम इकारत हो जायेंगे और मानने से ही काम लोकप्रिय हो जायेंगे।[2]
- इस सूरह का फोकस दो आयतें 20 और 21 है।

> (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें – قاعدة مختصرة فى وجوب طاعة الله و رسوله صلى الله عليه وسلم وولادة الامور: अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)
>
> अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें – وجوب العمل بسنة رسول الله صلى الله عليه وسلم و كافر من انكرها: अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़

قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿وَيَقُولُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَوۡلَا نُزِّلَتۡ سُورَةٞۖ فَإِذَآ أُنزِلَتۡ سُورَةٞ مُّحۡكَمَةٞ
وَذُكِرَ فِيهَا ٱلۡقِتَالُ رَأَيۡتَ ٱلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٞ يَنظُرُونَ إِلَيۡكَ نَظَرَ ٱلۡمَغۡشِيِّ
عَلَيۡهِ مِنَ ٱلۡمَوۡتِۖ فَأَوۡلَىٰ لَهُمۡ ٢٠ طَاعَةٞ وَقَوۡلٞ مَّعۡرُوفٞۚ فَإِذَا عَزَمَ ٱلۡأَمۡرُ فَلَوۡ
صَدَقُواْ ٱللَّهَ لَكَانَ خَيۡرٗا لَّهُمۡ ٢١﴾ محمد

अनुवाद: और जो लोग ईमान लाए, वे कहते हैं कि कोई सूरत क्यों नहीं नाज़िल की गई? फिर जब कोई स्पष्ट अर्थ वाली सूरत नाज़िल की जाती है और उसमें क़त्ल का ज़िक्र किया जाता है, तो आप देखते हैं कि जिन लोगों के दिलों में बीमारी है, वे आपकी ओर उसी तरह देखते हैं जैसे कोई व्यक्ति मृत्यु के समय बेहोशी की हालत में हो। तो उनके लिए बेहतर होता (कि वे आज्ञा का पालन करें) और उचित बात कहें। फिर जब कोई काम निर्धारित हो जाए, तो यदि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें, तो यह उनके लिए बेहतर है। (21)

- जिहाद मानव आत्मा के लिए बहुत कठिन है, लेकिन जिहाद में आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है
- अंत में, उन ईमानवालों के उकाब का उल्लेख किया गया है जिन्होंने रसूल की अवज्ञा की थी:

قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ هَٰٓأَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَمِنكُم مَّن
يَبْخَلُ ۖ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ ٱلْغَنِىُّ وَأَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ ۚ وَإِن
تَتَوَلَّوْا۟ يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوٓا۟ أَمْثَٰلَكُم ﴿٣٨﴾ ﴾ محمد

अनुवाद: सावधान! तुम वो लोग हो जो अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए बुलाए गए हो, इसलिए तुम में से कुछ लोग कंजूस हैं, और जो कंजूस है वह वास्तव में अपनी जान के मामले में कंजूस है।

अल्लाह अमीर है और तुम गरीब (और जरूरतमंद) हो, और यदि तुम मुंह मोड़ोगे, तो वह तुम्हारी जगह तुम्हारे अलावा अन्य लोगों को ले आएगा जो फिर तुम्हारे जैसे नहीं होंगे (38)।

- सत्य के मार्ग में बाधा डालने वालों को बहुत कड़ी चेतावनी दी गई है। 3
- अब सूखे पेड़ों को उखाड़ने वाले हाथ मजबूत हो गये हैं।
- सूरह मुहम्मद में एक शिक्षा यह भी है: "السلام المسلح" समकालीन के इसे "शांति रक्षक बल" कहा गया है, जिसका अर्थ है कि इस्लाम में बल का उपयोग रक्षा, उत्पीड़न को समाप्त करने और शांति स्थापित करने के लिए है, न कि आतंकवाद और निर्दोषों पर अत्याचार करने के लिए। 4

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- यह पिछले सूरह के वादों और प्रतिज्ञाओं की पूर्ति है। एकेश्वरवाद, पैगम्बरत्व और)तौहीद ,रिसालत(आखिरत इसका उल्लेख है ।

1. (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें – اقتضاء صراط المستقيم لمخالفة اصحاب الجحيم: अहमद इब्न अब्दुल हलीम इब्न तैमियाह)
2. (अधिक स्पष्टीकरण के लिए, ये आयतें भी पढ़ें: 2:190, 5:32)

यूनिट नंबर 5

छब्बीसवाँ पारा, सूरह मुहम्मद, सूरह नं. 47, आयत नं. 1 से 6, सत्य और असत्य का संघर्ष का परिचय प्रस्तुत किया गया और जुल्म के खिलाफ बल प्रयोग को जायज ठहराया गया और कहा गया कि जिन लोगों ने कुरान को झुठलाया उनके कर्म व्यर्थ हो गए, फिर ईमान वालों और काफिरों के बीच लड़ाई का बयान किया गया, जो लोग अल्लाह की राह में शहीद हुए, अल्लाह उनकी इस कुर्बानी को व्यर्थ नहीं जाने देगा और उन्हें जन्नत में दाखिल किया जाएगा।

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- अविश्वासियों और विश्वासियों का विवरण (1-3)
- काफ़िरों के ख़िलाफ़ जिहाद का आदेश और उसका इनाम। (4-6)

यूनिट नंबर 6

छब्बीसवें पारा, सूरह मुहम्मद, सूरह नंबर 47, आयत 7 से 15 में कहा गया है कि अल्लाह की सुन्नत आज्ञाकारी और अवज्ञाकारी दोनों के पक्ष में नहीं बदलती है।

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

ईमान वालों के

- लिए मदद की शर्तें, काफ़िरों के लिए अपमान और आख़िरत में दोनों का बदला ।

यूनिट नंबर 7

छब्बीसवें पारा, सूरह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), सूरह नं. 47 की आयत 16 से 28 तक में मोमिन और मुनाफ़िक़ के बीच तुलना करके मुनाफ़िकों के लक्षण बताए गए हैं और मुनाफ़िकों की पोल खोल दी गई है।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- पवित्र लोगों के लिए स्वर्ग में तैयार किए गए आशीर्वाद और अविश्वासियों के लिए नरक में तैयार किए गए दंडों का उल्लेख। (15-18)
- ज्ञान प्राप्त करने तथा क्षमा माँगने का आदेश | (19)
- पाखण्डियों का उल्लेख एवं उनका अन्त | (20-34)

यूनिट नंबर 8

छब्बीसवें पारा, सूरह मुहम्मद, सूरह नंबर 47 की आयतें 29 से 38 तक, अत्याचारियों को चेतावनी दी गई और विश्वासियों का बचाव किया गया।

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- पाखण्डियों का उल्लेख एवं उनका अन्त | (20-34)
- मुजाहिदीन का परीक्षण और विश्वासियों और गैर-विश्वासियों को निर्देश (31-33)
- संसार की वास्तविकता,तप की शिक्षा,दान और जिहाद का आदेश (35-38)

सूरह अल-फ़तह		
विजय	Kaamyabi	सफलता
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मदीना		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- विजय एवं दैवी रहस्योद्घाटन का आख्यान | 1
- यह सूरह एक तर्क है कि इस्लाम शांति को आमंत्रित करता है, युद्ध को नहीं।
- विश्वासियों से सहमति व्यक्त की ।
- मक्का के विश्वासियों को सांत्वना मिली।
- मक्का की विजय की घोषणा की गई।
- धर्म (दीन) का प्रभुत्व निश्चित है। 2
- मगफिरत और जबरदस्त मदद का वादा किया गया था ।

1. अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें (غزوات رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم: इस्माइल बिन उमर बिन कथिर)।
2. (अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें: اظهار الحق रहमतुल्लाह बिन ख़लीलूर रहमान अलहिंदी

- शांति प्रकट हुई ।
- पाखंडियों का पर्दाफाश हो गया । 3

- हुदैबिया की शांति के बाद, लोगों ने इस्लाम में प्रवेश करना शुरू कर दिया। 4
- आख़िरी आयत में ईमानवालों की खूबियाँ बताई गईं। 5
- एक विजित राष्ट्र के गुण और एक अजेय राष्ट्र के गुणों का उल्लेख किया गया।
- यह सूरह हुदायबिया से लौटते समय वर्ष 6 हिजरी में खैबर की लड़ाई से पहले **कारा अल-घुमायिम** (मक्का और मदीना के बीच) की रात में नाज़िल हुआ था।
- यह सूरह पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और साथियों की सांत्वना के लिए एक संदेश और भविष्यवाणी है कि मक्का से रोका जाना वास्तव में हार नहीं बल्कि जीत है।
- जब भी मुसलमानों का धैर्य संतुष्ट होगा, सत्य के आधार पर मक्का विजय जैसी महान सफलता प्राप्त होगी। इंशा अल्लाह
- दया से निराश मत होना, पजमुर्दा ना हों , तवक्कुल न छोड़ें, यदि आपका विश्वास और दृढ़ संकल्प मजबूत है, तो दुनिया की कोई भी ताकत आपको जीत से नहीं रोक सकती।
- अविश्वासी कुरैश ने खुद को " سدانۃ البيت" कहा, जो सिकायाह और रीफादा के मालिक और इब्राहीम धर्म का दावेदार समझते थे ।

[3] (अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें। صفاة المنافقين: इब्न क़य्यिम अल-जौज़ियाह)

[4] (अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (بعض فوائد صلح الحديبيۃ: मुहम्मद बिन अब्दल-वहाब)।

[5] (अधिक जानकारी के लिए आपको यह किताब अवश्य पढ़नी चाहिए। تذكير المسلمين بصفاة المومنين: अब्दल्लाह बिन जारल्लाह बिन इब्राहिम अल जारल्लाह)

सूरह मुहम्मद के अंतिम भाग में धमकी (وان تتولوا يستبدل قوما) और सूरह फतह में, " انا فتحنا لک فتحا مبينا", जिसका अर्थ है कि पैगंबर और साथी बहुत जल्द मक्का पर विजयी होंगे और काफिर कुरैश का स्थान ले लिया जाएगा।

व्याख्या के लिए उपयुक्त

- विजय और शासन का मानक विश्वास पर आधारित है। यह संदेश पिछले सूरा में स्पष्ट था, अब इस सूरा में मक्का की विजय और हुदैबिया की शांति की घोषणा की प्रस्तावना का अच्छी तरह से उल्लेख किया गया है।
- हुदायबिया की शांति मक्का की विजय का साधन बनेगी इस में खुशखबरी और पेशीनगोई बतलाई गई है ।

यूनिट नं: 9

छब्बीसवें पारा में, सूरह अल-फ़तह, सूरह संख्या 48 की आयत 1 से 7, मक्का की विजय का उल्लेख, अल्लाह द्वारा पैगंबर और साथियों को शांति भेजने का उल्लेख, विश्वासियों के लिए स्वर्ग की ख़बर, और अविश्वासियों, बहुदेववादियों और पाखंडियों के लिए नरक का वादा, और यह कथन कि अल्लाह सर्वशक्तिमान स्वर्गीय सेना और सांसारिक सेना पर विजय प्राप्त करेगा।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- हुदायबिया की शांति और उसके लाभ, पाखंडियों और बहुदेववादियों का अंत (1-7)

यूनिट नंबर: 10

छब्बीसवें पारा, सूरह अल-फ़तह, सूरह नंबर 48 की आयत 8 से 10 में, अल्लाह के पैगंबर की महानता और उत्कृष्टता, निष्ठा की प्रतिज्ञा और उसके अद्भुत परिणामों का उल्लेख किया गया है।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- पैगंबर के कर्तव्य और हुदैबिया में साथियों की निष्ठा की प्रतिज्ञा (8-10)

यूनिट नंबर: 11

छब्बीसवें पारा, सूरह अल-फतह, सूरह नंबर 48 की आयत 11 से 17 में हुदायबिया के मौका पर अल्लाह नबी के बलिदानों का उल्लेख है।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- मुनाफ़िक़ों की हक़ीक़त, हुदायबिया से उनका हटना और उनका दर्दनाक अंत।(11-16)

यूनिट नं :12

छब्बीसवें पारा, सूरह अल-फ़तह, सूरह नंबर 48 की आयत 18 से 24 में, बैत-ए-रिज़वान का उल्लेख और इसमें भाग लेने वालों को खुशखबरी का उल्लेख।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- बैते रिज़वान (18-26)

यूनिट नंबर: 13

छब्बीसवें पारा में, सूरह अल-फ़तह, सूरह नंबर 48 की आयत 25 से 26 तक, हुदैबियाह की शांति और उसके बाद की घटनाओं द्वारा लाए गए सर्वोत्तम प्रभावों का उल्लेख सबसे अच्छे परिणाम का उल्लेख ।

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- बैते रिज़वान (18-26)

यूनिट नंबर: 14

छब्बीसवें पारा, सूरह अल-फ़तह, सूरह नंबर 48 की आयत 27 से 29 में बताया गया है कि ईश्वर के पैगंबर ने जो सपना देखा था, उस सपने की सच्चाई को अल्लाह ने हकीकत में बदल दिया, और उन्होंने एक बड़ी जीत और सफलता प्रदान की और अपना धर्म स्थापित किया, उसके बाद पैगंबरों की महानता और उत्कृष्टता का वर्णन किया गया, और उसके बाद, मुहम्मद तोरात और इंजील में इसका उल्लेख किया गया था।

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- अल्लाह के दूत का सपना और अल्लाह के दूत के कुछ गुणों का वर्णन। (27-29)

सूरह अल-हुजुरात		
आवास	कामरे	कामरे
"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मदीना		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- इस सूरह में रिश्तों के तौर-तरीकों के बारे में बताया गया है (यानी पैगंबर के साथ, मुसलमानों के साथ और आम लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना है)। 1
- इस सूरह में सिखाया गया है कि तुम मुसलमानों को जीत मिलती रहेगी, अब सीखो कि किस से कैसा मुआमिला किया जाये और रसूलुल्लाह के साथ कैसे पेश आया जाये। 2
- अक़ीदा और इबादत के साथ नैतिक गुण जुटाएं ताकि आप अल्लाह की रहमत के हकदार बन जाएं ।

1. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (مكارم الاخلاق मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन)।
2. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (الصارم المسلول على شاتم الرسول صلى الله عليه وسلم,: अहमद बिन अब्द अल-हलीम बिन तैमियाह)।

- इस सूरह में बताया गया है कि सामाजिक संबंधों को बेहतर बनाने के लिए किन सिद्धांतों का पालन किया जाना चाहिए।
- इस सूरह में विश्वास की आवश्यकताओं का उल्लेख किया गया है, क्योंकि विश्वास का मामलों पर प्रभाव पड़ता है।
- यह समाज की नींव है, यदि आज विश्व इसका अनुसरण कर ले तो समाज सुखों का बगीचा और सेवक बन जायेगा।
- विजित राष्ट्र का अधिक विवरण सूरह हुजरात में वर्णित है जो इस प्रकार है:
    - किताब और सुन्नत से आगे मत जाओ। (49:1)
    - प्रत्येक क्षेत्र में तहक़ीक़ शुदः इल्म पर ही फैसला करो (149)
    - समाज में अत्याचारी का हाथ पकड़ो। (49:10-8)
    - अपने से ज्यादा सामने वाले का ख्याल रखें, क्योंकि भाई होने का मतलब यही है। और यह कि एक-दूसरे का मजाक नहीं उड़ाना, चुगली करना, संदेह करना, जासूसी करना, अपमान नहीं करना चाहिए।
    - धर्मपरायणता पर प्रेम आधारित होना चाहिए। ये शिक्षाएँ केवल दिखाई देने वाला इस्लाम ही नहीं ।

- अधिक जानकारी के लिए, आपको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए حقو اليها دعت ق الفطرة و قررتها الشريعۃ: मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन)

नहीं, लेकिन वे आंतरिक विश्वास और मधुरता का कारण हैं।

- कार्य के स्वीकृत होने की बुनियादी शर्त आस्था है। (47:1)
- अच्छे कर्म विश्वास का हिस्सा हैं. (47:2)
- सत्य की हमेशा जीत होगी. (47:4)
- ईमानवालों के मामलों की चिंता करना और ईमान का ख्याल रखना फल भी है और परिणाम भी. (47:5)
- सकारात्मक सोच, जीतें तो ये करें, वो न करें। (47)

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- सूरह अल-अहक़ाफ़ के अंतिम भाग में साथियों के अच्छे कामों का उल्लेख किया गया तो सोरह हजरत में मज़ीद बातें बताई गई ।
- अच्छे लोगों में और क्या गुण होने चाहिए? शिष्टाचार और रिश्तों को समझाएं.
- सूरह अल-फ़तह, सूरह मुहम्मद صلى الله عليه وسلم और सूरह हुजरात का विषय एक ही है। सूरह मुहम्मद (صلى الله عليه وسلم) अनुयायियों के बारे में उल्लेख करता है, सूरह अल-फतह अनुयायियों की स्थिति का उल्लेख करता है और सूरह अल-हुजरात सिखाता है कि अल्लाह के दूत (صلى الله عليه وسلم) के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (عقيدة اهل السنۃ والجماعۃ فى الصحابۃ: अब्द अल-मुहसिन बिन हमद अल-अबद अल-बद्र

- यह सूरह 9 हिजरी में नाज़िल हुई थी और इसमें कमरे थे।

यूनिट नंबर 15

छब्बीसवें पारा, सूरह अल-हुजरात, सूरह नंबर 49 की आयत नंबर 1 से 3 में कहा जा रहा है कि "हे ईमान वालों, अल्लाह और अल्लाह के पैगंबर से आगे मत बढ़ो, उसके बाद, मुस्लिम उम्मा को अल्लाह के पैगंबर का सम्मान करने का निर्देश दिया गया।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- पैगंबर के साथ विश्वासियों के शिष्टाचार। (1-5)

यूनिट नंबर 16

छब्बीसवाँ पारा, सूरह अल-हुजरात, सूरह नंबर 49 की आयत 4 से 13 में सर्वश्रेष्ठ। समाज के गुण-दोष और उसके नियम-कायदों के बारे में बताया गया, उसके बाद कहा गया कि जो भी आपको खबर देगा, उसे पहले खबर पर शोध करने का आदेश दिया गया और बिना शोध के इस खबर को आगे बढ़ाने के नुकसान बताए गए।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- समाचारों की परिपक्वता प्राप्त होनी चाहिए, विश्वासियों के पारस्परिक शिष्टाचार। (6-13)

यूनिट नंबर: 17

छब्बीसवें पारा में, सूरह अल-हुजरात, सूरह नंबर 49 की आयत 14 से 18, इस्लाम, विश्वास और उनके रैंक और उनके विवरण का वर्णन किया गया।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- ईमान और इस्लाम के बीच का अंतर सच्चे ईमान और अल्लाह की ओर से मार्गदर्शन की वास्तविकता है।

सूरह अल- क़ाफ़	छब्बीसवें पारा (जिज़)का संक्षिप्त परिचय।

सूरह अल- क़ाफ़		
अरबी शब्द "क़ाफ़"	क़ाफ़	क़ाफ़
"रहस्योद्घाटन का स्थान" मक्का		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- इस सूरह में मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की पुष्टि की गई है।
- इस सूरह में एक लिफ्ट है, इसे तमतारक तरीके से स्पष्ट किया गया है कि अब आपके पास विकल्प है कि आप अच्छाई के रास्ते पर चलें या अपने बुराई के रास्ते पर चलें।
- यह सूरह क़ुरान की उस शपथ से शुरू होती है जिसे काफ़िर नकारते थे।
- देवदूतों की बातचीत से स्वर्ग और नर्क के मार्गों का वर्णन | सर्वशक्तिमान ने कहा:

﴿ وَقَالَ قَرِينُهُۥ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾ أَلْقِيَا فِى جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾
مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿٢٥﴾ ٱلَّذِى جَعَلَ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِى
ٱلْعَذَابِ ٱلشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِينُهُۥ رَبَّنَا مَآ أَطْغَيْتُهُۥ وَلَٰكِن كَانَ فِى ضَلَٰلٍۭ بَعِيدٍ

अधिक जानकारी के लिए पढ़ें (وصف النار و اسباب دخولها وما ينجى منها : अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जार अल्लाह)

﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا۟ لَدَىَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِٱلْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ ٱلْقَوْلُ
لَدَىَّ وَمَآ أَنَا۠ بِظَلَّٰمٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ ٱمْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن
مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾ ﴾ ق

- स्वर्ग के लोगों और नरक के लोगों के बीच बातचीत का वर्णन।

قَالَ تَعالَى: ﴿ وَأُزْلِفَتِ الْجَنّةُ لِلْمُتّقِينَ غَيْرَ بعيد ٢) هَذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلّ أَوّابٍ حَفِيظٌ (٣) مَنْ خَشِيَ الرّحْمَنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ (٣٣) ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ذَلِكَ يَوْمُ الْجُلُودِ (٣) لَهُم مّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ

(ق)

- इन आयतों में कुरान की वाक्पटुता और वाग्मिता अपने चरम पर है: महान ने कहा:

قَالَ تَعالَى: ﴿ يَوْمَ نَقُوُ
لِجَهَنّمَ هَلِ امْتَلَاتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مّزِيدٍ (٣) ق وبين قوله تعالى قَالَ
تَعَالَى: ﴿ وَأُزْلِفَتِ الْجَنّةُ لِلْمُتّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ

(ق)

आग यही कहती है, " هل من مزيد "

इसके अलावा यह तर्क भी दिया जाता है कि यह बहुत व्यापक है। जन्नत ईमान वालों के करीब लाई जाएगी। यह ईमान वालों के लिए सम्मान की बात है क्योंकि जन्नत खुद उनके पास आ रही है। 2

- और अंत में यह कहा गया कि लोगों को कुरान से सलाह दी जानी चाहिए, क्योंकि कुरान में उन लोगों के लिए सलाह है जो अल्लाह से डरते हैं। महान ने कहा:

قَالَ تَعَالَى: نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْءَانِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ

(ق)

2 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें: عظمة القراٰن الكريم وتعظيمه و اثره فى النفوس فى ضوء الكتاب والسنة: सईद बिन अली बिन वाफ़ अल-क़हतानी)।

- इस सूरह में हश्र और नश्र का विषय प्रमुख है।
- परलोक में प्रतिफल मिलेगा। वह इससे सबको डराकर व्यक्तिगत नेता बनना चाहते हैं." इस नापाक अटकल को लेकर काफिरों को हर तरह के विरोध का सामना करना पड़ा ।
- काफ़िरों ने इस्तुबाद यानी मृत्यु के बाद पुनरुत्थान को असंभव माना, इस अवधारणा को तोड़ दिया गया। इस सूरह में मृत्यु के बाद पुनरुत्थान के तीन कारण बताए गए हैं: 1. ज्ञान 2-शक्ति- 3-बुद्धि
  - ज्ञान: अल्लाह सर्वज्ञ है, इसका पुनरुत्पादन कैसे किया जाना चाहिए, अल्लाह सुब्हानहु वा ता'आला वह जानता है, क्योंकि यह अल्लाह के ज्ञान की आवश्यकता है।
  - कुद्रत: ब्रह्मांड के क्षितिज से यह अनुमान लगाया जाता है कि अल्लाह तआला ने फिर से निर्माण किया वह सक्षम है] - महान ने कहा:

أَفَلَمْ يَنظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَهَا وَزَيَّنَّهَا وَمَا لَهَا مِن فُرُوجٍ ق،

(ق)

अनुमान लगाएं कि उपहार क्या हैं। सर्वशक्तिमान ने कहा:

﴿وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ، وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ

(ق)

अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक (فضايل القرآن: मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब) पढ़ें।

- हिकमत: क्यों वापस ले आये? [या पुनर्जीवित क्यों किया जाए?] इसका सरल और सहज उत्तर यह है कि न्याय की आवश्यकता पूरी होनी चाहिए और अन्याय का बदला, अच्छाई को पुरस्कृत है।

- यदि काफ़िरों को अल्लाह की महानता और शक्ति का अंदाज़ा होता तो वे ऐसा हरगिज़ ना कहते, फिर कैसे? पुनर्जीवित हो जायेंगे. यदि आप ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति का अनुमान लगा सकते हैं, तो ऐसा करें। यदि आप अनफस निर्माता की ताकत का अनुमान लगा सकते हैं, तो ऐसा करें। वह कितना शक्तिशाली होगा जिसने गैब्रियल को अतीत में पृथ्वी को एक पंख पर उठाने की शक्ति दी थी? समझ से बाहर।
- इसलिए यदि मोक्ष चाहते हो तो अल्लाह की ओर दौड़ो।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सूरह " क़ाफ़ ": यह ताकत और उन्नति का सूरह है। सूरह क़ाफ़ के संबंध में इब्न क़य्यिम, उनका कहना है कि यह सूरह काफ़िया पर आधारित है। और यह वाक्यांश बार-बार दोहराया जाता है। इस सूरह के सभी अर्थ "हरफ़ क़ाफ़" के लिए उपयुक्त हैं जिसका अर्थ तीव्रता है और ऊंचाई और इन्फतह के मायने हैं।

(बदी अल-फ़ौयद: 3/693)

- सूरह क़ाफ़ और सूरह अल-धारियात में उन लोगों का जिक्र है जिनके पुनरुत्थान की संभावना असंभव है असंभव को समझें और सोचें।

यूनिट नंबर 18

छब्बीसवाँ पारा, सूरह क़ाफ़, सूरह नंबर 50 की आयत 1 से 5 वास्तव में एक मुकदमा है। सबसे पहले, इसमें अल्लाह के पैगंबर की महिमा का उल्लेख किया गया है, और उसके बाद यह मृत्यु के बाद पुनरुत्थान का कथन है।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- बहुदेववादियों का मृत्यु के बाद पुनरुत्थान का खंडन और इसकी पुष्टि के लिए तर्क। (1-11)

यूनिट नंबर 19

छब्बीसवाँ पारा, सूरह क़ाफ़, सूरह संख्या 50, आयत अफ़ाक की आयत 6 से 15; ब्रह्माण्ड के संकेतों को विचारने और विचार करने के लिए आमंत्रित किया गया और उन लोगों की कहानियों का वर्णन किया गया जिन्होंने इन संकेतों को नकार दिया।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- मृत्यु के बाद बहुदेववादियों का अविश्वास और उसकी पुष्टि के प्रमाण (1-11)
- पिछले राष्ट्रों के पुनरुत्थान के बाद मृत्यु का खंडन और इसके बारे में वादे (12-15)

यूनिट नंबर 20

छब्बीसवाँ पारा, सूरह क़ाफ़, सूरह नंबर 50 की आयत 16 से 38 मनुष्य के भीतर पाए जाने वाले प्रकृति के संकेतों के बारे में सोचने-विचारने का निमंत्रण दिया गया.

"यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

- अल्लाह् ने मनुष्य को बनाया. (16-18)
- अविश्वासी और उसके रिश्तेदारों के बीच बात चीत , मृत्यु और पुनरुत्थान सत्य हैं (19-30)
- स्वर्ग में ईमानवालों का प्रतिफल और उनकी विशेषताएँ - (31-35)

यूनिट नंबर 21

छब्बीसवें पारा, सूरह क़ाफ़, सूरह नंबर 50 की आयत 39 से 45 में, अल्लाह् सर्वशक्तिमान ने धैर्य दिया है। और प्रार्थनाएं स्थापित करने को कहा।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- सब्र और नमाज़ सुबह् और शाम की नमाज़ क़ायम करने का वर्णन।

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

قال فما خطبكم

27

SATTA’ESWAN PAARA (JUZ) “ قال فما خطبكم "KA MUKHTASAR TAAARUF

सत्ताईसवां पारा (भाग) " قال فما خطبكم " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय |

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

جزاكم الله خيرا

सूराह अज़-ज़रियात	सत्ताईसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।
पारा नंबर 27 - क़ला फ़ामा ख़तबुकुम	

सत्ताईसवें पारा को विद्वानों ने अट्ठाईस (28) इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:

पैरा संख्या 27 "क़ल फामा ख़त्बुकुम" के छंदों और विषयों का इकाइयों के अनुसार वितरण।			
यूनिटस	छंद		विषयों
सूरा अज़-ज़रियात			
यूनिट नंबर: 1	1	23	अल्लाह और सभी प्राणियों की महिमा का वर्णन.
यूनिट नंबर: 2	24	46	अल्लाह तआला की सुन्नत का बयान और पैगम्बरों का जिक्र।
यूनिट नंबर: 3	47	60	जिन्न और मनुष्य की रचना के उद्देश्य का कथन |
सूरा अत-तूर			
यूनिट नंबर: 4	1	16	अल्लाह तआला की महान रचनाओं और अनुष्ठानों का वर्णन।

यूनिट नंबर: 5	17	28	धर्मात्माओं के विशिष्ट गुणों का वर्णन |
यूनिट नंबर: 6	29	49	काफिरों और बहुदेववादियों के आचरण तथा उनके अन्त का वर्णन |
		सूराह अन-नज्म	
यूनिट नंबर: 7	1	18	स्वर्गारोहण घटना की पृष्ठभूमि.
यूनिट नंबर: 8	19	32	मानव मनोविज्ञान, संदेह और संदेह, संदेह और संदेह का वर्णन |
यूनिट नंबर: 9	33	62	
	सूराह अल-क़मर		
यूनिट नंबर: 10	1	5	शक अल-क़मर के चमत्कार का वर्णन।
यूनिट नंबर: 11	6	8	डराने-धमकाने के महत्व पर वक्तव्य |
यूनिट नंबर: 12	9	17	नूह की जाति के भाग्य का वर्णन |
यूनिट नंबर: 13	18	22	यह आद राष्ट्र के अंत का वर्णन है।
यूनिट नंबर: 14	23	32	राष्ट्र समूद के अंत का वर्णन है।
यूनिट नंबर: 15	33	40	राष्ट्र लूत के भाग्य की कहानी है।

यूनिट नंबर: 16	41	42	फिरौन और राष्ट्र फिरौन के भाग्य का वर्णन है।
यूनिट नंबर: 17	43	55	पिछली क़ौमों के भाग्य का वर्णन करके अविश्वासी क़ुरैशों से कहा गया कि सही रास्ते पर चलो, अन्यथा तुम भी नष्ट हो जाओगे।
सूरा अर-रहमान			
यूनिट नंबर: 18	1	13	प्रत्यक्ष वरदानों का उल्लेख एवं ध्यान का वर्णन |
यूनिट नंबर: 19	14	16	जिन्नों और मनुष्यों की पैदाइश का वृत्तान्त।
यूनिट नंबर: 20	17	25	जगत् में मिलने वाले वरदानों का वर्णन |
यूनिट नंबर: 21	26	45	मृत्यु के बाद पुनर्जीवित हुए और आशीर्वाद दिया जाने का वर्णन |
यूनिट नंबर: 22	46	78	जो लोग इस दुनिया की नेमतों के लिए आभारी रहेंगे, उन्हें परलोक की नेमतें दी जाएंगी।
सूराह अल-वाक़िया			
यूनिट नंबर: 23	1	56	क़यामत के दिन की स्थापना का ज़िक्र और लोगों को तीन समूहों में बाँटने का वर्णन।
यूनिट नंबर: 24	57	74	पुनरुत्थान की स्थापना के लिए तर्कों की व्याख्या।
यूनिट नंबर: 25	75	96	कुरान की महिमा और आख़िरत में सफलता इसकी पुष्टि करती है।
सूराह अल-हदीद			

यूनिट नंबर: 26	15	1	अल्लाह् तआला का परिचय, एकेश्वरवाद का वर्णन और अल्लाह् की राह में खर्च करने की फ़ज़ीलत का वर्णन।
यूनिट नंबर: 27	24	16	अल्लाह् तआला के परिचय के लिए आवश्यकताओं का बयान।
यूनिट नंबर: 28	29	25	एक ही सिद्धांत पर आह्वान करने वाले सभी पैगंबरों का उल्लेख और अद्वैतवाद की अस्वीकृति का एक बयान |

सूरह् अज़-ज़ारियत	सत्ताईसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।

सूरह् अज़-ज़ारियत		
बिखरने वाली हवाएं	बिखरने वाली हवाएं	बिखरने वाली हवाएं
"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का		

- किसी भी चीज़ को देना केवल अल्लाह् के हाथ में है।

قال تعالى: ﴿وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تَعِدُونَ﴾ (الذاريات 2،

- यहां तक कि इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) की कहानी भी आती है, लंबे समय से बच्चों की मांग की जा रही है और बच्चे रोज़ी ही हैं फिर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मेहमाननवाजी का ज़िक्र किया गया है कि आप मेहमानों के लिए एक बछड़ा ले आएं, यह भी रोज़ी है।

अधिक जानकारी के पुस्तक "यह आवश्यक है" تيسير العزيز الحميد فى شرح كتاب التوحيد सुलेमान बिन अब्दुल्ला बिन मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब) 2 " تذكير الخلق باسباب الرزق अब्दुल्ला बिन जार अल्लाह् बिन इब्राहिम (जरल्लाह)

- इस सूरह् की केंद्रीय आयत है:

ما ارید منهم من رزق وما ارید ان یطعمون، ان اللہ هو الرزق ذوالقوت المتین

निस्संदेह अल्लाह ही अन्नदाता, प्रभुत्वशाली, बलवान है। अब यह तुम पर निर्भर है कि तुम अन्नदाता से मांगो या जरूरतमंद से!

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

पिछले सूरह में, ध्यान मृत्यु के बाद जीवन की पुष्टि पर था, लेकिन इस सूरह में आगे चलकर दंडों का भी उल्लेख किया गया है:

" انما توعدون لصادق وان الدين لواقع "

तुमसे तो बस सच्चे लोगों का वादा किया जा रहा है और बदला तो आने ही वाला है।

यूनिट नंबर 1

सत्ताईसवें पारा, सूरह अल-धारियत, सूरह नंबर 51, आयत नंबर 1 से 23 में, अल्लाह की महानता का वर्णन किया गया है और उसके बाद पुनरुत्थान के दिन और न्याय के दिन का उल्लेख किया गया है और कंजूसी को रोका गया है। अल्लाह की राह में दान और ख़र्च करने की फ़ज़ीलत बयान की गई है और कहा गया है कि मोमिन हमेशा आख़िरत की तैयारी में लगा रहता है।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की पुष्टि और उसके घटित होने की शपथ, तथा उसे अस्वीकार करने वाले उनका अंत. (1-14)
- धर्मात्माओं के गुण और उनका प्रतिफल | (15-19)
- आफ़ाक़ और अनफूस में अल्लाह की निशानियाँ और जीविका की वास्तविकता। (20-23)

यूनिट नंबर 2

सत्ताईसवीं पारा, सूरह अल-ज़रियात, सूरह 51 की आयत 24 से 46 में कहा गया कि अल्लाह तआला की सुन्नत है कि सत्य की हमेशा जीत होती है और झूठ की हार होती है। उसके बाद मूसा (अलैहिस्सलाम) की कहानी, इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की कहानी, लूत (अलैहिस्सलाम) की कहानी, सालेह (अलैहिस्सलाम) की कहानी, हूद (अलैहिस्सलाम) की कहानी और नूह (अलैहिस्सलाम) की कहानी पर विचार करने के लिए कहा गया और नबियों के विरोधियों के भाग्य का वर्णन किया गया।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- इब्राहीम के मेहमानों और लूत के लोगों की मृत्यु की कहानी। (24-37)
- कुछ भविष्यवक्ताओं की कहानियाँ और उन्हें नकारने वाले लोगों के अंत की कहानियाँ। (38-46)

यूनिट नंबर 3

सत्ताईसवें पारा, सूरह अल-ज़रियात, सूरा 51 की आयत 47 से 60 में कहा गया कि अगर तुम बुद्धिमान और समझदार हो तो अल्लाह की तरफ जल्दी करो, और उसके बाद कहा गया कि सभी जिन्न और इंसान को अल्लाह ताला की इबादत के लिए ही बनाया गया था।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- अल्लाह की शक्ति और उसकी एकता. (47-51)
- काफ़िरों से निपटना, पैगम्बरों को उनकी याद दिलाना जारी रखना (55-52)
- जिन्न और मनुष्य के जन्म का उद्देश्य. (56-58)
- अत्याचारियों और इनकार करनेवालों का अन्त (59-60)

सूरह अत-तूर	सत्ताईसवें श्लोक (भाग) का संक्षिप्त परिचय।

सूरह अत-तूर		
पर्वत का नाम	पहाड़ का नाम	पर्वत का नाम
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- सूरह तूर की शुरुआत पांच अहम बातों की कसम खाकर की जा रही है. आख़िरत का खौफ़, काफ़िरों की मुसीबत और इस बात की कसम खाई कि काफ़िरों को हर हाल में सज़ा मिलेगी, उन्हें कोई नहीं रोक सकता।
- इस सूरह में इस बात का पूरा अधिकार दिया गया है कि आप स्वर्ग का रास्ता अपनाएं या नरक का . 1
- इस सूरह का फोकस यह आयत है: महान ने कहा:

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ

الطور

पुस्तक के बारे में अधिक जानकारी " وصف النار و اسباب دخولها وما ينجى منها: अब्दुल्ला बिन जार अल्लाह बिन इब्राहिम अल जार अल्लाह"

- बताया गया कि किस प्रकार असत्य और असत्य लोगों का नाश होता है।
- यक़ीन दिलाया गया कि अल्लाह का अज़ाब आता रहेगा।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सूरह को तूर कहा जाता है क्योंकि इसमें जबल तूर द्वारा ली गई शपथ शामिल है। जिस पर अल्लाह ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से बात की थी, जिसके कारण इस पर्वत पर प्रकाश चमक रहा था इस पर्वत की स्थिति बहुत ऊँची थी।

यूनिट नंबर 4

सत्ताईसवें पारा, सूरह अल-तूर, सूरह नंबर 52 की आयत 1 से 16 तक, महान प्राणियों का उल्लेख किया जा रहा है, इन प्राणियों में काबा, तूर, बेत अल-मामोर आदि का उल्लेख किया गया है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- उन लोगों के लिए सज़ा जो क़ियामत के दिन को झुठलाते हैं। (1-16)

यूनिट नंबर 5

सत्ताईसवें पारा, सूरह अल-तूर, सूरह नंबर 52 की आयत 17 से 28 में, पवित्र लोगों के गुणों का उल्लेख किया गया और कहा गया कि सभी पवित्र लोगों में अलग-अलग गुण होते हैं और इन गुणों के आधार पर, वे रैंक तय होगी.

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- धर्मात्माओं और अविश्वासियों के लिए प्रतिशोध। (17-47)

यूनिट नंबर 6

सत्ताईसवें पारा, सूरह अल-तूर, सूरह नंबर 52, आयत 29 से 49 तक, यह कहा गया कि जिन लोगों ने संदेह किया वे भटक गए और आख़िरत को झुठलाया और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के ज्ञान को झुठलाया दिया जाएगा। और वे कुफ़्र और जिद में फँस गये, अतः उनका अन्त बहुत बुरा होगा और उन्हें अज़ाब मिलेगा।

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- धर्मात्माओं और अविश्वासियों के लिए प्रतिशोध। (17-47)
- पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य और महिमा पर निर्देश। (48-49)

सूरह अन-नज्म	सत्ताईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय।	
स्टार	सितारा	तारा
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का मक्का		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- केवल अल्लाह ही ज्ञान का स्रोत है।1
- यह सूरा हमें बताता है कि अल्लाह के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के दो तरीके हैं। 2
    1. संदेह का मार्ग
    2. रहस्योद्घाटन का मार्ग
- और काफ़िरों से कहा जा रहा है कि जो रास्ता तुमने चुना है वह अनुमान का है।

قَالَ تَعَالَى: ﴿ إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَءَابَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ الْهُدَى النجم، قَالَ تَعالَى: ﴿وَمَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا) النجم، قَالَ تَعَالَى: ذَٰلِكَ مَبْلَغُهُم مِّنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَن ضَلَّ عَن سَبِيلِهِ، وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَى النجم قَالَ تَعَالَى: أَعِندَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرَى

النجم *

1. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (اتحاف الخلق بمعرفة الخالق: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)।   2. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (شرح اصول الايمان: मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन) ।

- आयतों से यह सिद्ध होता है कि वह्य अल्लाह की ओर से है।

قَالَ تَعَالَى: ﴿ و مَا يَنطقُ عَنِ الْهَوَى إِنْ هوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَى

النجم،

सारा ज्ञान अल्लाह का है। इस आयत की सत्यता में कोई संदेह न हो और

- तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने झुठलाया फिर उनपर यातना आ गयी।
- अब हम स्वयं सोचें कि ज्ञान कहां से प्राप्त करें? क्या यह उस तारे से है जो गिरता है और एक भौतिक वस्तु है, या उस प्रकाशना से है जो एक सच्चे पैगम्बर पर उतरती है जो गुमराह नहीं है?

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

पिछला सूरह नज्म के साथ समाप्त होता है और यह सूरह नज्म से शुरू होता है:

قَالَ تَعَالَى: وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَى

النجم

- पिछले सूरह में चेतावनी और सज़ा के पहलू को प्रचलित करके प्रस्तुत किया गया था सूरह में इनकार का अधिक उल्लेख है:

- झूठी हिमायत का इन्कार।

- इनकार करने वालों और झूठ बोलने वालों को चेतावनी.

- उन लोगों को अस्वीकार करना जो झूठे देवताओं पर भरोसा करते हैं कि वे केवल काल्पनिक नाम हैं और कुछ नहीं।

यूनिट नंबर 7:

सत्ताईसवें पारा, सूरह अल-नज्म, सूरह नंबर 53 की आयत नंबर 1 से 18 में, यह कहा गया है कि रहस्योद्घाटन एक पुष्टि और विश्वसनीय ज्ञान है क्योंकि यह ज्ञान अल्लाह सर्वशक्तिमान द्वारा दिया गया है। फरिश्ता जिब्रील इस आयत के साथ पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) के पास उतरे और सितारों की कसम खाकर कहा कि सभी सितारों का निर्माता अल्लाह सर्वशक्तिमान है। आगे, मेराज के संदर्भ में, हम चर्चा कर रहे हैं कि जिब्रील अल्लाह के पैगंबर के करीब कैसे आए।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- अल्लाह के रहस्योद्घाटन की पुष्टि और पैगंबर द्वारा जिब्राइल (उन पर शांति हो) को देखना और अल्लाह के महान संकेत। (1-18)

यूनिट नंबर 8:

सत्ताइसवें पारा सूरा अन-नज्म, सूरा 53 की आयत 19 से 32 तक, मनुष्य के शक और संदेह का वर्णन करते हुए कहा गया है कि मनुष्य का शक बुरा है और यदि वह अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत में लग गया तो वह पाप का भागी होगा। वह पत्थर, पेड़, पहाड़ या किसी अंग विशेष की भी पूजा करने से परहेज नहीं करेगा, इसीलिए उसे मिथ्या ज्ञान (संदिग्ध ज्ञान और संदेह का मार्ग) का प्रयोग करने से मना किया गया है।

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- मूर्ति पूजा एक भ्रम है. (19-30)
- पापी और धर्मात्मा का अन्त तथा धर्मात्मा के लक्षण (31-32)

यूनिट नंबर 9

सत्ताईसवां पारा, सूरह अल-नज्म, सूरह नंबर 53, आयत नंबर 33 से 62 तक बताया जा रहा है कि मक्का के मुश्रिकों और कुरैश के अविश्वासियों को पिछली आसमानी किताबों सहफ इब्राहीम और सहफ मूसा से फायदा नहीं हो सका। बल्कि वे आकाशीय शास्त्रों से विमुख हो गए, जिसके परिणामस्वरूप वे असावधानी में पड़ गए और कुफ़्र और शिर्क में पड़ गए।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- अल-वलीद बिन मुगीराह के लिए डांट डपट। (41-33)
- अल्लाह सर्वशक्तिमान प्राणियों का निपटान करने में सक्षम है, और अविश्वासियों को दंडित करने में सक्षम है। (42-62)

सूरह अल-क़मर	सत्ताईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय |

सूरह अल-क़मर		
चांद	Chaand	चांद
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- सज़ाओं का ज़िक्र किया गया और अवज्ञा करने वालों को धमकियाँ भी दीं गईं। 1
- इस सूरह की अधिकांश आयतों में इनकार करने वालों के विनाश का उल्लेख किया गया है, इस सूरह में विभिन्न दंडों को देखते हुए धमकियों का भी बहुत उल्लेख किया गया है।
- ये दो श्लोक बार-बार दोहराए गए:

قَالَ تَعَالَى : فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ

और

قَالَ تَعَالَى: ﴿ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ القمر

- कुछ राष्ट्रों का भी उल्लेख किया गया:

अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (اتحاف الخلق بمعرفة الخالق: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)।

- नूह के लोग:

قَالَ تَعَالَى: ﴿ وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَى أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ،

(القمر)

- 'आद' के लोग:

قَالَ تَعَالَى: ﴿ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مستمر

(القمر)

- समूद के लोग:

قَالَ تَعَالَى: ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ

(القمر)

- लूत के लोग :

قَالَ تَعَالَى: ﴿إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا ءَالَ لُوطٍ نَجَّيْنَهُم بِسَحَرٍ

(القمر)

- आले फिरौन:

قَالَ تَعَالَى: كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُقْتَدِرٍ

(القمر)

- ये सभी छंद सज़ा की प्रकृति का वर्णन कर रहे हैं ताकि हम उस इनकार को जान सकें उनसे क्या होता है?

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- पिछला सूरह क़यामत के दिन का संक्षिप्त संकेत देकर समाप्त हुआ विषय को एक आधार के रूप में शुरू किया गया।
- पिछले सूरह में, आकाशीय तारे के गिरने से शुरुआत करते हुए, इसकी व्याख्या की गई थी सूरह में, आकाश का एक संकेत, सार्वभौमिक तर्कों के साथ, चंद्रमा के टुकड़े होने पर आधारित व्याख्या की।
- सूरह क़मर में अल्लाह की सज़ाओं का ज़िक्र है, सूरह रहमान में अल्लाह की रहमतों का ज़िक्र है, एक सूरह इनजार का सारांश है और दूसरा सूरह तब्शीर का सारांश है, सूरह रहमान और सूरह क़मर में बार-बार दोहराव है, दोनों में डांटने का एक तरीका है ।

यूनिट नंबर 10

सत्ताईसवें पारा , सूरह अल-क़मर, सूरह नंबर 54 की आयत 1 से 5 में चंद्रमा के चमत्कार का वर्णन किया गया है, मक्का के बुतपरस्तों ने इस चमत्कार को देखकर भी विश्वास नहीं किया। चमत्कार को जादू कहा गया।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- शक़्क़े कमर (चाँद के टुकड़े) होने का मोजिज़ा (1)
- शक़्क़े क़मर के चमत्कार और उनके भाग्य पर बहुदेववादियों का व्यवहार। (2-8)

यूनिट नंबर 11

सत्ताईसवाँ पारा, सूरह अल-क़मर, सूरह नंबर 54, की आयत 6 से 8 में चेतावनी और चेतावनी की महत्व स्पष्ट किया है ।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- शक़्क़े क़मर के चमत्कार पर बहुदेववादियों का व्यवहार और उनका अंत। (2-8)

यूनिट नंबर 12

सत्ताईसवें पारा में, सूरह अल-क़मर, सूरह नंबर 54, आयत 9 से 17, नूह के लोग अंत का ज़िक्र तब किया जाता है जब नूह (अलैहिस्सलाम) को उनके लोगों ने झुठला दिया, फिर उन्हें कैफर की स्थिति में ला दिया गया।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- नूह,आद और समूद,लूत और फिरौन के परिवार की कहानी। (9-42)

यूनिट नंबर 13

सत्ताईसवां पारा, सूरह अल-क़मर, सूरह नंबर 54 की आयत नंबर 18 से 22 से आद राष्ट्र के अंत का एक बयान है।

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- नूह, आद और समूद, लूत और फिरौन के परिवार की कहानी। (9-42)

यूनिट नंबर 14

सत्ताईसवें पारा में, सूरह अल-क़मर, सूरह नंबर 54, आयत 23 से 32 समूद के लोगों के बारे में अंत का एक बयान है।

"यूनिट नंबर 14 के कुछ विषय"

- नूह , आद और समूद, लूत और फिरौन के परिवार की कहानी - (9-42)

यूनिट नंबर 15

सत्ताईसवें पारा में, सूरह अल-क़मर, सूरह संख्या 54 की आयत 33 से 40, लूत के लोग के अंत का एक बयान है |

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- नूह , आद और समूद, लूत और फिरौन के परिवार की कहानी। (9-42)

यूनिट नंबर 16

सत्ताईसवें पारा में, सूरह अल-क़मर, सूरह संख्या 54 की आयत 41 से 42, फिरौन और फिरौन के लोग के भाग्य का वर्णन है।

"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- नूह , आद और समूद, लूत और फिरौन के परिवार की कहानी। (9-42)

यूनिट नंबर 17

सूरह अल-क़मर के सत्ताईसवें पारा में, सूरह नंबर 54 की आयत 43 से 55 तक, कुरैश के अविश्वासियों और मुश्रिकों से कहा जाता है कि तुमने पिछली क़ौमों का अंत देखा है, इसलिए अब तुम्हें सही रास्ते पर आना चाहिए और पिछली जातियों के अंत से सीखना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा भी अंत वैसा ही हो तुम्हें भी सज़ा हो सकती है।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- क़ुरैश के काफ़िरों को धमकी और अपराधियों का ठिकाना। (43-53)
- धर्मात्मा का प्रतिफल. (54-55)

सूरह अल-रहमान	सत्ताईसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।

<table>
<tr><td colspan="3">सूरह अल-रहमान

SURAH AR-RAHMAN</td></tr>
<tr><td>The Most Gracious</td><td>सबसे दयालु</td><td>बड़ा महेरबान</td></tr>
<tr><td colspan="3">"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मदीना

MADINA

इस सूरह के अवतरण के स्थान में मतभेद है, मुशफ़ मदीना के अनुसार यह सूरह मदनी है।</td></tr>
</table>

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- नेमत के जरिया अल्लाह का गायन -1
- यह श्लोक (आयत) बार-बार दोहराया गया है।

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

(الرحمن)

- यह श्लोक (आयत) 31 बार दोहराया गया है।
- यह पहला सूरह है जिसमें जिन्नों को एक साथ संबोधित किया गया है।

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ ٱلثَّقَلَانِ

فَبِأَيِّ ءَالَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ

يَـٰمَعْشَرَ ٱلْجِنِّ وَٱلْإِنسِ إِنِ ٱسْتَطَعْتُمْ أَن تَنفُذُوا۟ مِنْ أَقْطَارِ ٱلسَّمَـٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ فَٱنفُذُوا۟ ۚ لَا تَنفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَـٰنٍ

(الرحمن)

1. अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (اتحاف الخلق بمعرفة الخالق: अब्द अल्लाह बिन जार अल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरुल्लाह)

- एक जिद्दी इंसान देखकर भी अंजान बनता है, पूछता है आपसे ये कहां है, वो कहां है? तो आप इसे बार-बार समझाते हैं और कहते हैं, "क्या आपने इसे नहीं देखा?" ये नहीं देखा? इसी प्रकार चिन्हों की माँग करने वालों को बार-बार ब्रह्माण्ड और स्वयं के चिन्ह दिखाये जा रहे हैं और समझाया जा रहा है कि तुम्हें यह चिन्ह दिखाई नहीं देता? यह चिन्ह दिखाई नहीं देता?

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सूरह क़मर में सज़ा के ज़रिए सलाह और सबक है, सूरह रहमान में आशीर्वाद के अस्किसलाम के ज़रिए सबक लेने का ज़िक्र है।

"यूनिट नंबर 18

सत्ताइसवें पारा सूरह अल-रहमान, सूरह नंबर 55 की आयत 1 से 13 में बाहरी और प्रत्यक्ष आशीर्वाद का उल्लेख किया गया है और ध्यान, और चिंतन का निमंत्रण दिया गया है।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- अल्लाह के बंदों पर आशीर्वाद और उन लोगों पर अज़ाब और फटकार, जो आशीर्वाद की अनदेखी करते हैं। (1-25)

यूनिट नंबर 19

सूरह अल-रहमान के सत्ताइसवें पारा, सूरह नंबर 55 की आयत 14 से 16 में जिन्न और इंसानों की पैदाइश का जिक्र किया गया है और इस पर ध्यान करने को कहा गया है।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- अल्लाह के बंदों पर आशीर्वाद और उन लोगों पर अज़ाब और फटकार, जो आशीर्वाद की अनदेखी करते हैं। (1-25)

यूनिट नंबर 20

सत्ताईसवें पारा सूरत अल-रहमान में सूरत नंबर 55 की आयत 17 से 25 में अफाक में मिलने वाली नेमतों का जिक्र किया गया है।

" यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

- अल्लाह के बंदों पर रहमत और बरकतों को नजरअंदाज करने वालों पर अज़ाब (1-25)

यूनिट नंबर 21

सत्ताईसवाँ पारा, सूरह अल-रहमान, सूरह संख्या 55 की आयत संख्या 26 से 45 में मृत्यु के बाद पुनरुत्थान का उल्लेख किया गया है और विश्वासियों द्वारा प्राप्त आशीर्वादों का उल्लेख किया गया है और कहा गया है कि जो लोग सांसारिक आशीर्वादों से सलाह नहीं लेते हैं उन्हें इसके बाद कड़ी सजा दी जाएगी।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- हर प्राणी नष्ट हो जाएगा और केवल अल्लाह ही बचेगा। (26-30)
- जिन्न अल्लाह की शक्ति के आगे असहाय हैं। (31-36)
- अपराधियों का परलोक में हश्र (37-45)

यूनिट नंबर 22

सत्ताईसवें पारा, सूरत अल-रहमान, सूरह संख्या 55, आयत संख्या 46 से 78 में कहा गया है कि ब्रह्मांड और आत्मा (आफ़ाक़ और अनफूस) में पाई जाने वाली सभी चीजें मनुष्य के लाभ के लिए बनाई गई हैं, इसलिए जो कोई भी इन आशीर्वादों के लिए आभारी है, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन्हें इसके बाद के आशीर्वाद प्रदान करेगा।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- स्वर्ग के गुण. (46-78)

सूरह अल-वाक़िया	सत्ताईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय |

सूरह अल-वाक़िया SURAH AL-WAQIAH		
The Event	Waaqe hone wali	वाक़िया होने वाली

"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का

मक्का

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- सूरह वाक़िया में पुनरुत्थान के दिन की परिस्थितियाँ शामिल हैं।
- तीन समूहों में से एक का चयन. 1, क़यामत के दिन लोग तीन भाग में बांटें होंगे:
  - असहाब अल-यामीन - दाहिने हाथ वाले

قَالَ تَعَالَى : فَأَصْحَـٰبُ ٱلْمَيْمَنَةِ مَآ أَصْحَـٰبُ ٱلْمَيْمَنَةِ

(الواقعة)

  - साहब अल-शामल - बाएं हाथ वालों :

قَالَ تَعَالَى: ﴿ وَأَصْحَبُ الْمُشْتَمَةِ مَا أَصْحَابُ الْمُشْتَمَةِ

(الواقعة)

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (الفوزالعظيم و خسران المبين فى ضوء الكتاب والسنة: सईद बिन अली बिन वाहफ अल-क़हतानी)।

  - वस्साबीकून - सबक़त करने वाले

قالَ تَعَالَى: وَالسّبيقونَ السّبيقونَ

(الواقعة)

- इन तीन समूहों के अंत के बारे में बताया गया,

قَالَ تَعَالَى: ﴿ فَأَمّا إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرّبِينَ * فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنّتُ نَعِيمٍ * وَأَمّا إِن كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ * فَسَلَامٌ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ * وَأَمّا إِن كَانَ مِنَ الْمُكَذّبِينَ الضّالّينَ * فَنُزُلٌ مِنْ حَمِيمٍ * وَتَصْلِيَةُ جَحِيمٍ * إِنّ هَذَا لَهُوَ حَقّ الْيَقِينِ * فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ (الواقعة)

- अल्लाह की पूर्ण शक्ति के लिए तर्क प्रदान किए गए हैं।

قَالَ تَعَالَى: ﴿ أَفَرَءَيْتُم مَّا تُمْنُونَ الواقعة قَالَ تَعَالَى: أَفَرَءَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ) الواقعة، قَالَ تَعَالَى: ﴿ أَفَرَءَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ) الواقعة، قَالَ تَعَالَى: ﴿ أَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ (الواقعة)

- आत्मा के निष्कासन के दृश्य का उल्लेख किया गया। 3
- पिछली में अच्छे और बुरे का बंटवारा बताया गया था इस सूरह में सिर्फ अच्छाई ही नहीं बल्कि इस सूरह में अच्छे बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया , बल्कि, इसे स्वर्ग के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित किया गया। परन्तु यहूदियों के मन कठोर थे वे अहंकारी हो गए और आज्ञाकारिता खो बैठे। ईसाई बहुत नरम और खुद को संतुलित करने के लिए अत्यधिक पूजा-पाठ करके वह मठवाद का शिकार हो गए। अतिशयोक्ति से मुक्त होने के लिए संयम सबसे बड़ा धन है बेशक, धर्मपरायणता का मतलब कट्टरता और अद्वैतवाद नहीं है।

2. अधिक जानकारी के लिए आपको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए :(دلايل التوحيد: मुहम्मद बिन अब्द अल-वहाब)
3. अधिक जानकारी के लिए आपको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए

كتاب الروح لابن القيم الجوزية

यूनिट नंबर 23

सत्ताईसवें पारा, सूरह अल-वक़ीया, सूरह नंबर 56 की आयत 1 से 56 में क़यामत के दिन की स्थापना और लोगों को तीन समूहों में विभाजित करने के बयान का उल्लेख है।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन का विवरण और उस समय के लोगों की श्रेणियों का उल्लेख (1-14)
- सबिकीन, अस हाबेयामीन और असहाबे शिमाल का वर्णन (15-56)

यूनिट नंबर 23

सत्ताईसवां पारा, सूरह अल- वाक़िया, सूरह नंबर 56, आयत नंबर 57 से 74 क़ियामत स्थापित साक्ष्य एवं तर्क प्रस्तुत किये गये हैं।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- मृत्यु और हिसाब के बाद पुनरुत्थान पर अल्लाह की शक्ति का उल्लेख। (57-74)

यूनिट नंबर 23

सत्ताईसवाँ पारा, सूरह अल- वाक़िया, सूरह नंबर 56, पवित्र कुरान की आयत नंबर 75 से 96। महानता का उल्लेख किया गया है और कहा गया है कि जो कोई भी कुरान में खबर की पुष्टि करेगा वह परलोक में होगा इसे महान घोषित किया जाएगा |

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- कुरान की महानता और इसे नकारने वालों को कड़ी चेतावनी। (75-87)
- निकट और सदाचारियों के साथियों का प्रतिफल, और काफ़िरों का दुखद अन्त (92-96)

सूरह अल- हदीद	सत्ताईसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	
सूरह अल-हदीद SURAH AL-HADEED		
The Iron	Loha	लोहा
"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मदीना मदीना		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- भौतिकवाद और आध्यात्मिकता के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए इस पर चर्चा की गई और दो प्रकार के लोगों पर चर्चा की गई

1) जो लोग भौतिकता के पीछे भागते हैं:

قَالَ تَعَالَى: ﴿ أَلَمْ يَأْنِ لِلّذِينَ امَنُا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقّ وَلَا يَكُونُوا كَالّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ

(الحديد)

2) जो लोग पूर्ण आध्यात्मिकता की घोषणा करते हैं:

قالَ تَعَالَى : ثُمّ قَفّيْنَا عَلَىٰٓ ءَاثَـٰرِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفّيْنَا بِعِيسَى ٱبْنِ مَرْيَمَ وَءَاتَيْنَـٰهُ ٱلْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِى قُلُوبِ ٱلّذِينَ ٱتّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيّةً ٱبْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَـٰهَا عَلَيْهِمْ إِلّا ٱبْتِغَآءَ رِضْوَٰنِ ٱللّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقّ رِعَايَتِهَا ۖ فَـَٔاتَيْنَا ٱلّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَـٰسِقُو

(الحديد)

- जो अल्लाह मरी हुई धरती से पौधे उगाने में समर्थ है, वही अल्लाह है जो मरे हुए दिलों को जीवित करने में भी समर्थ है, यह कविता मददिययीन के उल्लेख के बाद सामने आई थी।

قالَ تَعَالَى : ٱعْلَمُوٓا۟ أَنّ ٱللّهَ يُحْىِ ٱلْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيّنّا لَكُمُ ٱلْـَٔايَـٰتِ لَعَلّكُمْ تَعْقِلُونَ

(الحديد)

- इस सूरह में एक महत्वपूर्ण आयत है:

قالَ تَعالَى : لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِٱلْبَيِّنَـٰتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ ٱلْكِتَـٰبَ وَٱلْمِيزَانَ لِيَقُومَ ٱلنَّاسُ بِٱلْقِسْطِ ۖ وَأَنزَلْنَا ٱلْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَـٰفِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ ٱللَّهُ مَن يَنصُرُهُۥ وَرُسُلَهُۥ بِٱلْغَيْبِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ قَوِىٌّ عَزِيزٌ

(الحديد)

- इसमें एक आध्यात्मिक तर्क है।

(لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِٱلْبَيِّنَـٰتِ):

- (وَأَنزَلْنَا ٱلْحَدِيدَ)

यह भौतिकता को इंगित करता है, इसीलिए इस सूरा का नाम रखा गया है।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- पिछली में अच्छे और बुरे का बंटवारा बताया गया था इस सूरह में सिर्फ अच्छाई ही नहीं बल्कि इस सूरह में अच्छे बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया , बल्कि, इसे स्वर्ग के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित किया गया। परन्तु यहूदियों के मन कठोर थे वे अहंकारी हो गए और आज्ञाकारिता खो बैठे। ईसाई बहुत नरम और खुद को संतुलित करने के लिए अत्यधिक पूजा-पाठ करके वह मठवाद का शिकार हो गए। अतिशयोक्ति से मुक्त होने के लिए संयम सबसे बड़ा धन है बेशक, धर्मपरायणता का मतलब कट्टरता और अद्वैतवाद नहीं है।

यूनिट नंबर 26

सत्ताईसवें पारा, सूरह अल-हदीद, सूरह नंबर 56 की आयत 1 से 15 में अल्लाह ताला का परिचय वर्णित है और एकेश्वरवाद के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किए गए हैं, और अल्लाह की राह में खर्च करने का गुण और उसके प्रोत्साहन के बारे में बताया गया है।

" यूनिट नंबर 26 के कुछ विषय"

- अल्लाह् तआला का परिचय, एकेश्वरवाद का वर्णन और अल्लाह् की राह् में खर्च करने के गुण का वर्णन। (1-15)

यूनिट नंबर 27

सत्ताईसवें पारा सूरह् अल-हदीद, सूरह् नंबर 56 की आयत 16 से 24 में अल्लाह् के परिचय की आवश्यकताओं का वर्णन किया गया है, कि मनुष्य को अल्लाह से डरना चाहिए और अल्लाह की राह में खर्च करना चाहिए। खेल-तमाशे से दूर रहें और नेक कामों में, मुक़द्दर पर आगे बढ़ें।

"यूनिट नंबर 27 के कुछ विषय"

- अल्लाह् तआला के परिचय के लिए आवश्यकताओं का बयान। (16-24)

यूनिट नंबर 28

सत्ताईसवें पारा, सूरह् अल-हदीद, सूरह् नंबर 56 की आयत 25 से 29 में बताया जा रहा है कि सभी दूतों को बुलाने का सिद्धांत एक ही है, चाहे वह नूह हो, या इब्राहीम हो, या यीशु हो, तब अद्वैतवाद को खारिज कर दिया गया और उसके दोषों और दोषों का वर्णन किया गया।

"यूनिट नंबर 28 के कुछ विषय"

सभी पैगम्बरों को एक ही सिद्धांत पर बुलाने तथा अद्वैतवाद को अस्वीकार करने का उल्लेख (25-29)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

قد سمع اللہ

28

ATTHAESWAN PAARA (JUZ) " قد سمع اللہ " KA MUKHTASAR TAAARUF

अट्ठाईसवां पारा (भाग) "قد سمع اللہ" का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय |

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

جزاكم الله خيرا

अट्ठाईसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।
“Para 28 – Qad Sami-Allahu”

अट्ठाईसवें पारे को विद्वानों ने सत्ताईस (27) इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:

पैरा संख्या 28 में क़ाद समाउल्लाह की आयतों और लेखों का इकाइयों के अनुसार वितरण				
यूनिटस	श्लोक		विषयों
सूरह अल-मुजादला			
यूनिट नंबर:-1	1	4	ज़िहार के फैसलों और समस्याओं और उनके समाधानों का बयान।
यूनिट नंबर:-2	5	19	जो लोग अल्लाह के पैगम्बर का विरोध करते हैं और उनका अंत, सभा के शिष्टाचार और सम्मान का उल्लेख, अल्लाह के पैगम्बर से सरगोशी करने के अहकामात बयां किये गए।
यूनिट नंबर:-3	20	22	विश्वासियों और आज्ञाकारी सेवकों की प्रशंसा|
सूरह अल-हश्र			
यूनिट नंबर:-4	1	5	अल्लाह ताला का परिचय बताया गया और दुश्मन इस्लाम के निष्कासन का चित्रण किया गया।
यूनिट नंबर:-5	6	17	आलम अल-ग़ैब केवल अल्लाह की ज़ात है, जो धन के वितरण के नियमों और समस्याओं का वर्णन करता है।
यूनिट नंबर:-6	18	24	नामों और गुणों के माध्यम से अल्लाह का परिचय और नामों के गुणों और लाभों का वर्णन।
सूरह अल-मुमतहनाह			
यूनिट नंबर:-7	1	6	शत्रु को गुप्त रखने से सम्बंधित समस्या का कथन|
यूनिट नंबर:-8	7	9	गैर-मुसलमानों के साथ संबंधों पर नियम और समस्याओं का बयान |
यूनिट नंबर:-9	10	11	हुदायबिया की शांति और महिलाओं के प्रवास का मुद्दा का वर्णन।
यूनिट नंबर:10	12	13	जो औरतें इस्लाम स्वीकार करने के बाद, अल्लाह के पैगंबर अपनी निष्ठा की प्रतिज्ञा करने के लिए आए, उनकी निष्ठा की शर्तों, नियमों और समस्याओं का वर्णन।
सूरह अल-सफ़			

यूनिट नंबर:-11	1	4	शब्दों और कार्यों में परिपक्वता का बयान।
यूनिट नंबर:-12	5	9	उन लोगों का वर्णन जिन्होंने अल्लाह के पैगम्बर के निमंत्रण को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, जो महत्वपूर्ण है।
यूनिट नंबर:-13	10	14	लाभदायक व्यापार और अलाभकारी व्यापार।
सूरह अल-जुमा			
यूनिट नंबर:-14	1	4	अल्लाह के दूत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को हमारे पास भेजने के उद्देश्यों का विवरण।
यूनिट नंबर:-15	5	11	शुक्रवार का उद्देश्य वक्तव्य का विवरण।
सूरह अल-मनाफिकुन			
यूनिट नंबर:-16	1	8	पाखण्ड के परिचय का विस्तृत वर्णन |
यूनिट नंबर:-17	9	11	पाखण्ड से बचने के व्यावहारिक उपायों का कथन।
सूरह अत-तग़ाबुन			
यूनिट नंबर:-18	1	4	तौहीद की प्रामाणिकता, पैग़म्बरी की प्रामाणिकता और आख़िरत की प्रामाणिकता और नियति की प्रामाणिकता।
यूनिट नंबर:-19	5	7	एकेश्वरवाद, पैग़म्बरी और मृत्यु के बाद पुनरुत्थान पर आपत्तियों और उत्तरों का विवरण।
यूनिट नंबर:-20	8	13	कुरान, जन्नत, जहन्नम, दुख और राहत का जिक्र, सब अल्लाह की तरफ से है। मोमिन वह है जो भरोसा करे।
यूनिट नंबर:-21	14	18	दौलत, बच्चे और पत्नियाँ अल्लाह की याद की उपेक्षा का कारण बन सकते हैं।
सूरह अत-तलाक			
यूनिट नंबर:-22	1	3	तलाक के नियमों और मुद्दों का विवरण।
यूनिट नंबर:-23	4	7	निरपेक्ष के निर्णयों और समस्याओं का एक बयान।
यूनिट नंबर:-24	8	12	तलाक की सही विधि की व्याख्या |
सूरह अल-तहरीम			
यूनिट नंबर:-25	1	5	क़समों के कफ़्फ़ारे का बयान |
यूनिट नंबर:-26	6	9	अपने आप को और अपने परिवार को नरक की आग से बचाने का आदेश दें|
यूनिट नंबर:-27	10	12	क़यामत के दिन कोई भी रिश्ता काम नहीं आएगा।

सूरह अल-मुजादलाह	अट्ठाईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय।

<table>
<tr><td colspan="3">सूरह अल-मुजादलाह

SURAH AL-MUJAADALAH</td></tr>
<tr><td>The Disputation</td><td>Bahas o Mubahesa Karna</td><td>विवाद बहास ओ मुबाहेसा करना</td></tr>
<tr><td colspan="3">"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मदीना

मदीना</td></tr>
</table>

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- दोस्ती और दुश्मनी की कसौटी अल्लाह की रज़ा होनी चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें: الاسلام دين كامل: मुहम्मद अल-अमीन अल-शंकिती)

- इस सूरह में ज़िहार और उसके कफ़्फ़ारे की चर्चा की गई है।
- खौला बिन्त थालबा, ये वे साथी हैं जिनके प्रश्न पर यह सूरह नाज़िल हुआ था, उनका मानना था कि यह धर्म उनके मामले में न्याय करेगा।बिन्त थालबा, ये वे साथी हैं जिनके प्रश्न पर यह सूरह नाज़िल हुआ था, उनका मानना था कि यह धर्म उनके मामले में न्याय करेगा।।
- इस सूरह की आयत 19 और 22 में हिजबुल्लाह और हिजबुशैतान के बीच अंतर स्पष्ट किया गया है। 2
- पाखंडियों का अपने शत्रुओं से सांठगांठ करने से इन्कार।
- कभी-कभी, कुछ अच्छे मुसलमानों की महत्वाकांक्षाएँ भी फीकी पड़ने लगीं वे अच्छे-बुरे का पाठ भूल चुके थे, अन्दर ही अन्दर समझौते की बू आ रही थी इसलिए समझौते के वृक्ष का आकार लेने से पहले, अच्छाई और बुराई का सिद्धांत दोहराया गया। 3

- قَالَ تَعَالَى: ﴿ لَكُمْ دِينَكُمْ وَلِيَ دِينِ

(الكافرون)

उन लोगों के साथ संबंध बनाए रखा जा सकता है जो इस्लाम में विश्वास नहीं करते हैं, लेकिन सुलह की कोई संभावना नहीं है।

यूनिट नंबर 1

अट्ठाईसवें पारा सूरह अल-मुजादलाह, सूरह नंबर 58 की आयत 1 से 4 में बताया जा रहा है कि अल्लाह ने इस विवाद को सुना और पति-पत्नी के बीच की बातचीत को सुना। तो जब वह समस्या अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने पेश की गई तो इसका हल भी यह बताया गया कि अगर लोग ज़ीहर (आप मेरे लिए माँ की पीठ के समान हैं, यानी मैं सेक्स नहीं करूँगा) करते हैं, तो उनकी पत्नियाँ उनकी माँ नहीं हैं।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक पढ़ें: الفرقان بين اولياء الرحمن و اولياء الشيطان अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (الولاء والبراء فى الاسلام: सालेह बिन फौवजान अल-फौजान)।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- ज़िहार और उसका प्रायश्चित (1-4)

यूनिट नंबर 2

अट्ठाईसवाँ पारा, सूरह अल-मुजादलाह, सूरह नं 58 की आयत 5 से 19 में बताया जा रहा है। ऐसा कहा जाता है कि जो लोग अल्लाह और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का विरोध करते हैं, और अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करते हैं, वे अपमानित और किए जाएंगे, और उनके कर्म उन्हें पुनरुत्थान के दिन दिखाए जाएंगे, इसके बाद कहा गया कि फुसफुसाहट करना बहुत बुरी बात है, और सभा में बैठने के तरीके बताए गए, और अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सरगोशी करने के आदेश बताए गए, इसके बाद कहा गया कि मुनाफ़िकों को यहूदियों से प्यार है। और मुसलमानों से नफरत।

“Few Topics of Unit No.2 "यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- काफ़िरों से वादा, अल्लाह उनके कर्मों को देख रहा है। (5-6)
- अल्लाह का ज्ञान, बुरी कानाफूसी की सजा, कानाफूसी का शिष्टाचार। (7-11)
- रसूल से बात करने पर दान का दायित्व और इस हुक्म का निरस्त होना। (12-13)
- काफ़िरों से मवालात का इन्कार और उनके साथ मवालात स्थापित करने वालों का अंजाम। (14-22)

यूनिट नंबर 3

अट्ठाईसवें पारा, सूरह अल-मुजादलाह, सूरह नंबर 58 की आयत 20 से 22 में ईमान वालों के आज्ञाकारी सेवकों की परिभाषा का वर्णन किया गया और कहा गया कि एक मुसलमान कभी भी दुश्मनों के साथ साजिश नहीं कर सकता है।

“Few Topics of Unit No.3 "यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- काफ़िरों से मवालात का इन्कार और उनके साथ मवालात स्थापित करने वालों का अंत (14-22)

सूरह अल- हश्र	अट्ठाईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय।

सूरह अल- हश्र SURAH AL-HASHR		
SURAH AL-HASHR	HASHR	हश्र
रहस्योद्घाटन का स्थान" - मदीना मदीना		

"Few Topics" कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य ''

- अल्लाह के धर्म के प्रति प्रतिबद्धता पर अलग-अलग रुख।
- इस सूरह में यहूदियों की बनू नज़ीर जनजाति का उल्लेख किया गया है कि पैगंबर ने उनको मदीना से निर्वासित किया|
- इस सूरह में दो प्रकार के लोगों का उल्लेख किया गया है, आस्तिक और पाखंडी।
- पाखंडी केवल मुसलमानों की मदद करने का वादा करते रहे और हकीकत में कभी ऐसा नहीं किया। वे केवल उस बारे में बात करते हैं जो वे नहीं करते। (श्लोकः 12, 11)[1]
- एक दूसरे दृश्य का भी वर्णन किया गया है जब शैतान अपनी बेगुनाही व्यक्त करते हुए अपने अनुयायियों से अलग हो गया। (श्लोक 16 और 17) |

इब्न क़य्यिम अल-जौज़ियाह) صفاة المنافقين ابن القيم جوزيـہ

- विश्वासियों की श्रेणियों का वर्णन किया गया है:
  - इस्लाम की तरफ इंतेसाब करने वाले: महान ने कहा:

- قَالَ تَعَالَى: ﴿ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنصُرُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ (الحشر)

➢ انصار : قَالَ تَعَالَى: ﴿وَالَّذِينَ تَبَوَّءُ وَ الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِن قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَى أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَن يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ، فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ
(الحشر)

बाद की पीढ़ी की एक विशिष्ट विशेषता:

➢ قَالَ تَعَالَى: وَالَّذِينَ جَاءُو مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ ءَامَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ
(الحشر)

यह सूरा विश्वासियों को सलाह देता है कि वे कयामत के क्षेत्र को न भूलें, वह भयानक दिन जिसमें न तो धन और न ही संपत्ति काम आ सकती है।2

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (الفوز العظيم و خسران المبين فى ضوء الكتاب والسنۃ: सईद बिन अली बिन वाफ़ अल-क़हतानी)।

- स्वर्ग के लोगों और नरक के लोगों के अंत का वर्णन |
- इस सूरह में एक आयत है जो कुरान की महानता का वर्णन करती है।

قَالَ تَعَالَى: لَوْ أَنزَلْنَا هَذَا الْقُرْءَانَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ)
(الحشر)

जिस स्थान पर यह श्लोक है वहां महान ज्ञान छिपा हुआ है। उन्होंने कहा कि यहूदियों को लगता था कि उनके किले उनकी सुरक्षा के लिए काफी हैं, लेकिन कहा गया कि आप किलों की सुरक्षा की बात कर रहे हैं. अगर यह कुरान पहाड़ों पर नाज़िल हुआ तो बड़े-बड़े पहाड़ भी ढह जायेंगे, किले मजबूत हैं या पहाड़? और याद रखें, अल्लाह के अलावा कोई समर्थक नहीं है।

सूरह का समापन करने वाली आयतों में, इस आयत में विभिन्न अच्छे नामों (असमाए हुस्ना) का उल्लेख किया गया है, जो सभी अल्लाह की महानता और महिमा को दर्शाते हैं। 4

जो लोग ऐसा करेंगे उन्हें अपमानित किया जाएगा। इस सूरह में यहूदियों द्वारा अपने पड़ोस को अपने हाथों से नष्ट करने के दृश्य को

" فاعتبروا يا اولى الابصار"

के रूप में वर्णित किया गया है।

अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (فضايل القران: मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब)

अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (اسماء اللہ وصفاتہ و موقف اهل السنۃ منها : मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन)

- अपमान उन लोगों का होगा जिन्होंने सही रास्ता नहीं अपनाया।
- जिन पाखंडियों ने यहूदियों पर भरोसा करके या उनसे डरकर पाखंड का रास्ता अपनाया था, उनसे सबक सीखने को कहा गया।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- पिछले सूरह में, यह उल्लेख किया गया था कि केवल विश्वास करने वालों को ही प्रभुत्व प्राप्त होगा | और मुखालिफत करने वालों को अपमानित और अपमानित किया जाएगा। इस सूरह में यहूदियों द्वारा अपने पड़ोस को अपने हाथों से नष्ट करने के दृश्य को " فاعتبروا يا اولى الابصار" के रूप में वर्णित किया गया है।
- अपमान उन लोगों का होगा जिन्होंने सही रास्ता नहीं अपनाया।
- पाखंडियों ने यहूदियों के विश्वास या उनके भय के कारण पाखंड का मार्ग अपनाया था।

यूनिट नंबर 4

अट्ठाईस पारा, सूरह अल-हश्र, सूरह संख्या 59 की आयत 1 से 5 में अल्लाह का परिचय बताया गया है और इस्लाम के दुश्मनों के निष्कासन का वर्णन किया गया है।

"Few Topice of Unit No. 4"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- यहूदी जनजाति बनी नज़ीर का निर्वासन। (1-5)

यूनिट नंबर 5

अट्ठाईसवें पारा, सूरह् अल-हश्र की आयत 6 से 17, सूरह् नंबर 59, आयत 6 से 17 में यह बताया जा रहा है। कि ग़ैब का जानने वाला केवल अल्लाह् की जात है, ग़ैब के ज्ञान और धन को कोई प्राणी नहीं जानता माले फई के वितरण के फैसलों और समस्याओं का एक बयान।

"Few Topice of Unit No. 5"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

(7-6) माल-शुल्क (लूट का पांचवां हिस्सा) का आदेश बताया गया।

(10-8) .ग़रीब मुहाजिरीन और अंसार का ज़िक्र

(17-11) पाखण्डियों तथा उनकी यहूदियों से मित्रता का वर्णन।

यूनिट नंबर 6:

अट्ठाईसवां पारा, सूरह् अल-हश्र, सूरह् नंबर 59 की आयत नंबर 18 से 24 तक नामों और गुणों और अच्छे नामों के गुणों (अस्मा व सिफ़ात) और उनके लाभों के माध्यम से अल्लाह् का परिचय बताया गया। जिस की फजीलत और उसके फायदे भी बताये गए।

"Few Topice of Unit No. 6"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- धर्मपरायणता और धर्मपरायणों की सफलता का उल्लेख (18-20)।
- कुरान की प्रभावशीलता – 21

- अस्मा होस्नी का ज़िक्र (22-24)

सूरह अल-मुमतहिना	अट्ठाईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय।

सूरह अल-मुमतहिना SURAH AL-MUMTAHINA		
The Women to be Examined	Jise AzmayaGaya	जिन को अजमायागया
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मदीना मदीना		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- धार्मिक संबद्धता परीक्षण
- सूरह की शुरुआत एक आयत से होती है जिसमें कहा गया है कि इस्लाम हर काफिर का बहिष्कार करने का आदेश नहीं देता है, बल्कि केवल उन काफिरों से निपटने पर रोक लगाता है जो मुसलमानों से लड़ते हैं और उन्हें नुकसान पहुंचाते हैं।

قَالَ تَعَالَى:يَأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّى وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُم مِّنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَن تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِن كُنتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَدًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسِرُّونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنتُمْ وَمَن يَفْعَلْهُ مِنكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ

(الممتحنة)

- इस्लाम सिखाता है कि उन लोगों से दोस्ती न करें जो दुश्मन हैं और उनके साथ न्याय करें जो दुश्मन नहीं हैं।

قَالَ تَعَالَى: ﴿ لَا يَنْهَىٰكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَٰتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم مِّن دِيَٰرِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ) إِنَّمَا يَنْهَىٰكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَٰتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ وَظَٰهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَن تَوَلَّوْهُمْ وَمَن يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

(الممتحنة)

- इस सूरह में चार परीक्षणों का उल्लेख किया गया है:

- इम्तिहान लिया गया लेकिन फेल हो गया, यह हातिब बिन बिल्ता ने ही मक्का वालों को बताया था अल्लाह के दूत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमले की सूचना दी कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमला करने वाले है, क्योंकि उनके रिश्तेदार मक्का में थे और उनका समर्थन प्राप्त करना चाहते थे। फिर वह्यी उतरी,पैगम्बर! ने उसे क्षमा कर दिया, क्योंकि वह बद्र का साथी था।
- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की परीक्षा जिसमें वह सफल हुए।

قَالَ تَعَالَى: قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآؤُا مِنكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ رَّبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ

(الممتحنة)

तफसील के लिए देखें कुर्तुबी 18/पृ.45)

- गैर-मुसलमानों के साथ न्याय की परीक्षा |

قَالَ تَعَالَى: ﴿ لَا يَنْهَىٰكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُم مِّن دِيَارِكُمْ أَن تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ

(الممتحنة)

- महिलाओं से निष्ठा की प्रतिज्ञा का परीक्षण:

قَالَ تَعَالَى: ﴿يَٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَىٰ أَن لَّا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَٰنٍ يَفْتَرِينَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِينَكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

(الممتحنة)

- सत्य को स्वीकार करने और असत्य को त्यागने से आस्था पूर्ण होती है।
- आस्था की शर्तों की स्वीकृति के साथ-साथ असत्य की स्वीकृति और असत्य का अस्वीकार भी महत्वपूर्ण तत्व हैं|
- शब्द में पुष्टि और निषेध है, सत्य की पुष्टि और असत्य के निषेध के बाद ही आस्था पूर्ण होती है |

(अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 23 / पृष्ठ 318 देखें)

अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक (الولاء والبراء فى الاسلام सालेह बिन फ़ौज़ान अल-फ़ौज़ान) पढ़ें।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

पाखंड को कुचलकर विश्वासियों की आत्माओं को शुद्ध करना ताकि अगले सूरह में वर्णित कमजोरियों से खुद को बचाया जा सके। मानो मुसलमान को कच्चे मुसलमानों से अलग कर दिया गया हो |

यूनिट नंबर 7:

अट्ठाईसवें पारा, सूरह अल- मुमतहिना, सूरह नंबर 60 की आयत नंबर 1-6 में अहद वफ़ा के परीक्षण का उल्लेख है। एक मुसलमान अपने ही दुश्मन के लिए एक रहस्य प्रकट कर रहा है, इसलिए इसे बुरी शपथ कहा जाता है, इसलिए हातिब बिन अबी बलता को लेने की घटना की पृष्ठभूमि का वर्णन यहां किया गया है। उन्होंने जो रहस्य उजागर किया वह रहस्योद्घाटन के माध्यम से अल्लाह के पैगंबर के सामने प्रकट हुआ लिहाज़ा वह राज़ फाश ना हो सका|

"Few Topice of Unit No. 7"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- कुफ्फार से की मावालात की नफ़ी । (1-3)
- इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कहानी. (4-7)

कृपया यह पुस्तक पढ़ें (معنى لا إله إلا الله ومقتضاها وآثارها فى الفرد والمجتمع: सालेह बिन फ़ौज़ान अल-फ़ौज़ान

यूनिट नंबर 8

अट्ठाईसवाँ पारा, सूरह अल- मुमतहिना, सूरह नं. 60, आयत नं. 7 से 9 गैर-मुसलमानों के लिए। संबंध बनाने के नियमों और समस्याओं का विवरण।

"Few Topice of Unit No.8"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- मुसलमानों और काफिरों के बीच संबंधों पर फैसले हैं। (8-9)

यूनिट नंबर 9

अट्ठाईसवें पारा, सूरह अल- मुमतहिना, सूरह नंबर 60 की आयत 10 से 11 में कहा गया है कि जो महिलाएं इस्लाम स्वीकार करती हैं और मक्का से मदीना की ओर पलायन करती हैं, उनकी सावधानीपूर्वक जांच करें और फिर उन्हें वापस न करें। महिलाओं को वापस लौटने से मना किया गया क्योंकि संधि में महिलाओं का उल्लेख नहीं था, यह श्लोक उम्म कुलथुम बिन्त उकबाह बिन अबू मुइत की पृष्ठभूमि यह है कि वह इस्लाम स्वीकार करने के बाद मक्का से मदीना चली गईं।

Few Topics of Unit No.9"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- उत्प्रवास के आदेश,नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) उनसे निष्ठा लेने की आज्ञा। (10-12)

यूनिट नंबर 10

अट्ठाईसवें पारा, सूरह अल- मुमतहिना, सूरह नंबर 60 की आयत 12 से 13 में, अल्लाह ताला पैगंबर को संबोधित करते हैं और महिलाओं की बैअत के नियमों और समस्याओं का वर्णन किया गया है और महिलाओं की बैअत की शर्तों का वर्णन किया गया है।

Few Topics Unit No 10"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- मुहाजिरात के कानून, पैगंबर को उनके प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा करने का आदेश देते हैं। (10-12)
- अविश्वासियों से मित्रता करने की सख्त मनाही। (13)

सूरह अस-सफ़ SURAH AS-SAFF		
The Row or the Rank	Saff Bandi	सफ़ बंदी
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मदीना मदीना इस सूरह के रहस्योद्घाटन में एक इख्तिलाफ है। मुशफ़ मदीना के अनुसार यह सूरह मदनी है।		

“Few Topics"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य”

- उम्मत की एकता की अहमियत!
- इसके नाम से ही पता चलता है कि इस सूरह में संरेखण और एकता है इसका उल्लेख है. जैसा कि यह आयत आगे बताती है:

قَالَ تَعَالَى: إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلَّذِينَ يُقَـٰتِلُونَ فِى سَبِيلِهِۦ صَفًّا كَأَنَّهُم بُنْيَـٰنٌ مَّرْصُوصٌ

(الصف)

अनुवाद: वास्तव में, अल्लाह उन लोगों से प्यार करता है जो उसके रास्ते में खड़े होते हैं वे जिहाद ऐसे करते हैं मानो वे सीसे से बनी कोई इमारत हों।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक (الامر بالاجتماع والايتلاف و النهى عن التفرق والاختلاف) पढ़ें। और असहमति: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)

सूरह का अंत: ईसा मसीह का अपने शिष्यों को इस्लाम की सहायता करने का निमंत्रण करें|

قَالَ تَعَالَى: يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ كُونُوٓا۟ أَنصَارَ ٱللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ٱبْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّـۧنَ مَنْ أَنصَارِىٓ إِلَى ٱللَّهِ ۖ قَالَ ٱلْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ ٱللَّهِ ۖ فَـَٔامَنَت طَّآئِفَةٌ مِّنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ وَكَفَرَت طَّآئِفَةٌ ۖ فَأَيَّدْنَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا۟ ظَـٰهِرِينَ

(الصف)

अनुवाद: ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह ताला के मददगार बनो। जैसा कि हज़रत मरियम (अलैहिस्सलाम) के बेटे हज़रत ईसा ने अपने शिष्यों से कहा, "कौन है जो अल्लाह की राह में मेरा मददगार बनेगा?" शिष्यों ने कहा: हम अल्लाह के मार्ग में सहायक हैं, इसलिए इस्राएलियों में से एक समूह ईमान लाया और एक समूह इनकार कर गया, इसलिए हमने ईमानवालों को उनके दुश्मनों के खिलाफ मदद की।

- धर्म से संबद्धता: ईसा और उनके शिष्यों के लिए, धर्म केवल प्रार्थना, उपवास और पूजा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ये सभी शामिल हैं। 2

2 अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़ें (الدلائل القرآنية فى ان العلوم والاعمال النافعة العصرية داخلة فى الدين الاسلامى: अब्दुर रहमान बिन नासिर अल-सादी)

यूनिट नंबर 11

अट्ठाईसवें पारा, सूरह अल-सफ़, सूरह नंबर 61, आयत 1 से 4 में, विश्वासियों को यह बताया गया है। कि अपनी कथनी और करनी में विरोधाभास न पैदा करें और अपनी बात पर अड़े रहें|

“Few Topics of Unit No.11"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- अल्लाह की तस्बीह | (1)
- एक मुसलमान की नैतिकता |(2-4)

यूनिट नंबर 12

अट्ठाईसवें पारा, सूरह अल-सफ़, सूरह नंबर 61 की आयत 5-9 में, मूसा और इसा के नामों का उल्लेख किया गया है, और अल्लाह के पैगंबर को सांत्वना दी गई कि जो लोग पैगंबर के निमंत्रण को स्वीकार करने से इनकार करते हैं, वे इस दुनिया और उसके बाद असफल हो जाएंगे।

“Few Topics of Unit No.12"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- मूसा और इसा की कहानी| (5-8)
- इस्लाम धर्म, जिसे मुहम्मद लाये, अन्य सभी धर्मों पर हावी है। (9)

यूनिट नंबर 13

सूरह अल-सफ़, सूरह नंबर 61, आयत 10 से 14 में लाभकारी। इसमें व्यापार और हानिकारक व्यापार का जिक्र है, इस्लाम कबूल करना फायदेमंद व्यापार है और अविश्वास और बहुदेववाद पर जोर देने को हानिकारक व्यापार के रूप में व्याख्यायित किया गया।

“Few Topics of Unit No.13"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- लाभदायक व्यापार (10-14)

<table>
<tr><td colspan="3" align="center">सूरह अल-जुमा

SURAH AL-JUMU’AH</td></tr>
<tr><td>Friday</td><td>शुक्रवार</td><td>जुमा</td></tr>
<tr><td colspan="3" align="center">"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मदीना

मदीना</td></tr>
</table>

“Few Topics"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- धार्मिक प्रतिबद्धता में शुक्रवार की प्रार्थना की भूमिका
- पैगम्बर के मिशन के तीन मुख्य उद्देश्य:

(1) श्लोकों का पाठ करना।

(2) शुद्धिकरण

(3) किताब और बुद्धि (हिकमत) की शिक्षा|

قَالَ تَعَالَى: ﴿ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِّنْهُمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَبَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ)

(الجمعة)

अनुवाद: वही है जिसने अनपढ़ लोगों के बीच उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन्हें अपनी आयतें पढ़कर सुनाता है और उन्हें पवित्र बनाता है और उन्हें किताब और तत्वदर्शिता की शिक्षा देता है। दरअसल, इससे पहले वे स्पष्ट रूप से गलती कर रहे थे।

- इस सूरह में शुक्रवार की नमाज़ के उद्देश्यों और आदेशों का वर्णन किया गया है।
- शुक्रवार की प्रार्थना के उद्देश्य: शुद्धि, एकता और एकजुटता।
- शुक्रवार उम्माह के लिए एकत्र होने का दिन है, उम्माह को नसीहत देने का दिन है, और यह इस्लाम के प्रति प्रतिबद्धता भी है। 2
- शुक्रवार से संबंधित विभिन्न निर्णय।

قَالَ تَعَالَى: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَوٰةِ مِن يَوْمِ ٱلْجُمُعَةِ فَٱسْعَوْا۟ إِلَىٰ ذِكْرِ ٱللَّهِ وَذَرُوا۟ ٱلْبَيْعَ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ

(الجمعة)

अनुवाद: ऐ ईमान लाने वालो! जब शुक्रवार को नमाज़ के लिए अज़ान दी जाती है, तो आप अल्लाह की याद में दौड़ पड़ते हैं और ख़रीदारी करना और बेचना बंद कर देते हैं। यह तुम्हारे लिये अच्छा है, यदि तुम जानते हो (श्लोक 9)।

- इस सूरह में उन यहूदियों का जिक्र है जो अपनी शरीयत का पालन नहीं करते|

قَالَ تَعَالَى: ﴿مَثَلُ ٱلَّذِينَ حُمِّلُوا۟ ٱلتَّوْرَىٰةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ ٱلْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًۢا بِئْسَ مَثَلُ ٱلْقَوْمِ ٱلَّذِينَ كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِي ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ

(الجمعة)

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (صلاة الجماعة فى ضوء الكتاب والسنة: सईद बिन अली बिन वाहफ अल-काहतानी)।

2 अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक पढ़ें : التصفية والتربية وحاجة المسلمين :(अल-नासिर अल-दीन अल-अल्बानी)

अनुवाद: जिन लोगों को तौरात पर अमल करने का आदेश दिया गया था, लेकिन उन्होंने उस पर अमल नहीं किया, उनकी मिसाल उस गधे की तरह है जिस पर बहुत सी किताबें लदी हुई हों। बुरी मिसाल उन लोगों की है जो अल्लाह की बातों को झुठलाते हैं और अल्लाह ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सांसारिक व्यापार में इतना डूब जाना कि वास्तविक व्यापार में घाटा उठाना पड़े, यह सही नहीं है। दोनों सूरहों का सामान्य विषय सही व्यापार और गलत व्यापार के बीच का अंतर है।

यूनिट नंबर 14

सूरह अल-जुमाह, सूरह संख्या 62, आयत 1 से 4 के अट्ठाईसवें पारा में उन उद्देश्यों का वर्णन किया गया है जिनके लिए अल्लाह ने अपने पैगम्बर (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) को भेजा था। इन उद्देश्यों में शिक्षा, पाठ और स्पष्टीकरण शामिल हैं।

“Few Topics Unit No.14" यूनिट नंबर14 के कुछ विषय"

- अल्लाह की तस्बीह (1)
- पैगम्बर का आमंत्रण मिशन (2-4)

यूनिट नंबर 15

अट्ठाईसवां पारा, सूरह अल-जमाह, सूरह नंबर 62 की आयतें 5 से 11 शुक्रवार के महत्व, उत्कृष्टता और उद्देश्य का वर्णन करती हैं।

बताया जा रहा है कि शुक्रवार और सभा का उद्देश्य क्या है, ईश्वर के दूत की शिक्षाओं को याद दिलाने के लिए, यानी कि ईश्वर के पैगंबर दिनों को याद करते थे, और शिक्षा और शुद्धि के उद्देश्य को याद दिलाने के लिए, शुक्रवार की स्थापना की गई है ताकि मुसलमान ईश्वर के पैगंबर के मिशन को आगे बढ़ा सकें, और इसी तरह, ज्ञान और अभ्यास के विरोधाभास को भी शुक्रवार के उपदेश के माध्यम से समाप्त किया जाता है।

“Few Topics Unit No. 15"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- उन यहूदियों का उदाहरण जो तौरेत का पालन नहीं करते। और उनके अल्लाह के संरक्षक होने होने की तरदीद |(5-8)
- शुक्रवार की नमाज़ के सम्बन्ध में नियम। (9-11)

सूरह अल-मनाफिकुन	अट्ठाईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय।

सूरह अल-मुनाफिकून SURAH AL-MUNAAFIQOON		
The Hypocrites	Munaafiqeen	मुनाफ़ीक़ीन
"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मदीना मदीना		

“Few Topics"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य”

- नेफ़ाक़ का खतरा

قَالَ تَعَالَى: ﴿إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَكَذِبُونَ

(المنافقون)

अनुवाद: जब मुनाफ़िक़ तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं: हम गवाह हैं कि तुम वास्तव में अल्लाह के दूत हो, और अल्लाह जानता है कि तुम वास्तव में उसके दूत हो। और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ निश्चय ही झूठे हैं (आयत 1)।

(وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ)

वास्तव में, आप उसके दूत हैं, क्योंकि यदि इसे अस्वीकार नहीं किया जाता है, तो इसका अर्थ यह है कि अल्लाह, सर्वशक्तिमान, उन मुनाफ़िकों को अस्वीकार करता है जो दूत के लिए पैग़म्बरी की गवाही देते हैं। परन्तु अल्लाह उनके इरादों को जानता था और वह अच्छी तरह से जानता था कि इस गवाही से उनका उद्देश्य क्या था।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें (مفسدات القلوب (النفاق): मुहम्मद सालेह अल-मंजद)।

(अधिक जानकारी के लिए, कुरान में तफ़सीर अल-अज़वा अल-बयान फ़ि इज़ाह अल-कुरान देखें, खंड 8 / पृष्ठ 188)

- इस सूरह में पाखंडियों के पंद्रह गुणों का उल्लेख किया गया था। 3
- मुनाफ़िक़ लोग उम्मत की एकता नहीं चाहते।
- और सूरा इन आयतों के साथ समाप्त होता है कि यह निमंत्रण विश्वासियों को दिया जा रहा है | कि उनका धन और उनकी संतान उन्हें अल्लाह से और इस धर्म के पालन से विचलित न करें।

(قَالَ تَعَالَى: ﴿ يَتَأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَمَن يَفْعَلْ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ

(المنافقون)

अनुवाद: ऐ मुसलमानों! अपने धन और अपने बच्चों को अल्लाह की याद को भुलाने न दें। और जो लोग ऐसा करेंगे, उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ेगा।

3 अधिक जानकारी के लिए यह किताब अवश्य पढ़ें (सिफात अल-मुनाफिकीन: इब्न कय्यिम अल-जौज़ियाह)

4 अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़ें
الغفلة --- مفهومها ، وخطرها ، و علاماتها ، و اسبابها ، و علاجها
सईद बिन अली बिन वहफ अल-कतानी)

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- जब सांसारिक प्रेम प्रबल होता है, तो व्यक्ति शुक्रवार की अपेक्षा व्यापार को अधिक महत्व देता है, उसी प्रकार पाखंडी लोग विश्वास तो करते हैं, परंतु सांसारिक स्वार्थों के लिए अपने हृदय में घृणा छिपाते हैं। वह विश्वासियों और पैगंबर की नजरों में अपना भ्रम बनाए रखने के लिए मुस्लिम होने का दिखावा करता है, आस्था का दावा करता है, फिर भी उसका पाखंड उजागर हो जाता है।

यूनिट नंबर 16

अट्ठाईसवें पारा, सूरह अल-मनाफिकुन, सूरह नंबर 63, आयत 1 से 8 में पाखंड का विस्तृत परिचय दिया गया है और इसे तर्कों के साथ उजागर किया गया है।

“Few Topics of Unit No. 16"यूनिट नंबर 16 के कुछ विषय"

- पाखण्डियों का तिरस्कार, उनके लक्षण तथा निन्दा | (1-8)

यूनिट नंबर 17

अट्ठाईसवें पारा सूरह अल-मनाफिकुन, सूरह नंबर 63 की आयत 9 से 11 में पाखंड से बचने के व्यावहारिक उपाय वर्णित हैं।

“Few Topics of Unit No. 17"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- विश्वासियों के लिए सलाह और निर्देश. (9-11)

सूरह अल- तग़ाबुन SURAH AL-TAGHAABUN		
Mutual Loss or Gain	Qyamat ka ek Naam	कयामत का एक नाम
"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मदीना मदीना इस सूरह के अवतरण के स्थान में मतभेद है, मुशफ़ मदीना के अनुसार यह सूरह मदनी है।		

“Few Topics "कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य”

- सामाजिक गतिविधियाँ धर्म की प्रतिबद्धता से दूर ले जा रही हैं। चुगली करने का नुकसान यह है कि कयामत के दिन आपके अच्छे कर्म किसी ऐसे व्यक्ति को दिए जाएंगे जिससे आप नफरत करते हैं। तो यह तगाबन है, अर्थात घाटा।

- इस सूरह में मुसलमानों के लिए कुछ बच्चों और पत्नियों के खतरों का वर्णन किया गया है, उन्हें अपने धर्म का पालन करने से रोकता है |

قَالَ تَعَالَى: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِنَّ مِنْ أَزْوَٰجِكُمْ وَأَوْلَٰدِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَٱحْذَرُوهُمْ وَإِن تَعْفُوا۟ وَتَصْفَحُوا۟ وَتَغْفِرُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

(التغابن)

अनुवाद: हे विश्वासियों! तो फिर तुम्हारी कुछ पत्नियाँ और कुछ बच्चे तुम्हारे शत्रु हैं, उनसे सावधान रहो और यदि तुम क्षमा करो तो अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है क्षमा करने वाला दयालु है।

قَالَ تَعَالَى: ﴿إِنَّمَا أَمْوَٰلُكُمْ وَأَوْلَٰدُكُمْ فِتْنَةٌ وَٱللَّهُ عِندَهُۥٓ أَجْرٌ عَظِيمٌ

(التغابن)

अनुवाद: "तुम्हारे धन और बच्चे तुम्हारी परीक्षा हैं। और अल्लाह का इनाम महान है।"2

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- पिछली सूरह में कहा गया था कि इंसान को दौलत और औलाद की चाहत में इतना नहीं डूबना चाहिए आख़िरत से निपटो और आख़िरत को नज़रअंदाज करो। इस सूरह में एक खुली घोषणा बनाया गया है कि जो रिश्ते आख़िरत को भुला देते हैं, वे प्रलोभन हैं और बुराइयों को आख़िरत की सफलता का ज़रिया बनाकर वरदान बनाना चाहिए।

यूनिट नंबर 18

अट्ठाईसवां पारा, सूरह अल-तग़ाबीन, सूरह नंबर 64, आयत 1 से 4 तक, सदाकत तौहीद, पैग़म्बरी की सच्चाई और आख़िरत की सच्चाई और नियति की सच्चाई का विस्तार से उल्लेख किया गया है और उन लोगों का भी उल्लेख किया गया है जो आख़िरत में हानि उठाते हैं।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (الضوابط الشرعية لموقف المسلم من الفتن: सालेह बिन अब्द अल-अजीज अल-शेख)

2 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (الهدى النبوى فى تربية الاولاد فى ضوء الكتاب والسنة सईद बिन अली बिन वाफ़ अल-क़हतानी की)

“Few Topics of Unit No. 18"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- अल्लाह की शक्ति और ज्ञान | (1-4)

यूनिट नंबर 19

अट्ठाईसवाँ पारा, सूरह अल- तग़ाबुन सूरह संख्या 64 की आयत 5 से 7 में तौहीद, रिसालत और मृत्यु के बाद पुनरुत्थान पर आपत्तियों का विवरण और उनके उत्तर।

“Few Topics of Unit No. 19"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- एक कृतघ्न राष्ट्र की कहानी | (5-6)

यूनिट नंबर 20

अट्ठाईसवाँ पारा, सूरह अल- तग़ाबुन, सूरह नं. 64, आयत नं. 8 से 13, अल्लाह की रोशनी यानी अल्लाह की नाज़िल किताब पवित्र क़ुरआन पर ईमान लाने का हुक्म बताया जा रहा है | क़यामत के दिन इकट्ठा किये जाने का ज़िक्र है, फिर जन्नत और नर्क की सिफ़ारिशें बताई गयी हैं| इसके बाद बताया गया कि मुसीबत का आना या राहत का आना सब अल्लाह ताला की तरफ से है |और फ़रमाया कि मोमिन वह है जो अल्लाह पर भरोसा रखे।

“Few Topics of Unit No. 19"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- बहुदेववादी जिन्होंने मृत्यु के बाद पुनरुत्थानसे इनकार किया और की सजा। (7-10)
- विश्वासियों को निर्देश (11-18)

यूनिट नंबर 21

अट्ठाईसवें पारा में, सूरह अल- तग़ाबुन, सूरह नंबर 64, आयत 14 से 18 तक, ये बताया जा रहा है कि दौलत और औलाद अल्लाह ताला की तरफ से बस एक इम्तिहान है, औलाद और तुमहरी पत्नियों, अल्लाह तआला की याद से गाफिल ना करदे , इसलिए सावधान रहो।

“Few Topics of Unit No. 21"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- विश्वासियों को निर्देश. (11-18)

सूरह अल- तलाक	अट्ठाईसवें पारा (भाग) का संक्षिप्त परिचय।

<table>
<tr><td colspan="3">सूरह अल- तलाक

SURAH AL-TALAAQ</td></tr>
<tr><td>The Divorce</td><td>Talaaq</td><td>तलाक</td></tr>
<tr><td colspan="3">"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मदीना

मदीना</td></tr>
</table>

“Few Topices"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य”

- इकट्ठा करना |
- जब सभी मामलों में पवित्रता पाई जाएगी तो सामूहिकता बनी रहेगी और धर्म से संबंध भी बना रहेगा। इसीलिए इस सूरह में पवित्रता शब्द का कई बार उल्लेख किया गया है। 1

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

रिश्तेदारों के प्रति अत्यधिक प्रेम आख़िरत की उपेक्षा का कारण बनता है, उसी प्रकार अत्यधिक घृणा क्रूरता का कारण बन जाती है, जिसका परिणाम आख़िरत में होता है, इसलिए सूरह तलाक, सूरह तहरीम, सूरह तगबान और सूरह अल-मुनाफिकुन को पढ़ने के बाद संयम का अभ्यास करें। एक स्थिति पैदा होती है | बहुत ज्यादा प्यार और बहुत ज्यादा नफरत इंसान को असफल बना सकती है, प्यार और नफरत को इस्लामी सीमाएं दी जानी चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए, आपको यह पुस्तक نور التقوى و ظلمات المعاصى فى ضوء الكتاب والسنة: सईद बिन अली बिन वहफ अल-क़हतानी अवश्य पढ़नी चाहिए।

यूनिट नंबर 22

अट्ठाईसवां पारा, सूरह अल-तलाक, सूरह नंबर 65 की आयत 1 से 3। तलाक पर और समस्याओं का वर्णन किया गया है |

“Few Topics of Unit No. 22"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

- तलाक, ईदाह, राजाअत आदि पर नियम (1-7)

यूनिट नंबर 23

सूरह अल-तलाक के अट्ठाईसवें पारा में, सूरह नंबर 65 की आयतें 4 से 7, तलाकशुदा महिलाओं, उनके गैर-भरण-पोषण, और उनके निवास के अधिकारियों और समस्याओं के बारे में बताया गया है।

“Few Topics of Unit No. 23"यूनिट नंबर 23 के कुछ विषय"

- तलाक, ईदाह, राजाअत आदि पर नियम (1-7)

यूनिट नंबर 24

अट्ठाईसवां पारा, सूरह अल-तलाक, सूरह संख्या 65 की आयत 8 से 12 में, सही तलाक के बारे में। विधि का वर्णन किया गया है और इस विधि के विपरीत कहा जाने वाला वादा किया गया है।

“Few Topics of Unit No. 24"यूनिट नंबर 24 के कुछ विषय"

- विद्रोही लोगों का दमन करना और विश्वासियों को उनसे दूर रहने की हिदायत देना | (8-10)

<table><tr><td> </td><td>अट्ठाईसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।</td><td> </td></tr></table>

<table>
<tr><td colspan="3">سورة التحريم</td></tr>
<tr><td colspan="3">सूरह अल-तहरीम</td></tr>
<tr><td colspan="3">SURAH AT-TAHREEM</td></tr>
<tr><td>Tahreem</td><td>तहरीम</td><td>निषेध</td></tr>
<tr><td colspan="3">"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मदीना</td></tr>
<tr><td colspan="3">"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य</td></tr>
</table>

- इस सूरह का लक्ष्य सामूहिकता है।
- पारिवारिक वातावरण विकास और सफलता का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

قال تعالى: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قُوٓاْ أَنفُسَكُمۡ وَأَهۡلِيكُمۡ نَارٗا وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ
وَٱلۡحِجَارَةُ عَلَيۡهَا مَلَٰٓئِكَةٌ غِلَاظٞ شِدَادٞ لَّا يَعۡصُونَ ٱللَّهَ مَآ أَمَرَهُمۡ
وَيَفۡعَلُونَ مَا يُؤۡمَرُونَ ٦ ﴾ التحريم

अनुवाद: हे विश्वासियों! अपने आप को और अपने परिवार को इस आग से बचाओ, जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं, जिस पर फ़रिश्ते नियुक्त किए गए हैं जो कठोर दिल वाले और मजबूत हैं, जो अल्लाह के आदेश का उल्लंघन नहीं करते हैं, बल्कि जो आदेश दिया जाता है उसे निष्पादित करते हैं।

- परिवार समाज के विकास और एकीकरण की केंद्रीय धुरी है जिसके बिना न तो विकास संभव है और न ही एकीकरण। और इन सभी चीजों में महिला की मुख्य भूमिका होती है, वह वह होती है

जो पीढ़ियों को प्रशिक्षित करती है और वह समाज के सदस्यों पर प्रभाव छोड़ सकती है, वह वह होती है जो पुरुषों को तैयार करती है। 1

कुरान ने हमें उन महिलाओं के उदाहरण दिए हैं जो अपने लक्ष्य में सफल हुईं, जैसे कि फिरौन की पत्नी और मरियम बिन्त इमरान (उन पर शांति):

تَعَالَىٰ: ﴿وَضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱمْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ
قَالَتْ رَبِّ ٱبْنِ لِى عِندَكَ بَيْتًا فِى ٱلْجَنَّةِ وَنَجِّنِى مِن فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِۦ
وَنَجِّنِى مِنَ ٱلْقَوْمِ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١١﴾ وَمَرْيَمَ ٱبْنَتَ عِمْرَٰنَ ٱلَّتِىٓ أَحْصَنَتْ
فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهِۦ
وَكَانَتْ مِنَ ٱلْقَٰنِتِينَ ﴿١٢﴾﴾ التحريم [2]

- और उन्होंने उन महिलाओं के अन्य उदाहरणों का उल्लेख किया जो धर्म के मामले में विफल रहीं। उन्हों ने दीन को छोड़ केर दुन्या को अपनाया तो उन्हें उन की सजा मिली

ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱمْرَأَتَ نُوحٍ وَٱمْرَأَتَ لُوطٍ ۖ كَانَتَا تَحْتَ
عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَٰلِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا
وَقِيلَ ٱدْخُلَا ٱلنَّارَ مَعَ ٱلدَّٰخِلِينَ ﴿١٠﴾

अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक (مسئولية المرأة المسلمة :: अब्द अल्लाह बिन जार अल्लाह बिन इब्राहिम अल जार अल्लाह) पढ़ें।

2 (अधिक जानकारी के लिए, تفسیر اضواء البیان فی ایضاح القرآن بالقرآن ج8/ آیت نمبر 11 تا 12) देखें, खंड 8 / आयत संख्या 11 से 12)

यूनिट नंबर 25

अट्ठाईसवें पारा, सूरह अल-तहरीम, सूरह नंबर 66 की आयत 1 से 5 में, प्रेमपूर्ण तरीके से प्रशिक्षण का उल्लेख और शपथों के प्रायश्चित और उसके ज्ञान की नियुक्ति का उल्लेख किया गया है।

"यूनिट नंबर 25 के कुछ विषय"

एक कहानी जो पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और कुछ पवित्र जोड़ों के बीच घटी। (1-5)

यूनिट नंबर 26

अट्ठाईसवें पारा सूरह अल-तहरीम, सूरह संख्या 66 की आयत 66 में, इसमें परिवार के प्रशिक्षण और उन्हें नरक की आग से बचाने का उल्लेख है, और उसके बाद शुद्ध पश्चाताप का आदेश दिया गया और बयान दिया गया कि स्वर्ग और स्वर्ग के बगीचे और नदियाँ बदले में दी जाएंगी।

"इकाई संख्या 26 के कुछ विषय"

- ईमान वालों को नर्क से बचने की हिदायत (6)
- अविश्वासियों के लिए चेतावनी कि क़यामत के दिन कोई भी बहाना स्वीकार नहीं किया जाएगा। (7)
- विश्वासियों को पश्चाताप की सलाह. (8)
- पैगंबर को काफिरों के खिलाफ जिहाद छेड़ने का आदेश देना। (9)

3 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 8 / पृष्ठ 172 देखें)

यूनिट नंबर 27

अट्ठाईसवें पारा, सूरह अल-तहरीम, सूरह नंबर 66 की आयत 10 से 12 में, विश्वास और नेक कर्म ही मुक्ति का मार्ग हैं।

बताया जा रहा है कि मुस्लिमों का हमेशा से यह सिद्धांत रहा है कि ईमान और नेक कर्म ही मुक्ति का रास्ता है, चाहे वे अतीत की महिलाएं हों या मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के समय की हों या कयामत के दिन तक आने वाली महिलाएं हों या फिर वे पुरुष हों। हर एक को कोई भी रिश्ता और नसब काम आने वाला नहीं है इमान और अम्ल सालेह की बुन्याद पर नैया पर होने वाली है आख़िरत में पुल पर यानि के सीरत पर और वहां पर निजात मिलने वाली है

"इकाई संख्या 27 के कुछ विषय"

- महिलाओं के लिए दो अच्छे और बुरे उदाहरण. (10-12)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

تبارك الذى

29

UNNTISWAN PAARA (JUZ) "تبارك الذى" KA MUKHTASAR TAAARUF

उन्तीसवां पारा (भाग) "تبارك الذى" का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय ।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय |

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓا۟ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

جزاكم الله خيرا

	उनतीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	

उनतीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।			
सूरह अल-मुल्क			
उनतीसवें पारा को विद्वानों ने 38 इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:			
पैरा संख्या 29 "تَبَارَكَ الَّذِي " के छंदों और विषयों का इकाइयों के अनुसार वितरण।			
इकाइयों	वर्सेज		विषयों
सूरह अल-मुल्क			
यूनिट नं.: 1	**1**	**11**	अल्लाह ताला अपना परिचय दे रहा है, अल्लाह ताला का सभी प्राणियों पर प्रभुत्व है।
यूनिट नं.: 2	**12**	**15**	न्याय दैवीय महिमा की आवश्यकता है.
यूनिट नं.: 3	**16**	**19**	आयत अफ़ाक के द्वारा ईश्वर की महिमा का वर्णन।
यूनिट नं.: 4	**20**	**24**	अल-रज्जाक द्वारा दैवीय महिमा का वर्णन।
यूनिट नं.: 5	**25**	**30**	यह कथन कि हर चीज़ का ज्ञान अल्लाह को है।
सूरह अल क़लम			

यूनिट नं.: 6	**1**	**7**	इसमें अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता और उत्कृष्टता का उल्लेख है और उनके नेक आचरण का वर्णन हो।
यूनिट नं.: 7	**8**	**16**	अल्लाह कइ नबी पर एतेराज़ करने वालों की बुरी आदत का बयान
यूनिट नं.: 8	**17**	**33**	बाग वालों के क़िस्से के जरिया मुश्रिकीन मक्का के एतेराज़ के जवाबात का बयान
यूनिट नं.: 9	**34**	**43**	विश्वासियों के लिए एक वादा, अविश्वासियों के लिए एक वईद
यूनिट नं.: 10	**44**	**52**	काफ़िरों को अपमानित किये जाने का ज़िक्र, बुरा नज़र लगने न लगने का ज़िक्र , पवित्र क़ुरआन की हमीदा (औसाफ़) की विशेषताओं का वर्णन।
सूरह अल-हक्का			
यूनिट नं.: 11	**1**	**12**	पुनरुत्थान का परिचय.
यूनिट नं.: 12	**13**	**18**	पुनरुत्थान की भयावहता का वर्णन।
यूनिट नं.: 13	**19**	**24**	धर्मात्मा के उत्तम प्रतिफल का वर्णन |
यूनिट नं.: 14	**25**	**37**	क़ियामत के दिन काफ़िरों और मुनाफ़िकों का काफी अफ़सोस का बयान।
यूनिट नं.: 15	**38**	**52**	कुरान की महानता का वर्णन.
सूरह अल-मआ रीज			
यूनिट नं.: 16	**1**	**20**	पुनरुत्थान के दिन प्रश्न और उत्तर के दृश्य का विवरण।

यूनिट नं.: 17	21	35	मृत्यु के बाद पुनरुत्थान (पुनर्जीवन) के विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच अंतर का वर्णन।
यूनिट नं.: 18	36	41	अल्लाह के न्याय का बयान.
यूनिट नं.: 19	42	44	خوض، لهو و لعب "उन लोगों की बुराई का वर्णन जो तुच्छ हैं और सभी का मजाक उड़ाते हैं।
सूरह नूह			
यूनिट नं.: 20	1	28	नूह और उसके लोगों का विस्तृत विवरण।
सूरह अल-जिन			
यूनिट नं.: 21	1	28	जिन्नों का विस्तृत विवरण.
सूरह अल-मुज़म्मिल			
यूनिट नं.: 22	1	11	अल्लाह के पैगम्बर के लिए तहज्जुद के आदेश का वर्णन।
यूनिट नं.: 23	12	19	विद्रोही और अवज्ञाकारियों का उल्लेख तथा फिरौन की मिसाल का वर्णन |
यूनिट नं.: 24	20	-	नेक कामों का बयान और अल्लाह से माफी मांगते हुए तौबा करना।
सूरह अल-मुदस्सिर			
यूनिट नं.: 25	1	10	दावा के आवश्यक तत्वों तथा याचक के गुणों का वर्णन |
यूनिट नं.: 26	11	56	वलीद बिन मुग़ीरा का ज़िक्र, जन्नत और नर्क के लोगों का ज़िक्र और क़ुरआन से सलाह लेने का बयान

सूरह अल-क़ियामा			
यूनिट नं.: 27	1	15	पुनरुत्थान के लक्षणों का वर्णन|
यूनिट नं.: 28	16	25	पवित्र क़ुरान की सुरक्षा, महानता और अन्य विशेषताओं का वर्णन।
यूनिट नं.: 29	26	35	अबू जहल की हठ धर्मी और अज्ञानता का उल्लेख और उसकी मृत्यु का विवरण।
यूनिट नं.: 30	36	40	पुनरुत्थान से इनकार करने वालों का वर्णन और उदाहरणों द्वारा उन्हें समझाना।
सूरह अल-इन्सान / दहर			
यूनिट नं.: 31	1	4	मनुष्य की मुक्ति के विषय में एक कथन.
यूनिट नं.: 32	5	22	कृतज्ञता एक आशीर्वाद है.
यूनिट नं.: 33	23	28	अल्लाह के दूत का वर्णन, गरीबों के इमाम होने के नाते सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम
यूनिट नं.: 34	29	31	आस्था और अविश्वास के मामले में मनुष्य की इख़्तियारात का विवरण।
सूरह अल-मुर्सिलात			
यूनिट नं.: 35	1	15	पुनरुत्थान की कल्पना का वर्णन.
यूनिट नं.: 36	16	19	पुनरुत्थान का इन्कार करने वालों की निशानियों का वर्णन।
यूनिट नं.: 37	20	28	सृष्टि की रचना, मनुष्य की रचना और उसकी चेतावनी।
यूनिट नं.: 38	29	50	पुनरुत्थान की परिस्थितियों का विवरण.

	उनतीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	

सूरह अल-मुल्क		
	मुल्क	देश
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		
"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य		

- तौहीद प्रभुत्व (रुबूबियत) से तौहीद (उलूहियत) दिव्यता पुष्टि और दिव्य महिमा का ज्ञान।
- यह सूरह एक ही अर्थ के इर्द-गिर्द घूमता है: (उर्फ क़द्र अल्लाह वा तौहीद अल-इबादाह- اعرف قدرالله و توحيد العبادة) अल्लाह की पूजा करके एकेश्वरवाद को अपनाना।
- इस सूरह की सभी आयतें अल्लाह की शक्ति और स्वामित्व से संबंधित हैं।
- इस सूरह में अल्लाह की कई गवाही पेश की गई है, जिसके आधार पर आख़िरत के इनकार से बाज़ आने की मांग की गयी है। 2

---

1 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें: معنى لا اله الا الله و مقتضاها و اثارها في الفرد والمجتمع सालेह बिन फ़ौज़ान अल-फ़ौज़ान।

2 अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें: التذكرة باحوال الموتى و امور الاخرة मुहम्मद बिन अहमद अल-कुरतुबी)

- आसान तरीके से, ﴿ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٤﴾ ﴾ कहकर नास्तिकों को समझाया गया।3
- इस सूरह में ईश्वर की शक्ति की अभिव्यक्तियाँ को सामने रख कर समझाया गया है, अल्लाह की क़दर करो

تفكَّرُوا فِي خَلْقِ اللهِ ، ولَا تَفَكَّرُوا فِي اللهِ
(صحيح الجامع:2976)

(2976: साहिह अल-जमाई)

अनुवाद: अल्लाह के प्राणियों के बारे में सोचो, अल्लाह की ज़ात के बारे में मत सोचो। तौहीद आधिपत्य में तीन महत्वपूर्ण अर्थ (मालिक, निर्माता, शासक) हैं, इसलिए किसी भी प्रकार की तौहीद की नई किसिम बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। तीन क़िस्में जो सलफ से चली आ रही है वो काफी है जामे व माने है 4, पुराणी किताबों में ये तीनों क़िस्में पाई जाती हैं 5.

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी/ मुनासिबत / लतीफे तफ़सीर

- सूरह मुलक से लेकर सूरह नास तक, अधिकांश सूरहों में पुनरुत्थान का उल्लेख है।
- सूरह मुल्क में मारिफ़त-ए ला इलाहा इला अल्लाह की व्याख्या है। और सूरह क़लम में मुहम्मद का ज्ञान अल्लाह के दूत की व्याख्या है, शांति उस पर हो।

(अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर अल-कुर्तुबी खंड 18 / पृष्ठ 198 देखें)

अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें: (القول السديد فى الرد على من انكر تقسيم التوحيد - अब्द अल-रज्जाक बिन अब्द अल-मोसिन अल-अब्द अल-बद्र

الابانۃ الكبرى - लेखक: इब्न बत्ता अल-अकबरी

- सूरह मलिक में अल्लाह का परिचय, सूरह क़लम में मुहम्मद का परिचय और सूरह हक़ में आख़िरत का परिचय।

यूनिट नंबर 1 :

उनतीसवाँ पारा, सूरह अल-मुल्क, सूरह नं. 67, आयत नं. 1 से 11 इस सूरह का मुख्य विषय तौहीद है, अल्लाह यहां अपना परिचय दे रहा है कि अल्लाह सर्वशक्तिमान का सारी सृष्टि पर नियंत्रण है, उसके साम्राज्य में किसी का कोई हिस्सा नहीं है, उसके बाद जीवन और मृत्यु देने के बारे में बयान है।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय"

- ईश्वर की शक्ति (1-5)
- कुफ़्र का अंजाम और वे अपने कर्म कबूल करेंगे। (6-11)

यूनिट नंबर 2:

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मुल्क, सूरह नंबर 67, आयत 12 से 15 में बताया जा रहा है कि ईश्वरीय महिमा की आवश्यकता न्याय और निष्पक्षता है।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

- अल्लाह से डरने वालों का अंजाम अच्छा होगा (12)

- अल्लाह का ज्ञान और उसकी नेमतें, काफ़िरों के लिए अल्लाह की सज़ा, मूर्तिपूजा के लिए बहुदेववादियों पर वईद

यूनिट नंबर 3

उन्तीसवें पारा, सूरह अल-मुल्क, सूरह नं. 67, आयत 16 से 19 में, अफ़ाक की आयतों के माध्यम से ईश्वरीय महिमा का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- अल्लाह का ज्ञान और उसकी नेमतें, काफ़िरों के लिए अल्लाह की सज़ा, मूर्तिपूजा के लिए बहुदेववादियों पर वइद

यूनिट नंबर 4

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मुल्क, सूरह नंबर 67 की आयत 20 से 24 में, अल-रज्जाक ने दिव्य महिमा का परिचय दिया कि जो सारी सृष्टि को जीविका प्रदान करता है, वह केवल अल्लाह है, और वह सभी को उसी की ओर लौट कर जाना है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

अल्लाह का ज्ञान और उसकी नेमतें, काफ़िरों के लिए अल्लाह की सज़ा, मूर्तिपूजा के लिए बहुदेववादियों पर वईद

यूनिट नंबर 5

उनतीसवें पारा सूरह अल-मुल्क, सूरह नंबर 67, आयत 25 से 30 तक में कहा गया है कि हर चीज का ज्ञान केवल उसी के पास है, जो काफिरों को सजा से बचा ले,ल कुफ्फार को पता चल जायेगा के वोह सरीह गुमराही का शिकार थे और अगर अल्लाह ज़मीन से पानी बंद कर दे तो भला कोन है जो उनको सैराब करेगा।

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय"

- हशर और गणना पर अल्लाह की शक्ति अल्लाह के हाथों में है कि वह आख़िरत में मुक्ति देना और इस दुनिया में पानी लाना। (28-30)

	उनतीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	
	सूरह अल-क़लम	
The Pen	क़लम	लेखनी
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की महानता और दाईयों के गुण 1
- इस सूरह में दाई के अच्छे गुणों का वर्णन किया गया है, इसके विपरीत, बागवानों के बुरे आचरण का भी उल्लेख किया गया है।
- रिसालत पर उठाए गए एतराज का जवाब.

- बागवानों की कहानी में कुफ़राने नेमत का नतीजा बताया गया है.
- परलोक की कठिन परिस्थितियों का वर्णन किया गया।
- मुसलमानों और अपराधियों के भाग्य का वर्णन किया गया।
- उद्देश्य पैग़म्बरी की पुष्टि और हृदय की पुष्टि है।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें : الدعوة الى اللہ و اخلاق الدعاة(अब्द अल-अजीज बिन अब्दुल्लाह बीन बाज़)

- इस सूरह में ज्ञान की पुष्टि का आह्वान किया गया है।
- पिछले सूरह की तुलना में इस सूरह में चेतावनी और सख्ती है, जिसे बगीचे का उदाहरण देकर समझाया गया है। 2

- ﴿نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ﴿١﴾﴾ इल्म को लिखने से सुरक्षित रखा जाता है, इसीलिए कलम का ज़िक्र किया गया है क्योंकि अगर हम ज्ञान को सुरक्षित रखेंगे तो दावा के मैदान में यह हमारे लिए एक हथियार होगा।

- और इस सूरह में दाई की नैतिकता और विशेषताओं का भी उल्लेख किया गया है जैसा कि अल्लाह, ने कहाः और वास्तव में, तुम्हारे आचरण बहुत अच्छे हैं। ﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ﴿٤﴾﴾
- और इस सूरह में इसके बिल मुक़ाबिल बुरे आचरण का भी ज़िक्र है, बागवानों की कहानी की तरह, एक दाई के लिए बुरे संस्कार रखना उचित नहीं है।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सूरह मुल्क में अल्लाह का परिचय और सूरह क़लम में मुहम्मद का परिचय।

2 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर अल-कुर्तुबी खंड 18 / पृष्ठ 222 देखें)

3 अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें: (الامۃ الوسط والمنهاج النبوی فی الدعوۃ الی اللہ' अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुहसिन अल्तुरकी

अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक पढ़ें (مكارم الاخلاق: मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन)।

- सूरह मुल्क में **ला इलाहा इलललाह** के ज्ञान की व्याख्या है, । और सूरह क़लम में, अल्लाह के दूत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के ज्ञान को समझाया गया है।

यूनिट नंबर 6

उनतीसवें पारा, सूरह अल-क़लम, सूरह नंबर 68 की आयत 1 से 7 तक, अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की महानता और उत्कृष्टता का उल्लेख किया गया है और उनके नेक आचरण, का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

- पैगंबर की नैतिकता. (1-7)

यूनिट नंबर 7

उनतीसवें पारा, सूरह अल-क़लम, सूरह नंबर 68 की आयत 8 से 16 में, उन लोगों के नैतिकता की गुणवत्ता का वर्णन किया गया है जो अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं पर आपत्ति करते हैं, उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे बात बात पर कसम खाते हैं। ज़ियादा क़समें खाने वालों में बाद बातिनियत ज़्यादा होती है, फिर कह दिया गया जो लोग हमारी आयतों का इंकार करते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी उनकी कोई बात ना मानें

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- असत्य के गुण (8-16)

यूनिट नंबर 8

उनतीसवें पारा، सूरह अल-क़लम की आयत 17 से 33 में बागवानों की कहानी बयान किया गया और बहुदेववादियों मक्का कुफ्फार कुरैश की आपत्तियों का उत्तर दिया गया।

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- बागवानों की कहानी. (17-33)

यूनिट नंबर 9

उनतीसवें पारा, सूरह अल-क़लम, सूरह नंबर 68 की आयत 34 से 43 में, विश्वासियों के लिए सर्वोत्तम इनाम का वादा, और अवज्ञाकारियों के प्रशिक्षण और मार्गदर्शन, और वादे को इस्तिफामी शैली में वर्णित किया गया और वईद बयान की गई।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- परहेज़गारों के लिए इनाम, अपराधियों के ख़िलाफ़ सबूत और उनके लिए वईद। (34-47)

यूनिट नंबर 10

उनतीसवें पारा सूरह अल-क़लम, सूरह नंबर 68, आयत 44 से 52 तक, कहा गया कि पुनरुत्थान के दिन, अविश्वासी सजदा नहीं कर पाएंगे और वे अपमानित होंगे, इसके बाद कहा गया, हे पैगंबर, जो लोग तुम्हें झुठलाते हैं और तुम्हें नुकसान पहुंचाते हैं, सब्र करो कुफ्फार का फैसला कर दिया जायेगा, इस के बाद कुफ्फार की तरफ से नज़र बद और हसद करने का ज़िक्र किया गया और उस के बाद क़ुरआन मजीद के औसाफ़े हमीदह बयां किया गया

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

धैर्य के लिए पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सलाह और दृढ़ता के लिए यूनुस (अलैहिस्सलाम) की कहानी। (48-52)

	उनतीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	

सूरह अल-हक्का		
साबित होने वाली	Sabit hone wali	अपरिहार्य
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- परलोक की भयावहता का परिचय 1
- इस सूरह की सभी आयतों में आख़िरत का ज़िक्र है।
- और आख़िरत का ज़िक्र दाइयों के लिए बहुत महत्वपूर्ण संसाधन है और दाइयों को करना भी चाहिए की इस अहम् जरिया को अपनी दावत में इस्तेमाल करें, इस लिए की आख़िरत के तज़किराह से सख्त दिल नरम होते हैं.2
- इस सूरह में पुनरुत्थान के दिन के दृश्यों का वर्णन किया गया है। 3

1. अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (زاد الداعية الى الله: मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन)।
2. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (امراض القلوب و شفاء ها: अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)।
3. अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (من مشاهد القيامة و اهوالها وما يلقاه الانسان بعد موتہ: अब्द अल्लाह बिन जार अल्लाह बिन इब्राहिम अल जार अल्लाह)

पाँच प्रमुख शीर्षक:

(1) इसमें क़यामत के दिन के ख़तरे का वर्णन है।

(2) पुनरुत्थान की भयावहता का वर्णन किया गया है।

(3) अबरार के अंत का वर्णन किया गया है।

(4) शक़ी अर्थात बुरे चरित्र वाले लोगों का भाग्य बताया गया है।

(5) कुरान की महानता का जिक्र किया गया है.

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सूरह मुल्क में अल्लाह का परिचय है, सूरह कलम में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का परिचय है और सूरह हाकका में पुनरुत्थान का परिचय है।
- पिछले और इस सूरह का विषय आम है, यानी आख़िरत।

यूनिट नं: 11

उनतीसवें पारा, सूरह अल-हक़्क़ा, सूरह नंबर 69 की आयत 1 से 12 में, न्याय के दिन का परिचय वर्णित है, अविश्वासियों, बहुदेववादियों और मिथ्यावादियों के अविश्वास का उल्लेख किया गया है, फिरौन और फिरौन के लोगों, आद व समूद के विनाश का उल्लेख किया गया है, और न्याय के दिन पर विचार करने के लिए निमंत्रण दिया गया है।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- पुनरुत्थान का लेखा-जोखा (1-3)
- आद, समूद, फ़िरऔन की क़ौम और नूह की क़ौम का विनाश। (4-12)

यूनिट नंबर 12

उनतीसवें पारा, सूरह अल-हक़्क़ा की आयत 13 से 18 में क़यामत के दिन की भयावहता का वर्णन।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- पुनरुत्थान का विवरण (13-18)

यूनिट नंबर 13

उनतीसवें पारा, सूरह अल-हक़्क़ा, सूरह नंबर 69 की आयत 19 से 24 में, नेक लोगों के लिए सर्वोत्तम इनाम और पुरस्कार का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- अस हाबे यामीन और अस हाबे शिमल का ठिकाना। (19-37)

यूनिट नं: 14

उनतीसवें पारा, सूरह अल-हक्का, सूरह नंबर 69 की आयत 25 से 37 में कहा गया है कि जब काफिरों और मुनाफ़िकों के कर्म उनके बाएँ हाथ में दिए जाएंगे, तो वे अफ़सोस के साथ कहेंगे, "काश कि हमारे कर्म हमें न दिए जाते, काश हमें यह दृश्य देखने को न मिलता।"

"इकाई संख्या 14 के कुछ विषय"

- अस हाबे यामीन और अस हाबे शिमल का ठिकाना। (19-37)

यूनिट नंबर 15

उनतीसवें पारा, सूरह अल-हक्का, सूरह नंबर 69 की आयत 38 से 52 में, कुरान की महानता और उत्कृष्टता का वर्णन किया गया है, और उसके बाद आज्ञाकारी और अवज्ञाकारी के बीच अंतर का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- क़ुरआन (38-52)

	سُورَةُ المَعَارِج	
	सूरह अल-मराज	
The Way of ascent	आरोहण का मार्ग	सीढ़ियां
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- नैतिकता के साथ-साथ पूजा का महत्व
- इस सूरह में विश्वासियों के गुणों का वर्णन किया गया है और यह सूरह अल-मुमिनुन के समान है, बल्कि ये उसका तकमीला है । 2, इसलिए, दाई को खुद को सूरह अल-मोमिनुन में वर्णित गुणों से लैस करना चाहिए, और इसी तरह, आस्तिक के लिए नैतिक गुण भी आवश्यक हैं, जिनका उल्लेख इस सूरह में भी किया गया है। 3

- अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक पढ़ें (مكارم الاخلاق: मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन)।
- अधिक जानकारी के लिए कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (تذكير المسلمين بصفاة الموء منين: अब्द अल्लाह बिन जार अल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरुल्लाह) और (فتح المنان فى صفاة عباد الرحمان वाहिद बिन अब्द अल-सलाम बाली)।
- अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें (دعوة الى الله و اخلاق الدعوة: अब्द अल-अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़)

- इस सूरह में उन लोगों को विशेष रूप से निशाना बनाया गया जो खुलेआम विरोध करते थे।

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- दोनों सूरहों का विषय जज़ा और सज़ा की पुष्टि है।

- सूरह मुल्क में तौहीद, सूरह कलाम में पैग़म्बरी, सूरह हका में आख़िरत, सूरह मआरिज में अच्छे गुणों के आधार पर आख़िरत में अच्छा अंजाम और बुरे गुणों के आधार पर आख़िरत में बुरा अंजाम का उल्लेख किया गया है।

यूनिट नंबर 16

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मारिज, सूरह नंबर 70 की आयत 1 से 20 तक, पुनरुत्थान के दिन अविश्वासियों, बहुदेववादियों और पाखंडियों से सवाल और जवाब का दृश्य वर्णित किया गया।

"इकाई संख्या 16 के कुछ विषय"

- पुनरुत्थान का लेखा-जोखा (1-18)
- मनुष्य का स्वभाव (19-21)

यूनिट नंबर 17

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मआरिज, सूरह नंबर 70 की आयत 21 से 35 तक, मृत्यु के बाद पुनरुत्थान के विश्वासियों और अविश्वासियों का उल्लेख और उनके बीच का अंतर।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- मोमिन के गुण और उनका इनाम। (22-35)

यूनिट नंबर 18

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मराज, सूरह नंबर 70 की आयत 36 से 41, अल्लाह के न्याय और निष्पक्षता का बयान है।

"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- अविश्वासियों के गुण और उनका निवास स्थान। (36-44)

यूनिट नंबर 19

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मआरिज, सूरह नंबर 70 की आयत 42 से 44 के "خوض - لهو و لعب" करने वालों का वर्णन किया गया और कहा गया कि ये तुच्छ लोग हैं हर किसी का मज़ाक उड़ाना इनकी आदत है।

"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- अविश्वासियों के गुण और उनका निवास स्थान। (36-44)

	उनतीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	
	सूरह नूह	
पैगंबर नूह	**एक नबी का नाम**	

"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- दावा और सुधार के क्षेत्र में हिम्मत न हारें और नूह (अलैहिस्सलाम) का धैर्य विकसित करें।
- इस सूरह में दुआत के कुछ उदाहरणों का वर्णन किया जाएगा।
- नूह (अलैहिस्सलाम) की कहानी में दावा के साधनों का वर्णन किया गया है।
- नूह (अलैहिस्सलाम) साढ़े नौ सौ साल तक अपनी क़ौम को अलग-अलग तरीकों से अल्लाह की ओर बुलाते रहे।

1. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक (مقومات الدعوة الى اللہ: सालेह बिन मुहम्मद अल-हिदान) पढ़ें।
2. अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (الامۃ الوسط والمنهاج النبوى فى الدعوة الى اللہ: अब्द अल्लाह इब्न अब्द अल-मुसिन अल-तुर्की)।
3. अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (مكانۃ الدعوة الى اللہ و اسس دعوة غير المسلمين: अब्द अल-रज्जाक बिन अब्द अल-मुहासिन अल-अब्द अल-बद्र

- इस सूरह में, ऐसा लगता है मानो नूह (अलैहिस्सलाम) अपने रब को अपना हिसाब पेश कर रहे हों।
- इस सूरह में निमंत्रण की कला समाहित है। 4

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

1. पिछले सूरह में ओलू-उल-आज़म मिन-उल-रसूल की तरह धैर्य विकसित करने की सिफारिश की गई और कहा गया कि साहिब अल-हौत की तरह न बनें। इस सूरह में नूह के जीवन के लंबे चरणों का उल्लेख है, धैर्य और प्रतीक्षा के बाद निर्णय की घड़ी आती है और जीत हमेशा सच्चाई की होती है "والعاقبۃ للمتقين"।

यूनिट नंबर 20

उनतीसवें पारा सूरह नूह, सूरह नं. 71 की आयत 1 से 28 तक, नूह अलैहिस्सलाम की पैग़म्बरी, और पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का विस्तृत उल्लेख है, नूह की प्रजा का विस्तृत उल्लेख और सज़ा से पहले और बाद की स्थितियों का विवरण है।

"इकाई संख्या 20 के कुछ विषय"

2. अपने लोगों के प्रति नूह के मिशन और उसके अभियान का उल्लेख (1-4)
3. नूह का अपने रब से लोगों के बारे में शिकायत करना और लोगों की बुराइयों की वज़ाहत और क़ायम के लिए बद दुआ करने का उल्लेख है (5-28)।

1. अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक الدعوة الى الله و اخلاق الدعوة : अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्ला बिन बाज़ पढ़ें।

	उनतीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	
सूरह अल-जिन		
	"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का	
जिन	जिन	जिन

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- कुछ जिन्न भी जल्दी प्रभाव से दावत का काम शुरू कर देते हैं। नूह (अलैहिस्सलाम) के बाद एक और आमंत्रण उदाहरण 1
- जब जिन्नों ने क़ुरान सुना तो वे भी दुआत इलल्लाह बन गए। यह आयत उन के दिन से वाबस्तगी की दलालत करती है। 2

﴿قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ﴿١﴾﴾ الجن

अनुवाद: (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) आपको कहना चाहिए कि यह मुझ पर प्रकट किया गया है

1. अधिक जानकारी के लिए, आपको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए (الامۃ الوسط والمنهاج النبوی فی الدعوۃ الی اللہ: अब्द अल्लाह इब्न अब्द अल-मोहसिन अल-तुर्की), عالم الجن والشياطين, उमर सुलेमान अल-अश्कर।
2. (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 8 / पृष्ठ 238)

- जिन्नों के एक समूह ने (कुरान) सुना और कहा, "हमने एक अजीब कुरान सुना है।"

﴿يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۖ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ﴿٢﴾﴾ الجن

अनुवाद: वह जो सही मार्ग पर मार्गदर्शन करता है। हम अपने प्रभु पर विश्वास करने के cबाद किसी को भी उसके साथ नहीं जोड़ेंगे

- जिन्नों से मदद मांगने और उन्हें अल्लाह के अलावा मददगार मानने से मना किया।

﴿وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ﴿٦﴾﴾ الجن

अनुवाद: बात यह है कि कुछ इंसान कुछ जिन्नों से पनाह लेते थे, जिससे जिन्नों में विद्रोह बढ़ जाता था।

- इसमें निमंत्रण पर ध्यान देने की बात कही गई थी.

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- दुआत के लिए जिन्न का उदाहरण वर्णित किया गया, नूह (अलैहिस्सलाम) के उदाहरण के बाद, एक और आलम का उदाहरण वर्णित किया गया।

अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (الدعوۃ الی اللہ و اخلاق الدعاۃ: अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्ला बिन बाज)।

यूनिट नंबर 21

उनतीसवें पारा, सूरह अल-जिन, सूरह नंबर 72 की आयत नंबर 1 से 28 में जिन्नों द्वारा पवित्र कुरान को सुनने और उस पर विश्वास करने और अल्लाह के एकेश्वरवाद को स्वीकार करने और सही रास्ते से भटकने वाले जिन्नों का वर्णन किया गया है। और यह भी कहा जाता है कि पहले जिन्न इंसानों से डरते थे। मनुष्य जहां भी जाते, जिन्न उनसे दूर भागते, लेकिन जब मनुष्य ने दूसरों को ईश्वर के साथ जोड़ना शुरू किया और जिन्न से शरण लेनी शुरू की, तो जिन्न के दिलों से मनुष्यों का डर और भय गायब हो गया। जन्नात का उल्लेख अल्लाह के पैगम्बर के भेजे जाने से पहले ही कर दिया गया। फिर यह बताया गया कि अवज्ञाकारी और दुष्ट जिन्न प्रायः स्वर्ग में घूमते रहते हैं। और जब फ़रिश्ते उन्हें खोज लेते हैं तो वे मारे जाते हैं। और कहा गया कि न्नात में काफिर और मुसलमान दोनों हैं। उनमें अच्छे और बुरे लोग हैं और उनमें शैतान भी हैं। और वहाँ कुछ सबसे बुरे भी हैं। सूरा में कहा गया है कि अल्लाह के अलावा कोई भी अदृश्य का ज्ञान नहीं जानता।

"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- क़ुरान सुनने के बाद जिन्नों का ईमान लाना और जिन्नों की क़िस्मों और उन के अक़ाईद का तज़किरह
- पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिए अल्लाह की विशेष कृपाओं और मार्गदर्शन का उल्लेख (25-(18).
- अल्लाह के अलावा परोक्ष का ज्ञान कोई नहीं जानता (28-26)।

<table>
<tr><td>
</td><td colspan="2">उनतीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।</td><td>
</td></tr>
<tr><td colspan="4">
</td></tr>
<tr><td colspan="4">cसूरह अल-मुज़्मील</td></tr>
<tr><td>परिधान में लिपटा हुआ</td><td colspan="2">Chadar Lapetne wala</td><td>आवरण</td></tr>
<tr><td colspan="4">"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का</td></tr>
</table>

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- तहज्जुद और क़ियाम अल-लैल एक दाई और एक मुसलमान के लिए आंतरिक शक्ति का स्रोत हैं
- यह सूरह दावत का काम करने वालों के लिए एक तोशा है, दुआत के लिए क़ियाम अल-लैल की आवश्यकता होती है, इसके माध्यम से दावा करने वाले को उसकी दावा में सहायता मिलेगी।
- क़ियाम अल-लैल एक ऐसी चीज़ है जो जीवन के कठिन समय में काम आती है और दिन के दौरान लोगों को आमंत्रित करती है।
- इसमें मूसा (अलैहिस्सलाम) का जिक्र है जिन्होंने अहंकारी फिरऔन का सामना किया था।

प्रारंभिक दावा में, पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और उनके साथियों (रज़ियल्लाहो अन्हो) को अपने दावे में मजबूत होने तक रहने के लिए बाध्य किया गया था, फिर एक साल के बाद इसे कम कर दिया गया। यह साथियों पर किया गया था क्योंकि यह उन लोगों के लिए एक प्रस्तावना थी जो (मक्का की भावी विजय) में लड़ने जा रहे थे। 2

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (زاد الداعية الى الله: मुहम्मद बिन सालेह अल-उथैमीन)।

- जब भी कोई पैगंबर निमंत्रण देता था, राष्ट्र के प्रमुख और नाज़ और नोआम में रहने वाले लोग इसका विरोध करते थे, ठीक यही बात पैगंबर के साथ भी हुई। इस सूरह में शुरुआत में ही विरोध की झलक पेश की गई है.
- दावा का काम शुरू करने और दावा में प्रभावशीलता पैदा करने के लिए आंतरिक रूप से कौन से गुण होने चाहिए?
- आंतरिक शक्ति के लिए दैनिक प्रार्थना (दिन और रात) की दिनचर्या क्या गतिविधियाँ होनी चाहिए?

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- पिछली सूरह में इंसानों की ज़िद का ज़िक्र किया गया कि उन्होंने नूह (अलैहिस्सलाम) की लंबी दावत पर भी यकीन नहीं किया, जबकि अगली सूरह में बताया गया कि जिन्न जल्दी असर करने वाले होते हैं। अविश्वासी कुरैश जाति नूह जैसा बनना या जिन्न से सीखना चाहती है।
- अहल अल- तक़वा और अहल अल-मग़फ़रा बनने के लिए सूरह मुज़ामल और सूरह मुदस्सर की रौशनी में दिमागी मज़बूत कैसे करें

  (1)तहजूद.

  (2) तरतील क़ुरान.

  (3) हिज्र जमील

  4) इस्लामी शैली में स्वीकृति और विधर्मी रूपों में नहीं.

  5) नमाज़

2 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (पैगंबर की स्थिति, भगवान उन्हें आशीर्वाद दें और उन्हें शांति प्रदान करें, भगवान की पुकार में: सईद बिन अली बिन वहफ अल-क़हतानी

- सूरह मुज़म्मल और सूरह मुदस्सर में बताया गया है, दवा करने वाले को मानसिक रूप से मजबूत होना चाहिए।

यूनिट नंबर 22

उनतीसवें पारा में, सूरह अल-मुज़मल, सूरह नंबर 73, आयत 1 से 11, अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रात में तहज्जुद करने का आदेश दिया गया था, जिसके बाद अल्लाह ने उसे प्रोत्साहित किया।

"यूनिट नंबर 22 के कुछ विषय"

पैगंबर को अल्लाह द्वारा निर्देशित किया गया ताकि वह रहस्योद्घाटन प्राप्त कर सकें और इसे लोगों तक पहुंचा सकें (10-1)

यूनिट नं: 23

उनतीसवें पारा , सूरह अल-मुज्मल, सूरह नं. 73 में आयत 12 से 19 तक बताया जा रहा है कि जो लोग अल्लाह की ओर नहीं मुड़ते उनकी प्रवृत्ति और उनके अंत के बारे में बताया जा रहा है, फिर कहा गया के फिरओन की तरह सरकशी को ना अपना लो , इस के बाद जन्नतियों और जहन्नमयों के दरमियान पाए जाने वाले फ़र्क़ को समझाया गया ।

"यूनिट नंबर 23 के कुछ विषय"

- इनकार करने वालों को पुनरुत्थान और नर्क की भयावहता से कड़ी चेतावनी दी गई थी। (11-19)

यूनिट नंबर 24

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मुज़मल, सूरह नंबर 73 की आयत संख्या 20 में बताया जा रहा है कि धिक्कार, सुधार और मार्गदर्शन और सलाह के अन्य समान स्रोतों के अन्य तरीकों का उल्लेख किया गया है, और कुरान की तिलावत पर जोर दिया गया है, प्रार्थनाओं का पालन करने और जकात का भुगतान करने की सिफारिश की गई है, और अल्लाह से माफी मांगते रहने का आदेश दिया गया है।

"इकाई संख्या 24 के कुछ विषय"

- नेक अमल और अल्लाह से माफ़ी मांगना (20)

<table>
<tr><td colspan="3">
</td></tr>
<tr><td colspan="3">सूरह अल-मुद्दस्सिर</td></tr>
<tr><td colspan="3">"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का</td></tr>
<tr><td>मुद्दस्सिर</td><td>Chadar Lapetne wala</td><td>आवरण</td></tr>
</table>

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- यह सूरह दावत की स्थापना का आह्वान कर रहा है।1

- दुआत के लिए आयतों, उदाहरणों, विशेषताओं और तवशा का वर्णन करने के बाद, अब दावा को सार्वजनिक रूप से देने पर जोर दिया जा रहा है।
- अल्लाह ताला की महानता और तकबीर को व्यक्त करने पर जोर दिया गया और आदेश दिया गया कि अल्लाह को पृथ्वी पर सबसे महान और एक स्वतंत्र बनाया जाए, अल्लाहु अकबर। 3
- दावा के मैदान में ऐसी गति और फुर्ती दिखानी चाहिए कि झूठी ताकत टूट जाए और बुरा हो.

1. अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (الدعوة الى اللہ و اخلاق الدعاة अब्द अल-अज़ीज़ बिन अब्दुल्ला बिन बाज़)।
2. अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक को पढ़ें (محمد بن صالح العثيمين زاد الداعيۃ الى اللہ)
3. अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक को पढ़ें (اتحاف الخلق بمعرفۃ الخالقअब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जाराल्लाह)।

प्रासंगिकता/ लतीफे तफ़्सीर

- पिछले सूरह में उल्लिखित ज़िम्मेदारी को इस सूरह में और समझाया गया है।
- अगर हम सूरह अल-मुज़मल और सूरह अल- मुद्दस्सिर की तुलना करें तो दोनों संबंधित हैं। सूरह अल-मुज़मल की आयतों के संदर्भ के तुरंत बाद, सूरह और अल-मुदासिर की आयतों के बीच के सूक्ष्म संबंध को समझाया गया है, इस से मालूम होता है दोनों सूरतों का हदफ़ और मक़सद एक है।

यूनिट नंबर 25

उनतीसवें पारा सूरह अल-मुद्दस्सिर, सूरह नंबर 74 की आयत 1 से आयत 10 तक, अल्लाह के पैगंबरसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को धर्म के आह्वान के लिए कमर कसने और तैयार रहने के लिए कहा जा रहा है, और आह्वान की अनिवार्यताओं और फोन करने वाले के गुणों का वर्णन किया गया है, और कहा गया है कि जिस दिन तुरही फूंकी जाती है वह अविश्वासियों के लिए बड़ी गंभीरता का दिन है।

"यूनिट नंबर 25 के कुछ विषय"

- पैगम्बर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के लिए अल्लाह की कृपा और मार्गदर्शन (1-7)
- क़यामत के दिन की भयावहता के माध्यम से अविश्वासियों के लिए एक चेतावनी (8-10)

यूनिट नंबर 26

उनतीसवें पारे, सूरह अल-मुद्दस्सिर, सूरह नंबर 74, आयत नंबर 11 से आयत नंबर 56 तक, वलीद बिन मुगीरा, जो बहुत अमीर थे, ने अल्लाह के नेमतों के बारे में उल्लेख किया और कुरान को मनुष्य का शब्द कहा, इसलिए उनके लिए एक वादा किया गया और नर्क की एक घाटी "सऊद" का उल्लेख किया गया, और कहा गया कि हमने नर्क के स्वर्गदूतों को बेहद निर्दयी और सबसे क्रूर बनाया है। जन्नत के लोगों और जहन्नम के लोगों के बीच संवाद का उल्लेख किया गया, फिर कहा गया कि पवित्र कुरान सलाह की किताब है, जो कोई भी इससे सलाह लेना चाहता है उसे सलाह लेनी चाहिए।

"इकाई संख्या 26 के कुछ विषय"

- वलीद बिन मुग़ीरा की कहानी का उल्लेख किया गया और उस के लिए वईद सुनायी गई (11-26)।
- नरक के गुण और उसके ख़ज़ीनों की वास्तविकता का उल्लेख (27-37)
- अपराधियों को नरक में दण्ड देने के कारण उन्हीं के शब्दों में (53-38)
- कुरान की सच्चाई और सब कुछ अल्लाह की इच्छा से होता है (5-54)

सूरह अल-क़ियामा		
जी उठना	क़ियामत	

	"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मक्का	

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- यह सूरह आख़िरत के लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है, तैयारी की चिंता कराता है और धर्मी को तसल्ली भी देता है।
- यह सूरह एक बहुत ही दुर्लभ सूरह है जो हमें मौत और अल्लाह से मुलाकात की याद दिलाती है

3. अधिक जानकारी के लिए, आपको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए (مكانة الدعوة الى اللہ و اسس دعوة غير المسلمين: अब्द अल-रज्जाक बिन अब्द अल-मोहसिन अल-अब्द अल-बद्र
4. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (التذكرة باحوال الموتى و امور الاخرة: मुहम्मद बिन अहमद अल-कुर्तुबी)

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- इस सूरह से लेकर नास तक चंद सूरहों के अलावा आख़िरत का ज़िक्र सराहतन या इशारतन है।
- सूरह कयामत में बड़े दरबार और छोटे दरबार का जिक्र किया गया है। बड़ी अदालत का तात्पर्य प्रलय के दिन से है और छोटी अदालत का तात्पर्य नफ़्स लव्वामा से है।

यूनिट नंबर 27

उनतीसवें पारा सूरह अल-क़ियामा, सूरह नंबर 75 की आयत 1 से आयत 15 तक, अल्लाह सर्वशक्तिमान ने कसम खाकर कहा है कि कुरैश के अविश्वासी उपेक्षा के शिकार हैं और सोचते हैं कि हम उनकी हड्डियाँ इकट्ठा नहीं करेंगे और पूछते हैं की क़यामत कब आएगी, उस के जवाब में क़यामत की सिफ़त बयां की गई ।

"यूनिट नंबर 27 के कुछ विषय"

1. मृत्यु के बाद पुनरुत्थानकी पुष्टि। (1-15)

यूनिट नंबर 28

उनतीसवें पारा, सूरह अल-क़ियामा, सूरह नंबर 75 की आयत 16 से आयत 25 तक, कहा गया कि कुरान का रक्षक अल्लाह ताला है, उसके बाद कुरान की विशेषताओं और उसकी महानता का वर्णन किया गया।

"इकाई संख्या 28 के कुछ विषय"

- इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित कुरान को याद करने और उन्हें संतुष्ट करने की बात कही गई है। (19-16)

क़यामत के दिन लोगों के वृत्तान्तों का उल्लेख और मृत्यु के बाद पुनरुत्थान पुष्टि। (40-20)

यूनिट नंबर 29:

उनतीसवें पारा, सूरह अल-क़ियामा, सूरह नंबर 75 की आयत 26 से आयत 35 तक, मृत्यु का वर्णन है और अबू जहल की जिद और उसकी अज्ञानता का उदाहरण वर्णित है।

"इकाई संख्या 29 के कुछ विषय"

क़यामत के दिन लोगों के वृत्तान्तों का उल्लेख और मृत्यु के बाद पुनरुत्थानकी पुष्टि। (40-20)

यूनिट नं: 30

उनतीसवें पारे, सूरह अल-क़ियामा, सूरह नंबर 75, आयत नंबर 36 से आयत नंबर 40 तक, पुनरुत्थान से इनकार करने वालों के लिए उदाहरण बताए जा रहे हैं और उन्हें तर्कसंगत रूप से समझाया जा रहा है।

"यूनिट नंबर 30 के कुछ विषय"

क़यामत के दिन लोगों के वृत्तान्तों का उल्लेख और मृत्यु के बाद पुनरुत्थानकी पुष्टि। (40-20)

	उनतीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	
SURAH AL-INSAAN		
मनुष्य	इंसान	
"रहस्योद्घाटन का स्थान" – मदीना		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- यह इंसान के मन में उठने वाले सवालों के जवाब से जुड़ी सूरह है। मैं कौन हूँ मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? मुझे किसने बनाया?)
- आपकी जिम्मेदारी अल्लाह के धर्म को आमंत्रित करना और उसका मार्गदर्शन करना है। 2
- इस सूरह में दो प्रकार के मनुष्यों का उल्लेख किया गया है:

(1)वे लोग जो प्रार्थना की पुकार स्वीकार करते हैं।

(2) अन्य लोग जिन्होंने निमंत्रण की अवज्ञा की और अस्वीकार कर दिया।

- उनमें से प्रत्येक का परलोक में क्या ठिकाना है बताया गया?

الايمان بالقدر لابن تيمية، شبهات و اجوبة عن القدر للشيخ الصالح الصالح

2 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (مواقف النبى صلى الله عليه وسلم فى الدعوة الى الله تعالى: सईद बिन अली बिन वहफ अल-क़हतानी

- मनुष्य की वास्तविकता

Anthropology

الانسان ذلك المجهول ص16
The human the unknown

मानव अज्ञात

- वह आज तक सूरए इन्सान में वर्णित व्यक्ति को नहीं जान सका।
- प्रसिद्ध मानवीय प्रश्नों के उत्तर:
    - मैं कौन हूँ मेरी वास्तविकता क्या है?
    - मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं?
    - कौन है कानून बनाने वाला, कौन है इस बरह्माण्ड का संचालक?
    - मरने के बाद मुझे कहाँ जाना चाहिए?
- मनुष्य को अच्छे और बुरे कर्म करने की इच्छा भी दी गई है और स्वतंत्रता भी दी गई है।

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا

मनुष्य अपनी रचना में तर्क के रूप में पर्याप्त है, लेकिन इस पर विचार करने के बजाय, वह अल्लाह से दंड की मांग करता है, लेकिन अल्लाह सर्वशक्तिमान उसे मार्गदर्शन देता है, जो उसकी दया का प्रमाण है।

(1)प्रेरितों द्वारा

(2)पुस्तकों द्वारा

(3) अफाक और अन्फ्स की दलीलों से सजाओं और सबकों का अंबार लग गया साक्ष्य पूर्ण करने हेतु दिया गया।

- फिर भी यदि किसी व्यक्ति को पैगम्बर या पैगम्बर की शिक्षा प्राप्त नहीं हुई है तो उसके साथ अहलुल फ़ितरह का मुआमिला किया जायेगा। (फतवा अल-शेख अल-अल्बानी)
- अब सवाल यह है कि इस्लाम में क्रूरता कहां है? इसमें स्वतंत्रता भी दी गई और बहस पूरी करने का अच्छा अवसर भी दिया गया।

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

- सूरह अल-क़ियामा में, "आदमी" शब्द पांच बार आता है, जबकि सूरह अल- दहर में, केवल एक नाम "आदमी" है।

यूनिट नंबर 31

उनतीसवें पारा, सूरह अल-इंसान/अल-दहर, सूरह नंबर 76 की आयत नंबर 1 से आयत नंबर 4 तक कहा गया है कि इंसान को आजादी दी गई थी लेकिन इंसान ने इस आजादी का गलत फायदा उठाया और अवज्ञाकारी बन गया।

"इकाई संख्या 31 के कुछ विषय"

- मनुष्य शून्य से पैदा होता है, फिर उसे दोनों मार्गों पर निर्देशित किया जाता है (1-3)
- क़ियामत के दिन काफ़िरों की सज़ा का ज़िक्र। (4) •

यूनिट नंबर 32

उनतीसवें पारा, सूरह अल-इंसान/अल-दुहर, सूरह नंबर 76, आयत नंबर 5 से आयत नंबर 22 में कहा गया है कि कृतज्ञता एक नेमत है, और आभारी सेवक अल्लाह के पसंदीदा सेवक हैं।

"इकाई संख्या 32 के कुछ विषय"

- अच्छे लोगों और उनके गुणों का उल्लेख तथा परलोक में उनके प्रतिफल का उल्लेख | (22-5)

यूनिट नंबर 33

उन्तीसवाँ पारा, सूरह अल-इंसान/अल-दहर, सूरह नंबर 76, आयत नंबर 23 से आयत नंबर 28 तक कहा गया है कि कृतज्ञों का इमाम अल्लाह का पैगंबर है।

"इकाई संख्या 33 के कुछ विषय"

- पैग़म्बर और ईमानवालों के लिए हिदायतें - (23-31)

यूनिट नंबर 34

उनतीसवें पारा सूरह अल-इंसान/अल-दहर सूरह नंबर 76 की आयत 29 से आयत 31 तक बताया जा रहा है कि यह धर्म कोई ज़बरदस्ती वाला धर्म नहीं है, अल्लाह तआला ने सभी इंसानों को आजादी दी है, चाहे वे विश्वास करें या अविश्वास करें, वे दोनों में से किसी एक को चुन सकते हैं।

"इकाई संख्या 34 के कुछ विषय"

- पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और विश्वासियों को निर्देश। (23-31)

"रहस्योद्घाटन का स्थान" - मक्का		
सूरह अल-मुर्सिलात		
हवाओं का एक गुण	जो आगे भेजे गए	Hawaon ki ek sift

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- इस सूरह में एक आयत को बार-बार दोहराया जाता है और यह आयत सूरह (ويل للمكذبين) का लक्ष्य है जो इनकार करने वालों के लिए वैल (नर्क का गड्ढा) है।

प्रासंगिकता/लताइफ़ तफ़सीर

यह ऐसा है जैसे सूरह अल-क़ियामा और सूरह अल-इंसान याचना करने वालों से कह रहे हैं कि वे धर्म की निमंत्रण दें और मार्गदर्शन की बात अल्लाह पर छोड़ दें, और सूरह अल-मुर्सलात कह रहे हैं, हे निमंत्रण से इनकार करने वालों, तुम्हारा अंत कहा जा चुका है। अनुवाद: उस दिन इनकार करनेवालों पर हाय। !

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (الدعوة الى الله و اخلاق الدعاة: अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्ला बिन बाज)।

यूनिट नंबर 35

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मुर्सलात, सूरह नंबर 77 की आयत 1 से आयत 15 तक न्याय के दिन को दर्शाया गया है और न्याय के दिन की भयावहता का वर्णन किया गया है।

"इकाई संख्या 35 के कुछ विषय"

- पुनरुत्थान के दिन की स्थापना और उसकी परिस्थितियों का उल्लेख (1-15)

यूनिट नंबर 36

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मुर्सलात, सूरह नंबर 77 की आयत 16 से आयत 19 तक, पुनरुत्थान के दिन से इनकार करने वालों के संकेतों और गुणों का वर्णन किया गया है और उनके भाग्य के बारे में बताया गया है।

"इकाई संख्या 36 के कुछ विषय"

- हलकतों द्वारा अविश्वासियों को डराना (16-19)

यूनिट नं: 37

उनतीसवें पारा, सूरह अल-मुर्सलात, सूरह नंबर 77 की आयत 20 से आयत 28 में ब्रह्मांड की रचना और मनुष्य की रचना का उल्लेख किया गया, जिसके बाद मनुष्य को चेतावनी दी गई और धमकाया गया ताकि मनुष्य सही रास्ते पर रहे।

"इकाई संख्या 37 के कुछ विषय" :

- परमेश्वर की शक्ति का प्रकटीकरण और उसके माध्यम से अविश्वासियों को डराना (20-28)

यूनिट नंबर 38

उन्तीसवां पारा, सूरह अल-मुर्सलात, सूरह नंबर 77 की आयत 29 से आयत 50 तक पुनरुत्थान के दिन के बारे में बताता है और मनुष्य को सलाह और चेतावनी देता है और कहता है कि पुनरुत्थान के दिन, पवित्र और पवित्र विश्वासियों को घनी छाया दी जाएगी और वे फव्वारों से घिरे होंगे और उन्हें सम्मान और सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

"इकाई संख्या 38 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन की भयावहता से अविश्वासियों को डराना और चेतावनी देना (40-29)
- धर्मी/मुत्तक़ीन का बदला (44-41)
- अस्वीकार करने वाले अपराधियों का भाग्य (50-45)

सर्वाधिकार सुरक्षित (COPYRIGHT RESERVED)

عمّ

30

TISWAN PAARA (JUZ) " عمّ "KA MUKHTASAR TAAARUF

तीसवां पारा (भाग) " عمّ " का संक्षिप्त परिचय।

क़ुरआन के विषयों का संक्षिप्त एवं व्यापक परिचय।

संकलन

शेख डॉ.अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A .

निबंध क़ुरआन का एक व्यापक संक्षिप्त परिचय।

शेख अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह

हाफ़िज़, आलिम, फ़ाज़िल (मदीना विश्वविद्यालय, के.एस.ए.), M.B.A.;

AskMuslimPedia.com के संस्थापक और निदेशक

अध्यक्ष: ओशन द ए बी एम स्कूल, हैदराबाद, टी एस। भारत।

+91 92906 21633

www.abmqurannotes.com

www.askislampedia.com

www.askmadani.com

بسم الله الرحمن الرحيم

كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓاْ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُوْلُواْ ٱلْأَلْبَٰبِ

(सूरह साद – आयत नंबर २९)

यह एक बरकतवाली किताब है, जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि समझ रखनेवाले लोग शिक्षा ग्रहण करें।

परिचय

प्रिय महोदय, यह पुस्तक हाफ़िज़ अरशद बशीर उमरी मदनी हाफिज़हुल्लाह के ऑडियो से लिया गया है और पाठकों के अनुरोध पर, मुफ़रग़ात को पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो साहित्यिक (गद्य) शैली और इच्छा से कुछ अलग होगा गद्य शैली के अनुकूल न हों क्योंकि आप अच्छी तरह से जानते हैं कि भाषण की शैली और साहित्य और गद्य लेखन की इस शैली में अंतर होता है।

جزاكم الله خيرا

سُورَةُ النَّبَإِ	तीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	30 عَمَّ

"पैरा नंबर 30- अम्मा"

विद्वानों ने तीसवें श्लोक को 25 इकाइयों में विभाजित किया है जो इस प्रकार हैं:

पैरा संख्या 30 जुज़ आम के छंद और लेखों का इकाइयों द्वारा वितरण

इकाइयों	वर्सेज		विषयों
सूरह अल-नबा			
यूनिट नंबर: 1	1	5	क़यामत के काफ़िरों का बयान।
यूनिट नंबर: 2	6	16	ब्रह्माण्ड के निशानियों का वर्णन |
यूनिट नंबर: 3	17	30	पुनरुत्थान के दिन की भयावहता और अवज्ञाकारियों के भाग्य का वर्णन।
यूनिट नंबर: 4	31	40	धर्मात्माओं (मुत्तक़ीन) के उत्तम प्रतिफल का वर्णन |
सूरह अल नजिआत			
यूनिट नंबर: 5	1	14	परलोक का कथन.
यूनिट नंबर: 6	15	26	मूसा और फिरौन की कहानी
यूनिट नंबर: 7	27	33	आयत अफ़ाक का बयान और उस पर चिंतन।
यूनिट नंबर: 8	34	41	स्वर्ग और नरक में प्रवेश का वर्णन |
यूनिट नंबर: 9	42	46	पुनरुत्थान के दिन, क़यामत का इंकार करने वालों का अंजाम ।
सूरह अबस			
यूनिट नंबर: 10	1	16	प्रेमी की डांट में प्रेम का तत्व प्रबल होता है।
यूनिट नंबर: 11	17	32	इंसान अपनी मखलूक और अल्लाह ताला की दी हुई नेमतों पर विचारणीय कथन.

यूनिट नंबर: 12	33	42	पुनरुत्थान के दिन का चित्रण और पुनरुत्थान के दिन को न भूलने का कथन।
सूरह तकवीर			
यूनिट नंबर: 13	1	14	पुनरुत्थान के भयानक और खतरनाक दृश्यों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 14	15	29	कुरान और रहस्योद्घाटन का वर्णन ।
सूरह अल-इंफ़्तार			
यूनिट नंबर: 15	1	5	क़यामत बरपा किये जाने के समय की परिस्थितियों का वर्णन।
यूनिट नंबर: 16	6	8	मनुष्य की धोखे से मुक्ति का वृत्तांत |
यूनिट नंबर: 17	9	19	रोज़े जज़ा का मालिक केवल अल्लाह ही है।
सूरत अल-मुतफ़ीफ़ीन			
यूनिट नंबर: 18	1	6	नाप तौल में कमी करने वालों का बयां
यूनिट नंबर: 19	7	17	अबरार और फुज्जार और इल्लिय्यीन और सिज्जीन का बयान।
यूनिट नंबर: 20	18	28	नेक लोगों के लिए अल्लाह के इनाम का वर्णन।
यूनिट नंबर: 21	29	36	दुष्कर्मियों के घोर दण्ड का वर्णन |
सूरह अन-इनश्काक			
यूनिट नंबर: 22	1	5	पुनरुत्थान की भयावहता का वर्णन
यूनिट नंबर: 23	6	15	**हिसाब किताब से संबंधित परिस्थितियों का विवरण.**
यूनिट नंबर: 24	16	25	हर एक पर उसके काम प्रगट कर दिए जाएंगे, कि किसी पर कुछ भी अन्याय न हो।
सूरह अल बुरुज			
यूनिट नंबर: 25	1	11	बनी इस्राईल के एकेश्वरवादियों का ज़िक्र और असहाबुल उख्दूद का वर्णन।
यूनिट नंबर: 26	12	22	अल्लाह तआला की पकड़ का बयान.
सूरह अल तारिक			
यूनिट नंबर: 27	1	17	मानव रचना का उल्लेख तथा क़ुरआन की महानता एवं सत्यता का कथन।
सूरह अल-अला			
यूनिट नंबर: 28	1	19	तौहीद, रिसालत और आख़िरत का संक्षिप्त परिचय, इस सूरह का मुख्य विषय दाई है, दावा के सिद्धांत और नियम और दावा की प्रक्रिया के बारे में बताया गया। है
सूरह अल-ग़शिया			

यूनिट नंबर: 29	1	26	स्वर्ग और नर्क का संक्षिप्त परिचय
सूरह अल-फज्र			
यूनिट नंबर: 30	1	30	मानवता का एक बयान.
सूरह अल-बलद			
यूनिट नंबर: 31	1	20	मनुष्य और मनुष्य की रचना का बयान .
सूरह अल-शम्स			
यूनिट नंबर: 32	1	15	आत्मसुधार, बाह्य और आन्तरिक कर्मों के सुधार का वर्णन |
सूरह अल-लैल			
यूनिट नंबर: 33	1	21	बाह्य कृत्यों (ज़ाहिरी आमाल) की वैधता का कथन.
सूरह अल-जुहा			
यूनिट नंबर: 34	1	11	अल्लाह के पैगम्बर के गुणों का वर्णन। पैग़म्बरी से पहले अल्लाह के तीन उपहारों और आशीर्वादों का वर्णन और अनाथों की मदद करने , वसाइल और तहदीस नेमत
सूरह अलम-नशरह			
यूनिट नंबर: 35	1	8	अल्लाह के नबी की रफ़अत और और बलन्दी का बयान , वही पवित्र कुरान जिन पर नाज़िल हुआ,
सूरह अल-तीन			
यूनिट नंबर: 36	1	8	रहस्योद्घाटन के स्थानों [शहर] और स्थानों का विवरण।
सूरह अल-अलक			
यूनिट नंबर: 37	1	19	विद्या और कलम के गुण तथा मनुष्य के स्वभाव का वर्णन। पहला कुरान के रहस्योद्घाटन छंद
सूरह अल-क़द्र			
यूनिट नंबर: 38	1	5	लैलतुल-क़द्र की फ़ज़ीलतों की व्याख्या। जिस रात कुरान अवतरित हुआ
सूरह अल-बय्यीना			
यूनिट नंबर: 39	1	8	क़ुरान के अवतरित होने के बाद साक्ष्य और प्रमाण बनाए गए ताकि क़यामत के दिन किसी के पास कोई बहाना न रहे।
सूरह अल-ज़ीलज़ाल			
यूनिट नंबर: 40	1	8	जो कुरान से नहीं सीखता वह भूकंप का इंतजार कर रहा है। पुनरुत्थान के महान भूकंप का वर्णन.
सूरह अल-अदियात			
यूनिट नंबर: 41	1	11	मनुष्य के आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक रोगों का वर्णन | जब अच्छाई भौतिकवाद है तो कुरान के रहस्योद्घाटन का पालन करने में बाधा है
सूरह अल-क़रीʹआ			

यूनिट नंबर: 42	1	11	पुनरुत्थान और मीज़ान का कथन। जीवन का उद्देश्य नज़र अंदाज़ ना हो और ईमान और नेक कर्मों का पलड़ा बढ़ाने के बारे में प्रतिदिन सोचना
सूरह अल-तकासुर			
यूनिट नंबर: 43	1	8	लोभ, काम और लोभ का वर्णन | जो स्वीकृति में बाधक है
सूरह अल-असर			
यूनिट नंबर: 44	1	3	विश्वासियों के चार मुख्य गुणों का वर्णन
सूरह अल-हुमज़ा			
यूनिट नंबर: 45	1	9	असफल व्यक्तियों के लक्षण।
सूरह अल-फ़ील			
यूनिट नंबर: 46	1	5	अब्राहा और उसके भाग्य की कहानी। काफ़िर कुरैश काबा की इमारत की रक्षा करने के योग्य नहीं है
सूरह कुरैश			
यूनिट नंबर: 47	1	4	काबा की श्रेष्ठता एवं पवित्रता का कथन | काफ़िर कुरैश काबा की इमारत की रक्षा करने में और साथ ही काबा के संदेश यानी एकेश्वरवाद की रक्षा करने में अक्षम हैं
सूरह अल-मा उन			
यूनिट नंबर: 48	1	7	कुरैश के अविश्वासी काबा की इमारत के साथ-साथ काबा के संदेश यानी तौहीद की रक्षा करने के योग्य नहीं हैं, लेकिन वे आख़िरत और क़यामत के दिन में विश्वास की कमी के कारण छोटे अच्छे कामों में भी असफल हो जाते हैं। नअहल लोगों के जड़ काटने का समय आ गया है और मुहम्मद (उन पर शांति हो) और साथियों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) को काबा की ज़िम्मेदारी दिए जाने का समय आ गया है।
सूरह अल-कौथर			
यूनिट नंबर: 49	1	3	नहर कौसर के अनुदान का विवरण. तथा शत्रु की तुच्छता का वर्णन |
सूरत अल-काफिरून			
यूनिट नंबर: 50	1	6	बहुदेववादियों के बहुदेववाद से बरी होने की घोषणा
सूरह अल-नस्र			
यूनिट नंबर: 51	1	3	जीत और फतह का बयान.
सूरह अल-मसद / अल-लहब			
यूनिट नंबर: 52	1	5	अबू लहब का वर्णन और उस के अंजाम का बयां।

सूरह अल-इखलास			
यूनिट नंबर: 53	1	4	एकेश्वरवाद का एक व्यापक कथन.
सूरह अल-फ़लक़			
यूनिट नंबर: 54	1	5	रोगों के निवारण और विपत्तियों से सुरक्षा के लिए प्रार्थना। 4 बाहरी शत्रु से मुक्ति हेतु प्रार्थना
सूरह अल-नास			
यूनिट नंबर: 55	1	6	आंतरिक शत्रु (शैतान -नफ्स अमारा) से बचने के लिए दुआ और ता'अवज़, अल्लाह के गुणों का वर्णन।

सूरह अल-नबा		
बड़ी खबर	Azeem Khabar	The Great News
“रहस्योद्घाटन का स्थान – मक्का		
	तीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।	

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- इसका नाम "अल-नबा" है क्योंकि इसमें एक महत्वपूर्ण समाचार है और वह है पुनरुत्थान का उल्लेख।
- यह सूरह आख़िरत की पुष्टि की ओर संकेत करता है, जिसे बहुदेववादी नकारते थे।
- इसमें कहा गया कि जिस प्रकार अल्लाह के पास इस ब्रह्मांड को बनाने की शक्ति है इसी तरह दोबारह उठाने पर भी सक्षम है।

अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 8/पृ. देखें।

- न्याय क दिन का उल्लेख किया गया है। बहुदेववादियों और अविश्वासियों के लिए नर्क की विभिन्न सज़ाओं का उल्लेख करने के साथ-साथ, पवित्र लोगों के लिए स्वर्ग में तैयार की गई

नेमतों पर भी प्रकाश डाला गया है। ऐसा लगता है मानो इस सूरह में प्रोत्साहन और धमकी दोनों समाहित हैं। 2

- अंत में पुनरुत्थान के दृश्यों एवं परिस्थितियों का वर्णन किया गया है।
- अविश्वासी कुरैश अल्लाह की प्रभुता में विश्वास करते थे, देवत्व में नहीं। इसी तरह, वे पैगंबर की विश्वसनीयता और सच्चाई पर विश्वास करते थे, लेकिन पैगम्बर पर नहीं और आख़िरत पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते थे। इसीलिए उनकी ज़िक्र में यह पूरा सूरह उतारा गया है।
- न केवल कुरैश के अविश्वासियों, बल्कि आख़िरत का विषय हर युग में संवेदनशील रहा है, शैतान लोगों को आसानी से धोखा देता रहा है, इसलिए इस विषय को बार-बार अलग-अलग पैरा में वर्णित किया गया है। "اذا تكرر تقرر"

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- हर युग में, शैतान लोगों को क़यामत के दिन के बारे में आसानी से भूलाता रहा है, और लोग जल्दी भूल जाते हैं, उन्हें याद दिलाने के लिए यह सूरह नाज़िल हुई।
- इन सभी सूरहों में एक बात समान है: पुनरुत्थान के दिन का उल्लेख।
- चूंकि आख़िरत का विषय बहुत संवेदनशील है, इसलिए इसे विभिन्न सूरहों में शामिल किया गया है "اذا تكرر تقرر"

2 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें: الفوز العظيم والخسران المبين فى ضوء الكتاب والسنة: सईद बिन अली बिन वाफ़ अल-क़हतानी।

(كَلَّا سَيَعْلَمُونَ (4) अल-नब) यहां नेमतों के जिक्र के बाद पुनरुत्थान का जिक्र किया गया है। स्वर्ग और नर्क का भी जिक्र है, जैसे ثم كلا سيعلمون (5)(अल-नबा) और यहां आखीरुल मनाज़िल में स्वर्ग और नर्क का जिक्र है।

यूनिट नंबर 1

तीसवें पारा, सूरह अल-नबा, सूरह नंबर 78 की आयत 1 से 5 में उन अविश्वासियों और बहुदेववादियों के बारे में बताया गया है जो पुनरुत्थान से इनकार करते थे और कहा गया कि उन्हें जल्द ही पुनरुत्थान के बारे में पता चल जाएगा।

"यूनिट नंबर 1 के कुछ विषय" :

- मृत्यु के बाद पुनरुत्थान (5-1)

यूनिट नं: 2

तीसवें पारा, सूरह अन-नबा, सूरह नंबर 78 की आयत 6 से 16 में ब्रह्मांड के संकेतों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है और उस पर विचार करने की बात कही गई है।

"यूनिट नंबर 2 के कुछ विषय"

ब्रह्मांड में अल्लाह की शक्ति और उसके आशीर्वाद (नेमतों) का उल्लेख (6-16)

यूनिट नंबर 3

तीसवें पारा, सूरह अन-नबा, सूरह संख्या 78 की आयत 17 से 30 में क़यामत के दिन की भयावहता और उस दिन अवज्ञाकारियों के भाग्य का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 3 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन की स्थापना और उसकी शर्तों तथा विद्रोही लोगों के नरक में अंजाम का उल्लेख (17-30)

यूनिट नंबर 4

तीसवें पारा, सूरह अल-नबा, सूरह नंबर 78 की आयत 31 से 40 में नेक लोगों के लिए इनाम और सर्वोत्तम इनाम का वर्णन है।

"यूनिट नंबर 4 के कुछ विषय"

- स्वर्ग में पवित्र लोगों की जज़ा का उल्लेख (36-31)
- क़यामत के दिन की भयावहता से अविश्वासी लोग को भयभीत किया गया। (40-37)

سُورَةُ النَّازِعَاتِ		
सूरह अन-नाज़िआत		
तीसवें पारा (जुज़) का संक्षिप्त परिचय।		
जो बाहर निकालते हैं	Farishton ki ek Sift	स्वर्गदूतों का एक गुण
"रहस्योद्घाटन का स्थान - मक्का"		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- आत्मा के पलायन का दृश्य, आख़िरत के बारे में अविश्वासी क़ुरैश के प्रश्न और उनके उत्तर 1
- सूरह अन-नबा में पुनरुत्थान और शरीयत की आयतों का उल्लेख है और इन आयतों की पुष्टि के लिए आयाते कोनिया से तर्क (इस्तिदलाल) भी किया गया है, इस सूरह में पुनरुत्थान के शब्द का

विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन पुनरुत्थान के संबंध में अविश्वासी कुरैश के सवालों का जवाब दिया गया है।

- ऐतिहासिक मिसाल यानी फ़िरऔन का क्या हाल हुआ, बयान किया गया है और आयतों कोनिया से नेमतों का वर्णन करके सोचने पर उभारा गया है। (स्पष्टीकरण के लिए ऐतिहासिक एवं अवलोकनात्मक शैली अपनाई गई)
- इनकार का कारण: विद्रोह और मोक्ष का कारण: इच्छाओं पर नियंत्रण (ونهى النفس عن الهوى)।2

अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक (किताब अल-रूह: इब्न क़य्यिम अल-जौज़ियाह) पढ़ें।

- इस सूरह में भी पुनरुत्थान और उसकी परिस्थितियों का उल्लेख है। 3
- इसमें अपराधियों के अंजाम और धर्मनिष्ठों के पुरस्कार का उल्लेख है।
- मूसा (अलैहिस्सलाम) - और फ़िरऔन की कहानी का ज़िक्र किया गया, उसका क्या हुआ जो अहंकारपूर्वक ईश्वरत्व का दावा कर रहा था? यह हर अहंकारी और सत्य से विमुख होने वालों का अंजाम होगा। 4

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

ऐतिहासिक उदाहरण और अवलोकन उदाहरण दोनों द्वारा समझाया गया, आयाते कोनिया और आयते शरिया हर दो का तज़किरह किया गया है।

यूनिट नं: 5

तीसवें पारा, सूरह अल- नाजिआत, सूरह नंबर 79 की आयत 1 से 14 में, आख़िरत के दृश्य को दर्शाया गया है

"यूनिट नंबर 5 के कुछ विषय":	

2. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (طريق الهجرتين و باب السعادتين: इब्न क़य्यिम अल-जौज़ियाह)।
3. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (التذكرة باحوال الموتى وامور الاخرة: मुहम्मद बिन अहमद अल-कुर्तुबी)।
4. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (تذكير البشر بفضل التواضع و ذم الكبر: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहीम अल-जरल्लाह)।

यूनिट नंबर 6

तीसवें पारा, सूरह अल-नाज़िआत, सूरह नंबर 79 की आयत 15 से 26 में, मूसा (अलैहिस्सलाम) की घटना का वर्णन किया गया है और फिरौन की अवज्ञा का उल्लेख किया गया है।

"यूनिट नंबर 6 के कुछ विषय"

मूसा की कहानी फिरौन के साथ और फिरौन का भाग्य (15-26)

यूनिट नंबर 7

तीसवें पारा, सूरह अल-नाज़िआत, सूरह नंबर 79 की आयत 27 से 33 में आयत-ए-अफ़ाक का उल्लेख किया गया है और उस पर ध्यान करने का निमंत्रण दिया गया है।

"यूनिट नंबर 7 के कुछ विषय"

- दैवीय शक्ति की अभिव्यक्तियाँ (27-33)

यूनिट नंबर 8

तीसवें पारा, सूरह अल-नाज़िआत, सूरह नंबर 79, आयत 34 से 41 में कहा गया कि विद्रोही और अन्यायी लोगों को नरक में फेंक दिया जाएगा और धर्मी लोगों को स्वर्ग में प्रवेश दिया जाएगा।

"यूनिट नंबर 8 के कुछ विषय"

- क़यामत का वुक़ू (घटना) और अविश्वासियों का ठिकाना (34-39)
- धर्मियों (मुत्तक़ीन) का निवास (41-40)

यूनिट नंबर 9

तीसवें पारा, सूरह अल-नाज़िआत, सूरह नंबर 79 की आयत 42 से 46 में कहा जा रहा है कि अविश्वासी और बहुदेववादी पुनरुत्थान के दिन का मजाक उड़ाते थे, लेकिन आज, यदि पुनरुत्थान का दिन उनके सामने स्थापित हो गया है, तो वह एक-दूसरे का मुंह ताकते रह जाएँ।

"यूनिट नंबर 9 के कुछ विषय"

- क़यामत आने का समय केवल अल्लाह का है (46-42)।

सूरह अबस		
भौंहें चढ़ी हुई	Tarsh Ro	The Frowned
"रहस्योद्घाटन का स्थान – मक्का "कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य		

- इस्लाम में अमीरी और गरीबी आधार नहीं है, मुख्य आधार धर्मपरायणता (तक़वा) है। 1
- यह सूरह अब्दुल्ला बिन उम्म मकतूम की घटना के बाद नाज़िल हुवी।
- अल्लाह के दूत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) कुरैश के नेताओं को इस उद्देश्य से धर्म के लिए आमंत्रित कर रहे थे कि यदि वे विश्वास करते हैं, तो उनके अनुयायी भी विश्वास करेंगे यदि आप उन लोगों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते हैं जो उसी भावना से इस्लाम स्वीकार करते हैं, तो अल्लाह कुरैश के काफिरों को फटकार लगाता है। बजाहिर है, यह संबोधन पैगम्बर के लिए है, जबकि मक़सूद यह है कि ये काफिर अहंकारी कुरैश में से हैं। ऐ पैगम्बर, यदि उन्हें कोई डर होता तो वे आपकी कही हुई बातों पर ध्यान देते। आपकी ज़िम्मेदारी उनके प्रति वचन सिखाना नहीं है, बल्कि केवल उसे सूचित करना है। आप उनके लिए जिम्मेदार नहीं हैं. न ही उन्हें मजबूर किया जा सकता है। आपकी एकमात्र जिम्मेदारी चेतावनी देना, प्रोत्साहित करना और याद दिलाना है। अरब लोग राष्ट्र को कबीले के मुखिया के नाम से संबोधित करते थे। यहां भी यही तरीका अपनाया गया। पैगम्बर के प्रति प्रत्यक्ष नाराजगी और आक्रोश वास्तव में प्रेम व्यक्त करने का एक तरीका है। ऐ नबी, उन्हें अकेला छोड़ दो। तुम उन पर हुक्म नहीं चलाते, न ही यह तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि तुम उन्हें वचन सिखाओ। जो कोई खशियत वाला है, वह आएगा। उस पर ध्यान दो। 2

अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (نور التقوى و ظلمات المعاصى فى ضوء الكتا والسنۃ: सईद बिन अली बिन वहफ अल-क़हतानी)।

- अल्लाह अपनी नेमतों का ज़िक्र करता है। فَلْيَنظُرِ الْإِنسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ (24)
- आख़िर में क़ियामत के दिन की हालत का ज़िक्र है।

يوم يفر المرء من اخيہ وامہ و ابیہ وصاحبتہ و بنیہ لکل امرء منھم یومءذ شان یغنیہ

सब से ज़ियादा दूर से सब से क़रीब की तरफ़, यानि सब से ज़ियादा औलाद क़रीब होती है।

- खुशियत ने इब्न उम्म मकतूम को ऊँचा मुक़ाम दिया और आदमी खाशियन ने अबू जहल और अबुलहब को ज़लील किया। खाशियत के माने ताज़ीम के साथ खौफ है।
- 12 श्लोकों में आस्था, धर्मपरायणता और भय की चर्चा की जा रही है। और पाँच श्लोक बाद में छठे श्लोक से जीवन और मृत्यु पर चिंतन करने का निमंत्रण दिया जा रहा है।
- मज़ीद नौवीं आयत से आगे की आयतों में आयते कोनिया पर गौर करने का आदेश दिया गया है

2 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 8 / पृष्ठ 319)

जिस को सूरह नाज़ीअत में सवाल-जवाब के तौर पर पेश किया गया।

- सूरह अब्स में बताया गया है कि जो रिश्ते इस दुनिया में सच्चाई से दूरी बना देते हैं, वे आख़िरत में काम नहीं आएंगे।
- अल्लाह ताला के कार्यों और शब्दों में कोई विरोधाभास नहीं हो सकता।

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- पहले वाले सूरह नाजिआत में ऐतिहासिक तर्कों पर अधिक ध्यान दिया गया है, जबकि "अब्स" में आफ़ाक़ और अन्फ़्स दोनों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- सूरह नाजिआत में पहले दावा है, फिर सबूत है, जबकि सूरह अब्स में पहले सबूत है, फिर दावा (आखिरी ज़िंदगी) का ज़िक्र है।
- सूरह नाजिआत में अहंकार का सर्वोच्च उदाहरण फिरौन को दिया गया है, जबकि सूरह अब्स में अहंकार का सर्वोच्च उदाहरण अब्दुल्ला बिन उम्म मकतूम (रज़ियल्लाह अंहो) को दिया गया है।

- फ़िरऔन का ज़िक्र नाजिआत में और अब्दुल्लाह बिन उम्म मकतूम का ज़िक्र आब्स में हुआ है। आख़िरत की सफलता अमीर और ग़रीब द्वारा नहीं देखी जाती, बल्कि अल्लाह की इबादत, परहेज़गारी और ईमान के आधार पर तय की जाती है।

यूनिट नंबर 10

तीसवें पारा, सूरह अब्स, सूरह नंबर 80 की आयत 1 से 16 में, प्रेमी की फटकार में प्रेम का तत्व प्रबल होता है।

"यूनिट नंबर 10 के कुछ विषय"

- .इब्न उम्म मकतूम (1-10) के संबंध में अल्लाह की अपने पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को चेतावनी
- पवित्र क़ुरान का महत्व (11-16) •

यूनिट नंबर 11

तीसवें पारा, सूरह अब्स, सूरह नंबर 80, आयत 17 से 32, मनुष्य को अपनी रचना और अल्लाह द्वारा दिए गए आशीर्वाद पर विचार करने के लिए आमंत्रित किया गया है।

"यूनिट नंबर 11 के कुछ विषय"

- मनुष्य का जन्म, उसका जीवन और उसका पुनरुत्थान अल्लाह के हाथ में है। है (23-17)
- अपने सेवकों पर अल्लाह के इनाम का उल्लेख (24-32)

यूनिट नं: 12

तीसवें पारा, सूरह अब्स, सूरह नंबर 80, आयत नंबर 33 से 42 में बताया जा रहा है कि इंसान को हमेशा पुनरुत्थान के दिन को याद रखना चाहिए और कभी भी पुनरुत्थान के दिन के याद से गाफिल नहीं होना चाहिए।

"यूनिट नंबर 12 के कुछ विषय"

- पुनरुत्थान के दिन अविश्वासियों के लिए तैयार की गई सजा और विश्वासियों के लिए तैयार किए गए आशीर्वाद का उल्लेख। (42-33)

सूरह तकवीर		
"रहस्योद्घाटन का स्थान – मक्का		
Wound Round and Lost its Light	Lapetna	

घाव गोल हो गया और उसकी रोशनी चली गई

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- क़ियामत की घटना का एक नक्शा।
- यह सूरह क़यामत के दिन और रीसलात और रहस्योद्घाटन की घटनाओं पर आधारित है, जो विश्वास के आवश्यक घटक हैं

- पहली 15 आयतों में आख़िरत का ज़िक्र किया गया है, फिर कुछ आयतों में आख़िरत में समृद्धि और सफलता साबित की गई है, और इस सफलता को प्राप्त करने का तरीका अहंकार से बचना और पैगंबर की शिक्षाओं का पालन करना है।
- यह शैतान का शब्द नहीं है बल्कि अल्लाह का शब्द है जो पैगंबर द्वारा मानव जाति को सुनाया गया है

अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें: (من مشاهد القيامة واهوالها وما يلقاه الانسان بعد موته: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)

2 अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक पढ़ें (اسباب زيادة الايمان و نقصانه)
अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन अब्दुलमुहसिन ालेबाद अल्बद्र

मजे की बात यह है कि आज के युग में भी कुछ लोग शैतानी आयतें कहते हैं जबकि कुरान में कहा गया है "فاستعذ بالله من الشيطان الرجيم" अगर यह शैतान का शब्द है तो क्या शैतान खुद से पनाह लेना सिखा सकता है???

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- सूरह तकवीर में रोशनी की कमी का वर्णन किया गया है।
- 15 आयतों में आख़िरत की घटनाओं का वर्णन किया गया है, फिर शपथ और गवाही के बाद रहस्योद्घाटन और भविष्यवाणी की पुष्टि के लिए आयतों का वर्णन किया गया है।
- तीन सूरहों में बताए गए आख़िरत की सफलता के लिए इंसान को एक पाठ्यक्रम की ज़रूरत होती है। सूरह तकवीर में आख़िरत के लिए पाठ्यक्रम का ज़िक्र किया गया है, यानी क़ुरान और सुन्नत ही एकमात्र सत्य हैं, यदि आप इसका पालन करेंगे तो आप आख़िरत में सफल होंगे।
- पिछले तीन सूरहों में, मनुष्य की वास्तविकता और उसके बाद के अर्थ को स्वयं और ब्रह्मांड पर तर्कसंगत, अवलोकन और ऐतिहासिक सोच के माध्यम से समझाया गया था (परलोक का अर्थ पुन: निर्माण है, यदि आपने पहली रचना को स्वीकार कर लिया है, तो इसे दोहराना मुश्किल है)। टीओएन दीया
- तीन सूरहों में पुनरुत्थान की पुष्टि और इसमें वास्तविक सफलता और वास्तविक लक्ष्य इस दुनिया में मृत्यु और न्याय के दिन के लिए तैयारी करना है।

- झूठ والليل اذا عسعس (17) अल-तकवीर की तरह है, जबकि सच्चाई والصبح اذا تنفس(18) अल-तकवीर की तरह है।

- तीन सूरह में आख़िरत की याद दिलाकर प्रोग्रामिंग की जा रही है.

यूनिट नंबर 13

तीसवें पारा, सूरह अल-तकवीर, सूरह नंबर 81 में आयत 1 से 14 तक पुनरुत्थान की घटनाओं और भयानक और खतरनाक दृश्यों का वर्णन किया गया है।

"यूनिट नंबर 13 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन की भयावहता (1-14)

यूनिट नंबर 14

तीसवें पारा, सूरह अल-तकवीर, सूरह नंबर 81, आयत 15 से 29 तक, पवित्र कुरान और रहस्योद्घाटन का उल्लेख किया गया है। कुरान ही निसाब है और प्रकृति का कानून है।

"इकाई संख्या 14 के कुछ विषय"

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सत्यता पर अल्लाह की शपथ का उल्लेख और कुरान (29-15)

سُورَةُ الإنفِطَار		
सूरह अल-इंफ़तार		
The Cleaving	फटजाना	गुस्सा उतारना
"रहस्योद्घाटन का स्थान - मक्का"		

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- इसमें बताया गया कि उस समय ब्रह्मांड में क्या-क्या परिवर्तन होंगे।

قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿إِذَا ٱلسَّمَآءُ ٱنفَطَرَتۡ ١﴾ الانفطار

- मनुष्य की कृतघ्नता का उल्लेख किया गया है, वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह भूल जाता है कि आयन देवदूत उसके कर्म लिख रहे हैं जो न्याय के दिन प्रस्तुत किए जाएंगे। 2

प्रासंगिकता/अनुप्रास टिप्पणी

- पारा-अम के पहले 7 सूरह में आख़िरत के बारे में अपनाई गई विधि को मैक्रो और माइक्रो या ज़ूम इन या ज़ूम आउट को सामने रखकर समझा जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 8/पी 341 देखें)।

2 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (عدة الصابرين و ذخيرة الصابرين: इब्न कय्यिम अल-जौज़ियाह)।

- एक सूरह में किसी विषय का संकेत किया जाता है तो अगले सूरह में उसी विषय पर विस्तृत चर्चा की जाती है। उदाहरण के लिए, तीन सूरह (नबा, नाजिआत और अब्स) में पुनरुत्थान के

दिन का उल्लेख किया गया, सूरह तकवीर की पहली 15 आयतों में इस दिन की घटनाओं की पूरी तस्वीर पेश की गई।

- सूरह इन्फ्तार में अबरार और फज्जार का जिक्र किया गया है, सूरह मुताफीन अबरार और फज्जार के कामों के विवरण से भरा है, अबरार और फज्जार का अंजाम क्या होगा।
- सूरह मुतफ़्फ़ीन में नामा-ए- आमाल का ज़िक्र है जबकि इनशक़ाक में इस बारे में अधिक विवरण दिया गया है कि नामा-ए-आमाल कैसे दिया जाएगा और उस समय क्या स्थिति होगी।
- . नोट: आख़िरत के उल्लेख के साथ, कुरान, रहस्योद्घाटन, पैगंबर और दूत की पुष्टि की गई, पुनरुत्थान के दृश्य और उसके बाद की घटनाओं का वर्णन किया गया।
- आपत्तियों के उत्तर, खण्डन के कारण तथा संसाधनों सहित समाधान भी बताया गया है.

यूनिट नंबर 15

तीसवें पारा, सूरह अल- इनफ़तार, सूरह नंबर 82, आयत 1 से 5 तक, जब क़यामत का दिन आने वाला होता है, उस समय की परिस्थितियों और दृश्यों का वर्णन किया, कि आसमान फट जाएगा, कब्रें बिखर जाएंगी, और कब्रें उलट जाएंगी।

"यूनिट नंबर 15 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन की भयावहता (1-5)

यूनिट नंबर 16

तीसवें पारा, सूरह अल-इनफितार, सूरह नंबर 82 की आयत 6 से 8 में बताया जा रहा है कि मनुष्य ईश्वरीय प्रकृति के अनुसार धोखे से बचाया जा रहा है। और सर्वशक्तिमान के करीब करने की प्रयास किया जा रहा है।

"इकाई संख्या 16 के कुछ विषय"

- मनुष्य को अल्लाह की महानता और उसकी कृपा को भूलने के लिए फटकार लगाई गई (6-12)।

यूनिट नंबर 17

तीसवें पारा, सूरह अल-इंफ़्तार, सूरह नंबर 82 की आयत 9 से 19 में, उन लोगों का उल्लेख किया गया है जो पुनरुत्थान के दिन से इनकार करते हैं, और संरक्षक स्वर्गदूतों का उल्लेख किया गया है जो कर्मों को रिकॉर्ड करते हैं, फिर अच्छे और नेक लोगों को दिए गए पुरस्कारों का उल्लेख किया गया है, और दुष्टों और अवज्ञाकारियों के अंत और सजा का उल्लेख किया गया है, और कहा गया है कि महशर के दिन केवल अल्लाह ही सजा का मालिक है।

"यूनिट नंबर 17 के कुछ विषय"

- अबरार की नेमतों का ज़िक्र (13)
- फुज्जार की सज़ा और क़यामत के दिन की भयावहता का ज़िक्र (14-19)

<table>
<tr><td colspan="3">
</td></tr>
<tr><td colspan="3">सूरह अल-मुतफ़्फ़ीफिन</td></tr>
<tr><td>Naap Tool me
Kami karne wale</td><td>अल-मुतफ़्फ़ीफिन</td><td>जो लोग वजन और माप कम करते हैं</td></tr>
<tr><td colspan="3">"रहस्योद्घाटन का स्थान - मक्का"
इस सूरह के रहस्योद्घाटन के स्थान में इख्तिलाफ है। मुशफ़ मदीना के अनुसार यह सूरह मक्की है।</td></tr>
</table>

"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य

- यदि आख़िरत में विश्वास कमज़ोर है, तो व्यावहारिक त्रुटियाँ उत्पन्न होती हैं, इस सूरह में उसी की विस्तार से वर्णन किया गया है, साथ ही अब्रारो फुज्जार , दोनों का उल्लेख किया गया है।
- इसमें माप से विमुख होने वालों के भाग्य का वर्णन है। 2
- उन काफ़िरों का ज़िक्र किया गया है जो ईमानवालों का मज़ाक उड़ाते थे, उनके लिए दुखद यातना का वर्णन किया गया है। वहीं अबरार के लिए एक अच्छी खबर है.
- मक्का में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके साथियों की हालत ऐसी हो गई कि अविश्वासी कुरैश

1. अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक (الجنتن دار الابرار والطريق الموصل اليها: अबू बक्र जाबिर अल-जज़िरी) पढ़ें।
2. (अधिक जानकारी के लिए, कुरान में तफ़सीर अज़वा अल-बयान फ़ि अल-दाह अल-कुरान, पृष्ठ 454)

- उन्हें अपनी महफ़िलों में उन पर ज़ुल्म करने में मज़ा आता था। इस तरह इन जुल्म करने वालों को धमकियां भी दी गई हैं | 3
- कुछ लोगों की बुरी आदत होती है कि वे दूसरों को नुकसान पहुंचाने (परपीड़क सुख) में आनंद लेते हैं। (sadistic pleasure) نعوذ باللہ इस सूरह में ऐसी मनोदशा के बारे में प्रशिक्षण और चेतावनी दी गई है, जैसे दूसरों को गुमराह यानी आंखें और चेहरा बनाकर उनका मजाक उड़ाकर आनंद लेना। 4
- विषय के अनुसार, विद्वानों ने इसे मक्का सूरह कहा है, जबकि इब्न अब्बास, ने इसे मदनी कहा है। (इस सूरह के मक्की या मदनी होने
- विषय के अनुसार विद्वानों ने इसे मक्की सूरह कहा है, जबकि इब्न अब्बास ने इसे मदनी कहा है। यह भी संभव है कि सूरह मक्का हो, लेकिन मदीना जाने के बाद वहां के कुछ हालात वैसे ही थे, जिस मकसद से आपने वहां यह सूरह पढ़ी थी। (यह सूरह मक्की है या मदनी, इसमें अंतर है |

व्याख्या के लिए उपयुक्त

सूरह इन्फ्तार में अबरार और फज्र का जिक्र किया गया है, सूरह मुतफ़्फ़ीफिन अबरार और फज्र के कामों के विवरण से भरी है, अबरार और फज्र का अंत क्या होगा।

3 अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक पढ़ें। الصارم المسلول على شاگتم رسول صيلى الله عليہ وسام(अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह) 4 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें التصفية والتربية وحاجة المسلمين إليهما: मा: मुहम्मद नासिर अल-दीन अल-अल्बानी) ।

• सूरह मुतफ़्फ़ीन में नामा-अमल का ज़िक्र है जबकि अंशक़ाक में इस बारे में अधिक विवरण दिया गया है कि नामा-ए- अमल कैसे दिया जाएगा, और उनकी स्थिति क्या होगी।

यूनिट नंबर 18:

तीसवें पारा, सूरह अल- मुतफ़्फ़ीफीन, सूरह नंबर 83 की आयत 1 से 6 में माप कम करने वालों के अच्छे और बुरे अंत का उल्लेख किया गया है।

“Few Topics of Unit No.18"यूनिट नंबर 18 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन की सज़ा से इनकार करने वालों को सावधान करना (6-1)

  यूनिट नंबर 19:

- तीसवें पारा में सूरह अल- मुतफ़्फ़ीफीन, सूरह नंबर 83, आयत नंबर 7 से 17 तक अबरार और फज्जर का जिक्र है अच्छे और बुरे लोगों का जिक्र किया जा रहा है |अबरार के अच्छे लोग जन्नत में दाखिल होंगे और फज्र के बुरे लोग सिज्जिन में दाखिल होंगे, जो बहुत बुरी जगह और बहुत गहरी खाई में है।

“Few Topics of Unit No.19"यूनिट नंबर 19 के कुछ विषय"

- फज्र और क़यामत के दिन उनकी सज़ा का वर्णन | (7-17)

यूनिट नंबर 20:

तीसवें पारा में, सूरह अल- मुतफ़्फ़ीफीन, सूरह नंबर 83, आयत 18 से 28 तक, कहा जा रहा है कि नेक लोगों के लिए इनाम बहुत बड़ा है और जो लोग अल्लाह के करीब हैं, जिन्हें अबरार कहा जाता है, उनके इनाम और सम्मान का जिक्र किया गया है।

“Few Topics of Unit No.20"यूनिट नंबर 20 के कुछ विषय"

- अबरार और जन्नत में उसके इनाम का ज़िक्र |(18-28)

यूनिट नंबर 20:

तीसवें पारा में, सूरह अल- मुतफ़्फ़ीफीन, सूरह 83 की आयत 29 से 36 में ईमान वालों को दिए जाने वाले पुरस्कारों और सम्मानों का वर्णन किया गया है और अविश्वासियों के लिए "इल्म" (दंड) की सजा का उल्लेख किया गया है।

“Few Topics of Unit No.21"यूनिट नंबर 21 के कुछ विषय"

- ईमान वालों का दुनिया में गुनाहगारों के साथ व्यवहार और आख़िरत में गुनाहगारों की सज़ा| (36-29)

SURAH AL-INSHIQAAQ

The Splitting Asunder	Phath jaanaa	अलग-अलग हिस्सों में बंटवारा

"रहस्योद्घाटन का स्थान - मक्का

“Few Topics"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य”

- क़यामत के रोज़मर्रा के अमल का मंजर पेश किया जा रहा है।
- क़यामत के दिन की घटनाओं का उल्लेख किया गया है।
- यह मानव स्वभाव का संदर्भ है, जो इस संसार की खोज में भटकता रहता है और परलोक को भूल जाता है।

-قَالَ تَعَالَى: ﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلۡإِنسَٰنُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدۡحٗا فَمُلَٰقِيهِ

الانشقاق[2]

- यह सूरह उस समय अवतरित हुई जब अविश्वासी क़ुरैश हठ से पीड़ित थे।

1 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें من مشاهد القيامة وأهوالها وما يلقاه الإنسان بعد موت: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)

2 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें حقوق دعت إليها الفطرة وقررتها الشريعة: मुहम्मद बिन सालेह अल-उथैमीन)।

- परीक्षणों और संकटों के दौर में, मुसलमानों को सांत्वना दी गई और काफिरों को धमकाया गया। 3

व्याख्या के लिए उपयुक्त

सूरह अल-मुतफ़्फ़िफ़िन में कर्मों की किताब का ज़िक्र है। जिस रूप में कर्मों की किताब दी जाएगी, उसे इस सूरह में भयानक और शिक्षाप्रद तरीके से दर्शाया गया है।

۔نعوذ باللہ من خزی الدنیا والآخرۃ۔

यूनिट नंबर :- 22

सूरा अल-इंशिक़ाक के तीसवें पारा, सूरा 84 की आयत 1 से 5 में प्रलय के दिन की भयावहता का वर्णन किया गया है।

“Few Toipics of Unit No.22 "यूनिट संख्या 22 के कुछ विषय"

- न्याय के दिन की भयावहता (6-1)

यूनिट नं. 23

- सूरा अल-इंशिक़ाक के तीसवें पारा में, सूरा 84 की आयत 6 से 15 तक, मनुष्य की अल्लाह सर्वशक्तिमान से मुलाकात, उस समय उसकी स्थिति और उसके कर्मों का लेखा-जोखा दिए जाने के दृश्य का वर्णन किया गया है।

“Few Toipics of Unit No.23 "यूनिट संख्या 23 के कुछ विषय"

- वफादारों के साथियों के इनाम का विवरण (9-7)

3 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें سمات المؤمنين في الفتن وتقلب الأحوال: साले‍ह बिन अब्दुलअज़ीज़ अल-शेख)

- उत्तर के साथियों का वर्णन | (10-15)

यूनिट नंबर 24

सूरह अल-अंशकाक के तीसवें पारा, सूरह नंबर 84 की आयत 16 से 25 में बताया जा रहा है कि इंसानों के कर्म उनके सामने खुल जाएंगे, फिर कोई यह नहीं कह पाएगा कि उनके साथ अन्याय हुआ है।

“Few Toipics of Unit No.24 "यूनिट संख्या 24 के कुछ विषय"

- क़यामत के दिन की घटना और अविश्वासियों के निवास पर अल्लाह की सकारात्मक शपथ| (16-24)
- ईमान वालों के अज्र का विवरण | (25)

سورة البروج	तीसवें पारा (ज़ुज़) का संक्षिप्त परिचय|	عم

سورة البروج SURAH AL-BUROOJ		
The Big Stars	Burooj	मीनार

"रहस्योद्घाटन का स्थान - मक्का

"The Place of Revelation- MAKKAH

“Few Topics"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य”

- ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली महिलाओं के उत्पीड़न का अंत | 1
- असहाब अल-अख़दूद की कहानी का उल्लेख किया गया है। बताया गया कि इन आस्थावान लोगों ने धर्म और आस्था के लिए अपनी जान दे दी।

व्याख्या के लिए उपयुक्त

- सूरह इंशाक़ाक में क्या बताया गया था और लगातार सूरह में इनकार और इनकार के कारण, आपत्तियों के उत्तर, तर्कसंगत टिप्पणियों और ऐतिहासिक उदाहरणों को समझाने के बाद सूरह बुरुज और सूरह तारिक में धमकियों और (waening) चेतावनियों के रूप में (alert)चेतावनी दी गई है।

1. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें :سمات المؤمنين في الفتن وتقلب الأحوال): सालेह बिन अब्द प्रिय अल शेख़)
2. (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथीर खंड 8 / पृष्ठ 367 देखें)।

- क़ियामत के दिन से रोज़े से लेकर क़ियामत के दिन के इन्कार का लगातार ज़िक्र, क़ियामत के दिन के स्व और अफाक के कारण और सबूत, सबूतों और तर्कों के साथ विभिन्न चरणों के साथ पूरे

वातावरण का उल्लेख, ऐसा लगता है जैसे यह एक लेख है। सूरह क़ियामा से लेकर सूरह अंशक़ाक तक एक ही विषय को मोतियों के हार की तरह प्रतिपादित किया गया है।

- सूरह बुरुज और सूरह तारिक में उल्लेख है कि काफिर कुरैश पुनरुत्थान को नकारने के साथ पैगंबर और उनके साथियों का मजाक उड़ाने की बीमारी से पीड़ित थे। यह आगे इनकार और उसके कारणों पर प्रकाश डालता है।
- इनकार को उदाहरणों और धमकियों के आलोक में समझाया गया है। सूरह बुरुज और सूरह तारिक में ।
- लगातार 10 सूरह तक सूरह अपनी से सूरह अल-आला तक सूचना प्रवेश द्वार। विश्वकोश को दो पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है, वह है आवेदक के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान करना, और प्रभाव के साधन ढूंढना, जबकि दूसरा पहलू यह है कि आवेदक को उच्च गुणों के साथ चित्रित करने का प्रयास करने के अवसर पर ध्यान केंद्रित करना ताकि आत्म-विकास संभव हो सके। दाई(self development) का लाभ उठाने में सक्षम हों (opportunity) (avail) और पैगंबर मुहम्मद के प्रकाश में एक बेहतर दाई बनें।

यूनिट नंबर 25

सूरह अल बुरुज के तीसवें पारा, सूरह नंबर 85 की आयत नंबर 1 से 11 में, अल्लाह सर्वशक्तिमान ने नक्षत्रों और पुनरुत्थान के दिन के साथ आकाश की कसम खाई है और कहा है कि सभी लोगों को एक साथ लाया गया था और उसके बाद पुनरुत्थान के दृश्यों का वर्णन किया गया था और बनी इसराइल के मुहदीन का उल्लेख किया गया था और कहा गया था कि जो लोग उनके बीच विद्रोही थे, उन्हें असहाब अल-अख़दूद कहा जाता था, जो बड़े गड्ढे खोदते थे और उनमें आग जलाते थे और उन्हें पीड़ा देते थे मुहादीन और यह कहा गया था. मुसलमानों पर अत्याचार करने वालों को सजा मिलेगी |

“Few Toipics of Unit No.25 "यूनिट संख्या 25 के कुछ विषय"

- असहाब अल-अख़दूद पर अल्लाह का शाप |(1-9)
- ईमानवालों पर ज़ुल्म करनेवालों से वादा किया गया | (10)

- ईमान वालों के इनाम का ज़िक्र |(11)

यूनिट नं: 26

तीसवीं पारा, सूरह अल बुरुज, सूरह नंबर 85, आयत नंबर 12 से 22 में कहा गया कि अल्लाह की पकड़ बहुत खतरनाक और मजबूत है, फिर अल्लाह की महानता का वर्णन किया गया और फिर फिरौन और समूद के लोगों का उल्लेख किया गया और कहा गया कि अल्लाह ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया है।

“Few Toipics of Unit No.26 "यूनिट संख्या 26 के कुछ विषय"

- अविश्वासियों को चेतावनी कि अल्लाह को हर चीज़ पर अधिकार है | (12-16)
- फ़िरऔन और समूद की मौत का ज़िक्र | (20-17)
- पवित्र क़ुरआन की महिमा का वर्णन |(22-21)

	तीसवें पारा (ज़ुज़) का संक्षिप्त परिचय|	

SURAH AT-TAARIQ		
The Night Comer	Raat me Tuloo hone wala sitara	
"रहस्योद्घाटन का स्थान - मक्का		

"The Place of Revelation- MAKKAH

“Few Topics"कुछ विषय" निश्चित लक्ष्य”

- ○ मनुष्य की वास्तविकता व उसका संक्षिप्त परिचय |
- ○ इस सूरह में मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की याद दिलाई जा रही है।1
- अल्लाह ताला आसमान और सितारों की कसम खा रहा है, मकसद यह है कि ये प्राणी इतने शक्तिशाली हैं कि हम उनसे ईर्ष्या करते हैं, तो हम उनके निर्माता पर विश्वास क्यों न करें?

1 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (अल-टिकेराह باحوال الموتى وامور الاخرة: मुहम्मद बिन अहमद अल-कुर्तुबी)।

2 अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक को पढ़ें أسباب زيادة الإيمان ونقصانه : अब्द अल-रज्जाक बिन अब्द अल-मोहसिन अल-अबद अल-बद्र)।

व्याख्या के लिए उपयुक्त

- सूरह क़ियामा से लेकर इस सूरह तक, क़ियामत की घटना और उसकी वास्तविकता को लगातार ब्रह्मांड, खुद इंसानों और दूसरे सबूतों के ज़रिए समझाया गया है। इस पर विचार करने पर ऐसा लगता है कि यह एक संपूर्ण लेख है।
- सूरह बुरुज और सूरह तारिक में काफिर कुरैश द्वारा परलोक में आस्था और इस्लाम के आम लोगों का मजाक उड़ाने की बात कही गई है। ये सूरह उनके इनकार और उनके इनकार के कारणों पर भी प्रकाश डालती हैं। और इन अविश्वासियों को उदाहरणों और धमकियों से चेतावनी दी गई है।
- सूरह आला से लेकर अगली दस सूरह तक संबोधन सिर्फ़ पुकारने वाले को ही है। दावत के काम में दो पहलुओं पर ध्यान देने की ज़रूरत है: पुकारने वाले की समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए और प्रभावी होने के तरीके खोजे जाने चाहिए, जबकि दूसरा पहलू यह है कि पुकारने वाले को सर्वोच्च गुणों से युक्त बनाने की कोशिश की जाए। daeee self development

पुकारने वाले को आत्म-विकास पर ध्यान देना चाहिए ताकि opportunity avail वह अवसर का लाभ उठा सके और एक प्रभावी पुकारने वाला बन सके ताकि वह पैगंबर के उदाहरण की रोशनी में एक बेहतर और बेहतर पुकारने वाला बन सके।
यूनिट नं. 27

- सूरह अत-तारिक़ के तैंतीसवें अध्याय, सूरह 86, आयत 1 से 17 में मनुष्य की रचना का वर्णन किया गया है, और कहा गया है कि मनुष्य की रचना किसी ऐसी चीज़ से हुई जो पीठ और पसलियों के बीच से निकली थी। उसके बाद, पवित्र कुरान की महानता और उत्कृष्टता और कुरान की सच्चाई का उल्लेख किया गया है।

“Few Toipics of Unit No.27 "यूनिट संख्या 27 के कुछ विषय"

- मृत्यु के बाद पुनरुत्थान की पुष्टि का कथन और फ़रिश्तों में "संरक्षक" फ़रिश्तों का उल्लेख (10-1)
- अल्लाह की कसम, क़ुरआन सच्चा है (11-14)
- अविश्वासियों के लिए चेतावनी (15-17)

	तीसवें पारा (ज़ुज़) का संक्षिप्त परिचय|	

सूरह अल-आला से सूरह अल-ज़लज़ल तक के विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है मानो वह एक ही आयत हो।
(अली, अल-ग़ाशिया, फ़ज्र, बलद ,शमश ,लैल, दोहा, कादरी, अल-तिन और इकरा को छोड़कर)

- इन दस सूरहों में उपदेशक के प्रशिक्षण और काफिरों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों का उल्लेख है। जहाँ एक ओर ईमान वालों को राहत मिली है, वहीं दूसरी ओर काफिरों को अपमानित भी किया गया है।
- ये सूरह सत्य और असत्य को स्पष्ट करने के लिए ऐतिहासिक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। इसके अलावा, इस्लाम के संपूर्ण धर्म का सार, जिसे तीन सिद्धांत कहा जाता है, का भी उल्लेख किया

गया है। इसके अलावा, अल्लाह सर्वशक्तिमान की शक्ति और बंदे पर बरसने वाली नेमतों का भी उल्लेख है।

- सूरह अल-आला और सूरह अल-गशिया में तज़किर का उल्लेख है, जो केवल एक जिम्मेदारी का नाम है, किसी पर थोपने का नाम नहीं है।

قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾﴾ الفجر
قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿وَأَنتَ حِلٌّ بِهَٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾﴾ البلد
قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿قَدْ أَفْلَحَ مَن زَكَّاهَا ﴿٩﴾﴾ الشمس
قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّىٰ ﴿٤﴾﴾ الليل

➢ सूरह अद्-जुहा में पैगम्बरत्व से पहले दी गई नेमतों का उल्लेख है, जबकि सूरह अल-नशरा में पैगम्बरत्व के बाद और हिजरत के दौरान दी गई नेमतों का वर्णन है।

➢ सूरह अत-तिन में इब्राहीम, मूसा और ईसा की पैगम्बरी और उन्हें दी गई इल्हाम का उल्लेख है।

- "अल-तिन" का तात्पर्य इब्राहीम और उनकी पुस्तकों से है।
- "जैतून" का तात्पर्य यीसा और उनके सुसमाचार से है।
- क्योंकि ये दोनों फल उन स्थानों के हैं जहां ये भविष्यद्वक्ता आये थे।
- "माउंट सिनाई" का तात्पर्य मूसा और उसके टोरा से है।
- "وهذا البلد" " का संदर्भ मक्का और पवित्र कुरान है।
- सूरह अत- तिन में विभिन्न पैगम्बरों को दी गई इल्हाम का उल्लेख है, तथा सूरह अल-अलक में इस इल्हाम को "इकरा" कहकर पढ़ने का आदेश दिया गया है।
- कुरान के अवतरण का उल्लेख वास्तव में विद्रोही लोगों के खिलाफ अंतिम सबूत के रूप में किया गया है। चूँकि कुरान का अवतरण अपने संदेश में"بينة" है, इसलिए सबूत को पूरा करना आवश्यक है।
- प्रमाण पूरा होने के बाद क्या होगा, इसका खुलासा "ज़लज़ल" के रूप में एक सूरा द्वारा किया गया है।

सूरह अल-अला से सूरह ज़लज़ल तक की संक्षिप्त रूपरेखा|		
सूरह नाम	अवतरण का स्थान	संक्षिप्त रूपरेखा एवं परिचय |
	मक्की	तौहीद, रिसलत और आख़िरत का संक्षिप्त परिचय, इस सूरह का मुख्य विषय दाई है, दावा के सिद्धांत और नियम और दावा की विधि समझाई गई है।

कुछ लक्ष्य:

- दाई के प्रशिक्षण के लिए एक सूरह, जिसमें पूजा, शुद्धि, एकेश्वरवाद, परलोक और पैग़म्बरी का संक्षिप्त परिचय वर्णित है। 1
- इस सूरह में हमें अल्लाह के गुणों, शक्ति और एकता का प्रमाण मिलता है। 2
- इस छोटे सूरह में तौहीद, पैग़म्बरी और आख़िरत का उल्लेख किया गया था, जो मक्का सूरह का केंद्र बिंदु है। 3

व्याख्या के लिए उपयुक्त

- सूरा अल-क़ियामत 75 से सूरा अल-बुरूज 85 तक, आख़िरत का उल्लेख करने की शैली व्यापक और विस्तृत है, जिसमें बेहतरीन विवरण और चरणों का उल्लेख अलग-अलग अनुच्छेदों में किया गया है।

1. अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक पढ़ें التصفية والتربية وحاجة المسلمين), (अल-नासिर अल-दीन अल-अल्बानी)

2. अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक :أسماء الله وصفاته وموقف أهل السنة منها): मुहम्मद बिन सलीह अल-उथैमीन) को पढ़ें।

3. अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक को पढ़ें العقيدة الصحيحة وما يضادها ونواقض الإسلام): अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्ला बिन बाज)।

गया, जैसे: हसब, हश्र, क़ियामत, बाआथ, नामा अमल , साजिन, अलायिन, अबरार, फज्र, अइयून, तस्नीम, जन्नत, नर्क, सज़ा, नईम, जहीम, ऐतिहासिक और अवलोकन, सार्वभौमिक और आत्म।

- सूरह आला के बाद से शैली बदल गई है, और ध्यान आमंत्रित व्यक्ति से हटकर बुलाने वाले पर केंद्रित हो गया है।

	मक्की	स्वर्ग और नर्क का संक्षिप्त परिचय

कुछ लक्ष्य:

- कयामत के दिन कुछ चेहरे रुसवा होंगे, कुछ चेहरे अपनी हरकतों की वजह से तरोताजा होंगे।
- आप किसमें शामिल होना चाहते हैं???
- न्याय के दिन का विवरण, विश्वासियों और अविश्वासियों के लिए पुरस्कार और दंड।
- अल्लाह के एक होने की सूचना देने वाली निशानियों का उल्लेख |4
- आइये हम इन संकेतों के माध्यम से एक दूसरे को याद दिलाएं।
- अल्लाह ही पुरस्कार देने वाला और दण्ड देने वाला है।
- स्वर्ग के आशीर्वाद और नरक के कष्टों का नक्शा संक्षिप्त और व्यापक तरीके से खींचा गया था। 5
- दैवी शक्ति के कुछ प्रकटीकरणों का वर्णन। ऊँट, फिर आकाश, फिर पहाड़, फिर धरती का धीरे-धीरे उल्लेख किया गया। इसे सीधे आकाश से धरती पर नहीं लाया गया था, बल्कि इसे धरती के बीच में स्थित पहाड़ों पर नजरें गड़ाकर लाया गया था, ताकि चिंतन में कठिनाई पैदा हो।

4 अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक पढ़ें (دلائل التوحيد :محمد بن عبد الوهاب : मुहम्मद बिन अब्द अल-वहाब)।

5 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (سلسلة العقيدة في ضوء الكتاب والسنة : अल-जन्नाह और आग: उमर बिन सुलेमान अल-अश्कर)।

	तीसवें पारा (ज़ुज़) का संक्षिप्त परिचय|	

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- सूरह अल-आला और सूरा अल-गशिया में स्मरण, चिंतन और मनन पर जोर दिया गया है, जिसका अर्थ सूरा अल-आला और सूरा अल-गशिया में स्मरण, चिंतन और मनन पर जोर दिया गया है, जिसका अर्थ है कि उपदेशक को अकादमिक और व्यावहारिक रूप से व्यक्तिगत रूप से खुद को विकसित करना जारी रखना चाहिए, ताकि वह अवसर का लाभ उठा सके और आमंत्रित व्यक्ति के हितों में प्रभावी हो सके।कि उपदेशक को अकादमिक और व्यावहारिक रूप से व्यक्तिगत रूप से खुद को विकसित करना जारी रखना चाहिए, ताकि वह अवसर का लाभ उठा सके और आमंत्रित व्यक्ति के हितों में प्रभावी हो सके।

	मक्की	इंसानियत का बयान|

कुछ लक्ष्य:

- इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार जीवन जीने का प्रयास करें, ताकि आप संतुष्ट आत्मा के साथ मर सकें। कठिनाइयों का सामना करते हुए धैर्य रखने की आदत विकसित करना, तथा हमें मिलने वाली खुशियों और आशीर्वादों के लिए अल्लाह का धन्यवाद करना तथा संसार के पालनहार जो भी निर्णय करें, उससे संतुष्ट रहना भी महत्वपूर्ण है। 7
- इसमें उन पिछली जातियों का भी उल्लेख है जिन्होंने नबियों को झुठलाया, जैसे आद, शमूद और फिरऔन की क़ौम आदि, जिसके कारण उन्हें दण्ड भोगना पड़ा।
- अच्छाई और बुराई के परीक्षण का दर्शन समझाया गया। 8

6 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें الدعوة إلى الله وأخلاق الدعاة: अब्द अल-अज़ीज़ बिन अब्दुल्ला बिन बाज़)।

7 अधिक जानकारी के लिए कृपया यह पुस्तक قاعدة في الصبر:أحمد بن عبد الحليم بن تيمية) पढ़ें।

8 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (الضوابط الشرعية لموقف المسلم من الفتن: सालेह बिन अब्दुलअज़ीज़ अल-शेख)।

- क़यामत के दिन के हालात का ज़िक्र किया गया, दो तरह के समूह होंगे और उनका क्या होगा, इसका भी ज़िक्र किया गया है।
- आत्मसंतुष्ट की परिभाषा |

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- सूरह फज्र में चर्चा का विषय मनुष्य की स्थिति है। सूरह अल-बलाद का फोकस मानवीय पीड़ा है।
- सूरह फज्र में मानवता और असहयोग की आलोचना की गई है, जबकि सूरह बलाद में मानवता, करुणा और सहयोग की महानता का वर्णन किया गया है। दोनों सूरह मानवता के महत्व पर जोर देते हैं। (Human rights)

	मक्की	मनुष्य और मनुष्य की रचना का लेखा-जोखा

कुछ लक्ष्य:

- इस सूरह में मानवता के प्रति करुणा की शिक्षा दी जाती है और अच्छे कार्यों में उत्कृष्टता का आदेश दिया जाता है।

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- सूरह फज्र में चर्चा का विषय मनुष्य की स्थितियाँ हैं। सूरह बलाद का फोकस मानवीय पीड़ा है।
- सूरह अल-फज्र में सहयोग न करने के लिए मानवता की आलोचना की गई है, जबकि सूरह अल-बलाद में मानवता के प्रति करुणा की महानता का उल्लेख किया गया है। दोनों सूरह मानवता के महत्व पर प्रकाश डालते हैं | (Human rights)

---

9 अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें: قاعدة مختصرة فى وجوب طاعۃ اللہ و رسولہ صلى اللہ علیہ وسلم و ولادة الامور: अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह) |

10 अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें: الداء والدواء (الجوابُ الكافى لمن ساُل عن الدواء الشافى) इब्न कय्यिम अल-जवज़ियाह |

	मक्की	बाह्य कार्यों की शुद्धता का विवरण।

कुछ लक्ष्य:

- इसमें मानवीय कार्यों और उनके परिणामों का उल्लेख किया गया है।
- कहा जाता है कि मानवीय क्रियाएं भिन्न-भिन्न होती हैं। एक धर्मी है, दूसरा पथभ्रष्ट है। फिर दोनों की किस्मत का भी खुलासा हो गया है। 11

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- सूरा अल-लैल में आगे कहा गया है कि शुद्धि का परिणाम "दान" और "अच्छे कर्मों में सच्चाई" है और अंततः एक आसान जीवन है, जबकि धोखे का परिणाम कंजूसी और झूठ है और अंततः एक कठिन जीवन है।

	मक्की	आत्मा के सुधार, बाह्य और आंतरिक कार्यों के सुधार के बारे में एक वक्तव्य।

कुछ लक्ष्य:

- इस सूरह का ध्यान मानव आत्मा पर है, पैगंबरों को पढ़ाने का सबसे बुनियादी तरीका शुद्धिकरण है, अन्यथा, समूद के लोगों के भाग्य को देखें जब उन्होंने पैगंबर को अस्वीकार कर दिया और स्वयं पर नियंत्रण न रखने का नुकसान उठाया। 9
- इस सूरह की शुरुआत में अल्लाह सात चीज़ों की कसम खाता है।
- इस सूरह का विषय मनुष्य की आत्मा है। जो इसका अभ्यास करेगा वह सफल होगा और जो नहीं करेगा उसे हानि उठानी पड़ेगी। 10
- समूद के लोगों का उल्लेख किया गया था जिन्होंने अल्लाह के ऊँट को मार डाला और फिर वे स्वयं भी मारे गए।
- इस सूरह में सबसे पहले सूर्य, चंद्रमा, तारे, पृथ्वी, आकाश आदि का उल्लेख किया गया है, उसके बाद मनुष्य का, जिससे पता चलता है कि मनुष्य कितना महत्वपूर्ण प्राणी है।

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- सूरह लैल शुद्धि के फल पर प्रकाश डालता है और आगे बताता है कि शुद्धि का परिणाम "दान और सच्चाई का पालन" वह परिणाम है जिसके कारण व्यक्ति को समृद्ध जीवन का आशीर्वाद प्राप्त होता है, जबकि तदसिया का परिणाम कंजूसी और इनकार है, जो अनिवार्य रूप से इस दुनिया में कठिनाई और परेशानियों का कारण बनता है।

	मक्की	अल्लाह के पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने शिक्षा के गुणों का वर्णन किया है। नबी बनने से पहले अल्लाह की ओर से तीन उपहारों और आशीर्वादों का वर्णन, और तीन आदेश: अनाथों की मदद करना, भिखारियों की मदद करना, और आशीर्वाद बांटना।

कुछ लक्ष्य:

- पैग़म्बरी से पहले मुहम्मद पर अल्लाह के पुरस्कारों का उल्लेख।

11 अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक को पढ़ें الفرقان بين أولياء الرحمن وأولياء الشيطان : अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)।

- इस सूरह में, अल्लाह ताला ने उन पुरस्कारों का उल्लेख किया है जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इस दुनिया में और उसके बाद की शिक्षा पर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिए थे। 12
- तीन पुरस्कारों का उल्लेख किया गया था: एक अनाथ को ढूंढना और उसे जगह देना, खोए हुए लोगों को मार्गदर्शन देना और गरीबों की देखभाल करना।
- उसके विरुद्ध तीन आज्ञाएँ दी गईं: अनाथ के प्रति कठोर न होना, प्रश्नकर्ता को न डाँटना और अपने प्रभु के उपकारों का वर्णन करना। 13

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- यह सूरह और निम्नलिखित सूरह, सूरह अल-शरह और सूरह अल-कौथर, मुहम्मद के लिए अल्लाह के प्यार को दर्शाते हैं।
- सूरह अल-ज़ही में, पैगंबर से पहले आशीर्वाद का उल्लेख किया गया है और सूरह अल-शरह में, पैगंबर के बाद आशीर्वाद और प्रवास के समय का उल्लेख किया गया है।

	मक्की	अल्लाह के पैगंबर के रिफअत और ज़िक्र की ऊंचाई का वर्णन, मुहम्मद पर कुरान का रहस्योद्घाटन |

कुछ लक्ष्य:

- पैगम्बरी के बाद मुहम्मद को मिले अल्लाह के आशीर्वाद का उल्लेख।

• शरह अल-सद्र जैसे महान आशीर्वाद का उल्लेख किया गया है, जो अल्लाह के दूत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिया गया था।

12. अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें شمائل النبي صلى الله عليه وسلم: मुहम्मद बिन ईसा अल-तिर्मिधि)।   13. अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें (فضل كفالة اليتيم: عبد الله بن ناصر بن عبد الله السدحان): अब्दुल्ला बिन नासिर बिन अब्दुल्ला अल-सदाहन)

• अल्लाह सर्वशक्तिमान ने अपने नाम में मुहम्मद (PBUH) का नाम जोड़ा जो हर प्रार्थना में लिया जाता है। [14](ورفعنا لك ذكرك) • एक महत्वपूर्ण सिद्धांत समझाकर साहस दिया जा रहा है कि कठिनाई के बाद आसानी आती है। 15 قَالَ تَعَالَى: ﴿فَإِنَّ مَعَ ٱلْعُسْرِ يُسْرًا ۝٥ إِنَّ مَعَ ٱلْعُسْرِ يُسْرًا ۝٦﴾ الشرح व्याख्या के लिए उपयुक्त: • पैग़म्बरी के बाद प्राप्त आशीर्वाद।		
سورة التين	मक्की	रहस्योद्घाटन के स्थान [शहरों और स्थानों का विवरण।
कुछ लक्ष्य: • इस सूरह में दो विषयों पर चर्चा की गई है: 1. मनुष्य का सम्मान 2. आख़िरत 16:		

- तीन और ज़ितून का अर्थ है फ़िलिस्तीन की भूमि, अर्थात वह भूमि जहाँ अल्लाह ने मूसा से बात की, बलाद अमीन का अर्थ मक्का है। धरती के ये तीन मुखिया वो हैं जिन्हें अल्लाह ने पैग़म्बरी के लिए चुना है। 17

14 अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें (شمائل النبي صلى الله عليه وسلم: मुहम्मद बिन ईसा अल-तिर्मिधि)।

15 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें (عدة الصابرين وذخيرة الشاكرين:ابن قيم الجوزية: इब्न कय्यिम अल-जौज़ियाह)।

16 अधिक जानकारी के लिए, कृपया यह पुस्तक पढ़ें (حقوق الإنسان في الإسلام: अब्दुल्ला बिन अब्दुल मोहसिन अल-तुर्की)।

17 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर, खंड 8, पृष्ठ 434)

- जैसे अल्लाह पवित्र भूमि की शपथ खाता है, वैसे ही अल्लाह ने मनुष्य को पवित्र बनाया है।

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- पैग़म्बरी के बाद मुहम्मद (PBUH) पर अल्लाह का आशीर्वाद।
- इस आयत के अंत में एक प्रश्न है: क्या अल्लाह शासकों का शासक नहीं है? उनका उत्तर:

	मक्की	ज्ञान, कर्म की श्रेष्ठता तथा मनुष्य के स्वभाव का वर्णन | कुरान के खुलासे का पहला उल्लेख |

कुछ लक्ष्य:

- पहला रहस्योद्घाटन, जिसे "सूरह अक्र-ए" के नाम से भी जाना जाता है।
- इस सूरह में ज्ञान, क्रिया और पूजा के कार्य शामिल हैं और यह ज्ञान के आह्वान से शुरू होता है और पूजा के साथ समाप्त होता है। 18
- मनुष्य की विद्रोहशीलता बतायी गयी और इसका कारण यह बताया गया कि वह अपने को अछूत समझता था |

ـب: قَالَ تَعَالَى: ﴿ كَلَّآ إِنَّ ٱلْإِنسَٰنَ لَيَطْغَىٰٓ ﴿٦﴾ أَن رَّءَاهُ ٱسْتَغْنَىٰٓ ﴿٧﴾ إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ ٱلرُّجْعَىٰٓ ﴿٨﴾ ﴾ العلق [19]

18 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें ثمرة العلم العمل: अब्द अल-रज्जाक इब्न अब्द अल-मुहासिन अल-अबद अल-बद्र |

19 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर अल-कुर्तुबी खंड 20 / पृष्ठ 110)

- अबू जहल की कहानी और उस पर आए अज़ाब का ज़िक्र|

قل تعالى :أَرَءَيْتَ ٱلَّذِى يَنْهَىٰ (٩) عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰٓ(١٠)

- इसमें दुनिया के सबसे गुणी व्यक्ति और सबसे अज्ञानी व्यक्ति दोनों का उल्लेख है। एक मुहम्मद हैं, जो सभी मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ हैं, जबकि दूसरी ओर, अबू जहल अज्ञानियों के पिता हैं, और इसका कारण यह है कि उन्होंने सच्चाई से इनकार कर दिया। 20

- जो लोग कलम से लिखना जानते थे उन्हें पहले ही रहस्योद्घाटन में कलम के महत्व के बारे में बता दिया गया था।

قَالَ تَعَالَى: ﴿ ٱلَّذِى عَلَّمَ بِٱلْقَلَمِ ﴿٤﴾ ﴾ العلق [21]

- ज्ञान से तात्पर्य अल्लाह् के नाम पर ज्ञान और अल्लाह् द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर आने वाले ज्ञान से है, अन्यथा अबू जहल भी सांसारिक मामलों में बहुत तेज़ थे, लेकिन आख़िरत के मामले में अपनी अज्ञानता के कारण वह नरक में चले गए। 22

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- यह सूरह, साथ ही सूरह अल-शरह और सूरह अल-कवसर, मुहम्मद के लिए अल्लाह के प्यार की ओर इशारा करते हैं।

- पैग़म्बरी से पहले के आशीर्वाद का उल्लेख सूरह अल-ज़ुहा में किया गया है। सूरह अल-शरह में पैग़म्बरी के बाद और प्रवास के समय के आशीर्वादों का वर्णन किया गया है।

20 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें: شمائل النبي صلى الله عليه وسلم ,: मुहम्मद बिन ईसा अल-तिर्मिधि)।

21 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथीर खंड 8 / पृष्ठ 436)

22 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें: أسماء الله وصفاته وموقف أهل السنة منها) मुहम्मद बिन सालेह अल-उथैमीन - (معالم في طريق طلب العلم – عبدالعزيز بن محمد بن عبدالله السدحان अब्दुल अजीज बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-साधन)

- सूरह अल-तीन में इब्राहीम, यीसा और मूसा के रहस्योद्घाटन का संकेत |
- अल-तैन इब्राहिम और उनकी पुस्तकों को संदर्भित करता है |
- जैतून यीसा और उसके सुसमाचार को संदर्भित करता है |
- सिनाई का तात्पर्य मूसा और उनकी रात से है |
- यह शहर मक्का और पवित्र कुरान को संदर्भित करता है।

<table>
<tr><td colspan="3">

- शिक्षा का महत्व समझाया गया।

</td></tr>
<tr><td colspan="3"></td></tr>
<tr><td> </td><td>मक्की</td><td>लैलात-उल-क़द्र की फ़ज़ीलतों का वर्णन। [जिस रात कुरान अवतरित हुआ दिखाया गया]</td></tr>
<tr><td colspan="3">

कुछ लक्ष्य:

- लैलात-उल-कद्र की अहमियत बताई गई।
- इसमें कुरान के अवतरण के बारे में चर्चा है। 23

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- यह सूरह, साथ ही सूरह अल-शरह और सूरह अल-कवसर, मुहम्मद के लिए अल्लाह के प्यार की ओर इशारा करते हैं।

- पैग़म्बरी से पहले के आशीर्वाद का उल्लेख सूरह अल-ज़ुहा में किया गया है। सूरह अल-शरह में पैग़म्बरी के बाद और प्रवास के समय के आशीर्वादों का वर्णन किया गया है।

</td></tr>
</table>

23 पुस्तक " عظمة القرآن الكريم وتعظيمه وأثره في النفوس في ضوء الكتاب والسنة : सईद बिन अली बिन वाहफ अल-काहतानी"

- सूरह अल-तीन इब्राहीम, यीसा और मूसा के रहस्योद्घाटन को संदर्भित करता है।
- अल-तैन इब्राहिम और उनकी पुस्तकों को संदर्भित करता है।
- जैतून यीसा और उसके सुसमाचार को संदर्भित करता है।
- इस प्रकार सिनाई मूसा और उनकी रात को संदर्भित करता है।
- यह शहर मक्का और पवित्र कुरान को संदर्भित करता है।
- क्या सूरह तीन में रहस्योद्घाटन का उल्लेख किया गया था, उसके बाद कुरान के पहले रहस्योद्घाटन का उल्लेख सूरह इक़रा में किया गया था, सूरह क़द्र में यह बताया गया था कि पहला रहस्योद्घाटन कब हुआ था, उसके बाद सूरह अल-बैयीना में बताया गया था कि कुरान के माध्यम से अल- बैयीना का समापन हुआ था। सूरह तीन में संकेत किया गया है और सूरह क़द्र में उल्लेख किया गया है कि लैलतुल-क़द्र वह समय था जब यह रहस्योद्घाटन हुआ था।

	मदनी	क़ुरान के अवतरित होने के बाद सबूत और सबूत पूरे करने की व्यवस्था की गई ताकि क़यामत के दिन किसी के पास कोई बहाना न बचे।

कुछ लक्ष्य:

- स्पष्ट दृष्टि के साथ हुज्जत का समापन 24
- ईमानदारी से पूजा-पाठ की शिक्षा दी गई, जो धर्म का आधार है। 25

24 (अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें: الإسلام دين كامل – محمد الأمين الشنقيطي मुहम्मद अल-अमीन अल-शंकिती)

25 أعمال القلوب (الإخلاص):محمد صالح المنجد : मुहम्मद सालेह अल-मुनाजिद |

- काफ़िरों का भाग्य बुरा होता है और ईमानवालों का भाग्य अच्छा होता है। 26

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- रहस्योद्घाटन का उल्लेख सूरह अल-तैन में किया गया था, उसके बाद कुरान के पहले रहस्योद्घाटन का उल्लेख सूरह ईक़रा में किया गया था, जैसे ही कुरान प्रकट हुआ, बैयीना के प्रमाण यानी सबूत की समाप्ति स्थापित हो गई और पहले रहस्योद्घाटन का स्थान मक्का था।

सूरह अल-ज़लज़ल से लेकर सूरह नास तक का लेख एक हार की तरह दिया गया है|

- दोनों सूरहों में समानता पाई जाती है कि एक में पुनरुत्थान का उल्लेख है और दूसरे सूरह में लापरवाही के कारणों का उल्लेख है।
- सूरह अल-अदियात में उन कारणों का जिक्र किया गया है जिनकी वजह से इंसान आख़िरत की तैयारी में कोताही बरतता है (जैसे लोभ, लालच आदि)। इन दोनों में यही समानता है|
- सूरह अल-क़रिया और सूरह अल-तकाथूर में: शेष एवं खाते का उल्लेख है।
- और इंसान का आलस्य इतना है कि उसे दुनिया के हिसाब की चिंता है|
- सूरह अल-अस्र में सफलता के चार सिद्धांत दिए गए हैं।
- सूरह अल-हमज़ा में असफल होने वालों के लिए एक विधि है।

26 अधिक जानकारी के लिए, الفوز العظيم والخسران المبين في ضوء الكتاب والسنة : : सईद बिन अली बिन वहफ अल-क़हतानी)।

-

- सूरह अल-फ़िल और कुरैश में कुरैश के लोगों को संबोधित करते हुए कहा गया है: हे कुरैश के लोगों, सफलता के लिए केवल नेतृत्व ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि शहादत की स्वीकारोक्ति और इस्लाम धर्म का पालन आवश्यक है। जैसा कि उन्होंने कहा: فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَٰذَا الْبَيْتِ

- सूरह अल-माऊन, सूरह अल-कौथर और सूरह अल- काफ़िरून में यह उल्लेख किया गया है कि कुछ क़ुरैशों की नैतिक स्थिति इतनी कम थी कि वे अनाथों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते थे, और उन्होंने आख़िरत से भी इनकार कर दिया और पूजा में कमी की। ऐसे मामले में, मक्का के कुरैशों से उनका पद छीन लिया गया और उन्हें विश्वासियों को दे दिया गया क्योंकि वे ही वास्तव में इसके हकदार थे।

- इस सूरह में साथियों के सम्मान और अविश्वासी कुरैश के अपमान का वर्णन किया गया है। (सूरह अल-माऊन) लेकिन सूरह काफ़िरून में बारात का एलान किया गया और हुज्जत के पूरा होने के लिए यह दावा का आखिरी चरण है।

- सूरह अल-नस्र और सूरह अल-लाहब: सूरह अल-नस्र सच्चाई की जीत का संकेत है और सूरह अल-लाहब झूठ की हार और सच्चाई की जीत का संकेत है। सत्य की हमेशा जीत होती है और झूठ की हार होती है।

- सूरह इखलास: तौहीद ईमानदारी से खत्म होनी चाहिए। इस तरह कि शुरुआत नबाद और नस्ताइन से होती है।

- मुआवज़तीनों के बीच: मार्गदर्शन के मार्ग पर दृढ़ रहने के लिए, हमेशा अल्लाह की मदद लेंनी चाहिए।

अल्लाह ब्रह्मांड में अल्लाह की विशालता का जिक्र कर रहा है। (प्राणी, रात, जादू और ईर्ष्या) इन सबका मूल कारण शैतान की कानाफूसी है।
सूरह अल-नास अल-सुरा शैतान की कानाफूसी पर केंद्रित है क्योंकि वह मनुष्य का मुख्य दुश्मन है और कानाफूसी भ्रष्टाचार की जड़ है।

	मदनी	उस समय भूकंप की भयावहता और दृश्य का वर्णन जब प्रलय स्थापित किया जाएगा, जबकि पृथ्वी अपनी आंतरिक सामग्री बाहर फेंक देगी।

कुछ लक्ष्य:

- उस समय की भयावहता का एक दृश्य जब प्रलय स्थापित हो गया था। 27
- इसमें क़ियामत के भूकंप के बारे में एक बयान है। जिस दिन ज़मीन अपना माल बाहर फेंक देगी और आदम की औलाद के कामों की गवाही देगी। 28

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- क़ुरआन के अवतरित होने का ज़िक्र और साथ ही अवज्ञाकारियों के ख़िलाफ़ सबूत का मुकम्मल होना, क़ुरआन के नाज़िल होने के बाद सबूत आया और इस तरह सबूत का मुकम्मल होना हुआ।

27 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (التذكرة بأحوال الموتى وأمور الآخرة: मुहम्मद बिन अहमद अल-कुर्तुबी)

28 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें: (من مشاهد القيامة وأهوالها وما يلقاه الإنسان بعد موته): अब्दुल्ला बिन जार अल्लाह बिन इब्राहिम अल जार अल्लाह)

- अब विश्वास न आये तो भूकम्प से नौकरों का भाग्य खुल जायेगा और यह भी मालूम हो जायेगा कि इनाम मिलेगा।

- यह मदनी सूरह है जबकि इसकी शैली मक्की सूरह के समान है।

सूरह नाम	अवतरण का स्थान	संक्षिप्त रूपरेखा एवं परिचय।
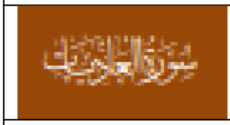	मक्की	

कुछ लक्ष्य:

- पुनरुत्थान के दिन की तैयारी में लापरवाही के कारणों को समझाया गया।

- मुजाहिदीन के घोड़ों के बारे में कहा जाता है कि अल्लाह ने उनकी कसम खाई है ताकि उनका सम्मान और अनुग्रह स्पष्ट हो। 29

- अल्लाह ने इंसान के कुफ्र का हाल बयान किया है।और बताया कि उन्हें दौलत से कितना प्यार है। फिर कहा गया कि सभी को अल्लाह के पास जाना होगा और वह तुम्हारे कर्मों का हिसाब लेगा।

29 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें: الجهاد في سبيل الله في ضوء الكتاب والسنة : सईद बिन अली बिन वाहफ अल-काहतानी"

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

सूरह अल-ज़लज़ल में पुनरुत्थान के दिन और गणना का उल्लेख है, जबकि सूरह अल-अदियत में इसके बाद की तैयारी की उपेक्षा के कारणों का उल्लेख है, जैसे: अल-शाह (लालच), हब अल-खैर (लालच), आदि। 30

	मक्की	क़यामत और मीज़ उनका बयान। जीवन का उद्देश्य उपेक्षा करना नहीं है और वह है ईमान और नेक कर्मों का बोझ बढ़ाने के बारे में प्रतिदिन सोचना।

कुछ लक्ष्य:

- परलोक का हिसाब मत भूलो। 31
- कयामत का जिक्र किया गया |
- फिर ईमान वालों और काफ़िरों के बीच सज़ा और इनाम का फ़र्क समझाया गया है। 32

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- सूरह अल-क़राआ आख़िरत के कर्मों की सूची की अवधारणा प्रस्तुत करता है, जबकि सूरह अल-तकाथिर कर्मों की उसी सूची और आख़िरत की याद दिलाने का उल्लेख करता है:

- 30 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (الغفلة .. مفهومها، وخطرها، وعلاماتها، وأسبابها،: सईद बिन अली बिन वहफ़ अल-क़हतानी)
- (التذكرة بأحوال الموتى وأمور الآخرة :محمد بن أحمد القرطبي): मुहम्मद बिन अहमद अल-कुरतुबी)
- 32 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें الفرقان بين أولياء الرحمن وأولياء الشيطان: अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)।

- यहां नर्क की आग को "ऊंम" कहा जाता है| ऐसा कहा जाता है कि जैसे माँ बच्चे को आश्रय देती है, वैसे ही अविश्वासियों की शरण का स्थान आग होगी।

	मक्की	लालच, वासना और लोभ का बयान। [सत्य को स्वीकार करने में क्या बाधा है]

कुछ लक्ष्य:

- भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन आवश्यक है। 33
- यह मक्का सूरह है जिसमें इंसान की लापरवाही और दुनिया के प्रति उसके आकर्षण का जिक्र किया गया है |34
- कुछ लोग अपने शरीर के लिए जीते हैं और आत्मा को त्याग देते हैं। जबकि मृत्यु के साथ शरीर मिट्टी को सौंप दिया जाता है और आत्मा बरजख में चली जाती है। आत्मा का भोजन अल्लाह की आज्ञाकारिता है यदि उसे केवल शरीर की परवाह है तो आत्मा का क्या होगा? 35

	मक्की	विश्वासियों के चार मुख्य गुणों का वर्णन |

33 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (किताब अल-रूह: इब्न क़य्यिम अल-जौज़ियाह)।

अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें الغفلة .. مفهومها، وخطرها، وعلاماتها، وأسبابها): सईद बिन अली बिन वाहफ अल-क़हतानी)

35 अधिक जानकारी के लिए, कृपया इस पुस्तक को पढ़ें حقوق دعت إليها الفطرة وقررتها الشريعة: मुहम्मद बिन सालेह अल-उथैमीन)।

कुछ लक्ष्य:

- सफलता के लिए पाठ्यक्रम |(Syllabus)[36]
- अगर कोई इन बातों को लागू करेगा तो लोगों को परेशानी होगी |

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- सूरह अल-असर में एक सफल व्यक्ति के चार सिद्धांतों का उल्लेख किया गया था, जबकि सूरह हमजा में एक असफल व्यक्ति के संकेतों का उल्लेख किया गया था। 37
- यह मक्की सूरह दिखने में छोटा है लेकिन इसमें अर्थ का सागर समाहित है।
- इमाम शफ़ीई, अल्लाह ने कहा: यदि अल्लाह ने सूरह अस्र के अलावा कोई अन्य सूरह प्रकट नहीं किया होता, तो यह सूरह पर्याप्त होती। क्योंकि इस्लाम की बुनियाद चार चीज़ों पर आधारित है: ईमान, नेक अमल, सच्चाई की इच्छा और सब्र की हिदायत। 38

	मक्की	असफल व्यक्तियों के लक्षण बताइये।

36 (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें - الأمر بالاجتماع والإئتلاف والنهي عن التفرق: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)

37 अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक को पढ़ें الفوز العظيم والخسران المبين في ضوء الكتاب والسنة: बिन अली बिन वाहफ अल-क़हतानी ने कहा) 38 (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें - أركان الإسلام في ضوء الكتاب والسنة : सईद बिन अली बिन वाहफ अल-क़हतानी अल-उसूल अल-तलरीम: मुहम्मद बिन अब्द अल-वहाब)

कुछ लक्ष्य: • असफल मनुष्य के लक्षणों का वर्णन | 39		
	मक्की	अब्राहा और उसके भाग्य की कहानी। और इस सूरह में यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि कुरैश काफिर काबा की इमारत की रक्षा करने के योग्य नहीं हैं।
कुछ लक्ष्य:		

- काबा के ज़िम्मेदार वही लोग हैं जो तौहीद के वाहक हैं और इसमें झूठ की कमज़ोरी और दुर्बलता भी उजागर हुई है। 40
- हाथियों की कहानी बताई गई है| जिसने काबा को ध्वस्त करने का फैसला किया था |
- यह कहानी हर समय के अहंकारी, अत्याचारी और क्रूर लोगों के लिए एक सबक है। इसीलिए "तर" शब्द आया जो वर्तमान अखण्ड रूप है। इसलिए, उन्हें पता होना चाहिए कि ऐसे लोगों का अंत अब्राह और उसकी सेना की तरह होगा। 41

39 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें। إتحاف أهل الإيمان بما يعصم من فتن هذا الزمان: अब्द अल्लाह बिन जार अल्लाह बिन इब्राहिम अल जार अल्लाह) |

40 (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें, تنبيه الرجل العاقل على تمويه الجدل الباطل: अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)|

41 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें। تذكير البشر بفضل التواضع وذم الكبر: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह)|

	मक्की	काबा की श्रेष्ठता एवं पवित्रता का वर्णन | काबा की इमारत की सुरक्षा में काफ़िर क़ुरैश की अक्षमता और गैर-जिम्मेदाराना रवैये के साथ-साथ तौहीद की उच्चता, तौहीद को निमंत्रण और तौहीद की अमानत का भुगतान करने का अधिकार अयोग्य घोषित कर दिया गया। तीसवां पारा, सूरह क़ुरैश, सूरह नं. 106- वाक्य: 4- इस सूरह में काबा की उत्कृष्टता और पवित्रता का वर्णन किया गया है। क़ुरैशों से कहा गया कि काबा का असली उद्देश्य एकेश्वरवाद का संदेश है, लेकिन क़ुरैशों ने इसे शिर्क का घर बना

		दिया, हालांकि इस घर में काबा का महत्व उनके जीविका का स्रोत था।

कुछ लक्ष्य:

- तौहीद व्यक्ति को पवित्र काबा की सुरक्षा के योग्य बनाता है। 42

अविश्वासी क़ुरैश का मानना था कि उनकी स्थिति और स्थिति के कारण, उनका जीवन और संपत्ति सुरक्षित और सुरक्षित थी, इसलिए उन्होंने शुद्ध पूजा छोड़ दी और बहुदेववादी पूजा में लग गए। अल्लाह क़ुरैश के काफ़िरों को याद दिला रहा है कि तुम घमंड मत करो

42 (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें - (عدة الصابرين وذخيرة الشاكرين:ابن قيم الجوزية: इब्न क़य्यिम अल-जौज़ियाह)|

---

43 (अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें - (مكة بلد الله الحرام:عبد الملك القاسم: अब्दुल मलिक अल-कासिम) |

		ऐसा कहा जाता है कि वे आपका अपमान करते हैं और गरीबों और जरूरतमंदों को खाना नहीं खिलाते हैं, और उनकी प्रार्थनाओं की उपेक्षा करते हैं और दिखावा करते हैं।

आपको धन्यवाद देना चाहिए और शुद्ध पूजा करनी चाहिए, लेकिन आपकी पात्रता गायब हो रही है, न काबा की सुरक्षा, न एकेश्वरवाद और शुद्ध पूजा की सुरक्षा, न ही मामलों में सीधा या सीधे परलोक में। 43

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- इनाम दो प्रकार के होते हैं: एक नुकसान को दूर करना, जिसका वर्णन सूरह अल-फ़ैल में किया गया है, और दूसरा लाभ की प्राप्ति, जिसका उल्लेख सूरह क़ुरैश में किया गया है। अल्लाह इन नेमतों पर उसे उसका धन्यवाद करने, उसकी स्तुति करने और उसकी आराधना करने का आदेश दिया गया है।

	मक्की	काफ़िर कुरैश की अक्षमता की व्याख्या, यानी काबा की इमारत की सुरक्षा के लिए, साथ ही काबा के संदेश, यानी तौहीद के लिए, लेकिन आख़िरत और क़यामत के दिन पर विश्वास की कमी के कारण, उन्हें छोटे अच्छे कामों में भी असफल और अक्षम घोषित कर दिया गया। इसलिए, अविश्वासी कुरैश की जड़ें काट दी गईं और मुहम्मद और उनके साथियों को काबा की जिम्मेदारी और तौहीद को बुलाने की जिम्मेदारी सौंपी गई। तीसवाँ परिच्छेद, सूरह अल-मौन, सूरह नं. 107-जुमला आयत :7- इस सूरह में, बहुदेववादियों को आख़िरत और क़यामत के दिन के बारे में बताया गया है । मक्का और काफ़िर कुरैश ईमान नहीं लाते, उनका ज़िक्र किया गया और कहा गया ।

कुछ लक्ष्य:

- आख़िरत पर विश्वास व्यक्ति को अच्छे कर्म करने के लिए आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है, अन्यथा व्यक्ति बुरे कर्मों का शिकार बन जाता है।
- इसमें दो प्रकार के लोगों का उल्लेख है, एक अविश्वासी जो अल्लाह के आशीर्वाद के प्रति कृतघ्न है और परलोक पर विश्वास नहीं करता। और दूसरा प्रकार मुनाफ़िक़ों का है जो दिखावे के साथ इबादत करते हैं और सच्चे दिल से अल्लाह की इबादत नहीं करते। 44

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- अब्दुल्ला बिन अब्बास का कहना है कि अल्लाह ने "अन" का इस्तेमाल किया है न कि "फा" का और "एन सलाथम" का मतलब एक पाखंडी है। 45

	मक्की	नाहर कौसर के अनुदान का वृत्तान्त और शत्रु की अनिच्छा का उल्लेख। तीसवां पारा, सूरह अल-कौथर, सूरह नंबर 108-वाक्य, छंद 3- इस सूरह में, कौथर शहर अल्लाह के पैगंबर को दिया गया था।

44 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (صفات المنافقين:ابن قيم الجوزية) इब्न क़य्यिम अल-जौज़ियाह)

45 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 8 / पृष्ठ 493)

		जाने का जिक्र है और कहा गया कि जो लोग पैगम्बर (सल्ल.) को अजन्मा कहते हैं, वे वास्तव में अजन्मे लोग हैं।

कुछ लक्ष्य:

- अल्लाह के आशीर्वाद और कृपा का उल्लेख अल्लाह के दूत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर किया गया था।

- यह एक सूरह है जो अल्लाह के दूत के ज्ञान की महिमा और उत्कृष्टता का वर्णन करता है, और इस दुनिया में और उसके बाद उसकी स्थिति और रैंक क्या होगी, इसका उल्लेख इसमें किया गया है। 46

- उसके लिए धन्यवाद, पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को अल्लाह का शुक्रिया अदा करने और उसकी इबादत करने का आदेश दिया गया है।

- आप इस दुनिया और आख़िरत में सफलता प्राप्त करेंगे और आपके दुश्मन सभी भलाई से वंचित हो जाएंगे।

- अविश्वासी कुरैश का शासन समाप्त हो जाता है और मुहम्मद और उनके अनुयायियों और समर्थकों का शासन, नेतृत्व और सम्मान आता है।

- इस्लाम काफिरों से रिश्ता रखने से नहीं रोकता, इस्लाम इंसान को दखल देने और समझौता (Compromise) करने से रोकता है।

46 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें। शमैल अल-नबी, : मुहम्मद बिन ईसा अल-तिर्मिधि) |

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

उन्होंने काफ़िर क़ुरैश और अविश्वासियों की अवज्ञा का उल्लेख करने के बाद सूरह कौथर में कहा, "इन शतक हो अल-अबतर"। और जिन काफ़िरों पर सबूत पूरा हो चुका है, उनके लिए अपनी बेगुनाही का इज़हार करना ज़रूरी है:

لكم دينكم ولي دين: [47]

	मक्की	बहुदेववादियों को बहुदेववाद से बरी करने की घोषणा करना। तीसवां पारा, सूरह अल- काफिरून, सूरह नंबर 109- वाक्य आयतें: 6 - इस सूरह में मुश्रिकों को शिर्क से मुक्ति की घोषणा की गई है और यह स्पष्ट कर दिया गया है कि तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए है और हमारा धर्म हमारे लिए है।

कुछ लक्ष्य:

- यह सूरह अल-तौहीद है और यह एक सूरह है जो शिर्क और गुमराही से मुक्त है। 48
- स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि काफिरों से व्यवहार रखा जा सकता है। रिश्ते निभाए जा सकते हैं लेकिन इस्लाम से समझौता (compromise) नहीं किया जा सकता |
- विश्वास करो और बच जाओ या अविश्वास करो और अनन्त दंड भुगतो। 49

47 (अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें (अल-वला वल-बारा फ़ि-इस्लाम: सालेह बिन फ़ौज़ान अल-फ़ौज़ान)।

48 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें اقتضاء الصراط المستقيم لمخالفة أصحاب الجحيم- : अहमद बिन अब्द अल-हलीम बिन तैमियाह

(अधिक जानकारी के लिए, यह पुस्तक पढ़ें - अल-वला वल-बारा फ़ि-इस्लाम: सालेह बिन फ़ौज़ान अल-फ़ौज़ान)

- सूरह अल- काफिरून: यह ईमानदारी या तौहीद व्यावहारिक इरादे का दूसरा सूरह है |

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- इब्न कय्यिम सूरह अल- काफिरून और सूरह अल-इखलास के बारे में कहते हैं, अल्लाह तआला ने इन दो प्रकार के तौहीद को इखलास के दो सूरह में एकत्र किया है और वे दो सूरह हैं: सूरह अल- काफिरून तौहीद में व्यावहारिक इरादा शामिल है, और सूरह इखलास तौहीद में व्यावहारिक ज्ञान शामिल है। सूरह इखलास अल्लाह के योग्य उत्तम गुणों और उनसे बचने योग्य दोषों और उदाहरणों का वर्णन करता है। सूरत अल- काफिरून में, बिना किसी साझीदार के केवल एक अल्लाह की पूजा करना और उसके अलावा सभी मंदिरों की पूजा से उसे शुद्ध करना। जब ये दोनों मिलते हैं तो तौहीद पूरी हो जाती है।

	मदनी	जीत और जीत का बयान | इस्लाम धर्म को मानने वालों के लिए खुशखबरी का जिक्र | तीसवां पारा, सूरह अल-नस्र, सूरह नंबर 110- कुल आयतें: 3- इस सूरह में कहा गया कि अल्लाह की मदद, जीत और सफलता आ गई है, लोग अब इस्लाम में प्रवेश करेंगे, इसलिए अल्लाह की स्तुति करो, उसकी महिमा करो और उसकी स्तुति करो।

कुछ लक्ष्य:

- प्रार्थनाकर्ता को सर्वशक्तिमान अल्लाह का शुक्रिया अदा करते रहना चाहिए और मानव जाति को दिए गए मार्गदर्शन के लिए उसकी क्षमा मांगनी चाहिए।

- यह मदनी सूरह है, जिसमें मक्का की विजय का शुभ समाचार है।
- मुसलमानों का सम्मान, अरब प्रायद्वीप में इस्लाम का प्रसार और सत्य का वर्चस्व तथा असत्य का विनाश तथा बड़ी संख्या में लोगों का इस्लाम में प्रवेश। एक अच्छी खबर है. (अल-बुखारी 4294)
- अल्लाह का समर्थन और क्षमा माँगने के बीच क्या संगतता है? 50
- जब किसी को जीत मिलती है तो वह आम तौर पर अहंकारी हो जाता है और अल्लाह को भूल जाता है, इस्तिग़फ़ार इस स्थिति को दूर कर देता है। इससे यह अहसास होता है कि जीत गर्व करने की चीज नहीं है, बल्कि यह अल्लाह की मदद है जिसके लिए व्यक्ति को उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए और माफी मांगनी चाहिए, जैसा कि हर प्रार्थना के अंत में सिखाया जाता है। इस दृष्टि से कि हमारी इबादत में कोई कमी नहीं है और यह पूर्णता विनम्रता और आज्ञाकारिता है और अल्लाह को यह बहुत पसंद है।
- सूरत अल-नस्र में कहा गया है कि जीत हमेशा सच्चाई की होती है। 51

	मक्की	जो इस्लाम का पालन नहीं करता वह असफल है। तीसवाँ पारा, सूरह अल-मसाद/लहब, सूरह नं. 111- कुल आयतें: 5- इस सूरह में अबू लहब और उसके अंत का विस्तार से वर्णन किया गया है।

50 (अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। شرح حديث سيد الاستغفار : अब्द अल-रज्जाक बिन अब्द अल-मोहसिन अल-अब्द अल-बद्र)

51 (अधिक जानकारी के लिए यह पुस्तक पढ़ें (إظهار الحق:رحمة الله بن خليل الرحمن الهندي)।

कुछ लक्ष्य:

- यह हर उस व्यक्ति का विनाश है जो इस धर्म के साथ बुरा इरादा रखता है। 52
- यह एक मक्का सूरह है और इसका नाम सूरह अल-लहब और सूरह तिबत भी है।
- अल्लाह ने अबू लहब और उसकी पत्नी को आग की खुशखबरी दी, उसकी पत्नी के गले में रस्सी होगी, जो एक विशेष प्रकार की सजा है क्योंकि वह अल्लाह के दूत को भी बचाती थी। 53
- सईद बिन अल-मुसीब, कहते हैं: अबू लहब की पत्नी के गले में शानदार गहनों का एक हार था, जिसे वह मुहम्मद से दुश्मनी दूर करने के लिए समर्पित करती थी। इसलिए अल्लाह ने उसके गले में आग की रस्सी डालने का अज़ाब चुना।

	मक्की	इस सूरह के रहस्योद्घाटन में एक अंतर है। मुशफ़ मदीना के अनुसार यह सूरह मक्की है। शुद्ध एकेश्वरवाद का एक व्यापक कथन। तीसवाँ पारा, सूरह अल-इखलास, सूरह नंबर 112- वाक्य आयतें: 4- इस सूरह को सूरह तौहीद भी कहा जाता है, इस सूरह में अल्लाह तआला की तौहीद और बहुदेववाद की मनाही बताई गई है।

52 अधिक जानकारी के लिए, आपको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए (अल-सरम अल-मसलूल अली शतम अल-रसौल : अहमद बिन अब्दुल हलीम बिन तैमियाह)।

53 (अधिक जानकारी के लिए, तफ़सीर इब्न कथिर खंड 8 / पृष्ठ 515)|

		इसका खंडन किया गया और कहा गया कि अल्लाह ताला हर चीज़ से स्वतंत्र है।

कुछ लक्ष्य:

- तौहीद शुद्ध सत्य और झूठ के बीच का अंतर है। इसके जिक्र के साथ-साथ अल्लाह ताला की खूबियों का भी जिक्र किया गया है।
- अविश्वासियों कुरैश ने भी एकेश्वरवाद का दावा किया लेकिन एकेश्वरवाद शुद्ध से बहुत दूर था, इस सूरह में संदेश है कि मोक्ष के लिए न केवल एकेश्वरवाद बल्कि शुद्ध एकेश्वरवाद की भी आवश्यकता है।
- यह सूरह अल्लाह का परिचय देता है। 54
- सूरह अल-इखलास: यह परम दयालु का गुण है और इसमें एकेश्वरवाद का ज्ञान है।
- इमाम रज़ी, कहते हैं: जान लें कि उपाधियों की प्रचुरता अधिक उत्कृष्टता का संकेत देती है, और हमारे पास इसके लिए एक गवाह है, जैसे कि उनके कुछ शीर्षक हैं: पहला: सूरह अल-तफ़रीद, दूसरा: सूरह अल-ताजरीद, तीसरा: सूरह अल-तौहीद, चौथा: सूरह अल-इखलास।

54 अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (इब्न तैमियाह द्वारा तफसीर सूरत अल-इखलास اتحاف الخلق بمعرفة الخالق: अब्दुल्ला बिन जराल्लाह बिन इब्राहिम अल-जरल्लाह, शरुत ला इलाहा इलालाह मआरिज अल-कुब्बल अल-हिकामी और अब्द अल-रज्जाक अल-बद्र) अल-अबाद (फ़िक़्ह अल-दुआइय्याह और अल-अधकर और नूर अल-इखलास, अल-क़हतानी द्वारा कलीमत अल-शार्क)।

- इन सभी नामों में जो समानता है वह सर्वशक्तिमान अल्लाह का एकेश्वरवाद है। हाल ही में इब्न कय्यिम, ने इन दो सूरह (सूरह अल- काफिरून और सूरह अल-इखलास) के शब्दों को पारित किया है।

	मक्की	इस सूरह के रहस्योद्घाटन में एक अंतर है। मुशफ़ मदीना के अनुसार यह सूरह मक्की है। रोगों के निवारण और विपत्तियों और 4 बाह्यताओं से सुरक्षा के लिए प्रार्थना शत्रु से मुक्ति हेतु प्रार्थना| तीसवाँ पारा, सूरह अल-फ़लक, सूरह नं. 113-जुमला आयत 5- इस सूरह में बीमारियों और बीमारियों से लड़ने की प्रतिरक्षा प्रणाली है, और जादू टोना, ईर्ष्या, ईर्ष्या और बुराई से सुरक्षा के लिए भी प्रार्थना की जाती है।

कुछ लक्ष्य:

- मनुष्य की बाहरी परिस्थितियों की परेशानियों और पीड़ाओं से शरण लेना।
- इसमें कहा गया कि हर मामले में व्यक्ति को अल्लाह की ओर मुड़ना चाहिए।
- सूरह अल-फ़लक़: अल-फ़लक़ बाहरी या बाहरी बुराई के ख़ात्मे और मुआवज़े की स्थिति के बारे में बताया गया था, जिस तरह अल्लाह रात के अंधेरे को दूर कर दिन की रोशनी लाता है, वह इस बाहरी बुराई को दूर करने और उसमें से अच्छाई निकालने में भी सक्षम है।

व्याख्या के लिए उपयुक्त:

- सूरह फलक में बाहरी दुश्मनों से पनाह मांगी गई है। सूरह नास में आंतरिक बुराईयों और दुश्मनों से पनाह मांगी गई है।

	मक्की	इस सूरह के रहस्योद्घाटन में एक अंतर है। मुशफ़ मदीना के अनुसार यह सूरह मक्की है। आंतरिक दुश्मन (शैतान मु-नफ्स अमारा) से बचने के लिए दुआ और ता'अवज़, अल्लाह के गुणों का वर्णन। तीसवाँ पारा, सूरह अल-नास, सूरह संख्या 114 - कुल आयतें: 6 - इस सूरह को पिछले सूरह की तरह मुआव्ज़ भी कहा जाता है, अर्थात इस सूरह के माध्यम से अल्लाह की शरण प्राप्त की जाती है। इस सूरह में अल्लाह सर्वशक्तिमान के गुणों का वर्णन किया गया है।

कुछ लक्ष्य:

- आंतरिक बुराई यानी शैतान की फुसफुसाहट से पनाह मांगी गई है।

- अल-मुआविज़्तिन का एक और सूरह है, जिसमें अल्लाह दिलों में फुसफुसाने वाले की बुराई से पनाह मांगता है, चाहे वह जिन्नों में से हो या इंसानों में से। 55

- इसमें नास शब्द बार-बार आया है।

- यह कुरान का आखिरी अध्याय है।

قَالَ تَعَالَى: ﴿ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝٢﴾ الفاتحة
قَالَ تَعَالَى: ﴿مِنَ ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ ۝٦﴾ الناس

- इसकी शुरुआत इन शब्दों से हुई: भगवान की स्तुति से शुरू और दुष्ट जिन्न और मनुष्यों से भगवान की शरण लेने की प्रार्थना के साथ समाप्त हुआ। एक आदर्श शुरुआत और एक आदर्श अंत है।

- सूरह अल-फ़ातिहा से शुरू होने और मुआविज़ 3 पर समाप्त होने का मतलब है कि एक सेवक को हर स्थिति की शुरुआत और अंत में अल्लाह की शरण लेनी चाहिए। 56

- सूरह अल-नास आंतरिक और आंतरिक बुराइयों को दूर करने की प्रक्रिया में प्रकट हुआ था और यह तावज़ू की स्थिति के बारे में पता चला था, जो आंतरिक बुराइयां हैं। यह उचित है कि इसे इन विशेषताओं (रब्बी अल-नास, मलिक अल-नास, अल्लाह अल-नास) द्वारा बहाल किया जाना चाहिए।

55 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें (शरह किताब धिम्म अल-मोसोसिन वल-तहज़ीर मिन अल-वोसोसा: इब्न कय्यिम अलजुज़िया)

56 (अधिक जानकारी के लिए, इस पुस्तक को पढ़ें - अतहर अल-धिक्कार अल-शरिया फाई तर्द अल-हम वल-ग़म: अब्द अल-रज्जाक बिन अब्द अल-मुहासिन अल-अब्द अल-बद्र) शेख अब्द अल-रज्जाक अल-अब्द अल-अबद द्वारा फ़िक़्ह अल-दिया वा अल-धिकार।

- शेख अल-इस्लाम इब्न तैमियाह, भगवान कहते हैं: यह सूरह नास नौकर से बुराई को दूर करने के लिए है, और सूरह फलक नौकर से उस बुराई को दूर करता है जिसमें नौकर प्रवेश नहीं करता है। अल्लाह जानता है 57

- और इब्न क़य्यिम ने इसे समझाया, जिसके बाद स्पष्टीकरण के लिए कोई जगह नहीं है। उन्होंने कहा: इस सूरह (सूरत अल-नास) में उस बुराई से शरण लेना शामिल है जो पाप और अपराध का कारण है, और यह बुराई मनुष्य का आंतरिक मामला है, जो इस दुनिया में और उसके बाद सजा का कारण है। स्वयं के प्रति क्रूरता का कारण बनता है और आंतरिक बुराई है:

- पहली बुराई (बाहरी बुराई): नौकर ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं है और उसे इसे रोकने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह उसके वश में नहीं है।

- दूसरा आशेर: सूरत अल-नास में नौकर को उसके प्रति बाध्य किया जाता है और उसके करीब जाने से रोका जाता है (हुक्म हैं) और यह बुराई एक दोष है और पहला शहर पीड़ा है | हर बुराई में नुकसान और कष्ट होते हैं, इसमें कोई तीसरा प्रकार नहीं होता (सूरत अल-फ़लक) में मुसीबतों की बुराई से शरण लेना शामिल है, और

57 (कुल फतवी 562/17)

सूरत अल-नास में अय्यूब की बुराई से शरण लेना शामिल है क्योंकि यह सभी शरारतों का स्रोत है। 58

- ✓ सूरत अल-नास में, अल्लाह के तीन नामों का उपयोग करके प्रार्थना करना सिखाया जाता है, क्योंकि भ्रष्टाचार की जड़ फुसफुसाहट है, और परीक्षण जितना गंभीर होगा, अल्लाह से उतनी ही अधिक मदद मांगी जानी चाहिए। सूरह अल-फ़लाक़ में, एक नाम का उपयोग किया गया है क्योंकि यह एक बाहरी बुराई का उल्लेख करता है जो फुसफुसाहट के भ्रष्टाचार से कम है।

وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

मैं अल्लाह सुब्हानहु वा ता'आला से प्रार्थना करता हूं कि वह हमारे सभी पापों को माफ कर दे और अपना आशीर्वाद और आशीर्वाद भेजे और जो कुरान को समझता है, उस पर अमल करता है, उससे आशीर्वाद प्राप्त करने और उसका प्रसार करने की शक्ति प्रदान करे।

((اللَّهُمَّ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي وَنُورَ بَصَرِي وَجِلَاءَ حُزْنِي وَذَهَابَ هَمِّي))

GATEWAY FOR ISLAMIC IN

इब्न हिब्बन, हदीस: 972, प्रामाणिक)

"हे अल्लाह, पवित्र कुरान को मेरे (और हम सभी के) दिल की शांति बनाओ, और इसे आंखों के लिए ठंडक और रोशनी का स्रोत बनाओ, और इसे दुखों को दूर करने वाला और चिंताओं को दूर करने वाला बनाओ।"

हे अल्लाह, उन सभी को जिन्होंने इस अच्छे काम में भाग लिया है, उन सभी को धर्म में और इस दुनिया में

58 (बदी' अल-फौयद (2/473)

हमें समृद्धि प्रदान करें और पवित्र कुरान के माध्यम से हमारे दिल और दिमाग खोलें और इसे समझना हमारे लिए आसान बनाएं, आमीन।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

حافظ ارشد بشیر عمری مدنی وفقہ اللہ

۲۵/رمضان المبارک/۱۴۴۳ھ

26/April/2022

GATEWAY FOR ISLAMIC INFORMATION

[1] ما أصاب أحدًا قط همٌّ و لا حزنٌ ، فقال : اللهمَّ إني عبدُك ، و ابنُ عبدِك ، و ابنُ أمَتِك ، ناصيتي بيدِك ، ماضٍ فيَّ حكمُك ، عدلٌ فيَّ قضاؤُك ، أسألُك بكلِّ اسمٍ هو لك سميتَ به نفسَك ، أو علَّمتَه أحدًا من خلقِك ، أو أنزلتَه في كتابِك ، أو استأثرتَ به في علمِ الغيبِ عندَك ، أن تجعلَ القرآنَ ربيعَ قلبي ، و نورَ صدري ، و جلاءَ حزني ، و ذهابَ همِّي ، إلا أذهبَ اللهُ همَّهُ و حزنَه ، و أبدلَه مكانَه فرجًا قال : فقيل : يا رسولَ اللهِ ألا نتعلَّمُها ؟ فقال بلى ، ينبغي لمن سمعَها أن يتعلَّمَها

الراوي : عبدالله بن مسعود | المحدث : الألباني | المصدر : السلسلة الصحيحة

الصفحة أو الرقم: 199 | خلاصة حكم المحدث : صحيح

التخريج : أخرجه أحمد (3712) واللفظ له، وابن حبان (972)، والطبراني (10/210) (10352) باختلاف يسير.

AskIslamPedia
GATEWAY FOR ISLAMIC INFORMATION
Free Online Islamic Encyclopedia

Free Islamic Books

www.abmqurannotes.com | www.askislampedia.com | www.askmadani.com

Shaikh Arshad Basheer Umari Madani
Hafiz, Aalim, Fazil (Madina University, K.S.A), M.B.A.;
Founder & Director of AskIslamPedia.com
Chairman: Ocean The ABM School, Hyderabad, TS. INDIA.
+91 92906 21633 (WhatsApp only)

AskIslamPedia ایک اسلامک ویب پورٹل ہے جہاں تحقیق شدہ اسلامی معلومات بڑے آسان، منظم اور پر اثر انداز میں دستیاب ہیں، جہاں سے دنیا ایک کلک پر صحیح اسلام جان سکے گی۔ ان شاءاللہ۔

اس کا مقصد ہے کہ اسلام کی صحیح معلومات بلا لحاظِ مذہب، مسلک، عقیدہ، نسل اور رنگ کے ہر ایک تک عام کی جائے۔

AskIslamPedia ایک آسان نظریہ پر کام کرتا ہے وہ یہ کہ "ہم صرف مترجم یا مرتب ہیں"، اس طرح دنیا میں بکھرے علم کو یکجا اور منظم کر کے پیش کیا جاتا ہے بالفاظ دیگر یہ ایک سوپر مارکٹ ہے جس میں ہر قسم کی معیاری اشیاء دستیاب رہتی ہیں۔

AskIslamPedia کا مقصد ہے کہ دنیا میں بولی جانے والی (50) مشہور زبانوں میں کام کرے (ان شاء اللہ)، الحمد للہ پہلے مرحلے میں (2 3) زبانوں پر کام ہو چکا ہے اور دوسرے مرحلے میں (20) زبانوں پر کام جاری ہے، ثم الحمد للہ

ASKISLAMPEDIA
GATEWAY FOR ISLAMIC INFORMATION
Free Online Islamic Encyclopedia

www.abmqurannotes.com | www.askislampedia.com | www.askmadani.com

Shaikh Arshad Basheer Umari Madani

Hafiz, Alim, Fazil (Madina University, K.S.A), M.B.A.;
Founder & Director of AskIslamPedia.com
Chairman: Ocean The ABM School, Hyderabad, TS, INDIA.
+91 92906 21633 (WhatsApp only)